मानसिक मंद बच्चों के शिक्षण की व्यावहारिक पद्धति

शिक्षकों के लिए पुस्तिका

रीता पेशावरिया

एस. वेंकटेसन

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान

(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार)

मनोविकास नगर, सिकन्दराबाद - 500 009. आ. प्र. भारत

मानसिक मंद बच्चों के शिक्षण की व्यावहारिक पद्धति
शिक्षको के लिए पुस्तिका

रीता पेशावरिया
एस. वेंकटेसन

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान
(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार)
मनोविकास नगर, सिकन्दराबाद - 500 009. आ. प्र. भारत

हिंदी अनुवादक :

डॉ. मीरा दुबे

श्री के. एन् ओझा

सर्वाधिकार सुरक्षित

कापी राईट ©राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान, सिकंदराबाद, 1993

प्रथम मुद्रण – 1993 यूनिसेफ की वित्तीय सहायता से
पुनर्मुद्रण – 1994 (एन. - आई. एम. एच.)
पुनमुद्रण - 1999 (एन. आई. एम. एच.)

चित्रकार : एन. करुनाकर

आवश्यक सूचना

इस प्रकाशन का पूरा अथवा कोई भी भाग, शिक्षण, प्राशिक्षण एव अनुसधान के उद्देश्य से, एन. आई. एम. एच से लिखित अनुमति लेने पर, किसी भी रूप मे प्रतिकृत किया जा सकता है जिसमे इसका हिन्दी अथवा किसी अन्य राज्यीय भाषा मे अनुवाद भी सम्मिलित है बरातें कि यह किसी अन्य लाभ के लिए न हो ।

मुद्रक : श्री रमणा प्रासेस, 1-7-270, सरोजिनि देवि रोड, सिकंदराबाद. तार : 7811750

प्रोजेक्ट टीम

रीता पेशावरिया	प्रमुख शोधकर्ता
के.एन. ओझा	सहायक शोधकर्ता
एस. वेंकटेसन	शोध अधिकारी
बीनापानी मोहापात्र	शोध सहायक
एम.पी. अनुराधा	शोध सहायक

प्रोजेक्ट सलाहकार समिति सदस्य

डॉ. एच.पी. मिश्रा — अध्यक्ष
एडीशनल प्रोफेसर
चिकित्सा मनोविज्ञान विभाग मिमहान्स, बैंगलूर

डॉ. एन.के. जांगीरा — सदस्य
प्रोफेसर, विशेष शिक्षा विभाग
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

डॉ. एस.एस. कौशिक — सदस्य
रीडर, मनोविज्ञान विभाग
काशीहिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रो. पी. जयचन्द्रन — सदस्य
प्रिन्सिपल, विजय ह्यूमन सर्विसेज मद्रास

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान संकाय

डॉ. डी. के. मेनन
निदेशक

डॉ. टी. माधवन
सहायक प्रोफेसर, मनोचिकित्सा

डॉ. जयन्ती नारायन
सहायक प्रोफेसर, विशेष शिक्षा

डॉ. सरोज आर्या
सहायक प्रोफेसर, चिकित्सा मनोविज्ञान

श्री टी.ए. सुब्बाराव
प्रवक्ता, वाणी दोष एव श्रवण विज्ञान

विषय सूची

			पृष्ठ सख्या
		प्राक्कथन	ii
		भूमिका	iv
		आभार	v
		पुस्तिका परिचय	vii
भाग	**I**	**मानसिक मंदता का स्वरूप**	1
अध्याय	1	मानसिक मंदता की धारणा	2
भाग	**II**	**मूल्यांकन और कार्यक्रम बनाना**	16
अध्याय	2	मानसिक मंद बच्चो में व्यवहार	17
अध्याय	3	व्यवहार - मूल्यांकन	44
अध्याय	4	व्यवहार - उद्देश्य	55
भाग	**III**	**मानसिक मंद बच्चों के शिक्षण की व्यावहारिक विधियाँ**	73
अध्याय	5	पुरस्कार	74
अध्याय	6	कार्य - विश्लेषण	104
अध्याय	7	कौशल - व्यवहारों को सिखाने की अन्य व्यावहारिक पद्धतियाँ	114
भाग	**IV**	**समस्या - व्यवहार - व्यवस्था की व्यावहारिक विधियाँ**	143
अध्याय	8	समस्या - व्यवहार की पहचान एवं विश्लेषण	144
अध्याय	9	समस्या - व्यवहार व्यवस्था की व्यावहारिक पद्धतियाँ	172
भाग	**V**	**अन्य सम्बन्धित समस्याएँ**	200
अध्याय	10	अभिभावकों को प्रशिक्षण मे सम्मिलित करना	201
अध्याय	11	टीम के साथ काम करना	210
अध्याय	12	नैतिक समस्याये	216
परिशिष्ट	1	व्यवहार - समायोजन का नमूना - भाग अ	225
परिशिष्ट	2	व्यवहार - समायोजन का नमूना - भाग ब	227
परिशिष्ट	3	प्रगति–पत्र का नमूना	229
परिशिष्ट	4	पुरस्कार पसंद जाँच सूची	237
परिशिष्ट	5	व्यवहार - व्यवस्था कार्यक्रम कार्य पत्र	243
परिशिष्ट	6	प्रस्तावित पाठ्य सामग्री	255
परिशिष्ट	7	रा. मा. वि. सं. के अन्य प्रकाशन	256
परिशिष्ट	8	फीड बैक फॉर्म	259

प्राक्कथन

कोई भी कार्यक्रम बनाने के लिए और अंतरापेक्षण के लिए मूल्यंकन एक महत्वपूर्ण पूर्वाकांक्षा है । ऐतिहासिक दृष्टि से बौद्धिक मूल्यांकन 1905 में एल्फ्रेड बिने ने आरम्भ किया जिसमें उन्होने उन बच्चो के साथ कार्य किया जिनकी शैक्षिक उपलब्धि बहुत कम थी । बुद्धि लब्धि (आई. क्यू.) की धारणा का प्रयोग आज मानसिक मंदता की सीमाओं की व्याख्या करने तक ही सीमित है । कोई भी बुद्धि परीक्षा उच्च स्तर की परिशुद्धता अथवा वैयक्तिक अन्तरों को सूक्ष्मता से मापने का दावा नहीं कर सकती ।

मानसिक मूल्यांकन में एक और उल्लेखनीय विकास हुआ है और वह है तक्ष्यों को अप्रत्यक्ष विधियों से ग्रहण करने के बजाय प्रत्यक्ष रूप से अभिग्रहण करना । पिछले तीस वर्षो में व्यावहारिक मूल्यांकन का ध्यान निम्न पर केन्द्रित रहा है (अ) गामक क्रियायें (ब) शारीरिक प्रतिक्रिया में और (स) मनोगति या मनोग्रन्थियों का व्यवक्तित्व के लक्षणों का मूल्यांकन करने के बजाय व्यक्ति द्वारा स्वयं विवरण देना ।

पारंपरिक मनोमितीय विधि के अनुसार किसी व्यक्ति के गुणों का मूल्यांकन किया जाता है जबकि व्यावहारिक मूल्यांकन में व्यक्ति के वातावरण पर, जिसमें वह रहता है, अधिक ध्यान दिया जाता है इसके अलावा व्यक्ति और वातावरण की परस्पर क्रियाओं पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है ।

मूल्यांकन के समय व्यवहारिक आवश्यकताओं का ध्यान रखना चाहिए । आमतौर से पूछे जाने वाले प्रश्न है :

अ) सिकी विशेष व्यक्ति के लिए उसकी विकलांगता के साथ किस प्रकार की सेवायें उपयुक्त होंगी ।

ब) जिन क्षेत्रों में सक्षमता की आवश्यकता है उन्हें प्राथमिकता के क्रम मे कहाँ रखा जाए?

स) क्या नैदानिक अभ्यास के द्वारा यह पता लगाया जा सकता है कि कोई व्यक्ति मंद बुद्धि है या नहीं ।

द)

क्या मूल्यांकन के एक ही समुच्चय (संट) द्वारा उपर्युक्त सभी प्रश्नो के उत्तर मिल सकते है । नहीं, यह केवल मूल्यांकनों की एक श्रृखला आरा ही सभव है जिससे किसी व्‌यक्ति की एक ऐसी समाविष्ट तस्वीर उमर कर आती है जो हमें भविष्य में पुर्ननिवास एवं प्रशिक्षण के बारे मे सही प्रकार के निर्णय लेने में सहायक होती है ।

हॉग और रेनीस ने 1987 मे "मानसिक मंद में मूल्यांकन" नामक पुस्तक मे मूल्यांकन को चार बर्गो मे वर्गीकृत किया था ।

अ) मानक (जन समुदाय के उदाहरण0 के संदर्भ मे (नार्स रेफरैन्स्ड)

ब) अनुकूली व्यवहार की मूल्यांकन

स) मानक (व्यक्ति विशेष) के संदर्भ में (क्रायटारिया रैफरैन्स्ड)

द) व्यावहारिक निरीक्षण की तकनीकें

मनोमितीय मूल्यांकन ने किसी व्यक्ति विशेष की क्रियाओं पर, समूह मापन (ग्रुप नार्म) की तुलना में, अधिक ध्यान दिया जाता है । वे मनोवैज्ञानिक परीक्षण जो आई. क्यू. (बुद्धि लब्धि) या डी. क्यू

(विकास लब्धि) के अंक देते है, वे बुद्धिमता का एक व्यापक माप देते है जो किसी प्रशिक्षण कार्यक्रम के विकास में शायद ही सहायक होते हों । अनुकूली व्यवहार का मूल्यांकन व्यक्ति की उस सामाजिक क्षमता को सूचित करता है जो व्यक्ति को उपयुक्त स्थान प्राप्त करने में और समुदायिक समायोजन के लिए पूर्वानुमान लगाने में सहायता करता है ।

मानक (व्यक्ति विशेष के संदर्भ में) मूल्यांकन न केवल उन व्यवहारो को जिनमें क्षमता बढानी चाहिए निर्धारित करता है बल्कि प्रशिक्षण और अध्यापर के परिणामो का भी चित्रण करता है । जबकि व्यावहारिक निरीक्षण केवल उन क्रियाओं का ही वर्णन करता है जौ कोई व्यक्ति अपने वातावरण में रहकर करता है ।

भारतीय मंद बुद्धि बच्चों के लिए व्यावहारिक मूल्यांकन मापन भाग अ और बाग ब मे उन व्यवहारो पर विशेष ध्यार दिया गया है जो मानसिक मंद बच्चों द्वारा उनके वातावरण में किये जाते है और जो प्रत्यक्ष निरीक्षण में देखे जा सकते है । भाग अ वैधक्तिक मापन संदर्भ (क्राईटीरिया रेफरैन्स्ड) के व्यवहारो से संबन्धित है जो प्रशिक्षण के लिए चुने आ सकते है । भाग 'ब' समस्याग्रस्त व्यवहारो से संबन्धित है जो कि अंतरापेक्षण (इन्टरवैन्शन) के लिए चुन जा सकते है । पात्र परीक्षणों से ज्ञात होता है कि भाग अ और ब दोनों ही प्रशिक्षण के लिए संवेदन शील है और अपेक्षित विस्वसनीयता (रिलाईबिलिटी) और प्रभाविकता (वैलेडिटी) के सिद्धान्तों के पूरा करते है । इस माप के विशेष गुण है कि इसमें शब्दावली का प्रबन्ध किया गया है, जो विश्वसनीयता का मूल्यांकन करने में सहायता करती है और अभिलेखन पत्र (रिकार्ड पार्म) भी दिया गया है जो कोई भी अध्यापक बच्चे को लक्ष्य व्यवहार का प्रगतिशील उपलब्धि का अभिलेखन करने में प्रयोग कर सकता है ।

लेखिका ने इस उपकरण के विकास में अति अकृष्ट कार्य किया है, जिसमें मूल्यांकन के लिए सभी व्यावहारिक तकनीको का ध्यान रखा गया है जिससे यह विशेष अध्यापिकाओं और कक्षा में बड़ी सरलता से प्रयोग किया जा सकता है । "मानसिक मंद बच्चों के प्रशिक्षण के लिए व्यावहारिक नीति" की हस्त–पुस्तिका के साथ, ऐसी आशा की जाती है कि 'बेसिक एम आए' के भाग अ और ब विशेष अध्यापकों के लिए एक लाभदायक उपकरण साबित होगा । लेखिका को इसकी प्रमाणिकता के लिए आगे कार्य करते रहना चाहिए ताकि ये मापन मंदबुद्धि बच्चों के साथ और भी विस्दत रूप से प्रयोग किया जा सके ।

तिथि : मार्च ३०, १९९२

स्थान : सिकन्दराबाद

डा. डी. के. मेनन

निदेशक स. मा. वि. पुं.

भूमिका

मानसिक मद व्यक्तियो के प्रशिक्षण मे व्यवहार तकनीक ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है । उपलब्ध शोध तथ्य इस बात के प्रमाण है कि, सभी मानसिक मंद बच्चे चाहे वे किसी आयु, लिंग, गहनता या परिस्थिति, जैसे स्कूल, घर या कार्य-स्थल के हो, क्रमबद्ध प्रशिक्षण पध्दति द्वारा सिखाए जाने पर, और अच्छी तरह से प्रशिक्षित किए जा सकते है ।

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान व देश के कई अन्य भागो में शिक्षक तथा अभिभावको के लिए, मानसिक मंद बच्चो पर व्यवहार तकनीक के प्रयोग पर, किए गए कार्यशालाओं के हमारे अनुभव अधिक उत्साहवर्धक रहे है । अतः हमने, शिक्षको के लिए एक पुस्तिका लिखने का निर्णय लिया, जिससे वे व्यवहार विधियो का प्रयोग करते हुए, मानसिक मंद बच्चों के वांछनीय व्यवहारों को सिखा सकें तथा अवांछनीय व्यवहारो को कम भी कर सके ।

यद्यपि, यह पुस्तिका विशेष रूप से शिक्षको के लिए एक निर्देशक के रूप में लिखी गई है, अन्य प्रशिक्षको जैसे, अभिभावक, चिकित्सक, सहायक शिक्षक आदि, जो मानसिक मंद बच्चों के प्रशिक्षण में कार्यरत है, उनके लिये भी प्रयुक्त हो सकती है ।

पश्चिमी जगत में कई एक पुस्तिकाएँ उपलब्ध हैं जो शिक्षको के व्यवहार पध्दति प्रयोग की क्षमताओ को प्रखर बनाने में सहायक सिध्द होती है परंतु ऐसी पुस्तिकाएँ पाश्चात्य समुदाय के अध्यापको, अभिभावको व मानसिक मद बच्चो के सहायको की आवश्यकताओं की पूर्ती कर पाते है । साथ ही उनकी विषय सूची, रूप, प्रस्तुतीकरण का तरीका, आदि हमारी संस्कृति या परिवेश में शिक्षको के अनुभवो का विशेष प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं ।

अपने भारतीय विद्यालयो के परिवेश में, मानसिक मंद बच्चो के लिए, शिक्षको द्वारा व्यवहार सिध्दान्तों पर आधारित पध्दतियों के सफलता पूर्वक प्रयोग हेतु एक पुस्तिका के विकास की आवश्यकता महसूस की गई । यह भी अनुभव किया गया कि, अपने सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में मानसिक मंद बच्चो के साथ विशेष अनुभवो को ध्यान मे रखते हुए पुस्तिका लिखी जाये ।

अधिकतर मानसिक मंद बच्चो के प्रशिक्षण में नए कौशल व्यवहार को सिखाने पर ध्यान दिया जाता है अथवा केवल अवांछनीय व्यवहार सुधार पर ध्यान दिया जाता है । वास्तव मे कौशल-व्यवहार प्रशिक्षण और समस्या-व्यवहार-व्यवस्था दोनों आपस में जुडे हुये हैं । कमजोर शिक्षण अभ्यास समस्या-व्यवहार की ओर ले जा सकता है और कुशल शिक्षण अभ्यास समस्या-व्यवहार को उत्पन्न होने से रोक सकता है । अतः हमने एक पुस्तिका लिखने का विचार किया जिसमें दोनो पहलू साथ-साथ लिए जायें । कक्षा मे व्यक्तिगत अथवा सामूहिक स्थिति में समस्या-व्यवहार व्यवस्था हेतु शिक्षक की वैज्ञानिक पध्दतियों का प्रयोग कुशलता को सुदृढ़ बनाना इस पुस्तक का उद्येश्य है ।

रीता पेशावरिया

प्रमुख शोधकर्ता

पुस्तिका परिचय

"मानसिक रूप से मंद बच्चो के शिक्षण की व्यावहारिक पद्धति" नामक पुस्तिका विशेष रूप से उन शिक्षको की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर लिखी गई है जो मानसिक मंद बच्चों के साथ कक्षा या पाठशाला मे कार्यरत है । प्रशिक्षित शिक्षकगण तो इसे उपयोगी पाएँगे ही, परंतु जिन शिक्षकों ने मानसिक मंद बच्चों के शिक्षण पद्धति मे व्यावसायिक प्रशिक्षण नहीं प्राप्त किया है, इस पुस्तिका से विशेष लाभ उठा सकते है । इस क्षेत्र में कार्य कर रहे प्रशिक्षको जैसे, बहु उद्देशीय पुनर्वास कार्यकर्ता, वाणी चिकित्सक, भौतिक चिकित्सक, व्यावसायिक चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक, मनोचिकित्सक, मंद बुद्धि बच्चो के अभिभावक आदि के लिए भी सहायक सिद्ध होगी ।

हमने यह पुस्तिका सरल हिन्दी मे लिखने का प्रयास किया है । इस पुस्तिका का मूल अंग्रेजी रूप तो है ही । शिक्षकों की सुविधा और सरलता के लिए उध्दरणों, उचित अभ्यासों, केस अध्ययनो आदि का समावेश, इस पुस्तिका में, किया गया है । शिक्षकों के प्रयोग हेतु रेकार्ड शीट भी उपलब्ध है ।

इस पुस्तिका मे, लेखकों ने, जानबूझकर पकीपकाई सामग्री नही रखी है । अपितु शिक्षको के लिए व्यवहार तकनीक को इस ढ़ंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है जो उन्हें मानसिक मंद बच्चों के विशेष आवश्यकताओं के अनुरूप व्यक्तिगत व्यवहार कार्यक्रम विकसित करने में सहयोग दे सकें।

शिक्षकों के अधिकाधिक लाभ के लिए प्रत्येक अध्याय के अंत में कार्य–अभ्यास का भी समावेश किया गया है । अध्यापकों से यह अपेक्षा है कि, अगले अध्याय पर जाने से पूर्व इन अभ्यासों को पूरा कर लें । उचित सुझाव तो यह है कि, इस क्षेत्र में कार्यरत विशेषज्ञों से शिक्षकों को कम से कम पाँच दिन का प्रशिक्षण, मानसिक मंद बच्चों के साथ व्यवहार तकनीक प्रयोग मे, लेना चाहिए।

पुस्तिका पाँच भागो मे बाँटी गई है :

पहले भाग मे मानसिक मंदता का स्वरूप के साथ साथ उसके कारणों, व्यवस्था तथा व्यापकता आदि की चर्चा की गई है ।

भाग दो मूल्यांकन तथा कार्यक्रम के बारे में है । इसके तीन अध्यायो में मानसिक मंद बच्चों मे व्यवहार, व्यवहार मूल्यांकन तथा व्यवहार उद्देश्य समाविष्ट है ।

भाग तीन मानसिक मंद बच्चो के शिक्षण की व्यवहार विधि की चर्चा करता है । इस भाग मे भी तीन अध्याय है, जिसमे पुरस्कार, कार्य विश्लेषण, और कौशल व्यवहारों को सिखाने की अन्य व्यावहारिक पद्धतियो के प्रयोग शामिल है ।

भाग चार समस्या व्यवहार व्यवस्था की व्यावहारिक विधियों पर प्रकाश डालता है । इस भाग मे दो अध्याय है जिनमें समस्या व्यवहार की पहचान व विश्लेषण तथा समस्या व्यवहार-व्यवस्था की व्यावहारिक पध्दतियों की चर्चा की गई है ।

भाग पाँच मे तीन अध्याय है जो मानसिक मंद बच्चो की देख-रेख तथा व्यवस्था से संबंधित अन्य समस्यायो के बारे में विवरण देते है । अभिभावको को प्रशिक्षण में शामिल करना, टीम में काम करना और नैतिक समस्याये जैसे विषयो पर भी एक एक अध्याय है ।

प्रत्येक अध्याय का प्रारंभ उद्देश्यो से होकर साराश पर समाप्त होता है । पुस्तिका की तैयारी जिस तन्मयता व सावधानी से की गई है, हमे आशा है, यह अपनी उपयोगिता सिद्ध कर पाएगी । पुस्तिका के अंत मे सलग्न फीडबैक फार्म को भरकर, इसके प्रयोगकर्ता यदि अपने अनुभव तथा विचार भेजें, तो हम आभारी रहेंगे ।

रीता पेशावरिया

एस. वेंकटेसन

आभार

इस प्रोजेक्ट के अन्तर्गत आने वाली उन सभी सामग्रियो, अर्थात् "मानसिक मंद बच्चों के शिक्षण की व्यावहारिक पद्धति : शिक्षकों के लिए एक पुस्तिका" तथा "भारतीय मंद बुद्धि बच्चों का व्यवहार आकलन मापदण्ड (बेसिक एम.आर.)" को विकसित करने, क्षेत्र परीक्षण और अन्ततः मुद्रण में कुल तीन साल का समय लगा । इस अवधि में अनेक शुभचिन्तकों एवं विशेषज्ञों ने सहयोग दिया । इस विषय को उपयुक्त मानते हुए प्रारम्भ करने का निश्चय, हमारे गुरुजनों से अनेक वर्षो के सम्पर्कों का परिणाम माना जा सकता है । उल्लेखनीय है, सेंन्ट्रल इन्स्टीट्यूट आफ साइकिएट्री, राँची, नेशनल इन्स्टीट्यूट आफ मेन्टल हेल्थ एण्ड न्यूरोसाइन्सेज, बैंगलोर, मॉडस्ले अस्पताल, लन्दन के चिकित्सा मनोविज्ञान विभाग के प्राध्यापक गण तथा अन्य विशेषज्ञ जिन्होंने व्यवहार तकनीक के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है । उन सभी का मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ, और साथ ही उन मानसिक मंद बच्चों एवं उनके परिवार जनों को भी जिनके साथ काम करने का मुझे अनुभव मिला हैं ।

इस पुस्तिका को विकसित करने में युनिसेफ ने जो वित्तीय सहायता प्रदान की है उसके लिए मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ । डॉ. डी.के मेनन, निदेशक, राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान के, प्रोत्साहन, निर्देश, सहायता और विशेष सलाह अति लाभकारी रहे हैं । उनके हम सदा ऋणि रहेंगे ।

प्रोजेक्ट सलाहकार समिति के विशेष सदस्यो, प्रो.हरिपद मिश्र, प्रो.एन.कें. जाँगीरा, प्रो.पी. जयचन्द्रन, डा. सन्ध्या सिह कौशिक का योगदान सराहनीय रहा है । उनसे प्रवाहित विशेष सुझावो ने इस पुस्तिका के वर्तमान रूप को संवारने मे मदद दी है । क्षेत्र में कार्यरत विशेषज्ञों के रचनात्मक सुझावों ने हमारे काम को निखारा है, और बेहतर बनाया है । इसके लिए धन्यवाद के विशेष योग्य हैं : प्रो. एस.के. वर्मा, श्रीमती रुक्मिनी कृष्नास्वामी, श्री के.एन. ओझा, श्री एस.पी. के. जेना, श्रीमती संगीता गुप्ता, डॉ. जयंती नारायण, डॉ. टी. माधवन, डॉ. सरोप आर्या, श्रीमति वी. शैलजा रेड्डी, श्री टी. ए. सुब्बाराव, कु. थ्रेसिया कुट्टी और कु. विजयमैरेड्डी ।

प्रोजेक्ट टीम के सभी सदस्यो : श्री एस. वेन्कटेसन, शोध अधिकारी, कु.बीनापानी महोपात्र और कु.एम.पी. अनुराधा, शोध सहायक के अथक एवं कुशल प्रयासो के लिए धन्यवाद देना चाहूँगी । इन सभी के साथ काम करना अपने मे एक रचनात्मक व उपयोगी अनुभव था । सहायक शोधकर्ता, श्री के.एन. ओझा, सहायक प्रो. चिकित्सा मनोविज्ञान, एन. आई.एम.एच. क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली, का योगदान, विशेषकर प्रोजेक्ट की सम्पूर्ण सामग्री हिन्दी रूपान्तर की जिम्मेदारी एक बहुत बड़ी राहत थी । डॉ. मीरा दुबे, हिन्दी प्राध्यापिका एन.आई.एन.एच. जिसने हिंदी रूपांतर एवं प्रूफ रीडिंग का कार्य किया, जिसके सहयोग के जिसके सहयोग के बिना पुस्तक तैयार करना बडा ही कार्य था । श्रीमति आरती होरा, श्रीमति प्रतिभा का भी हिन्दी रूपांतर कार्य में योगदान रहा ।

पुस्तिका की लेखन सामग्री विकसित कर लेने के बाद एक कुशल चित्रकार के रूप मे श्री करुनाकर ने यथोचित उद्दरणों को रेखांकित कर पुस्तिका को और अर्थपूर्ण तथा बोधगम्य बना दिया । श्री करुनाकर की दक्षता और कुशल चित्रकारी के साथ-साथ उनकी असीम सहनशीलता के लिए धन्यवाद ।

पुस्तिका का क्षेत्र परीक्षण हम लोगो के लिए एक समुद्र लाँघने वाला कार्य दिखाई दे रहा था। परन्तु संस्थाओं/विशेष स्कूलो के प्रधानों का उदार सहयोग, साथ ही उन संस्थाओं के शिक्षको का साथ, सौहार्दपूर्ण तत्परता और निस्वार्थ प्रतिबद्धता ने हमे बहुत अधिक प्रोत्साहित किया । इनमें उल्लेखनीय है मनोचैतन्या, मंद बुध्दि बच्चों के लिये विशेष स्कूल (पमैनकैप) मंद बुद्धि बच्चो के लिए मॉडल स्कूल, कस्तूरबा निकेतन, लाजपतनगर, नई दिल्ली, ओखला सेन्टर, ओखला मार्ग, नई दिल्ली, और स्वीकार, रिहेबिलिटेशन इन्स्टीट्यूट फार द डिसएबल्ड, सिकंद्राबाद के प्रधान व शिक्षक गण । एन. आई. एम. एच., क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली की शोध अधिकारी श्रीमती संगीता गुप्ता ने ओखला सेन्टर के शिक्षक कार्यशाला नियोजन की अवधि में हमारी टीम के साथ भाग लेते हुए जिस कुशलता व दक्षता का परिचय दिया, हम उनकी भूरी-भूरी प्रशसा करते है ।

डा. रैल्फ शिअर, डाइरेक्टर, कम्यूनिटी असेसमेन्ट फार द रिटाइर्ड, कैलिफोर्निया, अमेरिका, के इस प्रशिक्षण पुस्तिका व बेसिक-एम. आर. के लाभकारी अवलोकन के लिए आभार ।

क्षेत्र परीक्षण से प्राप्त आँकड़ों का कम्प्यूटर द्वारा विश्लेषण के लिए मैं श्री बी. सूर्य प्रकाशम, साख्यिकी सहायक, एन. आई. एम. एच. के प्रति हार्दिक आभार प्रंकट करती हूँ ।

प्रोजेक्ट के हर प्रकार के टंकण कार्य में तत्परता और दक्षता के लिए श्री वी. शकर कुमार, आशुलिपिक, एन.आई.एम.,एच. को धन्यवाद । प्रशासनिक एवं लेखा विभाग के सर्वदा तत्पर सहयोग के लिए मैं अपनी सौहार्दपूर्ण कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ ।

रीता पेशावरिया
प्रमुख शोधकर्ता

भाग 1
मानसिक मंदता का स्वरूप

इस पुस्तिका का प्रमुख लक्ष्य मानसिक मंद बच्चों के शिक्षण में व्यावहारिक पद्धतियों पर ध्यानकेन्द्रित करना है । अतः यह आवश्यक समझा गया कि, मानसिक मंदता के स्वरूप तथा प्रकृति संबन्धी भ्रान्तियों को स्पष्ट कर लिया जाये। कुछ शिक्षक इस भाग सेसूचना ग्रहण कर सकते हैं, तो अन्य के लिए यह भाग पुनश्चर्या साबित हो सकता है ।

मानसिक मंद बच्चों के स्वभाव उनकी दशा के कारणों, रोक-थाम तथा व्यवस्था के बारे में सूचना, पहले अध्याय में दी गई है ।

शिक्षक से निवेदन है कि, आगे के अध्याय में जाने से पहले, इस अध्याय के अंत में दिए गए अभ्यासों को पूरा कर लें ।

अध्याय एक

मानसिक मंदता की धारणा

इस अध्याय के समापन पर शिक्षक निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम, हो सकेंगे :

1. मानसिक मंदता क्या है ?
2. मानसिक मंदता की प्रकृति और उसकी व्यापकता क्या है ?
3. मानसिक मंदता के कारण क्या हैं ?
4. मानसिक मंद बच्चों की व्यवस्था के कौन-कौन से प्रमुख उपाय हैं ?

इस भाग में, मानसिक मंदता की प्रकृति से सम्बन्धित कुछ कथन उनके सही और गलत संदर्भ में दिए गये हैं । प्रत्येक कथन और उसके विवरण को सावधानी से पढ़ें ।

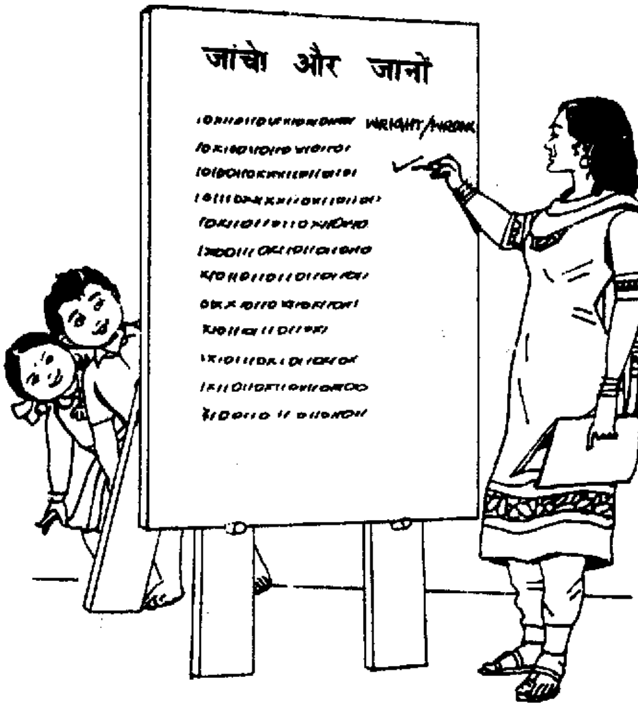

1. मंद बुद्धि को मानसिक मंदता भी कहा जाता है ।

सही : मंद बुद्धि को मानसिक मंदता या मानसिक अक्षमता भी कहा जाता है । इस पुस्तिका मे मंद बुद्धि और "मानसिक मंदता" शब्द एक ही सदर्भ या अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है । पूर्व काल मे मानसिक मदता को मानसिक कमजोरी, मानसिक असामान्यता, जड़मति, मूढ़ता आदि नामों से जाना जाता था । इन सज्ञाओं या नामो का प्रचलन अब नही रहा ।

मद बुद्धि को मानसिक मंदता भी कहा जाता है ।

2. मानसिक मदता मानसिक रोग है ।

गलत : मद बुद्धि मानसिक रोग से भिन्न है । मद बुद्धि एक दशा है जिससे विकलागता हो सकती है जब कि, मानसिक रोग एक बीमारी है । मद बुद्धि बच्चों का विकास मद होता है । और वे सीखने मे भी मद होते हैं । उनकी मानसिक आयु और उनका मानसकि विकास उनके वास्तविक आयु से पीछे होता है । जैसे एक 7 साल का मानसिक मद बच्चा बोलने तथा अन्य व्यवहार मे एक 3 साल के सामान्य बच्चे की तरह

से दिखाई दे सकता है । इस प्रकार उसका विकास 4 साल पीछे दिखाया जाता है । दूसरी ओर मानसिक रोगी व्यक्ति में विकारात्मक देरी नहीं दिखाई देगी । उसके व्यवहार में गड़बडी दिखाई देगी । जैसेः अनिद्रा, गुमसुमी, भुख न लगना, आवाज़े सुनाई देना या कुछ दिखाई देना जबकि, वहाँ कुछ नहीं होता आदि । कभी कभी मंद बुद्धि बच्चों मे भी मानसिक रोग के लक्षण दिखाई दे सकते हैं ।

मानसिक मंदता मानसिक रोग नहीं है ।

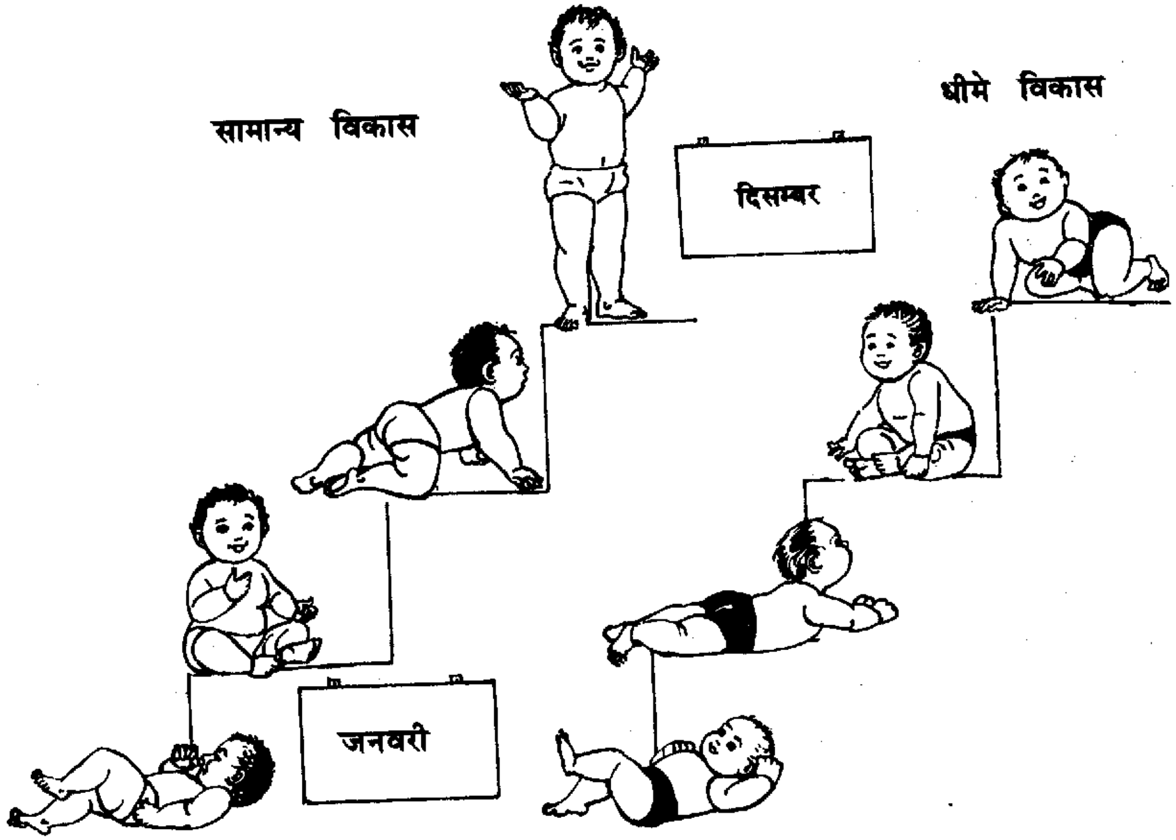

3. एक व्यक्ति जीवन काल के किसी भी समय में मानसिक मंदता का शिकार हो सकता है ।

गलत : अक्सर मानसिक मंदता जन्म से ही होती है । कभी–कभी विकासात्मक अवस्था के बीच, जो 18 साल की आयु तक मानी जाती है, उस समय भी हो सकती है । अतः, परिभाषा के संदर्भ में कोई भी व्यक्ति विकासात्मक अवस्था अर्थात् 18 साल की आयु के बाद मंद बुद्धि नहीं हो सकता है ।

मंद बुद्धि 18 साल की आयु के पहले कभी भी हो सकती है ।

4. मानसिक मंद और सामान्य व्यक्ति में प्रमुख भेद यह है कि मानसिक मंद व्यक्ति का दिमाग छोटा होता है जब कि, सामान्य व्यक्ति का दिमाग बृहद् होता है ।

गलत : दिमाग का आकार मानसिक मंद और सामान्य बच्चों में भेद नही कर पाता है । वह बौद्धिक मंद और सामान्य बच्चों और मंद बुद्धि बच्चों में अन्तर बताता है । परिस्थिति विशेष में कार्य करने और सामन्जस्य बनाए रखने के लिए सभी व्यक्तियों में सामान्य क्षमता होती है । इसे बुद्धि कहते है । कुछ में अधिक तो कुछ में कम बुद्धि होती है । व्यक्ति में बुद्धि का आकलन बुद्धि लब्धि के रूप में (आई.क्यू.) मान्य बौद्धिक कसौटियों के आधार पर किया जाता है । जब इन कसौटियों के माध्यम से सामान्य बच्चों की बुद्धि लब्धि आँकी जाती है तो वह 90 या उससे अधिक के बीच आती है जब कि, मानसिक मंद बच्चे इन कसौटियों पर 70 से कम बुद्धि लब्धि प्राप्त कर पाते है । इसके अतिरिक्त इनके अनुकुल व्यवहार में भी कमी दिखाई देती है ।

दिमाग तथा मानसिक मंदता में कोई सम्बन्ध नहीं है ।

5. अपने देश में जनसंख्या का लगभग दो या तीन प्रतिशत समूह मानसिक मंद है ।

सहीं : देश में कितने मानसिक मंद लोग है, इसका राष्ट्रीय स्तर पर सर्वेक्षण नही हो पाया है । फिर भी, समय समय पर देश के कई भागों में किए गए सर्वेक्षण के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि, देश में लगभग दो करोड़ मानसिक मंद व्यक्ति होंगे ।

सामान्य जनसंख्या का 2 से 3 प्रतिशत समूह मानसिक मंद होगा ।

6. सभी मानसिक मंद बच्चे समान है ।

गलत : वर्गीकरण के आधार पर मानसिक मंदता के कई स्तर होते हैं । मानकीकृत मनौवैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा मूल्यांकित बुद्धि-लब्धियों और अनुकूल व्यवहारो के आधार पर मानसिक मंद बच्चो को चार स्तरो में वर्गीकृत किया गया है । अनुकूल व्यवहार किसी भी बच्चे के जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं को समायोजित करने की सामाजिक क्षमता का वर्णन करता है ।

स्तर	बुद्धि लब्धि क्रम
अल्प मानसिक मंदता	50–69
मध्यम मानसिक मंदता	35–49
अति मानसिक मंदता	20–34
अत्यल्प मानसिक मंदता	20 से नीचे

मंद बुद्धि का वर्गीकरण शिक्षक अन्य प्रकार से करते हैं । उनके वर्गीकरण का आधार, इन बच्चों के शैक्षणिक अपेक्षा पर निर्भर करता है । उनके अनुसार जिन बच्चों की सम्पूर्ण देख–देख अन्य लोग करें, उन्हें संरक्षणीय मानसिक मंद कहते है । वे बच्चे, जिन्हें अर्ध कौशल या अकौशल कामो में प्रशिक्षित किया जा सकता हो, प्रशिक्षणिय मानसिक मंद कहलाते है । जिन बच्चों को आधारभूत क्रियात्मक शिक्षा दे सके, उन्हें शिक्षणीय मानसिक मंद कहा जाता है ।

मानसिक मंद बच्चे विभिन्न बौद्धिक स्तर और अनुकूल व्यवहार के होते है ।

7. **मानसिक मंद बच्चे अपने वृद्धि और विकास में धीमे होते हैं ।**

सही : सभी बच्चे एक निश्चित क्रम में चरण दर चरण बढ़ते और विकसित होते हैं । एक बच्चा बैठना सीखने के पहले, करवट लेना सीखता है, एक शब्द, दो शब्दों और वाक्यों मे बोलने के पहले वह "पा–पा", "मा–मा" कहना सीखता है । एक सामान्य बच्चे मे यह सभी क्रियाएँ उचित आयु तक सीख ली जाती हैं । उदाहरण के रूप मे सामान्य रूप से एक बच्चा 6 से 8 माह तक बैठना, 12 से 16 माह तक चलना और 12 माह तक शब्द बोलना सीख जाता है । तुलना में मानसिक मंद बच्चे बैठने, खड़े, होने, चलने और बोलने में अधिक समय लगाते हैं । कभी–कभी एक बच्चा सामान्य बालक की भाँति ही विकसित हो रहा होता है, परन्तु मस्तिष्क आघात के कारण उसका विकास धीमा या पीछे हो जाता है और वह मानसिक मंद हो जाता है ।

मानसिक मंद बच्चों में वृद्धि और विकास धीमा रहता है ।

8. **किन्हीं बच्चों में मानसिक मंदता के साथ–साथ दौरे आते हैं अथवा सम्बन्धित दशाएँ जैसे, दृष्टि विकलांगता या श्रवण विकलांगता भी पाई जा सकती है ।**

सही : लगभग 40 प्रतिशत मानसिक मंद बच्चों में दौरे की बीमारी पाई जाती है । दौरे कई प्रकार के हो सकते हैं ।

अति और अत्यल्प मानसिक मंद बच्चो में दौरे अधिक देखे गए हैं । यदि शिक्षक किसी बच्चे में कक्षा या स्कूल में दौरे की बीमारी देखलें तो शीघ्र चिकित्सीय सलाह लेना आवश्यक हैं ।

कभी–कभी मानसिक मंद बच्चो को मनोविकार सम्बन्धी परेशानियाँ होती है, जैसे कि, बिना किसी कारण के मनःस्थिति में अत्यधिक बदलाव, या आवाजें सुनाई देना या कुछ दिखाई देना जबकि, वहाँ कुछ नही होता है अनिद्रा भूख न लगना आदि । इन परेशानियो के सही निदान और निबासन के लिए विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है ।

मानसिक मंद बच्चों में संबन्धित दशाएँ, जैसे, दौरे, श्रवण, दृष्टि दोष या शारीरिक विकलांगता भी देखी जा सकती है ।

कुछ मानसिक मंद बच्चो में सुनने की कमी (श्रवण विकलांगता), या दृष्टि विकलांगता के लक्षण पाए जा सकते है । इस प्रकार के बच्चो को बहु प्रकार के विकलांगता की संज्ञा दी जाती है ।

9. सामान्य या मानसिक मंद बच्चा पैदा करना माँ–बाप के हाथ में है ।

गलत : मानसिक मंद बच्चा पैदा करने का दोष अक्सर माँ–बाप को दिया जाता है । इससे अनेक माँ–बाप मे ग्लानि और लज्जा की भावना पैदा हो जाती है । यह समझ लेना आवश्यक है कि, किसी भी बच्चे में मानसिक मंदता, उन कारणो से हो सकती है जो माँ–बाप के सीधे नियंत्रण में नही है । उदाहरण के लिए-कुछ वंशानुगत तत्व, क्रोमोजोमल गड़बड़ी, जो आगे के वंश से चली आ रही हो । हाँ, माँ–बाप को, बच्चा पैदा करने की योजना बनाने से पहले उपयुक्त डाक्टरी जाँच करा लेनी चाहिए, जिससे मानसिक मंद बच्चा पैदा होने की सभावना से बचा जा सके ।

कोई भी बच्चा मंद बुद्धि हो सकता है, जिनका कारण माँ–बाप के नियंत्रण में नहीं है ।

110. कभी–कभी कमजोर दिमाग वाले सामान्य बच्चे को बुरी आत्मा के प्रभाव से मानसिक मंदता हो सकती है ।

गलत : इस विश्वास से मानसिक मंद बच्चो को अच्छाई की जगह नुकसान अधिक हुआ है । कई लोग तात्रिक, जादू–टोना वालो, आदि से प्रताड़ित किए जा चुके हैं, इस आशय से कि, इससे बुरी आत्मा दूर भाग जाएगी । इन घातक अभ्यासों को समाप्त करना चाहिए ।

तात्रिक व जादू टोना ले मानसिक मंद बच्चों को अधिक नुकसान पहुँचा सकते है ।

11. **गर्भावस्था अथवा प्रसव काल के समय ग्रहण के प्रभाव से बच्चे में मानसिक मंदता हो सकती है ।**

गलत : अभी तक कोई प्रामाणिक आधार नहीं मिल पाया है जिससे यह साबित हो सके कि, नक्षत्रीय घटनायें जैसे–सूर्य या चन्द्र ग्रहण, गर्भावस्था या प्रसव काल मे बच्चे को मानसिक मंद बना सकती है ।

सूर्य या चन्द्र ग्रहण मानसिक मंदता का कारण नहीं हो सकते ।

12. **अपने यौवनावस्था में यदि कोई व्यक्ति प्रमुख निराशा या असफलता का शिकार, पढ़ाई, शादी या काम में हो जाता है, तो वह मानसिक मंद हो सकता है ।**

गलत : जीवन काल मे प्रमुख निराशा, असफलता, या हतोत्साह (पढ़ाई, शादी या काम में) व्यक्ति में मानसिक रोग को उकसा सकती है न कि, मानसिक मंदता को । हाँ, इस प्रकार के तत्व अपरोक्ष रूप में अवश्य प्रभावित कर सकते हैं । उदाहरण के लिए, एक गर्भवती माँ अवसाद या दुःख के कारण यदि बराबर भोजन नही करती है तो इस अपोषण से भ्रूण के विकास पर असर पड़ सकता है ।

जीवन काल में प्रमुख निराशायें या असफलतायें मानसिक मंदता नहीं ला सकती हैं ।

13. **मानसिक मंदता प्रारब्ध का परिणाम है और यह टाला नहीं जा सकता है ।**

गलत : गर्भावस्था में सही देखभाल करके कई लोगो को मानसिक मंदता का शिकार होने से बचाया जा सकता है जिसमें संतुलित भोजन करना और नियमित रूप मे डाक्टरी जाँच कराना शामिल है । प्रसव के समय और भी सतर्कता बरतनी चाहिए । यह ध्यान रखना चाहिए कि, प्रसव किसी साफ–सुथरे और सुरक्षित स्थान पर हो। बेहतर होगा यदि किसी अस्पताल मे हो, जहाँ सभी प्रकार की सुविधाये उपलब्ध होती है ताकि, जच्चा और बच्चा दोनों को किसी भी प्रकार की दुर्घटना, चोट, छूत आदि से बचाया जा सके ।

बड़े पैमाने पर मानसिक मंदता की रोग–थाम हो सकती है ।

14. **यदि एक गर्भवति स्त्री मानसिक मंद बच्चों को पढ़ा रही हो तो वह एक मंद बुद्धि बच्चे को जन्म देगी ।**

गलत : मानसिक मंदता एक संक्रामक बीमारी नही है । मानसिक मंद बच्चों के साथ सम्पर्क रखना, जीवन के किसी आवस्था में या माँ के गर्भावस्था में, किसी प्रकार से हानिकारक नही है ।

गर्भवती स्त्रियाँ मानसिक मंद बच्चों को पढ़ाना जारी रख सकती हैं ।

15. मानसिक मंदता का इलाज हो सकता है ।

गलत : मानसिक मंदता कोई रोग नही है जिसका इलाज हो सके । यह एक दशा या विकलांगता है जिसमे मदद की जा सकती है, पुनर्वास हो सकता है । जब किसी मनुष्य को बीमारी हो जाती है, तो उसके इलाज के लिए कोई दवा हो सकती है । परंतु जब किसी दुर्घटना में कोई व्यक्ति अपनी बाँह गंवा देता है, तो उसे पुनः बाँह लाने के लिए कोई दवा नही दी जा सकती है । इसी प्रकार मानसिक मंदता का दवा से इलाज नहीं हो सकता है । न ही विद्युत का झटका, टॉनिक, या सम्मोहन उसे ठीक कर सकता है । इसी तरह से किसी शल्य क्रिया से व्यक्ति की स्मृति शक्ति या बुद्धि बढ़ाई नहीं जा सकती है । मानसिक मंद बच्चो को वैज्ञानिक पद्धतियों के माध्यम से शिक्षण व प्रशिक्षण दिया जा सकता है जिससे वे आत्म निर्भर बन पाए और योग्य नागरिक बन सकें ।

मानसिक मंद बच्चों को प्रशिक्षण की आवश्यकता है ।

16.मानसिक मंद व्यक्तियों की क्रियाएँ जैसे : भोजन करना, नहाना, कपडे पहनना, आदि, सिखाना समय गँवाना है, क्योंकि, यह सब हम उनके लिए खुद कर दें तो अधिक समय और शक्ति बचा सकते है ।

गलत : सभी मानसिक मंद बच्चे, चाहे वे किसी भी बौद्धिक स्तर के हो, प्रशिक्षित किये जा सकते हैं । शिक्षण/प्रशिक्षण का ध्येय है उन्हें जहाँ तक हो सके स्वावलम्बी बनाना । उनकी आवश्यकतानुसार, मानसिक मंद बच्चों को विभिन्न कौशल में प्रशिक्षित करना चाहिए । उनकी स्वयं की आवश्यकताओं की पूर्ति कर पाने के लिए प्रशिक्षित करना समय की बर्बादी नहीं है ।

अपनी आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ती कर पायें इसके लिए मानसिक मंद बच्चों को प्रशिक्षित करना आवश्यक है ।

17.यदि कोई गर्भवती महिला शराब का सेवन करें तो उसे मोटा और तगड़ा बच्चा पैदा होगा ।

गलत : एक गर्भवती महिला के लिए शराब का सेवन करना खतरनाक हैं, क्योंकि, उसके शरीर के सभी पोषक तत्व, अपसर्जित हो जाते है, जिनकी गर्भ में पल रहें बच्चे को आवश्यकता होती है । पर्याप्त पोषक तत्वो की कमी के कारण गर्भ मे पल रहे बच्चे के मस्तिष्क को क्षति पहुँचती है । गर्भवती महिला द्वारा शराब के सेवन से एक ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है जिसे "फीटल अलकोहल सिन्ड्रोम" कहा जाता है, जिससे बाद में मंद बुद्धि बच्चा पैदा होता है ।

गर्भवती महिला को शराब का सेवन नहीं करना चाहिए ।

18.गर्भावस्था में यदि महिला को कोई गड़बड़ी ,जैसे बुखार हो जाये तो गर्भ में विकसित हो रहें बच्चे के मस्तिष्क को आघात पहुँच सकता है और बच्चा मानसिक मंद हो सकता है ।

सही : गर्भावस्था के प्रथम तीन माह के अन्दर माँ को यदि किसी प्रकार की छूत की बीमारी लग जाय तो, भ्रूण के मस्तिष्क में आघात लग सकता है गर्भवती माँ में छूत के रोग जो भ्रूण को प्रभावित कर सकते हैं, वे हैं : खसरा, जर्मन मीजिल्स, हर्पिस, सिफलिस, तपेदिक आदि । अन्य कारण जो मानसिक मंदता ला सकते हैं, वे हैं : गर्भावस्था में माँ को दौरे आना, एक्सरे, गिर जाने से पेट पर चोट लगना, या बिना डाक्टर की सलाह के अनावश्यक दवाइयाँ लेते रहना ।

गर्भावस्था के कई कारण जैसे बीमारी या संयोग मानसिक मंदता ला सकते हैं ।

19. अपोषकता मानसिक मंदता का कारण बन सकता है ।

सही : यदि एक गर्भवती महिला उचित और सतुलित आहार नही लेती है तो अपेषकता के नाते विकास पा रहें भ्रूण के मस्तिष्क पर आघात लग सकता है । साथ ही बच्चे के शैशवावस्था में कुपोषक आहार स्थायी रूप से मस्तिष्क में आघात के नाते मानसिक मंदता ला सकते है ।

भ्रूण के सामान्य वृद्धि और विकास के लिए गर्भवती माँ को उचित, पोषक और संतुलित आहार लेना आवश्यक है ।

20. कभी-कभी प्रसव काल में दुर्घटना बच्चे के मस्तिष्क में चोट पहुँचा सकती है जिससे मानसिक मंदता हो सकती है ।

सही : प्रसव काल में दुर्घटना, या गड़बड़ी नवजात शिशु के मस्तिष्क को क्षति पहुँचा सकती है । उदाहरण के लिए, अधिक देर तक प्रसव पीड़ा, डाक्टरी औजारों (फोरसेप्स) का गलत प्रयोग, अधिक रक्त स्त्राव, शिशु का श्वास न ले पाना, नाड़ का गले में फंस जाना, आदि कुछ ऐसी अवस्थाए हैं जो मस्तिष्क को क्षति पहुँचा सकती है और मानसिक मंदता हो सकती है ।

प्रसव काल के कई तत्व मानसिक मंदता के कारण बन सकते हैं ।

21. जन्म के बाद 18 साल के पहले की कुछ बीमारियाँ मानसिक मंदता का कारण बन सकती है ।

सहीं : यदि कोई बच्चा तेज बुखार से पीड़ित है, छुआछूत की बीमारी होगई है, दुर्घटना हो गई है, 18 वर्ष की उम्र के पहले इनके अतिरिक्त दौरे आते हों, और इन सब से मस्तिष्क में चोट हो जाए, तो मानसिक मंदता हो सकती है ।

जन्म के बाद की बीमारी से मानसिक मंदता हो सकती है ।

22. मानसिक मंद व्यक्ति का दिमाग व्यस्त रखना आवश्यक है, किस प्रकार का काम या क्रिया है, वह उतने महत्व का नहीं है ।

गलत : मानसिक मद व्यक्ति को व्यस्त रखना आवश्यक है परंतु यह सत्य नही कि, उन्हें किसी भी काम में केवल लगाए रखा जाय । प्रत्येक क्रिया जो उन्हें सिखाई जाय, उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, क्रमिक ढंग से योजनाबाद्ध और चरण दर चरण सिखानी होगी । साथ ही उन्हें क्या सिखाया जाय और कैसे सिखाया जाय, इसके लिए विशेष पद्धतियाँ निश्चित हैं ।

मानसिक मंद बच्चों का शिक्षण व प्रशिक्षण नियमित रूप से वैज्ञानिक पद्धति पर होना चाहिए ।

23. **सभी मानसिक मंद बच्चों को एक ही प्रकार की क्रियाएँ एक ही प्रकार से सिखाई जा सकती हैं ।**

गलत : प्रत्येक मानसिक मंद बच्चा भिन्न है । एक व्यक्ति क्या कर सकता है, क्या नही कर सकता है, दूसरा क्या कर पाएगा, क्या नहीं कर सकेगा, मे भिन्नता होगी ही । अतः मानसिक मंद बच्चे के शिक्षण व प्रशिक्षण कार्यक्रम को उनकी आवश्यकताओं के मूल्यांकन के बाद ही बनाना चाहिए । प्रत्येक बच्चे की आवश्यकता का पूरा पता लगाने के बाद शिक्षक को यह निर्णय लेना है कि, बच्चे को क्या और कैसे सिखाना है ।

प्रत्येक मानसिक मंद बच्चे की आवश्यकतायें भिन्न-भिन्न होती हैं । इसलिए कार्यक्रम बनाते हुये और प्रशिक्षण देते हुए इस बात का ध्यान रखना चाहिए ।

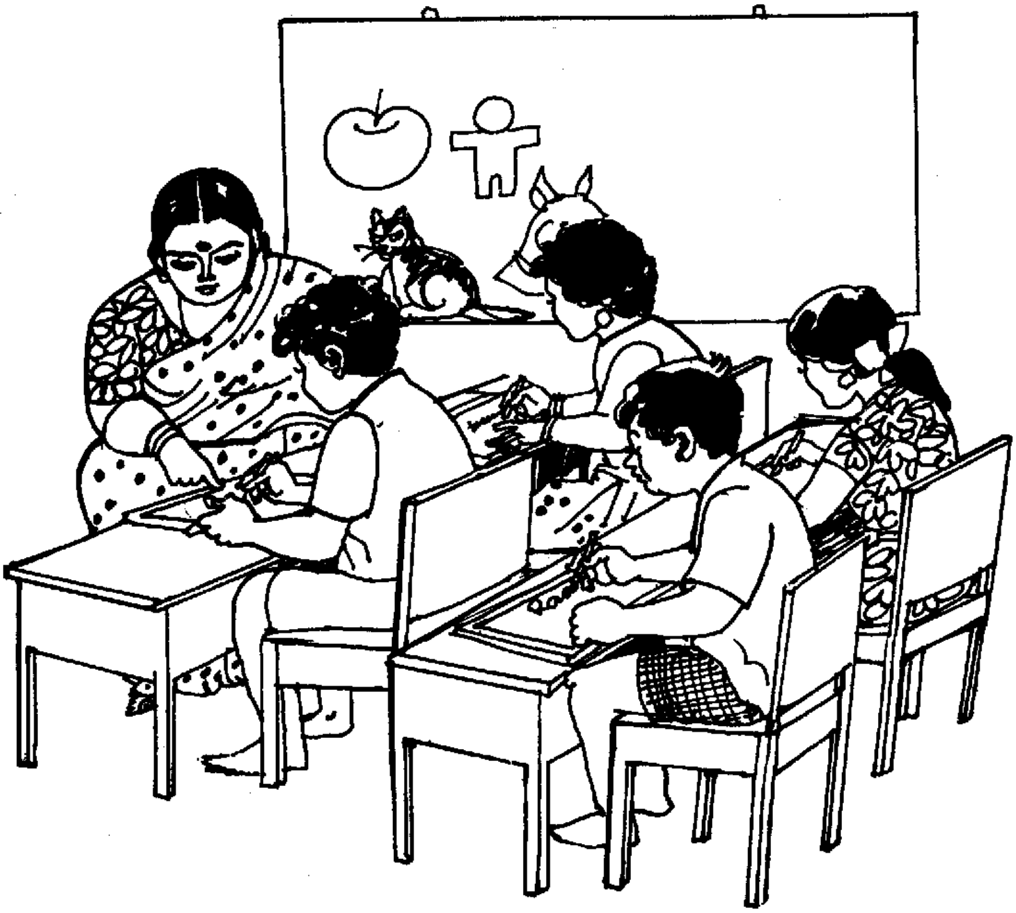

24. सभी मानसिक मंद बच्चों में समस्या व्यवहार, जैसे : शरारतकरना दूसरो को मारना, सर पटकना आदि, होता है, क्योंकि, मानसिक रूप से मंद है ।

गलत : कुछ सामान्य बच्चो की भाँति कुछ मानसिक मंद बच्चों में भी व्यवहार समस्याएँ जैसे : शरारत करना, सिर पटकना, नाखून काटना (दांत से), अन्य को मारना आदि, दिखाई देती है । यह सत्य नहीं है कि, सभी मानसिक मंद बच्चों में समस्या व्यवहार होते हैं । या ये भी सत्य नहीं है कि, समस्या व्यवहार संबंन्धी मानसिक समस्यायें मंदता के कारण ही होती हैं ।

कुछ मानसिक मंद बच्चों में समस्या व्यवहार दिखाई दे सकते हैं ।

25. मानसिक मंद बच्चों के समस्या व्यवहार को व्यवस्थित करने का सबसे अच्छा उपाय है उनसे शान्ति, प्यार भरे वातावरण में बातें करना ।

गलत : मानसिक मंद बच्चों के समस्या व्यवहार को कम करने के लिए केवल प्यार ही काफी नहीं है कुछ और आवश्यक है । समस्या व्यवहारो को कम करने के लिए और वांछनीय व्यवहारों को बढ़ावा देने के लिए कई विशेष पद्धतियाँ हैं । इन पद्धतियों का उपयोग सामान्य और मानसिक मंद दोनो प्रकार के बच्चों के लिए होता है । शिक्षक को इन सभी पद्धतियो की जानकारी होनी चाहिए ।

*समस्या व्यवहारों की **व्यवस्था** वैज्ञानिक क्रमिक ढ़ंग से करनी चाहिए ।*

कार्य अभ्यास - 1

1. मानसिक मंदता एक मानसिक रोग है । सही/गलत

2. मानसिक मंद और सामान्य व्यक्ति में प्रमुख भेद यह है कि, मानसिक मंद व्यक्ति का दिमाग छोटा होता है जबकि, सामान्य व्यक्ति का दिमाग - बृहद होता है । सही/गलत

3. मानसिक मंदता गर्भावस्था अथवा प्रसवकाल के समय ग्रहण के प्रभाव से हो सकती है । सही/गलत

4. मन्दबुद्धिता तो प्रारब्ध का परिणाम है । और यह टाला नहीं जा सकता है । सही/गलत

5. यदि एक गर्भवती स्त्री मानसिक मद बच्चों को पढ़ाती है तो वह मन्दबुद्धि बच्चे को जन्म देगी। सही/गलत

6. मंदबुद्धिता का इलाज हो सकता है । सही/गलत

7. मानसिक मंद व्यक्तियों को क्रियाएँ जैसे : भोजन नहाना, कपडे पहनना, आदि, सिखाना समय गँवाना है, क्योंकि, यह सब हम उनके लिए खुद कर दे तो अधिक समय और शक्ति बचा सकते हैं । सही/गलत

8. जन्म के बाद 18 साल तक होने वाले रोग से मन्दबुद्धिता हो सकती है । सही/गलत

9. सभी मन्दबुद्धि व्यक्तियों को एक ही प्रकार से एक जैसी क्रियाओ को सिखाया जा सकता है । सही/गलत

10. सभी मानसिक मंद बच्चों में समस्या व्यवहार, जैसे : शरारतकरना दूसरो को मारना, सर पटकना आदि, होता है, क्योंकि, वे मानसिक रूप से मंद हैं । सही/गलत

कार्य - अभ्यास - 1
कुंजी

1.	गलत	2.	गलत	3.	गलत	4.	गलत	5.	गलत
6.	गलत	7.	गलत	8.	सही	9.	गलत	10.	गलत

भाग 2
व्यवहार-मूल्यांकन और कार्यक्रम बनाना

व्यवस्थित व्यवहार सुधार योजना बनाने के लिए प्रत्येक मानसिक मंद बच्चे का सही व्यवहार-मूल्यांकन आवश्यक है । जाहे बच्चे को व्यक्तिगत अथवा समूह में सिखाना या हढ़ाना हो, शिक्षक को यह निश्चित करना होगा कि, बच्चे को या बच्चों के समूह को "क्या पढ़ाना है" ।

कोई दो मानसिक मंद बच्चे एक समान नहीं होते है । प्रत्येक बच्चे की अपनी आवश्यकताएँ/कमियाँ और विशिष्टताएँ कुशलताएँ होती है । यह शिक्षक का कर्तव्य बन जाता है कि, बच्चा क्या कर सकता है या क्या नही कर सकता है, इसकी विस्तृत जानकारी एकत्र करे । प्रत्येक मानसिक मंद बच्चे का शिक्षण व प्रशिक्षण उसकी आवश्यकता व स्तर पर ही प्रारम्भ होना चाहिए ।

अध्याय दो निरीक्षणीय और मापे जाने वाले व्यवहारों की व्याख्या करता है । मानसिक मंद बच्चों द्वारा व्यवहार कैसे सीखा जाता है और उनके व्यवहारों के वर्गीकरण को भी उसमें, विस्तार से बताया गया है ।

अध्याय तीन में व्यवहार मूल्यांकन की आवश्यकता एवं विधियों पर प्रकाश ड़ाला गया है । इस अध्याय में एक व्यवहार-मूल्यांकन साधन : "भारतीय मानसिक मंद बच्चों के लिए व्यवहार मूल्यांकन मापदण्ड" (बेसिक-एम.आर) का परिचय भी दिया गया है । इस प्रोजेक्ट के एक भाग के रूप में, व्यवहार मूल्यांकन साधन के प्रयोग का विस्तृत विवरण एक अलग पुस्तक के रूप में विकसित किया गया है ।

अध्याय चार, एक शिक्षक मानसिक मंद बच्चों की प्रशिक्षण योजना किस प्रकार प्रारम्भ करे, इसके बारे में सहायक सिद्ध होगा । इसमें लम्बी अवधि/वार्षिक उद्देश्य और अल्प अवधि के उद्देश्य/व्यवहारिक उद्देश्यों के चयन की आवश्यकताओं और पद्धतियों पर भार डाला गया है ।

शिक्षक से निवेदन है कि, आगे के अध्याय में जाने से पहले इस अध्याय के अन्त में दिये गये अभ्यासों को पूरा कर ले ।

अध्याय दो

मानसिक मंद बच्चों में व्यवहार

इस अध्याय के समापन पर शिक्षक निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम हो सकेंगें :

1. *व्यवहार क्या है ?*
2. *मानसिक मद बच्चो में व्यवहार का वर्गीकरण कैसे किया जाता है ?*
3. *मानसिक मद बच्चो मे व्यवहार कैसे अर्जित किया जाता है या वे व्यवहार कैसे सीखते हैं ?*

व्यवहार क्या है ?

हम अपने दैनिक जीवन में अनेक क्रियाएँ करते रहते है । बैठना, खड़ा होना, चबाना, रोना, कंघी करना, प्रशंसाकरना, निगलना, आदर देना, डरना, पसंद करना, ना पसंद करना आदि । सभी दैनिक क्रियाओं के कुछ उदाहरण है ।

हमारी कुछ क्रियाएँ परोक्ष रूप से देखी जा सकती है जब कि, कुछ को हम सहज रूप से नहीं देख पाएंगे । दूसरे शब्दो में कुछ क्रियायें सीधेदेखी जा सकती हैं जब कि, कुछ क्रियाओं को सीधे नही देखा जा सकता क्यों कि, वे अमूर्त रूप में होती है और उनका मतलब निकाला जा सकता है । उदाहरण के लिए प्रसन्न क्रिया को सीधे नही देखा जा सकता है । इस का मतलब मुस्कान, हँसना जैसे व्यवहारों को देखकर ही निकाला जा सकता है ।

उदाहरण :

देखी जा सकने वाली क्रियायें	न देखी जा सकने वाली क्रियायें
बैठना	प्रसन्न
चलना	आदर
कंघी करना	ना पसंद
लिखना	पसंद

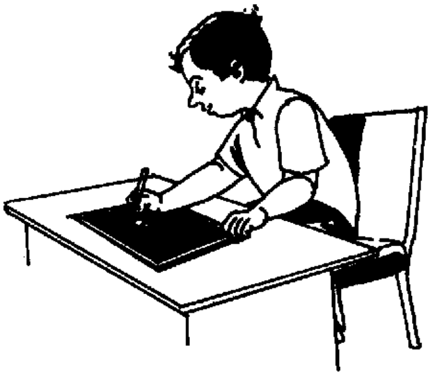

हमारी कुछ क्रियाएँ प्रत्यक्ष या स्पष्ट रूप से मापी जा सकती है जब कि, कुछ को हम स्पष्ट रूप से माप नहीं पाएंगे । दूसरे शब्दों में कुछ क्रियाओं को हम सीधे आंकड़ों में रख पाएंगे। हम कह सकेंगे कि, एक क्रिया या व्यवहार कितनी बार या कितने समय तक किया गया, या हुआ । जब इस प्रकार से कोई क्रिया या व्यवहार आंकड़ों में रखा जा सके तो हम कहेंगे कि, उसे मापा जा सकता है । (सभी व्यवहार मापनीय हैं) ।

ऊपर दिए गए उदाहरणों में से देखे जाने वाले व्यवहारों को मापा जा सकता है। जैसे बालक "तीन बार बैठता है", "दस बार कंघी कर पाता है", "पाँच मिनट तक चबाता है" आदि। जब कि, न देखी जा सकने वाली क्रियाओं को मापना इतना सम्भव नहीं है। सारांश यह हुआ कि, व्यवहारों को देखा और मापा जा सकता है ।

सभी व्यवहार देखे और मापे जा सकते है।

मानसिक मंद बच्चों में व्यवहारों का वर्गीकरण

मानसिक मंद बच्चों के प्रायः सभी व्यवहारों को दो भागों में बांटा जा सकता है :

अ. कौशल - व्यवहार
ब. समस्या - व्यवहार

कौशल - व्यवहार

मानसिक रूप से मंद प्रायः सभी बच्चे कुछ कौशल व्यवहार में कमजोर दिखाई देते हैं । इसका अर्थ यह है कि, ऐसे बच्चे उन कार्यों को या तो नहीं कर पाते या ठीक ढ़ग से नहीं कर पाते, जिन्हें उन्हीं के उम्र के सामान्य बच्चे आसानी से कर लेते हैं । एक मानसिक रूप से मंद बच्चे की क्रिया कलापों को न कर पाना कई बातों पर निर्भर करता है जैसे-मानसिक मंदता की दशा की गहनता, प्रशिक्षण के अवसर, अन्य सबन्धित अवस्थाएँ आदि । सरलता से समझने के विभिन्न कौशल व्यवहारों को मुख्यतः निम्न वर्गों में वर्गीकृत किया गया है ।

1. गामक या प्रेरक कुशलताएँ

उदाहरण : दौड़ना, फुदकना, कूदना, ऊपर नीचे सीढ़ियों पर चढ़ना उतरना... साईकिल चलाना, बोतल का ढक्कन खोलना, तरल पदार्थ को बिना बाहर गिराते हुये एक बर्तन से दूसरे बर्तन में उँडेलना आदि ।

2. दैनिक जीवन के क्रिया-कलाप : इनमें आते हैं,

क) भोजन करने का कौशल :

उदाहरण : कप या गिलास से तरल पदार्थ पी लेना, अपने हाथों से खाना, खाना मिलाना आदि ।

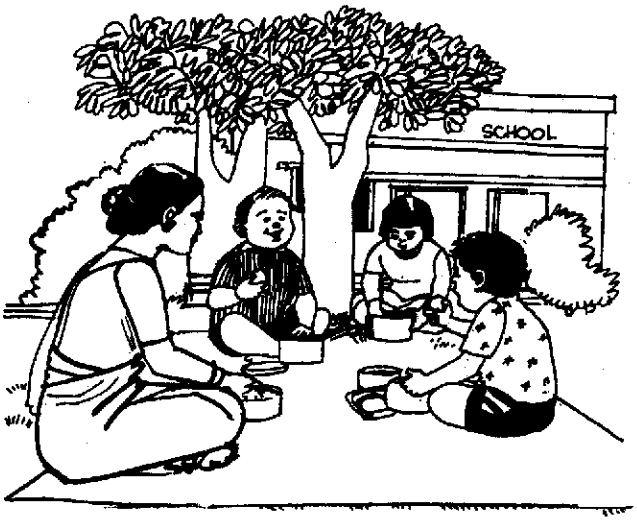

ख. शौचादि-कौशल :

उदाहरण : शौचादि आवश्यकताओं को बता पाना, अपने आप शौचालय में जाना, अपने आप को साफ कर लेना, आदि।

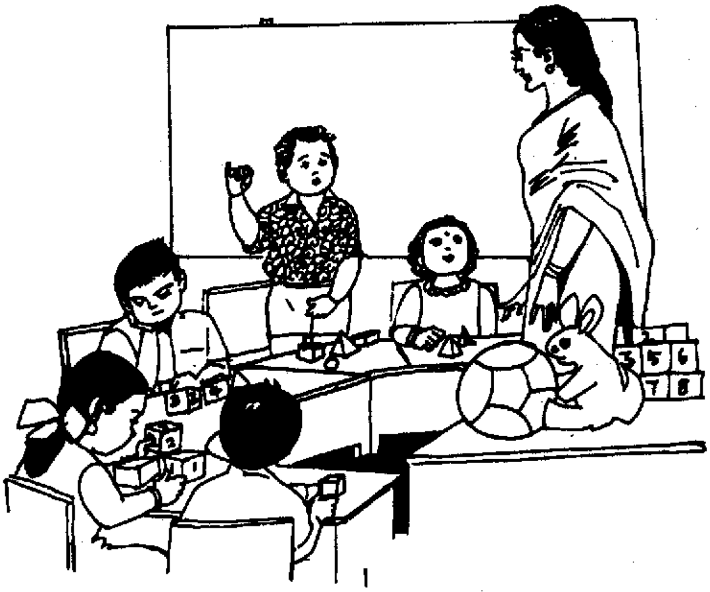

ग. दांत साफ करने की कुशलता :

उदाहरण : दातुन या ब्रश कर पाना, थूंक लेना, मुँह धो लेना, आदि ।

घ) नहाने का कौशल :

उदाहरण : बदन पर पानी डालना, बदन रगड़ कर धो लेना, मुँह साबुन से धो लेना आदि ।

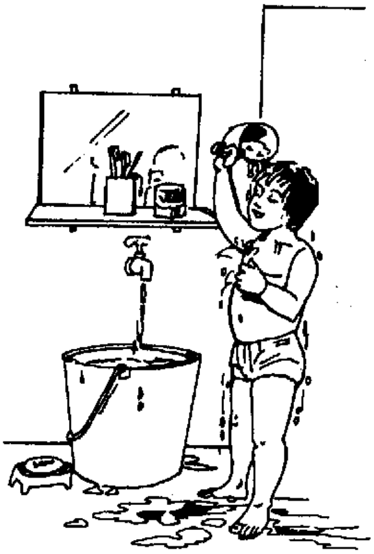

ङ) पोशाक पहनने का कौशल :

उदाहरण : अपने आप कपड़े उतार पाना, कपड़े पहन लेना, बटन लगाना, बटन निकालना आदि ।

च) बनाव श्रृंगार करने की कुशलता :
उदाहरण : पावडर लगाना, बाल बनाना, नाखून काटना, आदि।

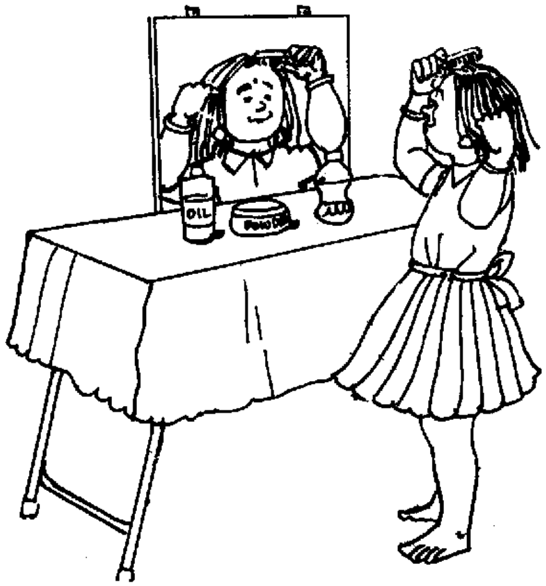

3. भाषा-कौशल : इसमें आता है,
क. ग्राही भाषा की कुशलता :
उदाहरण : पूछने पर तस्वीरों को बताना, कहानी सुनने के बाद तस्वीरों को क्रम में लगाना, आदि ।

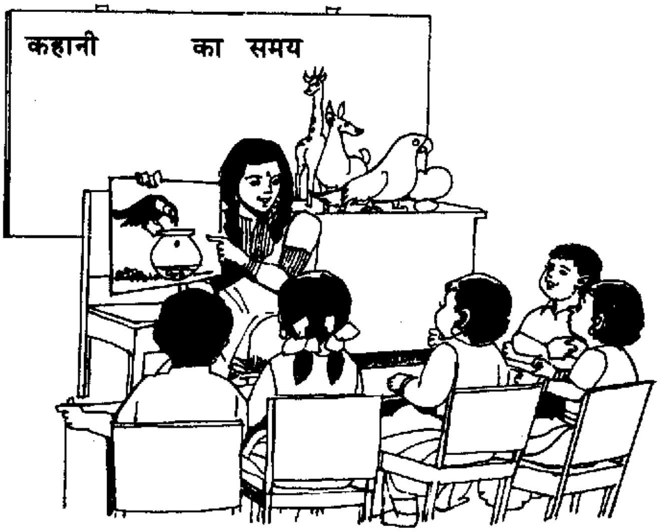

ख. अभिव्यंजक भाषा की कुशलता :

उदाहरण : दो शब्दों को मिलाकर बोलना, प्रयोग में आने वाली वस्तुओं का नाम बताना आदि ।

4. पढ़ने - लिखने की कुशलताएँ

उदाहरण :

अपना नाम पढ़ लेना, सैट किये गये शब्द पढ़ना, पैसिल या चॉक से लकीरें बनाना, अपना नाम, पता, लिखना, आदि ।

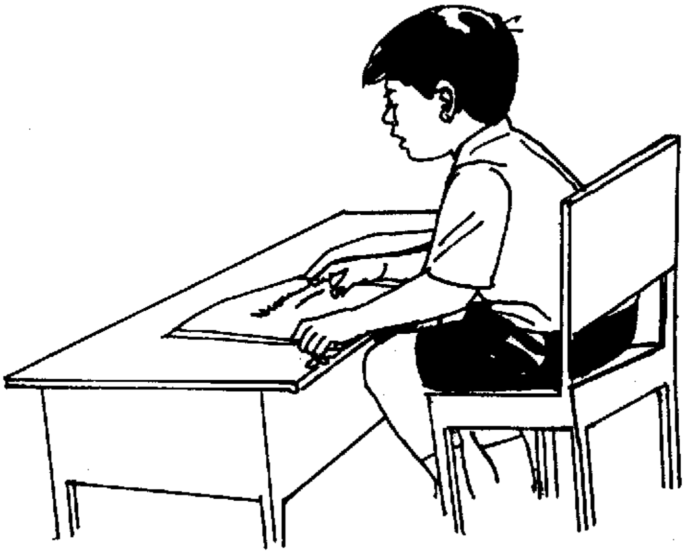

5. **अंक ज्ञान व समय :**

उदाहरण : 1 से 5 तक गिनना, लिखे हुऐ अकों को पहचानना, पाँच वस्तुओं को गिनना, एक अंक वाले जोड़ को कर पाना, घड़ी पर नम्बर पहचानना दिन, महीना, तारीख और साल को पहचानना आदि ।

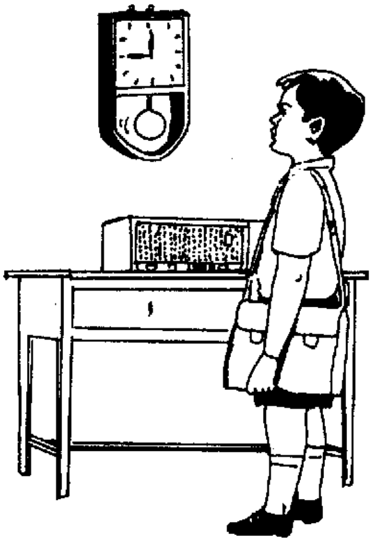

6. **घरेलू-सामाजिक कुशलताएँ :**

उदाहरण : बर्तन धोना, कपड़े सुखाना, 'मेहमानों का स्वागत करना, कृपया, धन्यवाद कहना आदि ।

7. पूर्व व्यवसाय - कुशलतायें, एवं पैसे :

उदाहरण : सामान्य रूप से कढ़ाई करना, स्क्रू ड्रैवर इस्तेमाल करना, सिक्कों के मूल्य को जानना, पैसों का लेन-देन करना ।

ब. समस्या- व्यवहार :

मानसिक रूप से मंद बच्चे कभी ऐसे व्यवहार दिखाते हैं या करते हैं जिन्हें समस्यापूर्ण कहा जाता है । कारण यह है कि, ऐसे व्यवहार उन बच्चों या उनके साथ के अन्य बच्चों को नुकसान या हानि पहुँचाते हैं, अड़चने पैदा करते हैं, या काम करने मे बाधा पहुँचाते है । ऐसे व्यवहार शिक्षक को तनाव में डाल देते हैं शिक्षण कार्य में बाधाएँ पहुँचाते रहते हैं । इन समस्या-व्यवहारों के कई कारण हो सकते है । व्यवहारिक दृष्टिकोण से इस प्रकार की समस्यायें बातचीत के कौशल, परिज्ञानशील कौशल और समस्या समाधान कौशल की कमी के कारण हो सकते हैं । ये बच्चे के वातावरण में लोगों द्वारा गलत प्रकार के बर्ताव के कारण भी हो सकते हैं ।

मानसिक रूप से मंद बच्चों मे देखे जाने वाले समस्या-व्यवहारों को विभिन्न वर्गों में बांटा जा सकता है, और वो हैं ।

1. **उग्र और विनाशक व्यवहार :**
   उदाहरण : किताब फाड़ना, वस्तुओं को तोड़ना और फेंकना, आदि ।

2. **चिड़चिड़ापन और झल्लाहट :**
   उदाहरण : चिल्लाना, चीखना, जोर से रोना, आदि ।

3. दूसरों के साथ दुर्व्यवहार :

उदाहरण : दूसरों की चीज़े खींचना, दूसरों पर थूकना, आदि ।

4. स्वयं-घातक व्यवहार :

उदाहरण : सिर पछाड़ना, अपने को नोचना, खुदके बाल खींचना खुद को कांटना, अपनी चोट से छिलका निकालना, आदि ।

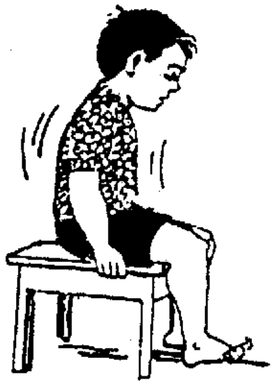

5. पुनरावृति - व्यवहार :

उदाहरण : शरीर हिलाना, सिर हिलाना, शरीर के भाग हिलाते रहना, आदि ।

6. अनोखा व्यवहार :

उदाहरण : बिना कारण अपने आप से बोलना, हँसना, कूड़ा इकट्ठा करना, आदि ।

7. अतिचंचलता :

उदाहरण : अपेक्षित समय तक एक स्थान पर न बैठे रहना, काम को पूरा न कर पाना, आदि ।

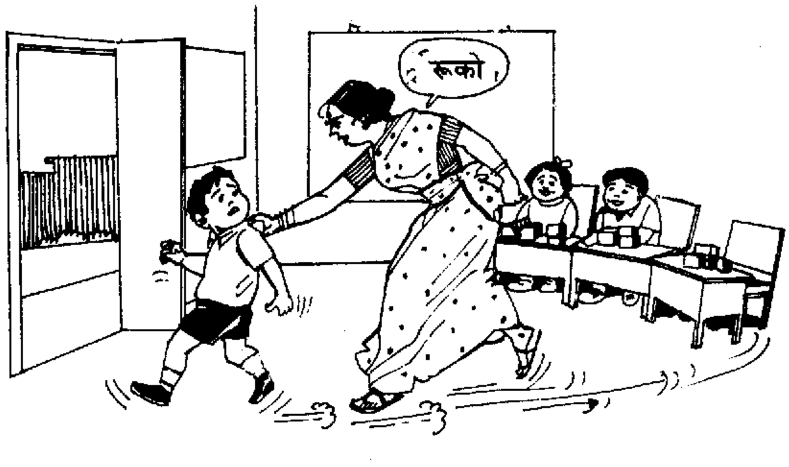

6. अनोखा व्यवहार :

उदाहरण : बिना कारण अपने आप से बोलना, हँसना, कूड़ा इकट्ठा करना, आदि ।

7. अतिचंचलता :

उदाहरण : अपेक्षित समय तक एक स्थान पर न बैठे रहना, काम को पूरा न कर पाना, आदि ।

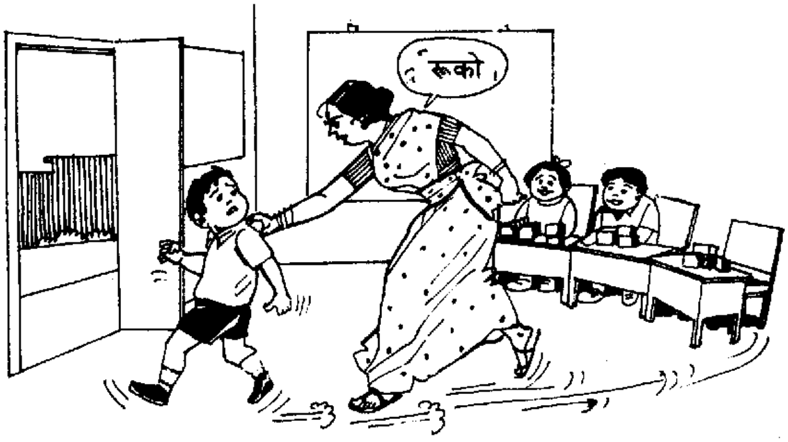

8. विद्रोही - व्यवहार :

उदाहरण : कहना न मानना, उल्टा ही करना, आदि ।

5. असामाजिक - व्यवहार:

उदाहरण : चोरी करना, खेल में धोखा देना, झूठ बोलना, दूसरों को दोषी ठहराना, आदि ।

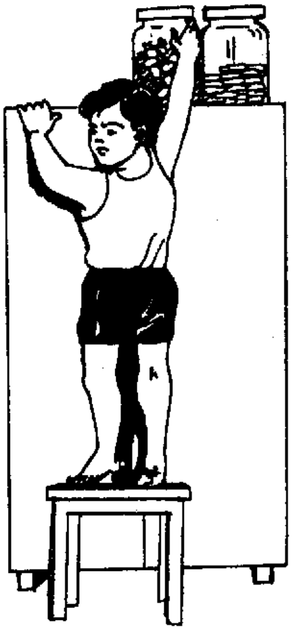

10. भय :
स्थान, व्यक्ति, जानवर अथवा वस्तुओं से डरना ।

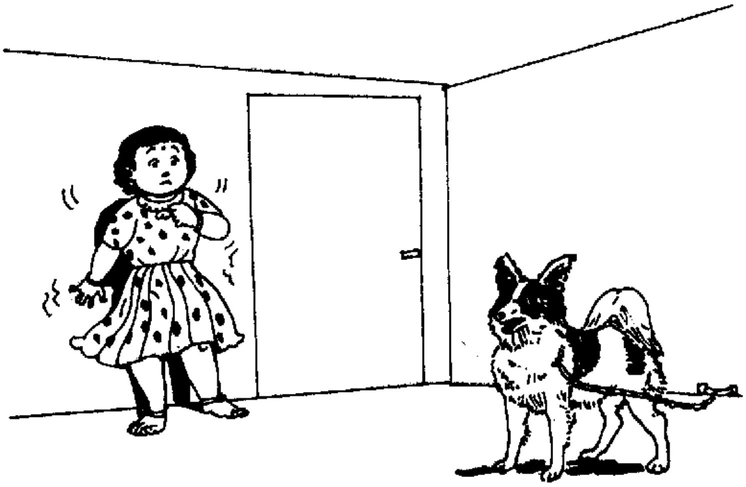

संक्षेप में-मानसिक मंद बच्चो के व्यवहार को दो प्रमुख भागों में बाँटा जा सकता है, कौशल-व्यवहार और-समस्या व्यवहार ।

व्यवहार कैसे अर्जित किए जाते हैं

इस अध्याय के पिछले भागों में जैसा कि, बताया गया है, "व्यवहार" शब्द केवल उन्ही क्रियाकलापों के सम्बन्ध में प्रयुक्त होता है जिन्हें देखा और मापा जा सकता है । इस संबन्ध में हम उन व्यवहारो पर विचार नही करेंगे जिन्हें देखा और मापा न जा सकता हो, जैसे गुस्सा करना, दु ःखी रहना, सोचना आदि ।

जब हम व्यवहार अर्जित करने की बात करते है तो उन्ही व्यवहारों के विषय में ध्यान देते है जिन्हें देखा और मापा जा सकता हो ।

उदाहरण :

सुनीता एक आठ वर्ष की मानसिक रूप से मंद बालिका है । जब भी वह एक तस्वीर को दिखाते हुए सही रूप मे "केला" की संज्ञा देती है तो उसकी शिक्षिका उसकी पीठ थपथराते हुए शाबास और अच्छा कहती है । सुनीता को यह अच्छा लगता है, जब उसकी शिक्षिका उसकी पीट थपथपाती और "अच्छा" कहती है । सुनीता "केला" कहना सीख जाती है जिससे उसे उसकी शिक्षिका से प्रशंसा मिलाती रहें, जो उसे अच्छा लगता है ।

उदाहरण :

अमित, एक दूसरा मानसिक रूप से मंद बालक, अपनी उँची आवाज में रोता और चिल्लाता है। उसकी शिक्षिका उसे चुप रहने के लिए एक खिलौना दे देती है । अमित को वह खिलौना अच्छा लगता है । अब अमित को जब भी खिलौना लेना होता है तो अपनी उँची आवाज मे रोता और चिल्लाता ह और उसका मनपसंद खिलौना उसे मिल जाता है । इस प्रकार अमित ने रोना सीख लिया ।

कौशल व्यवहार और समस्या व्यवहार दोनों ही सीखे जाते ह ।

बच्चों के अधिकतर व्यवहार सीखे जाते हैं ।

सुनिता "केला" कहना सीख जाती है क्योंकि, हर बार उसके इस प्रयास को आनन्ददाई फल अपनी शिक्षिका से "शाबास" और "अच्छा" के रूप में मिलता रहा ।

अमित ने अपने पूरे जोर के साथ और चिल्लाना सीख लिया क्यों कि, हर बार उसे आनन्ददाई वस्तु "खिलौना" मिलता रहा । अत: यह कहा जा सकता है कि, :

व्यवहार जिसके तुरंत बाद आनन्ददाई प्रतिफल मिल जाता है वह दुहराया जाता है और इस प्रक्रिया में वह व्यवहार सीख लिया जाता है ।

संक्षेप में : आनन्ददाई परिणाम के बार बार घटित होने से व्यवहार सीखे जाते है ।

व्यवहार जिनके तुरंत बाद सुखद परिणाम मिलते रहते हैं, सिखे जाते हैं ।

उदाहरण :

कमला एक 9 वर्ष की मानसिक मंद बालिका है । शिक्षक जब भी उसे कोई पजल (खिलौना) सुलझाने के लिए देते हैं तो वह उसे फेंक देती है । कमला को पज़ल अच्छे नहीं लगते हैं । तब शिक्षक उसे कोई दूसरा खिलौना खेलने के लिए देते हैं । उदाहरण से यह मालूम होता है कि, कमला अपनी नापसंद वस्तु (पजल) को फेकना सीख जाती है इस व्यवहार से उसे दुखदाई प्रतिफल (ऐसी चीज जिसे वह करना नही चाहती है) करने से छुटकारा मिल जाता है ।

कभी-कभी अच्छे भी व्यवहार सीखे जाते हैं जिससे दुखदाई परिणामों से बचा जा सकें। उदाहरण के लिए-हम सर्दी से बचने के लिए स्वेटर पहनते हैं बारिश से बचने के लिए छत्री लेते है, गर्मी से बचने के लिए कूलर का प्रयोग करते हैं, अध्यापक के दण्ड से बचने के लिए पढ़ाई करते हैं ।

बच्चे कुछ व्यवहार दुःखदाई परिणामों से बचने के लिये सीखते हैं ।

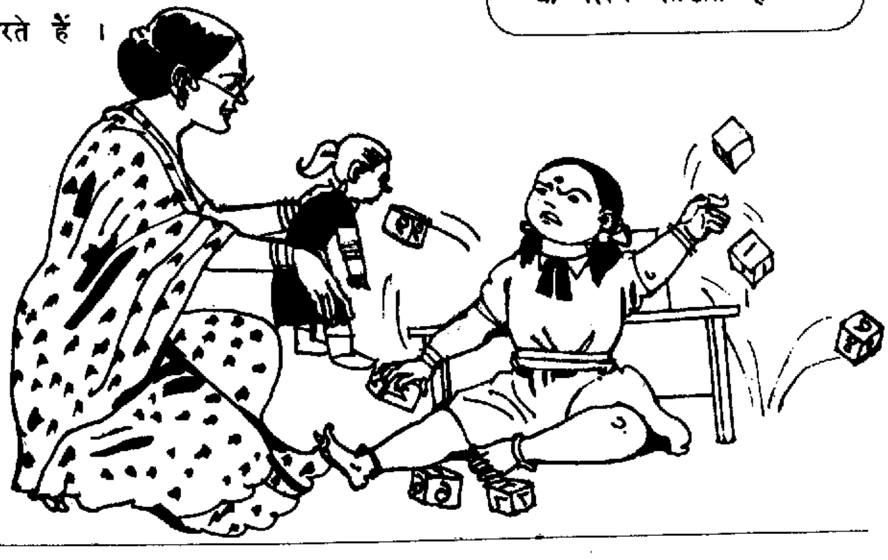

हमने देखा अमित ने अपने पूरे जोर से रोना और चिल्लाना सीख लिया । अब शिक्षिका उस समस्या व्यवहार मे परिवर्तन लाना चाहती है । वह अमित को जोर से रोने पर खिलौना देना बन्द कर देती है । जब भी अमित अपने पूरे जोर से चिल्लाता और रोता है तो शिक्षिका उसके इस व्यवहार की ओर ध्यान नहीं देती है । इसके विपरीत जब अमित चुप और शांत रहता है तो शिक्षिका उसे खिलौना देती है । इस प्रकार अमित अपने समस्या व्यवहार, जिसे उसने सीखा था, वो भूल जाता है ।

इसी प्रकार दुखदाई परिणाम से बचने के लिए कमला ने पजल फेंकना सीख लिया । उसकी शिक्षिका इस समस्या व्यवहार को बदलना चाहती है । शिक्षिका ने निश्चय किया कि, जितनी बार और जब भी कमला वस्तु फेंकेगी, तुरंत उसी से उन वस्तुओं (पज़ल) को उठवायेंगी । साथही उसी से पूरी कक्षा की वस्तुओं

को उठाकर कक्षा साफ कराएंगी । ऐसा करवाने से कमला ने अपने पहले सीखे व्यवहार (फेंकने का) को भूला दिया ।

बच्चों के अनेक व्यवहार भुलवाए जा सकते हैं ।

इसी प्रकार बच्चो के किसी व्यवहार में पारिवर्तन लाया जा सकता है, भुलवाया जा सकता है ।

अमित अपने पूरे जोर से रोना और चिल्लाना भूल जाता है जब हर बार उसकी शिक्षिका उस पर ध्यान नहीं देती और खिलौना नही देती । कमला भी अपना पजल फेंकने का व्यवहार भूल जाती है जब हर बार उसे दुखद अनुभव के रूप में एक कठिन काम, पूरी कक्षा को साफ करना पड़ता है । साथ ही उसे पजल भी पूरा करना पड़ता है ।

व्यवहार जिनके तुरंत बाद दुखद परिणाम मिलते हैं, भुला दिए जाते हैं ।

इस प्रकार व्यवहार जिनके तुरंत बाद परिणाम मिलते हैं, और फलस्वरूप दुहराये नही जा पाते, भूल जाते है ।

संक्षेप में, किसी भी व्यवहार के दुखद परिणाम स्वरूप वे व्यवहार भुला दिए जाते हैं ।

उदाहरण :

रघु एक 12 साल का मानसिक रूप से मंद बालक अपने स्कूल के क्रीड़ा के समय अन्य बच्चों को धक्का देता है या गिरा देता हैं । इस समस्या व्यवहार को शिक्षक सुधारना चाहते हैं । शिक्षक जानते हैं कि, रघु अन्य बच्चों के साथ खेलना पसंद करता है । स्कूल के प्रत्येक खेल में भाग लेना उसे बहुत प्यारा लगता है । शिक्षक ने निश्चय किया कि, जब भी रघु किसी बच्चे को धक्का दे या गिराये उसे खेल के मैदान से दो मिनट के लिए बाहर कर दें । बाहर खड़े वह केवल बच्चो को खेलता देख सकता है, उसे खेल मे किसी प्रकार से हिस्सा नही दिया जाएगा ।

खेल में कुछ देर लिए हिस्सा नही पाने का परिणाम यह निकला कि, रघु को सुखद परिणाम से वंचित किया गया । ऐसा प्रत्येक बार करते रहने से रघु अन्य बच्चों को धक्का देना या गिराने के व्यवहार को भूल गया ।

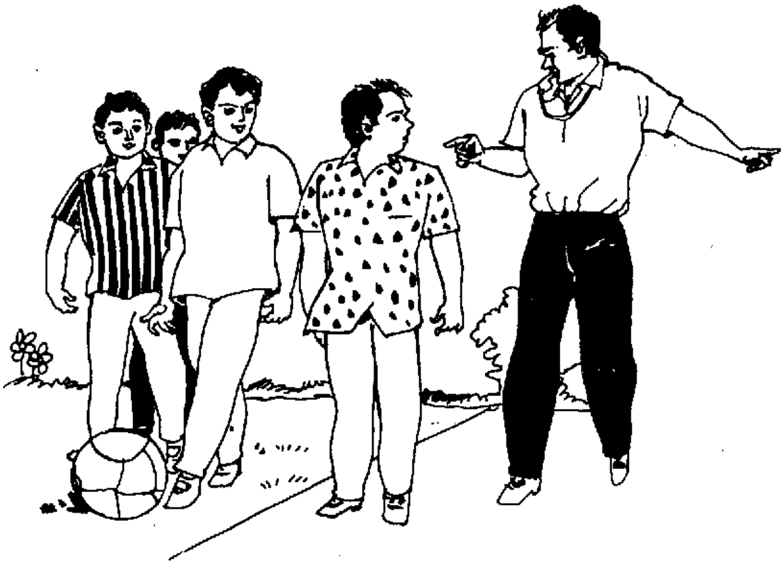

इस प्रकार,
व्यवहार जिसके परिणाम स्वरूप सुख से वंचित हुआ जाय, उसे दोहराया नही जाता है और इसी प्रकार भुला दिया जाता है या भूल जाता है ।

सक्षेप में,
व्यवहार के सुखदायी परिणाम के गायब हो जाने या न मिलने से व्यवहार में परिवर्तन हो जाता है या व्यवहार भुला दिया जाता है ।

बच्चो में व्यवहारो को सीखने या भुला देने या परिवर्तित करने के कई तरीके हैं । साथ ही कुछ ऐसे विशेष तरीके बताए गए है । जिनसे निश्चित किया जा सकता है कि, एक व्यक्ति या एक परिस्थिति मे सीखा गया व्यवहार अन्य उसी प्रकार की सभी परिस्थितियो और व्यक्तियों के साथ सीखा और किया जा सकता है ।

सुखदायी परिणाम के हटा दिए जाने से व्यवहार भुला दिए जाते हैं ।

सारांश

1) बच्चों में अधिकतर व्यवहार सीखे जाते हैं ।

2) कौशल-व्यवहार और समस्या-व्यवहार दोनों ही सीखे जाते हैं ।

3) जिन व्यवहारों के तुरंत बाद सुखद परिणाम मिलते हैं, वे सीखे जाते हैं ।

4) अन्य व्यवहारो या परिस्थितियों से संबधित दुखद परिणामों से बचने के लिए भी व्यवहार सीखे जाते हैं ।

5) बच्चों मे किसी भी सीखे व्यवहार को भुलाया या परिवर्तित किया जा सकता है ।

6) व्यवहार जिनके परिणाम दुखदाई होते हैं, भुलाए जाते हैं ।

7) यदि किसी व्यवहार से सुखद परिणाम से वंचित होना पड़े तो वह व्यवहार भुलाया जाता है।

कार्य अभ्यास भाग 2

I. *यहाँ पर क्रियाओं की एक ऐसी सूची दी जा रही है, जिन्हें दैनिक जीवन में हम सब लोग करते है । इनमें से कुछ क्रियाएँ प्रत्यक्ष रूप से देखी और मापी जा सकती है और कुछ नहीं । प्रत्यक्ष रूप से देखी और मापी जाने वाली क्रियाओं पर (✓) निशान लगाएं और प्रत्यक्ष रूप से देखी और मापी न जाने वाली क्रियाओं पर (×) निशान लगाएं।*

_______ 1. ब्रश करता है ।
_______ 2. प्रसन्न होता है ।
_______ 3. समझता है ।
_______ 4. विचार करता है ।
_______ 5. चित्र बनाता है
_______ 6. इशारा करता है ।
_______ 7. रोता है ।
_______ 8. देखता है ।
_______ 9. खाता है ।
_______ 10. लिखता है ।
_______ 11. जानता है ।
_______ 12. खीचता है ।
_______ 13. पीटता है ।
_______ 14. दौड़ता है ।
_______ 15. सुनता है ।
_______ 16. खोलता है ।
_______ 17. नाचता है ।
_______ 18. उठाता है ।
_______ 19. हंसता है ।
_______ 20. पकड़ता है ।
_______ 21. सावधानी बरतता है ।
_______ 22. की क्षमता है ।
_______ 23. कूदता है ।
_______ 24. चलता है ।
_______ 25. बोलता है ।
_______ 26. जमाता है ।
_______ 27. से अवगत है ।
_______ 28. धक्का देता है ।
_______ 29. डरता है ।
_______ 30. पीता है ।
_______ 31. कल्पना करता है ।
_______ 32. सवारी करता है ।

नीचे ऐसे कथनों की एक सूची दी जा रही है जिसमें व्यक्तियों की क्रियाएं दर्शायी गई है। इनको सावधानी पूर्वक पढ़िये और ऐसे कथनो पर (✓) का निशान लगाइये जो देखी और मापी जा सकती हों और ऐसी क्रियाओं पर (×) निशान लगाइये जिनको देखा और मापा न जा सकता हों ।

_______ 1. सुरेश गिलास मे पानी डालता है ।
_______ 2. रानी बालो में कंधी करती है ।
_______ 3. मिनी एक से दस तक की गिनती जानती है ।
_______ 4. राधा अपने अध्यापक की आज्ञाओं का पालन करती है ।

________ 5. रामू संगीत के पाठों को पसंद नही करता ।

________ 6. संदीप तालियाँ बजाता है ।

________ 7. रेखा फर्श पर अपना सिर पटकती है ।

________ 8. रवि कक्षा में बेंच के ऊपर चढ़ता है ।

________ 9. पद्मा गुड़िया फेंकती है ।

________ 10. गीता मेहमानों के सामने बेवकूफी भरी हरकतें करती है ।

________ 11. अनुराधा कक्षा मे अति चंचल है ।

________ 12. रशीद कक्षा में कोई काम शुरु करने में दस मिनट लेता है ।

________ 13. श्रीधर को कक्षा के साथियों से हमेशा परेशानी होती है ।

________ 14. अकरम सुस्त है ।

________ 15. राहुल जब घर पर होता है तो झल्लाया रहता है ।

________ 16. अशोक इंटरवल में मेजों पर कूदता है ।

________ 17. राजू कक्षाये चलते समय अपना खाने का डिब्बा खोलता है ।

________ 18. श्रीकांत, जब बच्चे खेलते है तो, अपनी दुनिया में खोया रहता है ।

________ 19. मजीद स्वार्थी और बिगड़ा हुआ बच्चा है ।

________ 20. शशि हिलती डुलती रहती है ।

निम्नलिखित को विभिन्न कौशल-व्यवहारों की श्रेणी में विभाजित करें :

1. खाद्य को निगल लेता है ( )
2. रस्सी कूदता है ( )
3. नर्सरी कविताएँ कहता है ( )
4. फर्श घसता है ( )
5. पता लिखता है ( )
6. फूट के पटरे पर चल लेता है ( )
7. यातायात के नियम जानता है ( )
8. अपना नाम पढ़ लेता है ( )
9. घर के आस-पास सहजता से चला जाता है ( )
10. शौचादि के लिए संकेत करता है ( )

नीचे दी गई समस्यामूलक व्यवहारों को विभिन्न श्रेणियों में बाँटिये :

1. बाल खीचना ( )
2. अत्यधिक रोना ( )
3. अंगूठा चूसना ( )
4. कुर्सी मेजों के ऊपर कूदना ( )
5. दूसरों को काटना ( )
6. अपने आप बातें करना ( )
7. चोरी करना ( )
8. कुत्ते से डरना ( )
9. स्कूल से निकलकर बाहर घूमना ( )
10. दूसरों के डिब्बों से खाना खा लेना ( )

नीचे हर एक कथन के पाँच वैकल्पिक उत्तर दिये गए हैं/ उनमें से सही उत्तर छांटिये :

1. बच्चो में अधिकांश व्यवहार अर्जित (बाद में अपनाए गए) होते है :
   - क) जन्म से
   - ख) वंशानुगत कारणो से
   - ग) भाग्य से
   - घ) सीखने से
   - ङ) उपरोक्त सभी से
2. जब अमर अपना नाम लिखने से इंकार करता है तो अध्यापक उसको खेलने के लिए खिलौना देते हैं । ऐसा करने से अमर के लिखने के व्यवहार को क्या होसकता है ?
   - क) अमर जल्दी खिलौने से खेलना सीखेगा ।
   - ख) एक या दो बार खिलौने से खेलने के बाद अमर अपना नाम लिखना सीखेगा।
   - ग) अमर खिलौना पाने के लिए अपना नाम लिखना इंकार करना शीघ्र सीखेगा ।
   - घ) अमर अपना नाम लिखना कभी नही सीखेगा ।
   - ङ) उपरोक्त सभी गलत हैं ।
3. रवि को कक्षा में बैठना अच्छा नही लगता और वह इधर-उधर घूमना पसंद करता है। अगर कक्षा मे बैठता है तो दूसरे बच्चो की चीजें छिनता है और इसके लिए अध्यापक उसको कक्षा से बाहर कर देते हैं । इस से रवि के छीनने के व्यवहार को क्या होगा ?
   - क) रवि जल्दी दूसरे बच्चो की चीजें छिनना बन्द करना सीख जाएगा ।
   - ख) रवि इस भय से कि, उसको कक्षा से बाहर कर दिया जाएगा, चुप बैठना सीख जाएगा ।
   - ग) रवि पहले से भी ज्यादा दूसरों की चीजें छिनना सीख जाएगा ।
   - घ) रवि को कक्षा से बाहर करके अध्यापक को कक्षा में रवि के दुर्व्यवहार से छुटकारा मिल जाएगा ।
   - ङ) उपरोक्त सभी गलत है ।

4. जब कोई बच्चा कुछ व्यवहार आर्जित कर ले या अपना लें तो :

क) वे कभी नहीं बदल सकते ।

ख) वे बदल सकते हैं ।

ग) वे अस्थायी तौर पर बदल सकते है ।

घ) केवल कुछ व्यवहार बदल सकते है ।

ङ) उपरोक्त सभी गलत हैं ।

5. राधा को अपनी कक्षा के बच्चों के सामने अध्यापक का डांटना पसंद नहीं है जब भी राधा कढ़ाई का काम सीखने से मना करती है तो अध्यापक उसको डांटते हैं । इसमें राधा के कढ़ाई व्यवहार को क्या होगा ?

क) राधा कढ़ाई का काम सीखना शुरु कर देगी ।

ख) राधा कढ़ाई का काम कभी नहीं सीखेगी ।

ग) राधा रोना शुरु करेगी ।

घ) उसकी कक्षा के बच्चे राधा का मखौल उड़ाएंगे ।

ङ) उपरोक्त सभी गलत हैं ।

6. कक्षा के सभी बच्चे टेपरेकॉर्डर से गाना सुनना पसंद करते है । एक छात्रा, विद्या, कक्षा मे टेपरेकॉर्डर के साथ छेड़ छाड़ करती है । विद्या को संगीत की कक्षा से उसके अध्यापक उसे एक घंटे के लिए बाहर कर देते है । इसमें विद्या के छेड़-छाड़ व्यवहार को क्या होगा ?

क) विद्या टेपरेकॉर्डर के साथ और अधिक बार छेड़ छाड़ करना सीख जाएगी ।

ख) दूसरे बच्चे शांति के साथ संगीत सुनना सीखेंगे ।

ग) टेपरेकॉर्डर खराब हो सकता है ।

घ) विद्या टेपरेकॉर्डर के साथ छेड़ छाड़ न करना सीख जाएगी ।

ङ) उपरोक्त सभी गलत है ।

कार्य अभ्यास - 2
कुंजी

I.	1) सही	2) गलत	3) गलत	4) गलत	5) सही	6) सही	7) सही
	8) सही	9) सही	10) सही	11) गलत	12) सही	13) सही	14) सही
	15) गलत	16) सही	17) सही	18) सही	19) सही	20) सही	21) गलत
	22) गलत	23) सही	24) सही	25) सही	26) सही	27) गलत	28) सही
	29) सही	30) सही	31) गलत	32) सही			

II.	1) सही	2) सही	3) गलत	4) गलत	5) गलत	6) सही	7) सही
	8) सही	9) सही	10) गलत	11) गलत	12) सही	13) गलत	14) गलत
	15) गलत	16) सही	17) सही	18) गलत	19) गलत	20) सही	

III.	1) भोजन करने का कौशल	2) गामक कौशल	3) ग्राही भाषा का कौशल
	4) घरेलू	5) लिखना	6) गामक कौशल
	7) सामाजिक	8) पढ़ने का कौशल	9) सामाजिक कौशल
	10) शौचादि		

IV.	1) उग्र और विनाशक	2) चिडचिडापन	3) पुनरावृति
	4) अति चचलता	5) स्वयं घातक व्यवहार	6) अनोखा व्यवहार
	7) असामाजिक व्यवहार	8) भय	9) विद्रोही व्यवहार
	10) दूसरो के साथ दुर्व्यवहार		

V.	1) घ	2) ग	3) ग	4) ख	5) क	6) घ

अध्याय तीन

व्यवहार मूल्यांकन

इस अध्याय के समापन पर शिक्षक निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दे पाने में सक्षम होसकेगें ।

1. व्यवहार मूल्यांकन क्या है ?

2. व्यवहार मूल्यांकन क्यों किया जाता है ?

3. व्यवहार मूल्यांकन किस प्रकार किया जाता है ?

अध्याय तीन

व्यवहार मूल्यांकन

इस अध्याय के समापन पर शिक्षक निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दे पाने में सक्षम होसकेंगें ।

1. *व्यवहार मूल्यांकन क्या है ?*

2. *व्यवहार मूल्यांकन क्यों किया जाता है ?*

3. *व्यवहार मूल्यांकन किस प्रकार किया जाता है ?*

व्यवहार मूल्यांकन क्या है ?

मानसिक मंद बच्चे को क्या सिखाना है इसका निर्णय लेने के पहले एक विस्तृत व्यवहार मूल्यांकन आवश्यक है । व्यवहार मूल्यांकन में बच्चा क्या कर सकता है और क्या नही कर सकता, इसकी पूरी सूचना एकत्र होती है । दूसरे शब्दो में व्यवहार मूल्यांकन एक अनवरत प्रक्रिया है जिससे निम्नलिखित सूचनाएँ एकत्र की जाती हैं ।

अ. व्यवहार कुशलताओं का वर्तमान स्तर, और,
ब. बच्चे के व्यवहार-समस्या का वर्तमान स्तर ।

मानसिक विकलांग बच्चे के शिक्षण–प्रशिक्षण के लिए ऐसी सूचनाएँ लाभदायक होती हैं ।

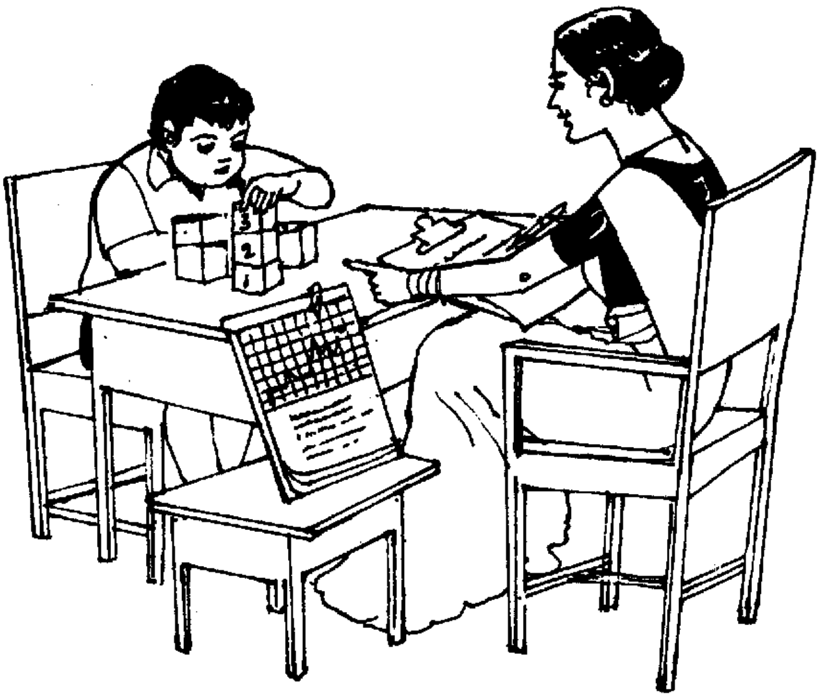

व्यवहार-मूल्यांकन क्यों किया जाय ?

प्रत्येक मानसिक मंद बच्चे का मूल्यांकन, अलग करना चाहिए। यद्यपि, व्यवहार मूल्यांकन एक अनवरत प्रक्रिया है, लेकिन तीन ऐसे अवसर हैं जब यह आवश्यक है और विस्तार से करना चाहिये ।

1. शिक्षण – प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ करने के पहले इसे आधारभूत आकलन कहते है और इसे प्रत्येक वर्ष के प्रारम्भ में किया जाता है ।
2. शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रम के बीच में। इसे त्रैमासिक मूल्यांकन कहते है जो प्रत्येक तीन महिने पर किया जाता है ।
3. शिक्षण–प्रशिक्षण के अंत में। इसे कार्यक्रम मूल्यांकन कहते है जो वर्ष के अंत मे किया जाता है ।

एक विस्तृत व्यवहार मूल्यांकन शिक्षक को निम्न लिखित जानकारी देने में मदद करता है ।

1. विशेष कौशल-व्यवहार जो बच्चे मे विद्यमान हैं ।
2. विशेष कौशल व्यवहार जो बच्चे मे विद्यामान नही है ।
3. बच्चे को सीखाने के लिये विशेष कौशल व्यवहार का लक्ष्य निर्धारण करना,
4. बच्चे को सिखाने के लिए लक्ष्य व्यवहार सम्बन्धी पूर्व अपेक्षा,
5. बच्चे में किस प्रकार के समस्या व्यवहार उपस्थित है ,
6. शिक्षण–प्रशिक्षण के लिए किन–किन समस्या व्यवहारो को लक्ष्य बनाना ।
7. क्या व्यवहार परिवर्तन योजना प्रभावकारी है : अन्य बच्चों के सदर्भ में या उसी बच्चे के संदर्भ में ।

व्यवहार-मूल्यांकन किस प्रकार किया जाय ?

मानसिक मद बच्चों का व्यवहार मूल्याकन कई तरह से किया जा सकता है, उदाहरण के तौर पर : साक्षात्कार से, प्रत्यक्ष निरीक्षण विधि द्वारा, व्यवहार जाँच सूची या रेटिंग कसौटी के द्वारा, आदि। वास्तविक रूप से किसी बच्चे का सही मूल्याकन करने के लिए इन सभी विधियो को सयोजित रूप से प्रयोग करने की आवश्यकता होती है । यह जरूरी नही कि, कोई अध्यापक किसी बच्चे का व्यवहारिक मूल्याकन एक ही बैठक मे करे । सामान्यतः बच्चे के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए कई बैठको की आवश्यकता होती है । इसके अतिरिक्त व्यवहारिक मूल्याकन करने के लिए बच्चे को मेज के सामने कुछ काम में लगा दिया जाता है या फिर उसका अपने प्राकृतिक बैठको मे ही प्रत्यक्ष रूप से निरीक्षण किया जा सकता हैं ।

भारत में मानसिक मंद बच्चों के व्यवहार मूल्यांकन उपकरणों की उपलब्धि सूची-सारांश

मूल्यांकन उपकरण	पता/संदर्भ
मद्रास डेवलेपमेंटल प्रोग्रॉमिंग सिस्टम	प्राध्यापक, विजय व्हयुमन सर्विसेस 6, लक्ष्मी पुरम स्ट्रीट, रायपेट, मद्रास-600 014.
असेसमेंटस् ऑफ द मेंटली रिटाडैड इंडिविजुअल्स् फॉर ग्रूपिग अँड टिचिंग	डेवलपमेंट ऑफ स्पेशल एजुकेशन नेशनल इंस्टिटयूट फॉर द मेंटली हैडिकेप मनोविकास नगर, बोएनपल्ली, सिकंद्राबाद-500 011.
फंक्शनल अँसेसमेंट टूल्स्	रिसर्च डिविजन, नेशनल सोसायटी ऑफ इक्वल ऑपरच्युनेटिज् फॉर हैडिकैप, पोस्टल कॉलनी रोड, चैम्बूर बम्बई-400 001.
करीक्युलम गाईडलाईन्स् फॉर स्कूल्स् फॉर चिल्ड्रन वीथ मेंटल रिटाडैशन	अँडमिनिस्ट्रेटिव डायरेक्टर जय वकील स्कूल फॉर चिल्ड्रन इन नीड ऑफ स्पेशल केयर, सैवरी हिल्स, बॉम्बे-400 033.
प्रॉब्लम बिहेवियर चेकल्सिट	आर्या एस. पेशावरिया आर. नायडू एस. अँड वेंकटेसम एस. (1990) प्रॉब्लम बिहेवियर चेकल्सिट एम पेशावरिया आर. "मेनेजिंग बिहेवियर प्रॉब्लम्स् इन चिल्ड्रन", ए गाईड फॉर पेरंट्स ! नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाऊस् ।
माल अडॅप्टिव बिहेवियर चेकलिस्ट	डिपार्टमेंट ऑफ क्लिनिकल सायकॉलोजी, नेशनल इंस्टिटयूट फॉर द मेंटली हैडिकैप, मनोविकास नगर, बोएनपल्ली, सिकंद्राबाद-500 011.

मूल्यांकन उपकरण	पता/संदर्भ
प्रॉब्लम बिहेवियर चेकलिस्ट	पेशावरिया आर (1989) "प्रॉब्लम बिहेवियर चेकलिस्ट इन जे. नारायण अँड डी.के. मेनन, "ऑगनाईजेशन ऑफ स्पेशल स्कूल्स् फॉर मेंटली रिटार्डेड चिल्ड्रन" सिकंद्राबाद, एन.आई.एम.एच.
बिहेवियर डिस ऑर्डर चेकलिसट	डा. एच.पी. मिश्रा ॲडिशनल प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ क्लिनिकल साईकॉलोजी निमहास होसूर रोड, बैंगलूर-560 029.
अडॅप्टीव बिहेवियर स्केल (इंडियन रिविजन)	गुंती आर.के. अँड उपाध्याय एस. (1982) अडॅप्टिव बिहेवियर इन रिटार्डेड अँड नॉन रिटार्डेड चिल्ड्रन इंडियन जरनल ऑफ क्लिनिकल सायकॉलोजी 9.163

● अपने देश में मानसिक मंद बच्चों के लिए उपलब्ध मापदण्डों का विस्तृत विवरण "भारतीय मानसिक मंद बच्चो के लिए व्यवहार मूल्यांकन मापदण्ड" (बेसिक एम.आर) नामक पुस्तक, जो इस बी.एम. प्रोजेक्ट का बाग है, में दिया गया है ।

मानसिक मंद बच्चों के व्यवहार मूल्यांकन मापदण्डों का एक पुनरावलोकन और बिहेवियरल असेसमेन्ट स्केल्स् फॉर इंड़ियन चिल्ड्रन विद मेन्टल रिटार्डेशन (बेसिक एम.आर.) की आवश्यकता।

अपने देश में उपलब्ध मानसिक मंद बच्चों के लिए उपयोगी व्यवहार मूल्यांकन मापदण्डों या जॉच सूचियों के पुनरावलोकन से निम्नलिखित कठिनाईयाँ सामने आती है:

1. इनमे से अधिकाश मापदण्ड या जाच सूचियाँ कौशल-व्यवहार एवं समस्या-व्यवहार के वर्तमान स्तर का सम्पूर्ण और विस्तृत विवरण नही दे पाती है ।

2. इन मापदण्डो व जाच सूचियो मे कुछ वाक्य व्यावहारिक शब्दो मे नही लिखे गए है । दूसरे शब्दो मे, इनके कथन या वाक्य देखे जाने वाले व मापे जाने वाले शब्दो मे स्पष्ट नही किए गए है ।

3. कुछ मापदण्डो के निर्देश स्पष्ट नही हो पाए है या बराबर वस्तुनिष्ट नही बन पाए है ।

4. इनमे से कुछ मापदण्ड या जाच सूचियो के साथ आवश्यक और वाछनीय सामग्री नही है जिनकी सहायता से मानसिक मद बच्चे का व्यवहार मूल्याकन वस्तुनिष्ठ रीति से किया जा सके ।

5. कुछ मापदण्डों मे प्राप्त निरीक्षण सामग्री का परिमाणात्मक मूल्याकन नही हो पाता है ।

6. बहुत से मापदण्डो मे सहायता शब्द नही है जिनके न होने से इनके उपयोग या निर्देश मे वास्तविक स्पष्टता नही आ पाती है ।

7. सभी मापदण्डो के साथ रेकॉर्ड करने का साधन नही होने से बच्चे के काम या व्यवहार का समय-समय पर तुलनात्मक रेकॉर्ड नही रखा जा सकता है ।

अपने देश में उपलब्ध मापदण्डो की कमियों को ध्यान मे रखते हुए और इस प्रोजेक्ट की आपूर्ति हेतु "भारतीय मानसिक मद बच्चों के लिये व्यवहार मूल्यांकन मापदंड" (बेसिक-एम आर) नामक मापदण्ड को बिकसित करने का प्रयास किया गया है ।

भारतीय मानसिक मंद बच्चों के लिये व्यवहार मूल्यांकन मापदंड (बेसिक एम आर)

मानसिक मंद बच्चो के व्यवहार के वर्तमान स्तर को जानने के लिए बेसिक एम आर का निर्माण किया गया है ।

इस मापदण्ड के दो भाग है ,

अ. भाग अ. बच्चे के वर्तमान कौशल व्यवहार का मूल्यांकन, और

ब. भाग ब. बच्चे के वर्तमान समस्या-व्यवहार का मूल्याकन ।

बेसिक एम आर के दो भाग है अ. में वर्तमान कौशल-व्यवहार दिये है और भाग ब. में वर्तमान समस्या व्यवहार दिये गये है। बेसिक एम. आर. भाग अ में 280 वाक्य (आइटम) है। जिन्हें सात खण्डो में रखा गया है, वे है : गामक, रहन-सहन की दैनिक क्रियाएँ, भाषा, पढ़ना-लिखना, अंक-समय ज्ञान, घरेलू-सामाजिक व्यवहार, तथा व्यवसाय व्यवस्था पूर्व-पैसे रूपये का ज्ञान । प्रत्येक खण्ड में 40 वाक्य है, प्रत्येक वाक्य व्यावहारिक और स्पष्ट शब्दो में लिखा गया है जिससे उनके अर्थ मे किसी प्रकार की गड़बड़ी न हो पाए ।

कठिन वाक्यों को और स्पष्ट करने के लिए शब्दावली उदाहरणों के साथ दी गई है । विशेष गुणात्मक आकलन की विधि, मानदण्ड में उपयोगी सामग्रियों को बनाने की विधि, रेकॉर्ड फार्म, प्रोफाइल शीट, और रिपोर्ट कार्ड सभी परिशिष्ट में दिये गये है । समय-समय पर, तीन-तीन महीने या जब भी आवश्यकता हो बच्चे के व्यवहार मूल्यांकन करने का प्रयोजन भी है । आकलन को प्रतिशत में दर्शाने की सुविधा भी दी गई है, जिससे समय समय पर मूल्यांकन का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकें । इस मापदण्ड को देश के मानसिक मंद बच्चों पर प्रमापित किया गया है ।

बैसिक एम.आर. भाग ब. मे 75 वाक्य (आइटम) हैं जिन्हें 10 मोटे-मोटे खण्डो मे रखा गया है । उग्र और विनाशक व्यवहार, चिडचिडापन और झल्लाहट, दूसरो के साथ दुर्व्यवहार, स्वय घातक व्यवहार, पुनरावृति व्यवहार, अनोखा व्यवहार, अति चचलता, विद्रोही व्यवहार, असामाजिक व्यवहार, भय, प्रत्येक खण्ड में वाक्यो की सख्या भिन्न भिन्न है । प्रत्येक वाक्य स्पष्ट रूप से व्यावहारिक शब्दो में लिखे और मापे गए हैं ।

मापदण्ड़ के प्रयोग के लिए प्रत्येक मानसिक मंद बच्चे के व्यवहार का सीधा निरीक्षण करना होता है । निरीक्षण किए गए व्यवहारों को अंको में दर्शाने के लिए तीन अंक स्केल बताये गये है । कभी न घटित होने वाले व्यवहार के लिए (0) कभी–कभी या कदाचित् होने वाले व्यवहार के लिए (1), अक्सर या बहुत होने वाले व्यवहार के लिए (2) अंक दिए जाते है । इस प्रकार एक मानसिक मंद बच्चें को 0 से लेकर 150 के बीच के अंक मिल सकते हैं । इस अंक के आधार पर एक ग्राफ और अंक का प्रतिशत निकाला जाता है (परिशिष्ट ।।) मापदण्ड़ के भाग ब को प्रत्येक बच्चे पर हर त्रैमासिक अवधि पर और साल में एक बार करना होता है ।

जैसे बेसिक एम आर में भाग अ. में रिपोर्ट कार्ड बताया गया है, उसीप्रकार बेसिक एम आर भाग ब में पाये गये अंकों को भी रिपोर्ट कार्ड़ में बताया जा सकता है । (परिशिष्ट ।।।) बेसिक एम आर भाग ब को भी देश के मानसिक मंद बच्चों पर प्रमापित किया गया है ।

इस मापदण्ड़ के प्रयोग से संबन्धित विवरण अलग से उपलब्ध बेसिक एम आर नामक पुस्तक से या निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करने से लिया जा सकता हैं :

रीता पेशावरिया
प्रमुख शोधकर्ता, बी. एम. प्रोजेक्ट
चिकित्सा मनोविज्ञान विभाग
राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान
मनोविकास नगर, बोवन पल्ली
सिन्दराबाद - 500 011.

सारांश

1. विद्यालय या कक्षा में सीखाने से पहले प्रत्येक मानसिक मंद बच्चे का व्यवहारिक मूल्यांकन करना एक महत्वपूर्ण उपक्रम है ।

2. व्यवहारिक मूल्यांकन एक अनवरत प्रक्रिया है । जिसके द्वारा मदबुद्धि बच्चों के वर्तमान कौशल व्यवहार और समस्या - व्यवहारो के बारे में जानकारी प्राप्त की जाती है ।

3. मानसिक मद बच्चो मे व्यवहारिक मूल्यांकन करना कई प्रकार से लाभप्रद या उपयोगी होता है। यह किसी भी बच्चे मे विशेष कौसल और समस्या व्यवहारो के विद्यमान होने या न होने की सूची बताने में मदद करता है । बच्चे के लक्ष्य निर्धारित करने वाले कौशल और समस्या व्यवहारों को पहचानने मे और अध्यापन कार्यक्रम का मूल्याकन करने मे भी मदद करता है।

4. व्यवहारिक मूल्यांकन करने की कई विधियाँ हैं, जैसे कि, साक्षात्कार के माध्यम मे, प्रत्यक्ष निरीक्षण विधि द्वारा व्यवहार जाँच सूची द्वारा, इत्यादि ।

5. बेसिक एम आर. व्यवहारिक मूल्यांकन करने के लिए एक नया विकसित और मानकीकृत ऐसा उपकरण है, जिसके द्वारा हम मदबुद्धि बच्चो के बारे मे वास्तविक एव संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं । जिसमे कौशल व्यवहार और समस्या-- व्यवहार भी शामिल हैं ।

कार्य अभ्यास-3

I.. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये ।

1. ________________ एक अनवरत प्रक्रिया है जिससे निम्नलिखित सूचनाएँ एकत्र की जाती है ।
   क) व्यवहार-कुशलताओं का वर्तमान स्तर.
   ख) बच्चे के व्यवहार-समस्या का वर्तमान स्तर.
2. प्रत्येक मानसिक मंद बच्चे का मूल्यांकन कम से कम तीन अवसर में करना आवश्यक है । वे है________________________, और
3. पढ़ाना प्रारंभ करने के पहले शिक्षक को दो प्रमुख उद्येश्यों पर निश्चय कर लेना होगा, वे है________________________, और

II. नीचे हर एक कथन के पाँच वैकल्पिक दिये गये है । उनमें से सही उत्तर छाटिये:

1. मानसिक मंद बच्चे को मदत करने का सही तरीका है ।
   अ) व्यवहारों को सीखाना या प्रशिक्षित करना ।
   आ) केवल स्नेह और प्रेम दर्शाना ।
   इ) विकलांगों का दवाई से इलाज करना ।
   ई) ऑपरेशन या सर्जरी द्वारा इलाज करना ।
   उ) उपरोक्त सभी ।

2. मानसिक विकलांग बच्चे के प्रशिक्षण के लिये सबसे प्रमुख सूचना पाना आवश्यक है ।
   अ) बच्चे के मानसिक विकलांगता का कारण ।
   आ) बच्चा अपनी बाल्यावस्था में क्या कर पाता है और क्या नही कर पाता ।
   इ) बच्चा वर्तमान स्थिति में क्या कर पाता है और क्या नहीं कर पाता ।
   ई) परिवार में किसी अन्य मानसिक विकलांग सदस्य की विस्तृत जानकारी ।
   उ) उपरोक्त एक भी नही ।

3. वर्तमान स्थिति में मानसिक विकलांग बच्चे के व्यवहारों की जानकारी पाने के लिये शिक्षक को चाहिये ।
   अ) अभिभावक/अभिरक्षक से साक्षात्कार करे ।
   आ) बच्चे का प्रत्यक्ष निरीक्षण करें ।
   इ) बच्चे को अपने व्यवहारों का प्रदर्शन करने का अवसर दिया जाये ।
   ई) व्यवहार मूल्यांकन चेकलिस्ट/परीक्षण का प्रयोग करे ।
   उ) उपरोक्त सभी ।

कार्य अभ्यास - 3
कुंजी

I.	1)	निर्धारण	2)	आधारभूत आकलन त्रैमासिक मूल्यांकन वार्षिक/कार्यक्रम मूल्यांकन	3)	दीर्घ कालिन लक्ष्य अल्पकालिन लक्ष्य
II.	1)	अ.	2)	इ.	3)	उ.

अध्याय चार

व्यवहार उद्येश्य

इस अध्याय के समापन पर शिक्षक निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम हों सकेंगे :

1. *लम्बी अवधि लक्ष्य क्या होता हैं ?*
2. *अल्प अवधि लक्ष्य या व्यवहार उद्येश्य क्या होता है ?*
3. *एक व्यक्तिगत बच्चे को प्रशिक्षित करने के लिए कैसे व्यवहार उद्येश्य का चयन किया जाता है ?*
4. *व्यवहार उद्येश्य कैसे लिखा जाता है ?*
5. *समूह प्रशिक्षण के लिए व्यवहार उद्येश्य का चयन कैसे किया जाता है ?*

शिक्षण के लिए उद्येश्य

हमने देखा कि, व्यवहार मूल्यांकन बच्चों के वर्तमान कुशलताओं की सम्पूर्ण जानकारी देता है अर्थात् बच्चा क्या कर सकता है क्या नहीं कर सकता । यह जानकारी या सूचना प्राप्त कर लेने के बाद, शिक्षक को यह निश्चय करना होता है कि, मानसिक मंद बच्चे को क्या शिक्षा दी जाय । दूसरे शब्दों में शिक्षक को प्रशिक्षण के लिए लक्ष्य और उद्येश्य निश्चित कर लेना चाहिए। इस अध्याय में आप को मानसिक मंद बच्चों की शिक्षा के लिए लक्ष्य चयन और लिखने की विधियाँ बताई जाएँगी ।

पढ़ाना-प्रारम्भ करने के पहले शिक्षक को दो प्रमुख उद्येश्यों पर निश्चय करलेना होगा । वे हैं :

अ. लम्बी अवधि लक्ष्य

ब. अल्प अवधि लक्ष्य

लम्बी अवधि लक्ष्य क्या है ?

पूरे शैक्षिक वर्ष में कार्यान्वित किए जाने वाले पूर्वनियोजित निर्देशों के अनुक्रमों को लम्बी अवधि लक्ष्य कहा जाता है । दूसरे शब्दों में लम्बी अवधि लक्ष्य बालक विशेष से अपेक्षित उपलब्धियाँ या सफल प्रयत्न को दर्शाते हैं। लम्बी अवधि लक्ष्य को **वार्षिक** लक्ष्य भी कहते है और ऐसा होता है कि, प्रत्येक बालक का लक्ष्य शैक्षिक वर्ष के अंत में परिवर्तन भी हो सकता है ।

लम्बी अवधि लक्ष्य का चयन

लम्बी अवधि लक्ष्य के चयन और उसे तैयार करने के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना होगा :

1. बच्चे द्वारा पहले की उपलब्धियों या सफलताओं की जानकारी अर्थात् बच्चे ने पिछले लगभग एक वर्ष में क्या-क्या किया है या कर पाया है ।
2. बच्चा फिलहाल क्या कर सकता है या बच्चे की वर्तमान योग्यता, या कर पाने की क्षमता ।
3. चयन किए हुए लम्बी अवधि लक्ष्य को प्राप्त करने की व्यवहारिकता अथवा क्रियात्मकता जो कि, इसे दैनिक जीवन में सहायता करती है ।
4. बच्चे की व्यवहारिक जरूरतें और लम्बी अवधि लक्ष्य में तालमेल या सम्बन्ध ।
5. आवश्यक समय और उपलब्ध साधनों का होना जिससे बच्चा लक्ष्य को एक वर्ष में प्राप्त कर पाए ।

नोट : उपरोक्त बातो को आगे अल्प अवधि व्यवहार उद्येश्यो के चयन हेतु निर्देशो के साथ विस्तार पूर्वक समझाया गया है ।

अल्प अवधि लक्ष्य क्या है ?

अल्प अवधि लक्ष्य मात्र लम्बी अवधि लक्ष्य को छोटे छोटे विभागो मे रखना है जिससे व्यवहार सिखाये जाने की योजना को लाभकारी रूप आसानी से दिया जा सके, साथ ही लक्ष्य को निश्चित समय में पूरा किया जा सके । अल्प अवधि लक्ष्य को व्यवहारिक उद्येश्य भी कहा जाता है । जब कि, लम्बी अवधि के लक्ष्यों का एक साल बाद पुर्ननिरीक्षण किया जाता है और उस समय उसमें फेरबदल का सोचा जाता है, अल्प अवधि लक्ष्य को आवश्यकता पड़ने पर दो या तीन महीने के बाद ही बदला जाता है ।

नीचे का उदाहरण लम्बी अवधि लक्ष्य और अल्प अवधि के बीच के अंतर को स्पष्ट करता है ।

अमर एक मानसिक मंद 16 साल का बालक है। कौन से व्यवहार वह कर पाता है और कौन से नही कर पाता, ये जानने के लिए शिक्षक ने बेसिक एम. आर. अनुकूली व्यवहार मापदण्ड की सहायता ली । व्यवहार मापन के बाद शिक्षक ने नीचे दिए गए वार्षिक उद्येश्य बनाए ।

1. स्वयं सेवा कुशलताएँ
2. पढ़ने-लिखने की कुशलताएँ
3. अंक-समय कुशलताएँ

अमर के लिए उसकी लम्बी अवधि के लक्ष्यों की रूपरेखा में चुने गए अल्प अवधि लक्ष्य इस प्रकार थे ।

1. स्वयं सेवा कुशलताएँ
   (क) चप्पल पहनना
2. पढ़ने लिखने की कुशलतायें
   (क) वस्तुओं को चित्र के साथ मिलाना
   (ख) चौकोन का चित्र बनाना
3. अंक – समय कुशलताएँ
   (क) एक से पाँच तक संख्याये लिखना

इन लम्बी अवधि या अल्प अवधि लक्ष्यो की सही सख्या बालक की वर्तमान योग्यता और साथ ही साथ शिक्षक को उपलब्ध साधनो पर निर्भर करती है ।

अल्प अवधि लक्ष्य व्यवहार उद्देश्य कैसे चुने जाते हैं।

अल्प अवधि लक्ष्य या व्यवहार उद्देश्य का चयन करते समय निम्न सिद्धान्तों को ध्यान मे रखना चाहिए :

1. **व्यवहार उद्देश्य का चयन बच्चे की योग्यता, उम्र, आवश्यकताएँ सामाजिक पृष्ठभूमि और वर्तमान स्तर को ध्यान मे रखते हुए करना चाहिए । उदाहरण के लिए-बच्चे को खरीदी का कौशल तभी सिखाना चाहिए । जब उसे अंको का ज्ञान हो । इसी प्रकार बालक के लिए, शौचादि प्रशिक्षण के उपरांत ही शिक्षक को शैक्षिक क्रिया जैसे पढ़ना, लिखना या देखकर लिखना तभी सिखाना चाहिए ।**

   उसी प्रकार जूते में फीता लगा पाने की कुशलता बालक को सीखानी चाहिये जिसको जूते पहनने की आदत हों, वरन शिक्षक व बच्चे का व्यर्थ समय गंवाना है । इसी तरह व्यवहार उद्देश्य बालक के वास्तविक आयु से भी मेल खाता होना चाहिए । एक बड़ी आयु के बच्चे को मोती पिरोना या लकड़ी के टुकड़े से खेलना न सिखाकर उसे किस व्यवसायिक क्रिया मे कुशलता देने की सोचना चाहिये ।

   वैसे कुछ लोगों का विचार है कि, व्यवहार उद्देश्य लिंग अनुरूप भी होना चाहिए, परन्तु उचित यह होगा कि, सभी क्रियाये और कौशल सभी को सीख लेना लाभकारी होगा । कपड़े धोना, झाडू-पोछा आदि, लड़कों को सिखाया जा सकता है, जब कि, साईकल चलाना, खरीदी करना आदि लडकियाँ भी सीख सकती हैं ।

2. **हमेशा ऐसे व्यवहार उद्देश्यों का चयन किया जाय जो कि, क्रियात्मक रूप से एक मानसिक मंद बालक के दैनिक जीवन में प्रासंगिक और उपयोगी हो ।**

   मद बुद्धि बच्चो को अक्सर अनेक अव्यवहारिक क्रियाएँ सिखा दी जाती है यह सोच कर कि, आगे चल कर वे अन्य आधारभूत कुशलताओं के प्रशिक्षण में मदद देगी । उदाहरण के लिए- बच्चों को मोती पिरोना उनके आँख और हाथ मे सामजस्य बढ़ाने के लिए सिखाते हैं या छोटे-छोटे लकड़ी के टुकड़ो की मदद से गामक कुशलता मे दक्षता दिलाते है आदि ।

आजकल इस प्रकार की आधारभूत कुशलताओं में दक्षता दिलाने पर बार–बार प्रश्न उठाए जा रहे है । इन क्रियाओ को तो खाली समय में सिखाना चाहिए । फिर भी इन्हें बार–बार दोहराने से कोई प्रयोजन सिद्ध नही होता । क्रियाओ का चयन करते समय उन क्रियाओं पर महत्व देना चाहिए जिन्हें घर में, स्कूल में या समाज में बार – बार करने की आवश्यकता होती है । कभी–कभी एक क्रिया शायद ही कभी काम में आए परन्तु उसका व्यवहारिक महत्व बहुत अधिक हो सकता है जैसे - कट जाने पर दवा लगाना ।

इसके अतिरिक्त शिक्षक को चाहिए कि, स्कूल और कक्षा में सिखाए गये कौशल की वास्तविक परिस्थिति में व्यापकीकरण की योजना बनाऐ । अन्यथा सीखने की क्रिया बच्चे और शिक्षक दोनों के लिए दूभर हो सकती है । शिक्षण की प्रत्येक क्रिया को सम्भवतः व्यापकीकरण की ओर ले जाना चाहिए ।

व्यावहारिक क्रिया-कलापों के उदाहरण :

* कटे या घाव पर दवा लगाना और पट्टी बाँधना
* फल या सब्जी को धोना, छिलना और काटना ।
* रंग, शकल और सतह के आधार पर कच्चे और पके फलो/सब्जियो मे भेद कर पाना ।
* भोजन के लिए सही माप का नमक पहचान लेना ।
* बीजो को चार चार इंच की दूरी पर लगाना। 11.
* फलो और सब्जियो के नाम लेना ।

अंव्यावहारिक क्रिया–कलापों के उदाहरण :

* *जंगली पेड़ पौधों के व पशुओं के नाम बता पाना ।*
* *लकड़ी के तीन टुकड़ों को एक के ऊपर एक रखना ।*
* *पाँच गोलाकार खुटियों को उनकी जगह पर लगा पाना ।*
* *तीन आकार बोर्ड को पूरा करना ।*
* *पहेली बूझा पाना*
* *लकड़ी के मोती पिरोना ।*

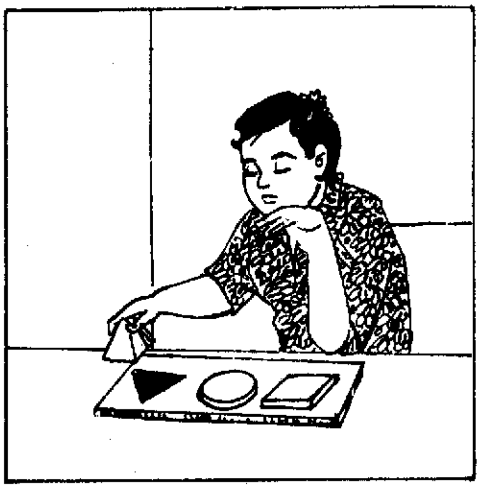

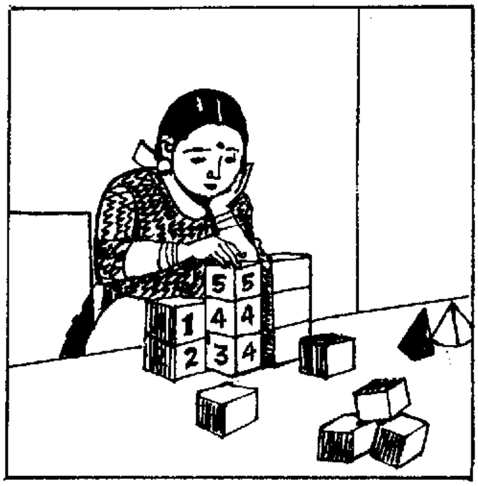

3. **उन्हीं व्यवहार उद्देश्यो का चयन करे जिन्हे निश्चित समय की अवधि मे प्राप्त किया जा सके** :(अर्थात् दो या तीन माह की अवधि मे)। उदाहरण के रूप में, यदि मानसिक मंद बच्चे को "शौचादि क्रिया में प्रशिक्षण" को व्यवहार उद्देश्य चुना जाय तो यह महीने और साल भी ले सकता है, निश्चित समय तय कर पाना आसान नही होगा । जब कि, यदि स्पष्ट रूप से यह व्यवहार उद्देश्य लिया जाय कि, "बालक तीन माह मे 10 मे से 8 बार अपनी शौच आवश्यकताओ को इंगित कर पाएगा, (सिखा दिए जाने पर), तो इस व्यवहार उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है ।

4. **उन्हीं व्यवहार उद्देश्यों का चयन करने का प्रयत्न करें जिनमें मानसिक मंद बालक पिछड़ा दिखाई दे रहा हो ।** अनुकूली व्यवहार मापदण्ड के आधार पर ही शिक्षक को बालक के व्यवहार कमी का पता लग सकता है । इन्ही आवश्यकताओं/ कमियों को मानसिक मंद बालक के व्यवहार उद्देश्य के रूप में दर्शाया जा सकता है शिक्षण का लक्ष्य भी वही होगा। यहाँ एक बात स्पष्ट कर देनी होगी, जो यह है कि, व्यवहार के अन्य भागो, जिनमे उतनी कमी नहीं देखी गई है, उनको भी एक एक करके प्राथमिकता के आधार पर सिखाया जाएगा। वास्तव में अनुकूली व्यवहार मापदण्ड के सभी भाग एक दूसरे से जुड़े हैं, परस्पर सम्बन्धी है । उदाहरण के लिए- जब आप एक बालक को कैंची से काटना सिखा रहे है तो यही कौशल विभिन्न आकारो को पहचानना बालक के लिए आसान हो जाएगा ।

5. **हमेशा उसी व्यवहार उद्देश्य को चुने जो विकास की दृष्टि से पहले आते हों ।** बच्चों मे विकास का प्रतिमान या स्वरूप एक ही क्रम से रहता है, जैसे बालक पहले शब्द का उच्चारण करेगा और बाद मे वाक्यो में बोल पाएगा । बालक पहले चलना सीखेगा फिर दौड़ना अतः शिक्षक बालक विकास की गति और धारा से परिचित रहें, इससे कौशल लक्ष्य को गठित करने में सुविधा होगी।

6. **उन्हीं व्यवहार उद्देश्यों का चयन करें जिनके लिए बालक में पूर्व अपेक्षित गुण या कर पाने की क्षमता हो ।** किसी नए व्यवहार को कर पाने के लिए बच्चे में पूर्व **अपेक्षित** क्षमता आवश्यक है । उदाहरण के लिए – बालक ध्यान दे सके, निर्देशो को देखकर सुन सके, अनुकरण कर पाए, कार्य पर कम से कम उतनी देर पर ठहर सके जिससे कुछ करते हुए परिणाम के एक भाग को तो देख पाए, आदि । यदि उसमें पूर्व अपेक्षित गुण नही है तो शिक्षक को ध्यान पूर्वक उनमे प्रशिक्षित करना होगा और बाद मे व्यवहार उद्देश्य का चयन करना होगा ।

7. मानसिक मंद बच्चे को प्रशिक्षित करने के लिए हमेशा उन व्यवहार उद्देश्यों का चयन करें जिनकी प्राप्ति से उन बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ हिलने मिलने के अधिक अवसर मिलें । उदाहरण के लिए-खरीदारी करने की कुशलता, डाकघर से खरीदी कर पाना आदि ।

व्यवहार उद्देश्यों को कैसे लिखा जाय?

हमने देखा कि, व्यवहार उद्देश्य या अल्प अवधि के लक्ष्य एक प्रकार के लिखित कथन है जो यह स्पष्ट करते है कि, मानसिक मंद बच्चे को एक निर्धारित समय (अर्थात् 2–3 माह में) में क्या सिखाया जाना है । हमने यह भी देखा किसी प्रकार के व्यवहार उद्देश्य के चयन के लिए किन-किन बातों को ध्यान में रखना है । व्यवहार उद्देश्य के चयन के बाद, उसे एक विशेष प्रकार से लिखा जाता है । उचित ढ़ंग से लिखा हुआ व्यवहार उद्देश्य निम्नलिखित चार विशेषताएँ रखता है ।

1. वह एक विशिष्ट, स्पष्ट और निरीक्षण योग्य भाषा में लिखा जाना चाहिए ।

2. व्यवहार - उद्देश्य को मापन योग्य भाषा में स्पष्ट करते हुए वांछनीय निष्पादन के मानदण्डों को भी दर्शाना होगा ।

3. व्यवहार - उद्देश्य को लिखते समय इस बात का ध्यान रहे कि, वह व्यवहार या क्रिया किन-किन अवस्थाओं में घटित होनी सम्भव है, और,

4. अपेक्षित अवधि, जिसके अंदर इस व्यवहार को सीखा जा सकता है, का भी स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए ।

ऊपर एक उदाहरण में हमने देखा कि, शिक्षक ने अमर (एक 16 साल के बालक) के लिए तीन वार्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए निश्चित कदम उठाने का निर्णय लिया । चयन और लेखन के निर्देशों को ध्यान में रखते हुए अध्यापक ने अल्प अवधि के लक्ष्य या व्यवहार उद्देश्य को इस प्रकार लिखा :–

बालक का नाम	:	*अमर*
लम्बी अवधि का उद्देश्य/वार्षिक उद्देश्य	:	*स्वयं-सेवा कौशल*
वर्तमान स्तर	:	*अमर चप्पलें पहन लेता है, परन्तु सही ढंग से नहीं*
दिनांक	:	*12-3-92*
व्यवहार उद्देश्य/अल्प अवधि का लक्ष्य	:	

दशाएँ / परिस्थितियाँ	**व्यवहार**	**अपेक्षित स्तर**	**अवधि**
स्वयं-सेवा कौशल			
शिक्षक के मौखिक रूप से कहने पर	*अमर अपने बाएँ व दाएँ पाँव में चप्पल सही ढंग से पहन लेगा ।*	*5 में से कम से कम 3 बार*	*अब से 2 सप्ताह या उससे पहले*

बालक का नाम	:	*अमर*
लम्बी अवधि का उद्देश्य/वार्षिक उद्देश्य	:	*पढ़ने-लिखने का कौशल*
वर्तमान स्तर	:	*अमर वस्तु से वस्तु का सही मेल कर पाता है ।*
दिनाक	:	*12-3-92*
व्यवहार उद्देश्य/अल्प अवधि का लक्ष्य	:	

दशाएँ / परिस्थितियाँ	**व्यवहार**	**अपेक्षित स्तर**	**अवधि**
पढ़ने-लिखने का कौशल			
जब कहा जाएगा	*शिक्षक द्वारा दिखाई तस्वीर से 5 मे से 3 वस्तुओ का सही मेल अमर कर पाएगा*	*5 में से 4 बार*	*दस दिनो में*

बालक का नाम	:	*अमर*
लम्बी अवधि का उद्देश्य/वार्षिक **उद्देश्य**	:	*पढ़ने-लिखने का कौशल*
वर्तमान स्तर	:	*अमर गोलाकार आकृति की नकल कर लेता है ।*
दिनांक	:	*12-3-92*
व्यवहार उद्देश्य/अल्प अवधि का लक्ष्य	:	

दशाएँ / परिस्थितियाँ	**व्यवहार**	**अपेक्षित स्तर**	**अवधि**
पढ़ने-लिखने का कौशल			
जब वर्गाकार आकृति दिखाई जाएगी	अमर एक वर्गाकार आकृति बनाएगा	3 मे से 1 प्रयत्न मे	15 दिनों में

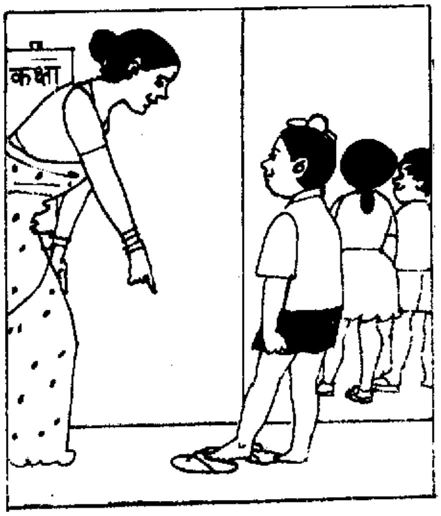

बालक का नाम		:	*अमर*
लम्बी अवधि का उद्देश्य/वार्षिक उद्देश्य		:	*अंक–समय कुशलता*
वर्तमान स्तर		:	*1 से 10 तक के अक अमर ठीक ठीक बोल लेता है ।*
दिनांक		:	*12–3–92*
व्यवहार उद्देश्य/अल्प अवधि का लक्ष्य		:	

दशाएँ / परिस्थितियाँ	**व्यवहार**	**अपेक्षित स्तर**	**अवधि**
अंक समय कुशलताएँ			
हाथ पकड़कर लिखवाने पर	अमर 1 से 5 तक अंक लिख लेगा	दस मिनट में	एक माह या उससे पहले

समूह शिक्षण के लिए व्यवहार उद्देश्य का चयन करना

विशेष बच्चों के स्कूल मे, उनकी शिक्षा या तो व्यक्तिगत स्तर (एक बच्चे के लिए एक शिक्षक) अथवा सामूहिक स्तर (एक शिक्षक 7 – 8 मानसिक विकलांग बच्चो को पढ़ाता है) पर दी जाती है । शिक्षक को मालूम होना चाहिए कि, प्रत्येक बच्चे की क्रियात्मक कुशलता का स्तर भिन्न–भिन्न होता है । कई मानसिक मंद बच्चे समूह में अपने सहपाठियों के साथ और सहयोग में अच्छी तरह से सीखते हैं । उन्हें व्यक्तिगत रूप से उतना रुचिकर नहीं लगता है । इसके अतिरिक्त कई ऐसे व्यवहार हैं जिन्हें समूह में अच्छी तरह से सिखाया जा सकता है ।

जब बच्चो की क्रियाशीलता का स्तर लगभग एक समान हो तो उन्हें प्रशिक्षित करने की क्रिया सरल हो जाती है, और एक समान व्यवहार उद्देश्य भी बनाया जा सकता है । दूसरे शब्दो में शिक्षक समूह शिक्षण के लिए समान व्यवहार उद्देश्य का चयन कर सकता है । अब उदाहरण के लिए मान लिया जाय कि, शिक्षक को अंक सिखाना है । शिक्षक को मालूम हुआ या ऐसा कहा जाय कि, शिक्षक ने देखा कि, बच्चो के समूह में उनका अंक ज्ञान अलग अलग स्तर का है । कुछ तो जबानी अंक बोल लेते

हैं, तो कुछ अंको को छांट या पहचान पाते है । उनमे से कुछ ऐसे है जो अंको को पहचान और बोल कर बता भी पाते हैं। शिक्षक कक्षा को इस प्रकार से व्यवस्थित करेगा जिससे 7 से 8 बच्चे विभिन्न स्तर के एक साथ हो जायें। इस समूह में कुछ बच्चे अन्य से कौशल व्यवहार में अच्छे स्तर के होगें। और अन्य कौशल व्यवहार मे निम्न स्तर के होगें। इस व्यवस्था में निम्न स्तर वाले बच्चे अपने से अच्छे स्तर वाले बालको से सीख पायेंगे। जैसे जो बालक अंक पहचान पाता है वह ये अच्छे

स्तर वाले बच्चो के लिए एक लाभप्रद अनुभव है जो अपनी पहले से सीखी हुई कुशलताओ को अभ्यास द्वारा अधिक शक्तिशाली बनाता है। उस बच्चे को जो अभी अकों को उनके समान लगने वाले अंको से मिला ही पाता है, को आदर्श दे पाएगा । इसके अतिरिक्त समूह आपस में सामाजिक हेल मेल को प्रोत्साहित करेगा। तथापि शिक्षक समूह का आयोजन इस प्रकार करें, जिससे सभी बच्चों को लाभ हों ।

समूह शिक्षण के व्यवहार उद्देश्यों के चयन संकेत

1. व्यवहार उद्देश्य हमेशा समूह के बच्चों के विभिन्न आवश्यकताओं, स्तरों, उम्रों और सामाजिक पृष्ठभूमि के अनुरूप होने चाहिए।

2. व्यवहार उद्देश्यों का चयन क्रियात्मक या व्यवहारिक हो, दैनिक जीवन से मेल खाता हो, और समूह के बच्चों के जीवन उपयोगी हो ।

3. ऐसे व्यवहार उद्देश्य का चयन करे जिसे समूह के प्रायः सभी बच्चे एक साथ मिलकर सीख सकें ।

4. एक व्यवहार उद्देश्य को सिखाने के लिए अधिक बच्चो को समूह मे न रखें । समूह का आकार व्यवहार उद्देश्य पर निर्भर करता है, और साथ ही उपलब्ध सामग्रियो पर भी । एक आदर्श समूह में 7 से 8 मंद बुद्धि बच्चे ही होने चाहिए।

सारांश

i) व्यवहार-मूल्यांकन के बाद, शिक्षक प्रत्येक मानसिक विकलांग बच्चे के लम्बी अवधि और अल्प अवधि अथवा व्यवहार उद्देश्यो के सम्बन्ध मे निर्णय अवश्य ले लें ।

ii) लम्बी अवधी के और अल्प अवधि के लक्ष्य अथवा व्यवहारिक लक्ष्यों का चयन किसी सिद्धान्त के आधार पर होना चाहिए जैसे कि, योग्यता, आयु, आवश्यकताएँ, सामाजिक पृष्ठभूमि और बच्चे की क्रियाओं के वर्तमान स्तर के अनुकूल; चुने हुए लक्ष्यों को बच्चे के लिए क्रियात्मक अनुकूलता; चुने हुए व्यवहारिक लक्ष्यों को प्राप्त करना; वह क्षेत्र जिसमें बच्चा कुछ पूर्वाकांक्षायें रखता है इत्यादि ।

iii) व्यवहारिक लक्ष्य निश्चित सिद्धान्त के अनुसार लिख लेने चाहिए । साफ, दृश्य और परिमाण शैली में, स्थिति, नियम और लक्ष्य व्यवहार प्राप्त करने की अवधि का भी उल्लेख करना चाहिए।

iv) व्यवहारिक लक्ष्यों का चयन करते हुए अध्यापक को कुछ मार्गदर्शी सिद्धान्तों का पालन करना चाहिए जो उस वर्ग के बच्चों की विभिन्न आवश्यकताओं, स्तर, आयु और सामाजिक पृष्ठभूमियों के अनुकूल हों या वे लक्ष्य जो क्रियात्मक रूप से प्रासंगिक हों और जिसमें एक वर्ग के अधिकाश बच्चे सामूहिक रूप से सम्मिलित हों ।

कार्य अभ्यास–4

I. ***क्रियात्मक/अक्रियात्मक व्यवहारों के बीच के अंतर को स्पष्ट कीजिये । क्रियात्मक व्यवहारों को "क" से सूचित करे और अक्रियात्मक व्यवहारों को "ख" से सूचित करे ।***

1. कपडे धोना ( )
2. तीन वस्तुओं के नाम बताना ( )
3. अ से अः तक अक्षरों की नकल करना ( )
4. सिक्कों के मूल्य को पहचानना ( )
5. सर्वनामों का उपयोग करना जैसे मैं, आप आदि ( )
6. झाडू–पोंछा करना ( )
7. काजे मे बटन लगाना ( )
8. 1 से 100 तक अक लिखना ( )
9. संकेत शब्दो को पहचानना ( )
10. पुस्तक से अ आ ई नकल करना ( )
11. तीन आकारों के नाम बताना ( )
12. समुच्चय बोधक शब्दो का प्रयोग करना जैसे किंतु, परंतु आदि ( )
13. अपना नाम पढ़ लेना ( )
14. पहेलियों को सुलझाना ( )
15. तीन डिब्बों को एक के उपर एक रखना ( )

I. नीचे व्यवहारिक उद्देश्य कथन दिये जा रहे है । इन्हें सावधानी पूर्वक पढ़िये और देखिए हर एक व्यवहारिक उद्देश्य में चार कारकें है, या नहीं है । अगर है तो 'हाँ' लिखिए नहीं है तो 'नहीं' लिखिए ।

कथन	दशाये	व्यवहार	कसौटी	अवधि
1. श्रीधर पांच फुट या अधिक पूरी तक रेंगेगा ।				
2. आदेश दिये जाने पर कला शनिवार से पहले एक इंच के मनकों या गोलियों को सुतली में पिरोएगी ।				
3. एक मध्यम आकार की सूई को यदि हाथ से पकड़ कर रखा जाय तो कमल पांच प्रयासों में से तीन बार धागा डाल देगा ।				
4. यदि बताया जाय तो करीम 15 अक्तूबर को या उससे पहले दस में से आठ बार अपनी कमीज उतार लेगा ।				
5. श्रीनाथ अबसे बीसवें दिन या उससे पहले प्रयोग के बाद शौचालय मे पानी बहाएगा या फलश करेगा ।				
6. प्रदीप 3 मिनट में जूते के फीते बांधना सीख जाएगा ।				
7. मौखिक निर्देशो का पालन करते हुए गोपी दस दिन के भीतर पांच मिनट में दस लिफाफे चिपकायेगा ।				
8. हरी कहानी सुनने पर चित्र क्रम से लगा लेगा ।				
9. मनोहर पचास बार सिखाने पर एक से पचास तक की गिनती तेजी से बिना गलती के गिन देगा ।				
10. पूछे जाने पर अजय इस महीने के अंत में या उसके पहले अपनी जन्मतिथि बता देगा ।				
11. एक पेन और कागज दिये जाने पर संजय गोले खीच देगा ।				
12. यह पूछे जाने पर "मुझे लाल दिखाओं, सलीम अब से पचास बार सिखाने पर लाल रंग की ओर, इशारा कर देगा ।				
13. हाथ पकड़के और लिखवाये तो अनीता वर्णमाला के सभी वर्णो के चारों ओर केवल दो मिनट में, आज से तीन हप्ते के अंत में या उससे पहले, गोले खीच देगी ।				

कार्य अभ्यास ४

कुंजी

1) का 2) का 3) अ का 4) का 5) अ का 6) का 7) अ का
8) अ का 9) का 10) अ का 11) का 12) अ का 13) का 14) अ का 15) अ का

कथन	दशायें	व्यवहार	कसौटी	अवधि
1. श्रीधर पांच फुट या अधिक पूरी तक रेंगेगा।	नही	हाँ	हाँ	नहीं
2. आदेश दिये जाने पर कला शनिवार से पहले एक इंच के मनकों या गोलियो को सुतली मे पिरोएगी ।	हाँ	हाँ	नही	हाँ
3. एक मध्यम आकार की सूई को यदि हाथ से पकड़ कर रखा जाय तो कमल पाच प्रयासो मे से तीन बार धागा डाल देगा ।	हाँ	हाँ	हाँ	नहीं
4. यदि बताया जाय तो करीम 15 अक्तूबर को या उससे पहले दस मे से आठ बार अपनी कमीज उतार लेगा ।	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
5. श्रीनाथ अबसे बीसवें दिन या उससे पहले प्रयोग के बाद शौचालय मे पानी बहाएगा या फलश करेगा ।	नही	हाँ	नही	हाँ
6. प्रदीप 3 मिनट मे जूते के फीते बाधना सीख जाएगा ।	नही	हाँ	नहीं	हाँ
7. मौखिक निर्देशो का पालन करते हुए गोपी दस दिन के भीतर पाच मिनट मे दस लिफाफे चिपकायेगा ।	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
8. हरि कहानी सुनने पर चित्र क्रम से लगा लेगा।	नही	हाँ	नही	नहीं
9. मनोहर पचास बार सिखाने पर एक से पचास तक की गिनती तेजी से बिना गलती के गिन देगा ।	नही	हाँ	हाँ	नहीं
10. पूछे जाने पर अजय इस महीने के अंत मे या उसके पहले अपनी जन्मतिथि बता देगा।	हाँ	हाँ	नहीं	हाँ
11. एक पेन और कागज दिये जाने पर सजय गोले खीच देगा ।	हाँ	हाँ	नही	नही
12. यह पूछे जाने पर "मुझे लाल दिखाओ, सलीम अब से पचास बार सिखाने पर लाल रंग की ओर, इशारा कर देगा ।	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
13. हाथ पकड़के और लिखवाये तो अनिता वर्णमाला के सभी वर्णो के चारो ओर केवल दो मिनट मे, आज से तीन हप्ते के अंत में या उससे पहले, गोले खीच देगी ।	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ

भाग 3

मानसिक मंद बच्चो के शिक्षण की व्यावहारिक विधियाँ

क्या सीखाना है इसकी जानकारी हो जाने पर यह मालूम करना आवश्यक हो जाता है कि, "शिक्षा कैसे दी जाय"। सीखने की अपनी कम क्षमता के नाते, मानसिक मंद बच्चे शिक्षक के सामने अनेक प्रकार की समस्याएँ उपस्थित करते है । फिर भी यह स्पष्ट है कि, यदि शिक्षा की वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करते हुए सिखाया जाय तो बच्चे अनेक कुशलताओं में निपुण हो सकते हैं ।

मानसिक मंद बच्चों में, उनका शारीरिक ढाँचा अथवा ज्ञानेन्द्रियों की क्रियात्मकता में कमी के कारण विभिन्न व्यवहार अर्जन में बाधा उत्पन्न होसकती हैं । इसके अतिरिक्त अनुत्तेजित वातावरण प्रयासों के लिए सीमित पुरस्कार, शिक्षण के अप्रभावी तरीके अथवा शिक्षण में दण्ड विधि के अत्यधिक प्रयोग के नाते बच्चे कुछ सीख पाने में असफल हो सकते हैं ।

इस भाग में शिक्षण की विभिन्न व्यावहारिक विधियों का सुगठित वातावरण में क्रमबद्ध रीति से प्रयोग पर प्रकाश डाला गया है । इन विधियों का समुचित उपयोग मानसिक मंद बच्चों के व्यक्तिगत अथवा सामूहिक/कक्षा में शिक्षण प्रक्रिया को आनन्ददायी बना सकता है ।

पाँचवाँ अध्याय मानसिक मंद बच्चों पर पुरस्कार के प्रभावी उपयोग पर प्रकाश डालता है ।

छठे अध्याय में कार्य विश्लेषण की चर्चा की गई है ।

सातवे अध्याय में व्यावहारिक विधियों जैसे, शेपिंग, श्रृंखलाबद्धता, उत्साहित करना, मॉडलिंग तथा फेड़िंग के प्रभावी प्रयोग का विवरण है । इसमें व्यापकीकरण योजना के साथ-साथ कक्षा में प्रशिक्षण के लिए समुचित व्यवस्था पर भी विचार किया गया है ।

शिक्षकों से निवेदन है कि, आगे के अध्याय में जाने से पहले इस अध्याय के अन्त में दिये गये अभ्यासों को पूरा करलें ।

अध्याय पाँच

पुरस्कार

इस अध्याय के समापन पर, शिक्षक निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम हो सकेंगे :

1. *पुरस्कार क्या है ?*

2. *मानसिक मंद बच्चों के साथ कौन कौन से या किस प्रकार के पुरस्कार का प्रयोग किया जा सकता है ?*

3. *पुरस्कार का चयन कैसे किया जाय?*

4. *मानसिक मंद बच्चों को पुरस्कार देते समय किन-किन नियमों का पालन करना चाहिये?*

5. *समूह में पुरस्कार के उपयोग की कौन कौन सी विधियाँ हैं ?*

मानसिक मंद बच्चों के लिए पुरस्कार का प्रयोग

अधिकतर मानसिक मंद बच्चे कौशल व्यवहार अपने आप ही सीखने का प्रयत्न करते हैं । परंतु इस प्रकार के उनके प्रयास को वांछनीय आनन्ददाई प्रतिफल नही मिल पाता है । अक्सर उनके प्रयास असफलता और निराशा ही दिलाते है । चूंकि, उनके प्रयास का कोई आनन्ददायी परिणाम नहीं होता, भविष्य मे उनके सीखने के प्रयत्न भी कम हो जाते हैं । जिसके कारण उनका व्यवहार सीखने का प्रयास नए कौशल व्यवहार या कोई नई क्रिया सीख पाने मे सहयोगी नही हो पाता । इस अध्याय मे विस्तार से यह बताया गया है कि, मानसिक मंद बच्चों को शिक्षित या प्रशिक्षित करने के लिए कब, कैसे और कहाँ या किसके लिए पुरस्कार को प्रभावी ढंग से प्रयोग किया जाना है । मानसिक मंद बच्चों के शिक्षण प्रक्रिया को आनन्ददायी बनाने में यह शिक्षक को मदद देगी और बच्चों को प्रशिक्षण कार्यक्रम मे और शामिल होने के लिए प्रेरित करेगी तथा सीखने की प्रक्रिया को गति मिलेगी।

पुरस्कार क्या है ?

जब कोई व्यवहार करता है तो उस व्यवहार के बाद कुछ होता है ।

उदाहरण :

व्यवहार	पुरस्कार
1. शशि अक्षरो को लिखती है	शिक्षिका उसकी प्रशंसा करती हैं
2. रवि कविता कहता है	बच्चे तालियाँ बजाते है
3. श्यामा पुस्तक में तस्वीरों को रंगती है	शिक्षिका पुस्तक में "शाबास" लिखती है ।
4. अरुण, एक सप्ताह तक श्याम पट्ट साफ करता रहता है ।	अगले सप्ताह के लिए शिक्षिका उसे छात्र नायक बना देती है ।

इन सभी उदाहरणों में यह स्पष्ट है कि, प्रत्येक व्यवहार के बाद कोई बात या घटना घटित हो रही है । यदि किसी को कोई व्यवहार करने के बाद आनन्द की प्राप्ति हो तो वह भविष्य में वैसा ही करना चाहेगा ।

"व्यवहार के बाद की घटना जो उस व्यवहार को भविष्य में पुनः होने को प्रेरित करती है, उसे पुरस्कार कहा जाता है।"

चाहे हमें जानकारी हो या हम अनभिज्ञ हों, हमारे प्रत्येक व्यवहार के बाद पुरस्कार अवश्य मिलता है । यदि व्यवहार विशेष के बाद पुरस्कार न मिले तो हम उस व्यवहार को अगली बार नहीं दोहरायेंगे। मानसिक मंद बच्चों में व्यवहार परिवर्तन का पुरस्कार एक सशक्त माध्मम है ।

बालक के लिए पुरस्कार वह है जिसे वह पसंद करता है या उससे उसे आनन्द का अनुभव होता है । यह निश्चित नहीं है कि, आप, एक शिक्षक के नाते, सोचे कि, बच्चे को यही अच्छा लगना चाहिए । एक पुरस्कार जिस व्यवहार के बाद प्राप्त होता है, व्यवहार के पुनःघटित होने की सम्भावना को बढ़ाता है ।

पुरस्कार के प्रकार

मानसिक मंद बच्चों के लिए कई चीजे या घटनाएँ पुरस्कार रूप हो सकती है । कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं ।

मौलिक पुरस्कार	
ठोस	*द्रव*
केला	चाय
टाफी	कॉफी
मूँगफली	दूध
सेव	लिमका
चिप्स्	जूस
पॉपकॉर्न	मट्ठा

मौलिक पुरस्कारों में वे खाद्य पदार्थ जाएंगे जिन्हें बच्चे पसंद करते हैं ।

वस्तु पुरस्कार	
पतंग	फूल
लट्टू	बिन्दी
गेद	चोटी
घड़ी, खिलौना	चूड़ी
गोलियाँ	कड़े

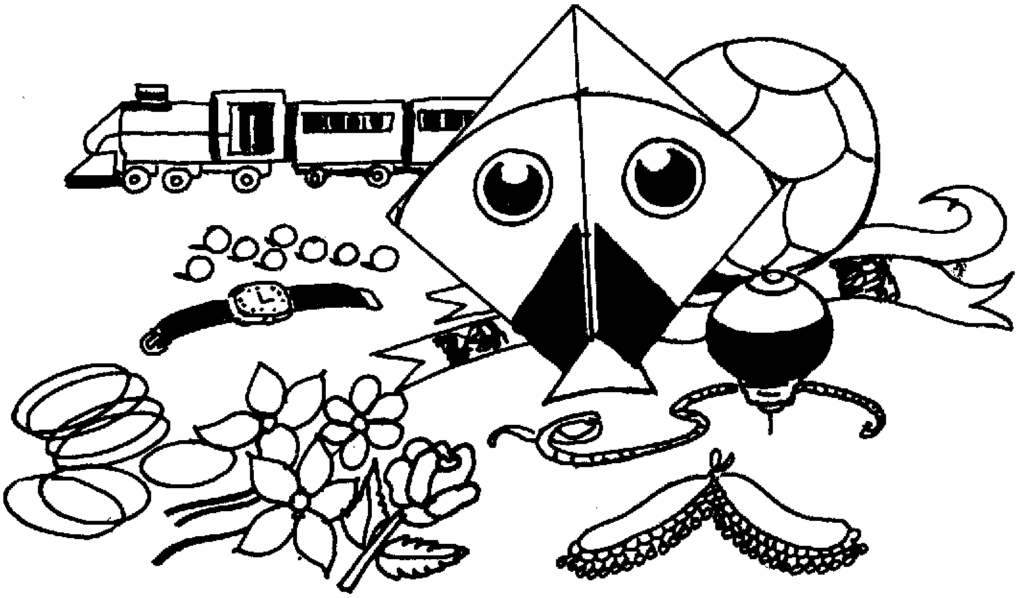

वस्तु पुरस्कारों में वे वस्तुएँ या चीजें आती हैं जो बच्चों द्वारा पसंद की जाती हैं ।

सामाजिक पुरस्कार	
शाब्दिक	*अशाब्दिक*
"अच्छा"	मुस्कुराहट
"बहुत अच्छा किया"	सिर हिलाना (सकारात्मक)
"अति उत्तम"	गले लगाना, थप-थपाना
"शाबाश"	
अतिसुन्दर	प्यार करना

सामाजिक पुरस्कारों में शाब्दिक प्रशंसा या ऐसे संकेत जो प्रशंसा बताएँ और बच्चों को पसंद हों।

क्रियाकलाप पुरस्कार

गानेसुनना
टी.वी. देखना
घूमने जाना
विशेष खिलौने से खेलना
पालतू जानवर से खेलना
तस्वीरें बनाना
साइकिल चलाना
फोटो अलबम देखना, आदि ।

क्रियाकलाप पुरस्कारों में कार्य या व्यवहार आते हैं जो बच्चे करने में आनन्द लें ।

टोकन पुरस्कार
किसी वस्तु के माध्यम से शिक्षक किसी टोकन को बना सकते है, जो बच्चो को अच्छे लगें और वे उनके लिए काम करने लगें । जैसे : स्टार देना सिक्के देना अधिक पर उचित नम्बर देना बुक में सही का निशान बनाना ।

नोट : मानसिक मंद बच्चों के लिए कक्षा/स्कूल में आर्थिक टोकन-योजना बनाने के उपायो का विस्तृत विवरण इस अध्याय के अन्त मे दिया गया है : देखे समूह पुरस्कार विधियाँ.

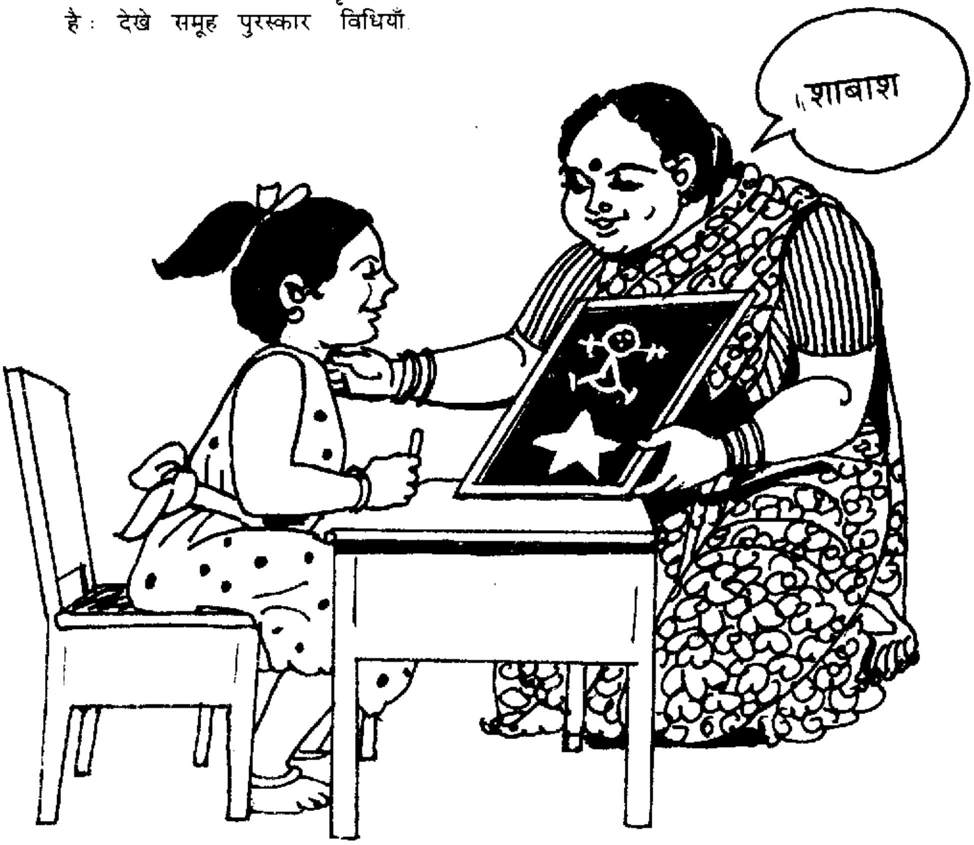

टोकन वे वस्तुएँ हो सकती हैं जिनका अपना कोई मूल्य नहीं, परन्तु किन्ही चीजो के संदर्भ में मूल्यवान बन जाती हैं । शिक्षक इन्हें बच्चो को निर्धारित लक्ष्य व्यवहार करने के पश्चात् देते हैं ।

विशेष अधिकार

बच्चे को कक्षा का मॉनिटर बना देना
बच्चे को स्कूल का कैप्टन बना देना
बच्चे को समूह का नेता बनादेना

विशेषाधिकार वह स्तर / पद है, जिसे प्रत्येक बच्चा पाना चाहता है । इस पुरस्कार को देने की प्रक्रिया में बच्चे को वह स्तर / पद दिया जाता है जिसे पाकर उसे महत्वपूर्ण होने का अनुभव हो ।

मानसिक मंद बच्चों के लिए पुरस्कार का चयन कैसे करें ?

विभिन्न व्यक्ति विभिन्न समय में विभिन्न प्रकार की वस्तुओं या घटनाओ को पुरस्कार के रूप में लेते है । सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा मानसिक मंद लोगो के लिए इस प्रकार की चीजे या घटनाएँ कही अधिक सीमित होती हैं जिन्हें पुरस्कार के रूप मे लेते हैं। इसका एक कारण यह हो सकता है कि, ये बच्चे विविध प्रकार की पुरस्कार दिला सकने वाली क्रियाओं मे भाग नही ले पाते। यदि कुछ बच्चे ऐसा कर सकने मे सक्षम भी होते हैं तो उन्हे इन पुरस्कारो की प्राप्ति नही हो पाती । यद्यपि थोड़ा मुश्किल है परन्तु शिक्षक को चाहिए कि, इस प्रकार के मानसिक मंद बच्चो के पुरस्कारो को जान ले । इससे उन्हे शिक्षा देने में आसानी हो सकेगी ।

प्रशिक्षण योजना प्रारंभ करने के पहले बच्चे/बच्चों के लिए किस पुरस्कार का उपयोग करना है, उसका निश्चय करना याद रखे ।

बच्चों के शिक्षण के लिए सहायक निर्देश जो शिक्षको को पुरस्कार चयन मे सहायक हो सकते है :

1. **बच्चे के व्यवहार का निरीक्षण करे ।**

   देखे कि, बच्चा किन प्रकार के व्यवहारो मे अपना अधिक समय बिताता है । किस प्रकार की क्रिया करने की इच्छा बार बार रखता है आदि ।

2. **बच्चे से सीधे पूछे ।**

   जो बच्चे आसानी से बात चीत कर सके, उनसे पूछे उन्हे क्या क्या पसद है ? क्या करना अच्छा लगता है ।

3. माता पिता, अभिभावक और अन्य लोग जो बालक की देख रेख करते है, उनसे पूछे; यद्यपि आप अन्य लोगो से पूछ सकते है कि, बालक को क्या अच्छा लगता है, याद रखे कि यह निश्चित नही कि, माता-पिता के पसद की वस्तु को ही बालक पसद करे ।

4. **पुरस्कार पसद परख सूची का प्रयोग करे। (परिशिष्ट IV)**

   पुरस्कार पसद परख सूची मे कई ऐसे नाम हैं जो बच्चों के लिए पुरस्कार हो सकते है। इसे प्रत्येक बालक को व्यक्तिगत रूप से शिक्षक दे सकते हैं। इसके आधार पर बच्चे के बारे मे यह ज्ञात होगा कि, कौन कौन सी वस्तुएँ बालक विशेष के लिए पुरस्कार हो सकती है ।

5. **बालक का पुरस्कार इतिहास प्राप्त करे।**

   बालक के माता-पिता और उसके पहले शिक्षक से विस्तृत जानकारी लें। बालक किन-किन परिस्थितियो और चीजों के लिए काम करता आया है दूसरो से कौन कौन से चीजों की माग की है।

6. **ऐसे पुरस्कारो का चयन करे जो आसानी से मिल सके और जो बच्चे को आसानी से दे सके ।**

   हमेशा ऐसे पुरस्कारो का चयन करे जिन्हे आप आसानी से प्राप्त कर पाएँ, और जिन्हें आप बच्चे को कक्षा/स्कूल, या अन्य परिस्थिति मे दे सके ।

7. पुरस्कार प्रतिचयन (रिवार्ड सैम्पलिंग) विधि का प्रयोग करें ।
जब शिक्षक को पता न लग पाए कि; बालक के लिए कौन सा पुरस्कार प्रभावी है उस स्थिति में बालक के सामने, पाँच या छः प्रकार की वस्तुएँ जो पुरस्कार स्वरूप हो, रख दे । थोड़ी देर बालक को अवसर दें पुरस्कार की वस्तु को चुनने का । आप को, बालक के लिए, प्रभावी पुरस्कार का पता लग सकता है ।

8. उचित पुरस्कार का चयन करें ।
पुरस्कार बालक की उम्र, लिंग,आर्थिक-सामाजिक स्तर और आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए । उदाहरण के लिए- मौलिक पुरस्कार छोटे बच्चो के लिए अधिक प्रभावी हो सकता है ।

9. प्रभावशाली पुरस्कार का चयन करें ।
पुरस्कार इतना प्रभावी हो जिससे बालक उसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करे । आवश्यकता पड़ने पर मौलिक पुरस्कार का प्रयोग कक्षा में किया जा सकता है ।

10. पुरस्कार में बदलाव : पुरस्कार स्थिर नही होते । बच्चे की पसन्द नापसन्द के साथ समय – समय पर बदलते रहते है । जो पुरस्कार बच्चे द्वारा आज पसन्द किया गया है वह उसे कल नापसन्द भी हो सकता है । बच्चों का पुरस्कार के प्रति प्राथमिकता में हो रहे बदलाव पर ध्यान देना चाहिए ।

पुरस्कार कैसे दिया जाय ?

उचित पुरस्कार चयन के बाद, उन्हें बच्चों को कैसे दिया जाय, इसके लिए निम्नलिखित नियमो का पालन करना चाहिए । प्रभावी पुरस्कार देने के लिए अधिक अभ्यास की आवश्यकता पड़ती है ।

1. वांछनीय व्यवहारो के लिए ही पुरस्कार दें
शिक्षा या प्रशिक्षण प्रारम्भ करने से पहले, शिक्षक को निश्चित कर लेना है कि, बालक के किन-किन व्यवहारो को पुरस्कृत करना है और किन्हे नही । अन्यथा अनजाने में ही आप अवांछनीय व्यवहार को भी पुरस्कार दे देंगें ।

2. पुरस्कार स्पष्ट रूप से दें
बालक के किसी विशेष व्यवहार को पुरस्कृत करते समय आप को स्पष्ट और निश्चित निर्देश देने हैं । बालक के व्यवहार विशेष को पुरस्कृत करना है न कि, बालक को । उदाहरण के लिए,-बच्चा जब फलो के नाम सही प्रकार से बोलता है तव केवल "शावास" कहने के बजाय अध्यापक "शाबास" मुझे तुम्हारा फलो के सही नाम बताने का ढंग अच्छा लगा । "आपके बोलने के ढंग और चेहरे के भावों में खुशी झलकनी चाहिए ऐसा स्पष्ट कर देने से बच्चे को यह समझने में मदद मिलेगी कि, उसे यह पुरस्कार क्यो दिया गया है । इससे बच्चे को विशेष व्यवहार और पुरस्कार के बीच के सवन्ध को समझने मे भी मदद मिलेंगी । बच्चा यह भी समझ पाएगा कि, केवल उसका व्यवहार ही स्वीकार या अस्वीकार किया जाता है, वह नही ।

3. **पुरस्कार तुरंत दें**

बालक द्वारा पूर्ण किए गए वांछनीय व्यवहार को तुरंत पुरस्कृत करें । लक्ष्य व्यवहार और पुरस्कार देने मे जितना ही अंतर होगा, व्यवहार परिवर्तन की क्षमता उतनी ही कम होगी। पुरस्कार, जो देर से दिया जाता है वह नही देने के बराबर होता है । सामाजिक पुरस्कार तुरंत दे पाना आसान होता है । परंतु जब टोकन या वस्तु पुरस्कार देना होता है तो पहले से सतर्क रहना आवश्यक है । उसे पहले से निश्चय करके पास मे रख लेना चाहिए और लक्ष्य व्यवहार के घटित होने के तुरंत बाद (2–3 सेकेन्ड मे) दे देना चाहिए ।

4. **वांछनीय लक्ष्य व्यवहार के हर बार घटित होने पर पुरस्कार दें**

नए व्यवहार के प्रशिक्षण के प्रारम्भ मे, हर बार व्यवहार को पुरस्कृत करें । परंतु जब व्यवहार अच्छी तरह से सीखा जा चुका हो तो शिक्षक पुरस्कार को समय या अनुपात के संदर्भ मे परिवर्तन कर सकता है । दूसरे शब्दो में, जब भी शिक्षक एक नए लक्ष्य व्यवहार को सिखाना प्रारम्भ करें, बच्चे को उसके प्रयत्नो को हर बार पुरस्कृत करना होगा, जब तक कि, उस व्यवहार को ठीक तरह से सीख न जाए, बच्चा वह व्यवहार करना पसन्द करें और खुशी का अनुभव करें यही इस पुरस्कार प्रणाली का उद्देश्य है !

5. **उचित मात्रा में पुरस्कार दें**

बच्चो मे वांछनीय व्यवहार सुधार या शिक्षण के लिए बहुत कम या बहुत अधिक मात्रा मे पुरस्कार प्रभावी नहीं हो सकता । अतः सही मात्रा की जानकारी आवश्यक हो जाती है । यह प्रत्येक बालक मे भिन्न भिन्न हो सकती है । कभी तो एक ही बालक के लिए अलग अलग समय में भी भिन्नता आ सकती है । अधिक मात्रा मे पुरस्कार न दें, क्यो कि, वह शिक्षण प्रक्रिया मे बाधा उत्पन्न कर सकता है । उदाहरण के लिए–यदि बच्चे का व्यवहार केवल आधे मिनट की प्रशंसा चाहता है तो उसे पाँच मिनट तक शाबाशी देते रहना अनुचित है । जब मौलिक पुरस्कार देना हो, तो उसे केवल थोड़ी मात्रा में ही दें जिसे बच्चा करीब आधे मिनट में समाप्त कर सके । जैसे एक घूँट शरबत, मूँग फली का एक दाना, चाकलेट का टुकड़ा, आदि ।

6. **सामाजिक पुरस्कार के साथ विविध प्रकार के पुरस्कारों का प्रयोग करे**

जहाँ भी सम्भव हो हर प्रकार के पुरस्कारों को मिलाकर प्रयोग करें । उदाहरण के लिए मौलिक पुरस्कार के साथ साथ सामाजिक पुरस्कार का प्रयोग वांछनीय है । धीरे-धीरे जब बालक केवल सामाजिक पुरस्कार पर ही वांछनीय व्यवहार करता है तो मौलिक पुरस्कार कम कर दें और बाद में हटा भी लें । सामाजिक पुरस्कारो के साथ-साथ क्रिया कलाप पुरस्कार, वस्तु पुरस्कार, या विशेषाधिकार को भी शामिल कर सकते हैं ।

7. **पुरस्कार में बदलाव :**
बच्चे हर समय एक ही प्रकार का पुरस्कार पाकर तंग आ जाते हैं । ऐसी स्थिति में पुरस्कारो का अपना मूल्य समाप्त हो जाता है । अतः उन्हें समय समय पर बदलते रहना आवश्यक है । उदाहरण के लिए-यदि आप क्रिया कलाप पुरस्कार का प्रयोग कर रहे है जैसे कि, किसी बच्चे के लिए रंग भरने की क्रिया, बच्चे की पसंद, नापसन्द देखते हुए आप उसे खेलने के लिए खिलौना दे सकते है और बाद मे फिर रंग भरने की क्रिया दे सकते हैं।

8. **पुरस्कारों का फेड होना (अध्याय 7 मे फेड़िंग भी देखे) :**
जैसे कि, चौथे चरण में बताया गया है कि, नए व्यवहार सिखाते समय लगातार पुरस्कार देने की आवश्यकता होती है लेकिन जैसे-जैसे बच्चा व्यवहार सीखता जाता है इनको धीरे-धीरे घटा कर पूरी तरह हटा लेना आवश्यक हो जाता है । सामाजिक पुरस्कार को दूसरे पु स्कारो के साथ, जोड़ा जाता है इसका एक कारण यह है कि सामाजिक पुरस्कार अधिक प्राकृतिक होते है और प्रयोग के लिए सरलता से उपलब्ध होते हैं । जब दूसरे पुरस्कार धीरे-धीरे हटा लिये जाते हैं तब यही पुरस्कार नए व्यवहारो को सिखाने के लिए प्रयोग किए जा सकते हैं ।

समूह पुरस्कार पद्धतियाँ

यद्यपि कुछ बच्चे व्यक्तिगत आधार पर प्रशिक्षण चाहते है, अधिकाश मानसिक मंद बच्चे समूह में अच्छी तरह से सीखते हैं । स्कूल या कक्षा में सामान्यतः या प्रशिक्षण समूह मे ही होता है इसके पहले कि, हम समूह पुरस्कार पद्धतियो पर प्रकाश डाले, यह आवश्यक हो जाता है कि, हम कक्षा मे समूह को ध्यान में रखते हुए पुरस्कार देने के नियमो को समझ लें ।

1. पुरस्कार पाने के नियमो को लिखित या चित्रित रूप में कक्षा या स्कूल के नोटिस बोर्ड पर लगा दें ।
2. कक्षा के प्रत्येक घंटे के प्रारम्भ में पुरस्कार पाने के नियमो को स्पष्ट शब्दो मे सभी बच्चो को समझाना होगा ।
3. यदि आवश्यक समझे तो एक या सभी बच्चो से, उनके ही शब्दों मे, पुरस्कार पाने के नियमो को कहने के लिए कहें । यदि बच्चा जानता है कि, किसी व्यवहार विशेष के घटित होने पर पुरस्कार मिलेगा तो वह अपनी इच्छा से उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करेगा। फिर भी अति अल्प मानसिक मंद बच्चों को इस प्रकार से समझा पाना कठिन होगा और ऐंसे बच्चे उचित साहचर्य भी स्थापित नहीं कर पाएँगे। ऐसे बच्चों के लिए बार बार प्रयत्न कराते हुए लक्ष्य व्यवहार और पुरस्कार मे सबन्ध दर्शाना होगा, जिससे उन्हे व्यवहारिक रूप से साहचर्य मालूम हो सके । इस पद्धति को पुरस्कार प्रशिक्षण कहते हैं । किसी भी प्रकार से यह निश्चय कर लें कि, बालक को मालूम हो जाये कि, उसे पुरस्कार किस काम या व्यवहार के लिए दिया जा रहा है ।
4. अन्य बच्चो का ध्यान उस बालक पर दिलाएँ जिसे वांछनीय व्यवहार के लिए पुरस्कृत किया जा रहा है । इससे अन्य बच्चे अनुकरण से भी सीख पाएंगे । परंतु उन विद्यार्थियों के लिए जो पुरस्कार प्राप्त नही कर रहें किसी प्रकार की अनुचित तुलना या प्रतिकूल विचार नही देने चाहिए ।

1. समूह में टोकन - व्यवस्था कार्यक्रम

बच्चों के लिए समूह पुरस्कार पद्धतियो में टोकन व्यवस्था कार्यक्रम एक माध्यम है । इस पद्धति मे बच्चे को उसके उचित या वांछनीय लक्ष्य व्यवहार के लिए टोकन रूप मे पुरस्कार देने की व्यवस्था होती है । इन टोकनो को बाद मे अन्य पुरस्कार के लिए बदला जा सकता है।

बच्चो के लिए स्कूल या कक्षा मे टोकन व्यवस्था योजना के प्रयोग के लाभ :

1. टोकन प्रयोग में सरल और आसान होते हैं ।
2. बिना अधिक समय गंवायें इनको तुरंत दिया जा सकता है ।
3. कक्षा की शैक्षिक या सीखने की क्रिया में अधिक बाधक नही होती ।
4. व्यवहार विशेष जिसे शिक्षक बढ़ाना या सिखाना चाहता है, उसके आधार पर कक्षा के सभी बच्चे इस कार्यक्रम के अंदर लाए जा सकते है ।

टोकन - व्यवस्था कार्यक्रम रूपांकन के चरण

टोकन - व्यवस्था योजना की रूपरेखा बनाते समय अध्यापक को निम्न संकेतों का ध्यान रखना चाहिये।

1. लक्ष्य व्यवहार को पहचानें

उन लक्ष्य व्यवहारो का चयन करें जिनके लिए टोकन व्यवस्था योजना विकसित की जा रही है । कक्षा के प्रत्येक बच्चे के बारे मे लिए गए निर्णय पर आधारित लक्ष्य निर्धारित किए जाने चाहिए। आरम्भ मे चुने गए लक्ष्य प्रत्येक बच्चे के लिए सरलता से प्राप्त होने चाहिए जिससे वह एक दो दिन मे ही पुरस्कार प्राप्त कर सके ।

इससे बच्चे मे अध्यापन कार्यक्रम के प्रति रूचि उत्पन्न होगी । वे व्यवहार और पुरस्कार के बीच के संबंधो को भी जल्दी सीख लेंगे । प्रत्येक बच्चे के लिए तीन से चार तक लक्ष्य व्यवहार चुने जा सकतें है। यह निर्णय अध्यापक को ही लेना होता है ।

2. **टोकन का रूपांकन करें।**
व्यवहार उद्देश्य की पहचान और स्पष्टीकरण हो जाने पर, वस्तु विशेष के माध्यम से टोकन बनाए। बहुधा उन सभी वस्तुओं का प्रयोग, टोकन बनाने मे, किया जा सकता है जिन्हें बच्चे पसंद करते है और जिन्हें पाने का प्रयत्न कर सकते हैं। शिक्षक अपनी आवश्यकता अनुसार विभिन्न धातुओं के टुकड़े, प्लास्टक, लकड़ी या कार्डबोर्ड के टुकड़ो का प्रयोग कर सुविधानुसार टोकन बना सकते है। कक्षा के 7–8 छात्रों के लिए शिक्षक लगभग 200 टोकन तैयार कराकर रख सकते है।

3. **एक टोकन-व्यवस्था बोर्ड तैयार करें।**
स्कूल या कक्षा में जिस प्रकार के नोटिस बोर्ड का प्रयोग होता है उसी प्रकार का एक बोर्ड बनवाएं। यह बोर्ड लम्बाई मे इतना हो कि, कक्षा के सभी बच्चो का नाम

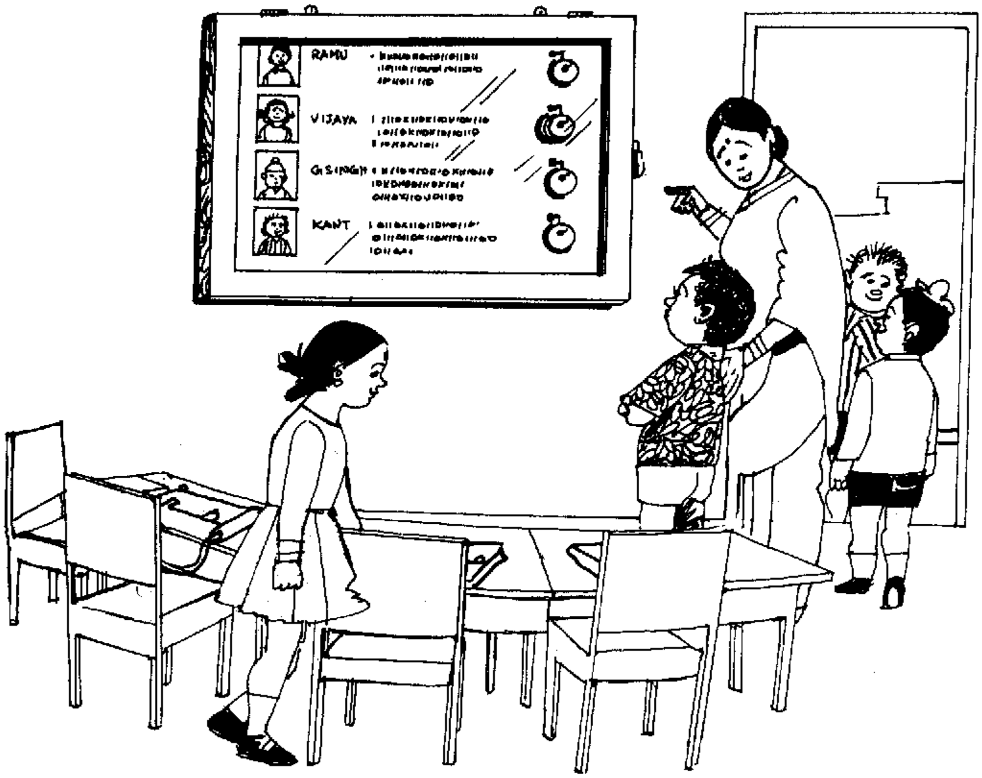

और व्यवहार उद्देश्य के आगे यदि चाहें तो उनके फोटो लगा सकते हैं । टोकन को लटकाने की ऐसी व्यवस्था हो जिसपर धातु की खूँटी या कीलें लगी हों। यह ध्यान रखना चाहिए कि, उन कीलों/खूंटियों से टोकन गिर न पाये। टोकन व्यवस्था बोर्ड को कक्षा में ऐसे स्थान पर लटकाएँ जिससे बच्चे उसे आसानी से देख और पढ सकें। (चित्र देखिये) ।

4. **विशेष लक्ष्य व्यवहार के लिए टोकन मूल्य निर्धारित करें।**

टोकन बोर्ड पर जिस प्रकार से व्यवहार उद्देश्य के सामने बालक का नाम लिखना है उसी प्रकार प्रत्येक व्यवहार लक्ष्य के लिए, जिसे बालक को प्राप्त करना होगा, टोकन मूल्य भी स्पष्ट करते हुए लिखना होगा ।

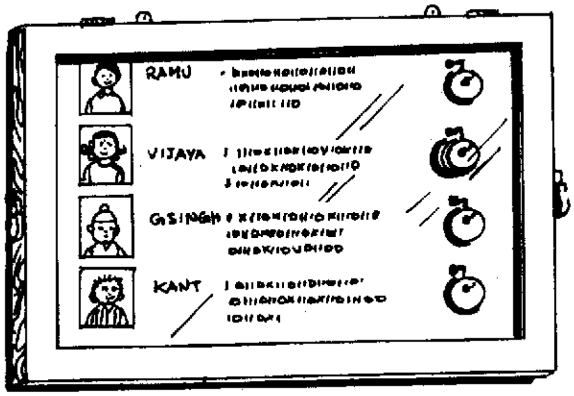

टोकन का मूल्य और निर्धारित संख्या बालक के आयु, आवश्यकताएँ और व्यवहार से सम्बन्धित कार्य कुशलता की जटिलता पर आधारित होना चाहिए (अगले पृष्ठ पर टेबल देखिये) यदि किसी लक्ष्य व्यवहार के लिए बड़ी संख्या में टोकन रखे गए हैं जो कि, बच्चे के लिए कर पाना कठिन है तो इस में कोई समझदारी नहीं है क्योंकि, बच्चा उसे जल्दी से प्राप्त नहीं कर पाएगा । मान लो कि, एक बच्चा, जो एक स्थान पर दो मिनट से अधिक नहीं बैठ सकता, उसके, लिए यह लक्ष्य व्यवहार रखा जाए कि "एक स्थान पर एक घंटा बैठने से उसे 10 टोकन दिए जाएंगे।" तो उस अध्यापक को कई वर्षो तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी और शायद फिर भी उसे निराशा ही हाथ लगे । प्रत्येक बच्चे को उच्च स्तर तक ले जाने के लिए यह आवश्यक है कि, उसके लक्ष्य व्यवहार, उसकी योग्यताओं और वर्तमान क्रियात्मक स्तर के अनुसार ही निर्धारित किए जाएं । निश्चित लक्ष्य व्यवहार को करने पर बालक किस मूल्य का टोकन और कितना टोकन पाएगा, इससे संबन्धित नियम स्पष्ट रूप से निर्धारित कर देना चाहिए। नियम में यह भी स्पष्ट

कर देना होगा कि; बालक जब भी कोई अवांछनीय व्यवहार करेगा तो उसे कितने टोकन वापस करने होंगे।

टोकन अर्जित कराने वाले व्यवहार	टोकन संख्या	टोकन वापस दिला देने वाले व्यवहार	टोकन संख्या
कॉपी मे "अ" अक्षर देखकर उतारना	3	दूसरे बच्चों को मारना	3
स्कूल आने के पश्चात् शिक्षक को देखकर "नमस्ते" कहना	2	दूसरो पर थूँकना	2
लालरंग बताना	3	वस्तुएँ छीन लेना	2
खिलाने बाँट कर खेलना	2	चॉक खाना	3

5. प्रोत्साहन को पहचानें और एक दूकान लगायें

शिक्षक स्कूल या कक्षा मे छोटी मोटी दूकान लगाएँ जिसमे खिलौने, पढ़ने लिखने की सामग्री, खाने की सामग्री आदि बेंचने के लिए रखी हो। जहाँ तक हो सके दुकान पर बेचने के लिए वही सामान रखा जाए जो घर में माँ–बाप द्वारा बच्चों को आसानी से नहीं दिया जाता। अन्यथा उनका पुरस्कार– महत्व जाता रहेगा। दूकान के लिए उन्ही वस्तुओं का चयन करें जिन्हें बच्चे पसद करते हों। प्रत्येक वस्तु के दाम उनपर लिखे हों और यह भी लिखा हो कि, वस्तु खरीदने के लिए कितने टोकन देने होंगे। यदि दुकान के लिए और कहीं जगह न मिले तो, कक्षा में ही आलमारी या अन्य वैसी ही जगह में लगाएँ। दूकान से सामान खरीदने के लिए बच्चों को समय दें, जो शिक्षण कार्यक्रम के अतिरिक्त हो। यह समय स्कूल के अंतिम घंटे में 10 से 20 मिनट का होना चाहिए।

मूल्य विनिमय का एक नमूना दिया जा रहा है :

वस्तुएँ	टोकन मूल्य
रिबन (एक टुकड़ा)	3 टोकन
चॉकलेट	1 टोकन
खिलौना (10 मिनट का किराया)	2 टोकन
पेंसिल (15 मिनट के लिए किराया)	6 टोकन
केलिडोस्कोप . से 5 मिनट तक देखना	2 टोकन
चिप्स् (5 टुकड़े)	1 टोकन

6. विशेष लक्ष्य व्यवहार के लिए पुरस्कार के रूप में टोकन दें

टोकन-व्यवस्था को अमल में लाने के पहले उससे संबन्धित पद्धति को अच्छी तरह से समझाएँ । कक्षा के सभी बच्चों को यह बता दे कि, किस वांछनीय व्यवहार के होने के बाद टोकन मिलेगा, और किस व्यवहार के बाद टोकन छिना जा सकता है । टोकन के मूल्य भी समझाने होंगे । टोकन न देने, खो जाने या चुराए जाने से संबन्धित नियमों को स्पष्ट कर दें ।

टोकन-व्यवस्था को कार्यान्वित करने के पहले बालक द्वारा सफल लक्ष्य व्यवहार करने तक इंतजार करें । जब लक्ष्य व्यवहार घटित हो, तब बोर्ड पर बालक के अंकित नाम के आगे टोकन लटका दें । लक्ष्य व्यवहार विशेष के घटित होने पर टोकन बच्चे को सीधे न देकर बोर्ड पर पहले से निर्धारित स्थान पर लगा दें । किसी भी हालत में बच्चे टोकन घर न ले जाएँ न ही टोकन व्यवस्था कार्यक्रम के अंतर्गत स्कूल द्वारा खोली गई दुकान से सामान खरीदने के लिए घर से लाए हुए अपने पैसों का प्रयोग करें ।

जब भी दूकान खुले या जब बालक टोकन बदलकर कोई सामान लेना चाहे तो शिक्षक को साथ जाना चाहिए । इस समय शिक्षक बालकों की मदद भी कर सकता है, सिखा भी सकता है । हाँ, शिक्षक बालक के चुनाव पर अपना कोई प्रभाव न डालें ।

साथ ही आप यह बात बालक पर छोड़ दे कि, वह सभी टोकन बदलना चाहता है या कुछ ही । इसके साथ यह भी ध्यान रखे कि, कहीं कोई एक बच्चा बहुत सारे टोकन बचा कर रख तो नही रहा है ।

7. **टोकन-पुरस्कार को अन्य पुरस्कारों का पूरक बनाएँ**

टोकन-पुरस्कार के साथ साथ सामाजिक पुरस्कार, का भी प्रयोग कीजिये । जिससे बच्चे अन्य पुरस्कार पाने के लिए भी इच्छुक रहें ।

8. **टोकन-व्यवस्था कार्यक्रम को धीरे धीरे समाप्त करना**

जैसे जैसे बच्चे व्यवसाय पूर्व कक्षा से आगे बढ़े, उन्हें वास्तविक टोकन (पैसे, रूपये) को प्राप्त करने का प्रशिक्षण और प्रेरणा दें । इसके लिए शिक्षक टोकन, अब प्लास्टिक आदि के बजाय, वास्तविक पैसों और रूपयों का प्रयोग करें । टोकन व्यवस्था योजना का अंतिम उद्देश्य तो यही है कि, बालक को वांछनीय व्यवहारों को सिखाते हुए मुख्य धारा में डाला जाय और कक्षा या स्कूल के वातावरण में सीख कर उसको अपने वातावरण में उचित और प्रभावकारी व्यवहार के योग्य बनाया जाय, जिससे अंततः स्वावलम्बी बन सकें ।

II. समूह में व्यवहार अनुबंध पद्धति

बच्चों के व्यवहार परिवर्तन की एक और पद्धति है जिसमें उनसे "वादा" कराते है कि, यदि उन्हें पुरस्कार चाहिए तो उन्हें वांछनीय रूप से व्यवहार करना है । इस प्रकार का वादा या व्यवहार अनुबंध उन्हीं मानसिक मंद बच्चों से किया जा सकता है जो "यदि–तब" के संबंध को समझ सकते हैं या जो व्यवहारों को उनके परिणामों के साथ जोड़ सकते हैं ।

उदाहरण :

	यदि...	तब...
1.	यदि सतीश, एक घंटे में 20 लिफाफे चिपका लेगा,	तब शिक्षक उसे एक रूपया देगें ।
2.	यदि मेनका अपने कपड़े एक सप्ताह तक स्वयं धोएगी,	तब शिक्षक उसे एक फिल्म देखने की इजाजत देगें ।
3.	यदि अनुपमा, सभी शिक्षको के लिए, रोज, तीन दिन तक, चाय बनाएगी,	तब उसे एक जोड़े नए कान की बाली दी जाएँगी ।
4.	यदि सुषमा अपने घर का काम, 5 दिन तक, रोज करेगी,	तब उसे आने वाले 5 दिन तक कक्षा का मॉनीटर बनाया जाएगा ।

शिक्षक और बालक के बीच व्यवहार अनुबंध लिखित या मौखिक हो सकता है । इसका एक रूप पृ. सं. 9 में दिया जा रहा हैं :

दिनांक ____________

अनुबंध

यह अनुबध ______________________________
(बालक का नाम)

और ______________________________ के बीच है । यह अनुबंध
(शिक्षक का नाम)

दिनांक ______________ से प्रारम्भ होता है और दिनांक ______________

को समाप्त होता है । इस पर पुनः विचार दिनांक __________ को किया जाएगा ।

अनुबंध की शर्ते हैं कि,

____
यदि (बालक का नाम)

______________________________ करेगा ।

____
जब (शिक्षक का नाम)

______________________________ करेगा ।

यदि ______________________________ अनुबंधित व्यवहार करता है तो

शर्त के अनुसार वह पुरस्कार पाएगा । यदि ______________________________

व्यवहार नही कर पाएगा तो पुरस्कार नही दिया जाएगा ।

(शिक्षक के हस्ताक्षर) (बालक के हस्ताक्षर)

दिनांक 2.3.93.

अनुबंध

यह अनुबंध नेहा (बालक का नाम)

और नीति (शिक्षक का नाम) के बीच है । यह अनुबंध

दिनांक 2.3.93. से प्रारम्भ होता है और दिनांक 2.4.93.

को समाप्त होता है । इस पर पुनः विचार दिनांक 18.3.93. को किया जाएगा ।

अनुबंध की शर्तें हैं कि, :

यदि नेहा (बालक का नाम)

नियामित रूप से स्कूल आया करेगी ।

जब नीति (शिक्षक का नाम)

स्कूल - बस में सैर करायेगी करेगा ।

यदि नेहा अनुबंधित व्यवहार करती है तो

शर्त के अनुसार वह पुरस्कार पाएगी । यदि नेहा

व्यवहार नहीं कर पाएगी तो पुरस्कार नहीं दिया जाएगा ।

नीति.
(शिक्षक के हस्ताक्षर)

नेहा
(बालक के हस्ताक्षर)

व्यवहार अनुबंध विकसित करने के लिए निर्देश

1. अनुबंध द्वारा स्पष्ट रूप से लक्ष्य व्यवहार को देखे व मापे जाने वाले स्वरूप में लिखे ।

2. पुरस्कार, जो व्यवहार होने के बाद मिलने वाला है, का उल्लेख करें ।

3. यदि बालक वांछनीय व्यवहार नहीं कर पाता तो क्या परिणाम होगा, स्पष्ट करें ।

III. सहपाठी पुरस्कार -विधियाँ –

शिक्षक द्वारा पुरस्कार दिए जाने के अतिरिक्त, साथ पढ़ने वाले बच्चों द्वारा दिए गए पुरस्कार भी वांछनीय व्यवहार को बढ़ावा देने में सहयोगी होते हैं । सहपाठियों को इसमें शामिल करने के कई तरीके हैं :–

अ) दृष्टिगोचर पुरस्कार - विधियाँ –

वांछनीय व्यवहार के लिए पुरस्कार पाते देख कई बार बच्चे अपने व्यवहार में परिवर्तन लाते हैं ।

उदाहरण

शिक्षक ने राकेश, विकास और शीला को दिये गए काम को करने के लिए कहा । राकेश और शीला ने तो लिखना प्रारंम्भ कर दिया परन्तु विकास चुपचाप बैठा रहा । शिक्षक ने विकास पर ध्यान नहीं दिया, अपितु राकेश और शीला को उनके **लिखने के प्रयासों पर उनकी प्रसंशा करते रहे। उसके दोनो सहपाठियों को लिखने के लिए पुरस्कार पाते देख, विकास ने भी लिखना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार दृष्टिगोचर पुरस्कार विधि अपरोक्ष रूप मे बच्चो मे वाछनीय व्यवहार को बढ़ावा दे सकती है ।**

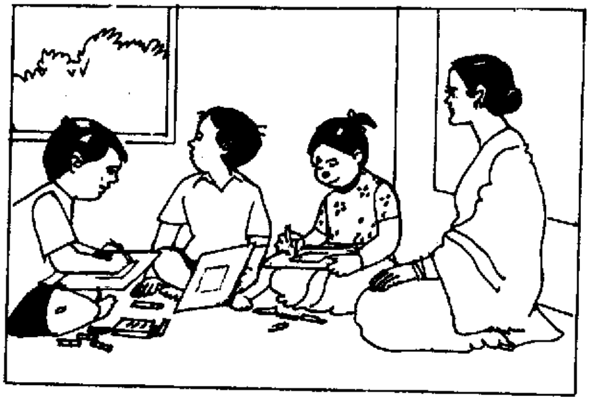

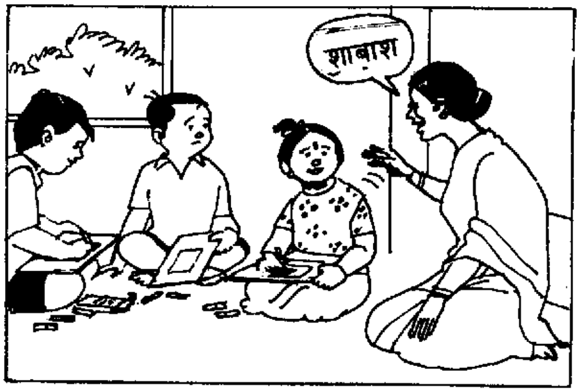

ब) व्यक्ति आश्रित पुरस्कार विधियाँ –

बच्चे के किसी एक व्यवहार को प्रभावित करने की एक विधि है जिसमे समूह को पुरस्कार मिलना या न मिलना एक बालक विशेष के व्यवहार पर निर्भर करता है ।

इसके लिए आप को समूह के लिए उपयुक्त समान पुरस्कार का पता लगाना होगा । उदाहरण के लिए,- पार्क में जाना या एक कहानी सुनना । अब आप समूह के बच्चो से कह सकते है कि, जब प्रत्येक बच्चा एक फूल या एक जानवर का नाम नही ले लेता, हम पार्क में नहीं जाएंगे ।

यह एक बात सत्य है कि, इस विधि में प्रत्येक बच्चे पर दबाव पड़ता है और वह लक्ष्य व्यवहार करने के लिए प्रेरित होता है, जिससे पुरस्कार मिल पाए । परंतु हर एक बच्चे को संतोष होता है कि, उसके समूह को पुरस्कार दिलाने मे उसका महत्वपूर्ण हाथ रहा है ।

स) स्पर्धा पुरस्कार पद्धति –

कक्षा में शिक्षक ऐसी स्थिति लाएँ जिससे समूह के प्रत्येक बच्चेमेंपरस्पर स्पर्धा हों । इसके लिए पुरस्कार के रूप में टोकन अथवा अंकों का प्रयोग किया जा सकता है । जो समूह जीतता है उसे सामाजिक पुरस्कार के रूप में शाबासी भी मिले । इस विधि में भी प्रत्येक बालक यह आभास करेगा कि, पुरस्कार प्राप्ति में उसका भी हाथ रहा है । उदाहरण के लिए- दो दलो के बीच एक प्रश्नमंच या खेलस्पर्धा का आयोजनकर सकते है। दोनो दलों को एक ही प्रकार का कार्य दें । पहले करने वाले दल को पुरस्कार दें ।

उदाहरण

कक्षा में "अ" और "ब" दो समूह बनाएँ जिनमें प्रत्येक में 5 या 6 बच्चे हों । किसी लक्ष्य व्यवहार के सफल समाप्ति पर समूह को निश्चित संख्या के टोकन दिए जायें । यह स्पर्धा की भावना बढ़ायेगी और जीतने की प्रेरणा भी मिलेगी ।

1. मानसिक मंद बच्चों को सिखाने के लिए पुरस्कार सबसे शक्तिशाली माध्यमों में से एक है ।

2. व्यवहार के बाद की घटना जो उस व्यवहार को भविष्य में पुनः होने को प्रेरित करती है उसे पुरस्कार कहा जाता है ।

3. विभिन्न प्रकार के पुरस्कार हैं, मौलिक पुरस्कार, क्रिया-कलाप पुरस्कार, वस्तु पुरस्कार, सामाजिक पुरस्कार, टोकन पुरस्कार और विशेषाधिकार ।

4. अध्यापक अनुकूल पुरस्कारों का चयन करने के लिए कुछ मार्गदर्शी सिद्धान्तों का पालन कर सकते हैं जैसे निरीक्षण द्वारा, बच्चे या अभिमावक से पूछताछ करके, बच्चे के पुरस्कार इतिहास के बारे में जानकारी हासिल करके, इत्यादि) और किसी एक बच्चे या बच्चों के समूह की आवश्यकताओं के आधार पर इन पुरस्कारों का प्रयोग उपयुक्त और शक्तिशाली मात्रा में करना चाहिए ।

5. विभिन्न प्रकार के पुरस्कारो के समिश्रित प्रयोग के साथ-साथ, पुरस्कार देने के विशेष नियम है स्पष्टता, स्थिरता और अनुकूलता ।

6. मानसिक मंद बच्चों के लिए कक्षा में या समूह में पुरस्कार देने के विभिन्न ढंग हैं जैसे कि, टोकन व्यवस्था कार्यक्रम, व्यवहारिक अनुबंध पद्धति, सहपाठी पुरस्कार विधि जिसमें क्रमशः दृष्टिगोचर पुरस्कार, समूह में व्यक्ति आश्रित पुरस्कार और स्पर्धा पुरस्कार सम्मिलित है ।

कार्य अभ्यास-5

I. प्रत्येक कथन को सावधानी पूर्वक पढ़िये और कोष्टक में दिये गए सही शब्दों पर निशान लगाइये ।

1. वह घटना जो किसी व्यवहार के (पहले/पीछे) होती है जिसके कारण आगे भी उसी प्रकार के व्यवहार उत्पन्न होते है उसको "पुरस्कार" कहा जाता है ।

2. एक पुरस्कार के बाद व्यवहार घटित होने की घटनाएँ (घट जाती है/बढ़ जाती है)।

3. हमेशा (वाछनीय/अवाछनीय) व्यवहार को पुरस्कृत करें ।

4. वो पुरस्कार जो बच्चों को देने के लिये आसान है जो (प्राथमिक/सामाजिक) होते है ।

5. मानसिक रूप से विकलांग बच्चों को सिखाने के लिए पुरस्कार (आवश्यक/अनावश्यक) होते है।

II. निम्नलिखित को विभिन्न प्रकार के पुरस्कारों में वर्गीकृत करें :

———— (1)	बालों के कांटे	———— (7)	पानी में खेलना
———— (2)	अति उत्तम	———— (8)	पैन/पैन्सिल
———— (3)	शाबाशी	———— (9)	फोटो एलबम
———— (4)	आइसक्रीम	———— (10)	खेलने के कंचे
———— (5)	डाक टिकटें	———— (11)	प्लास्टिक सिक्के
———— (6)	थैला	———— (12)	पीठ थपथपाना

III. नीचे एक कथन के पाँच वैकल्पिक उत्तर दिये गए है, सही उत्तर पर निशान लगाएं :

1. माया दो अंको का जोड़ सही कर लेती है, अध्यापक उसकी पीठ थपथपाते हुए कहते हैं, "माया "शाबास" जिस तरह से तुमने सही जोड़ किया है उसकी मैं तारीफ करता हूँ"।

इस उदाहरण में अध्यापक निम्न लिखित नियम अपना रहे है :

क) सही पुरस्कृत करना
ख) अभीष्ट व्यवहार को, जब भी हो, हर बार पुरस्कृत करना
ग) उपयुक्त रूप से पुरस्कृत करना
घ) उपरोक्त में से कोई नही
ङ) उपरोक्त में से सभी

2. सतीश स्कूल के परिसर में उगे पौधों को पानी देकर अब अपने साथियों के **साथ** बात कर रहा है । प्रधान अध्यापक देखते हैं कि, पौधों को पानी दिया गया है और तारीफ करते है "शाबास सतीश" । सतीश तुमने पौधों में पानी डाल दिया है ।" हो सकता है कि, यह पुरस्कार कोई काम न करे क्यो कि,–

क) इसको स्पष्ट नहीं किया गया ।
ख) इसमें देरी हो गई ।
ग) यह उपयुक्त नही है ।
घ) यह संगत नही है ।
ङ) उपरोक्त सभी गलत हैं।

3. सस्ता पुरस्कार जो तुरंत कक्षा में दिया जाये वह होता है

क) कोई चीज़
ख) गतिविधि सम्बंधी
ग) टोकन
घ) प्राथमिक
ङ) सामाजिक

4. बच्चे क्रक्षा में कटे चित्रो को चिपका रहे है । गीता कक्षा के काम को करने के बजाय खिड़की के बाहर झांक रही है । अध्यापक इसको मुद्दा बनाते हुए हर उस बच्चे की प्रशंसा करते हैं जो ईमानदारी के साथ कक्षा का कार्य कर रहा है । दूसरे बच्चों को देखकर गीता भी चिपकाने का काम शुरु कर देती है । गीता पर जिस पुरस्कार ने काम किया वह है

क) सामाजिक पुरस्कार
ख) अवलोकनात्मक पुरस्कार
ग) स्पर्धात्मक पुरस्कार
घ) व्यक्तिगत पराश्रित पुरस्कार
ङ) गतिविधि सम्बंधी पुरस्कार

अभ्यास ५

कुंजी

I.	1.	पीछे	2.	बढ़ जाती है।	3.	वांछनीय	4.	सामाजिक	5.	आवश्यक
II.	1.	वस्तु	2.	सामाजिक	3.	सामाजिक	4.	प्राथमिक	5.	टोकन
	6.	वस्तु	7.	क्रियाकलाप	8.	वस्तु	9.	वस्तु	10.	क्रियाकलाप
	11.	टोकन	12.	सामाजिक.						
III.	1.	क	2.	ख	3.	ङ	4.	ख		

अध्याय छ :

कार्य विश्लेषण

इस अध्याय के समापन पर, शिक्षक निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम हो सकेंगें :

1. *कार्य विश्लेषण क्या है ?*
2. *कार्य विश्लेषण की विशेषताएँ क्या क्या हैं ?*
3. *कार्य विश्लेषण मे कौन कौन से चरण है ?*

कार्य - विश्लेषण क्या है ?

सभी मानसिक मंद बच्चे छोटे छोटे चरणों में अच्छी तरह से सीख पाते हैं । व्यवहार उद्देश्य को एक संपूर्ण रूप में सिखाने की अपेक्षा, शिक्षक उसे छोटे छोटे भागों व स्तरों मे बाँट लेते हैं । और फिर प्रत्येक भाग या चरण को अलग – अलग एक एक करके सिखाते हैं । यह क्रिया तब तक चलती रहती है जब तक बालक पूरे व्यवहार उद्देश्य को सीख नहीं पाता ।

कार्य-विश्लेषण एक ऐसी शिक्षण पद्धति है जिसमे व्यवहार लक्ष्य को छोटे – छोटे चरणों में बच्चे को सिखाया जाता है । कार्य-विश्लेषण की पद्धति मानसिक मंद बच्चों को सिखाने की एक सरल विधि है जिसमे क्रियाओं को (दैनिक जीवन और गामक क्रियाओं) सरल बनाने का प्रयास होता है जिससे बच्चे आसानी से सीख पाएँ ।

कार्य-विश्लेषण में चरणो के बारे मे कैसे निर्णय लें ?

1. एक कुशल व्यक्ति को कार्य करते हुए ध्यान से देखें और कार्य मे निहित विभिन्न चरणों को वह कैसे पूरा करता है, नोट करें ।
2. शिक्षक स्वयं ही क्रिया या कार्य को करें और उसमे निहित चरणों पर गौर से विचार करें, देखे और नोट करें ।
3. शिक्षक इस पर विचार करें और उस कार्य मे निहित चरणो को नोट करें ।
4. **शिक्षक अन्य निपूण व्यक्ति से पूछ कर नोट कर सकते है ।**

कार्य - विश्लेषण की विशेषताएँ –

मानसिक मंद बच्चो के प्रशिक्षण के लिए कार्य विश्लेषण पद्धति मे निहित कुछ विशेष गुण नीचे दिए जा रहे हैं :

1. एक प्रकार से, कार्य विश्लेषण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मौलिक प्रोत्साहन, शाव्दिक प्रोत्साहन या सुरागो की सही मात्रा का पता लगाया जाता है, जो किसीभी बच्चे को लक्ष्य व्यवहार सिखाने के लिए हर अवस्था में आवश्यक होता है ।
2. क्योकि, प्रत्येक बालक अपने में एक विशेष बालक है, यह सम्भव नही है कि, वह एक लक्ष्य व्यवहार पहले से निश्चित क्रम और चरणों में सीख पाए । कुछ बच्चे तो थोड़े से चरणो में ही व्यवहार लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं

जब कि, कुछ बच्चे अधिक चरण में उसी व्यवहार लक्ष्य को पा सकेंगें । अतः कार्य विश्लेषण को व्यक्तिगत दृष्टिकोण से देखना होगा । यह बच्चे की आवश्यकता, कुशलता और व्यवहार लक्ष्य पर निर्भर करेगा ।

3. कार्य–विश्लेषण की एक अन्य विशेषता है, उसकी छोटी छोटी क्रियाओ में विभक्ति, जिसकी सहायता से व्यवहार लक्ष्य की ओर अग्रसर हुआ जा सकता है । कार्य विश्लेषण का प्रत्येक चरण क्रमबद्ध रूप से एक दूसरे से जुड़ा होता है और इसी क्रमबद्धता की सहायता से लक्ष्य व्यवहार तक पहुँचा जा सकता है । इस श्रृंखला की पहली कड़ी जब पूरी होगी तो वह आगे वाली दूसरी कड़ी का प्रारंम्भ करेगा । कभी – कभी क्रम को छलांग भी लगाया जा सकता है, यह बच्चे की आवश्यकता और स्तर की कठिनता या सरलता पर निर्भर करेगा ।

कार्य- विश्लेषण के चरण

किसी भी व्यवहार लक्ष्य के लिए कार्य-विश्लेषण करना हो तो निम्नलिखित चरणों का प्रयोग करना होगा :

चरण 1

बच्चे को सिखाने के लिए लक्ष्य व्यवहार को चुनें ।

चरण 2

बालक विशेष की आवश्यकताओ आदि को ध्यान में रखते हुए, व्यवहार उद्देश्य को कई छोटे – छोटे चरणो में बाँट लें ।

चरण 3

प्रत्येक चरणों को जो कार्य विश्लेषण में रखे, कोशिश रहे कि, सभी चरण सरल हों और इतने छोटे कि, बालक विशेष उन्हें आसानी से प्राप्त कर पाए ।

चरण 4

कार्य-विश्लेषण के चरणों को इस क्रम मे रखे जिससे सरल चरण कठिन के पहले रहें ।

चरण 5

कार्य- विश्लेषण के विभिन्न चरणों पर काम करते हुए बच्चे को देखें, और यह जानकारी प्राप्त करे कि, वह किस चरण को नहीं कर पा रहा है । वहाँ से उसे सिखाना प्रारम्भ करे । धीरे-धीरे आगे बढ़े । जब तक पूरा लक्ष्य व्यवहार प्राप्त न हो जाय क्रम जारी रखें ।

व्यवहार उद्देश्य के लिए कार्य विश्लेषण के दो उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं । (चित्र देखें)

उदाहरण एक

व्यवहार लक्ष्य

निर्देश प्राप्त होने पर, मनोज इस माह के अंत तक, दस में से आठ बार अपने आपसेही ढंग से कमीज पहन पाएगा ।

इस कार्य को निम्न प्रकार से विश्लेषित किया गया :

चरण 1
मनोज कमीज के कालर को बाँए हाथ से पकड़ेगा ।

चरण 2
मनोज अपना दाहिना हाथ कमीज के दाहिने बाँह में डालेगा ।

चरण 3
मनोज कमीज के कालर बाँयें हाथ से पीछे से पकड़ते हुए अपने बाँई ओर लाएगा ।

चरण 4
मनोज कालर को दाहिने हाथ से पकड़ेगा ।

चरण 5
मनोज अपना दाहिना हाथ दाहिने बाँह मे डालेगा ।

चरण 6
मनोज कालर मोड़ेगा ।

चरण 1

चरण 2

चरण 3

चरण 4

चरण 5

कमीज पहनने के लिए कार्य - विश्लेषण

उदाहरण दो

व्यवहार - उद्देश्य

जब विभिन्न रंगो को अजय के सामने रख पूछा जाएगा कि, लाल रंग दिखाओ, तो अजय 15 दिन के अंदर पाँच बार लगातार पूछे जाने पर लाल रंग को इशारे से दिखा पाएगा ।

यह व्यवहार उद्देश्य, कार्य विश्लेषण के माध्यम से निम्नलिखित तरीके से सिखाते हुए प्राप्त किया जा सकता है :

चरण 1
तीन से चार रंगीन वस्तुओं में से, अजय, लाल रंग की वस्तुओं को एक साथ मिला पाएगा ।

चरण 2
जब अजय से पूछा जाएगा "लाल रंग की वस्तु दिखाओ" तो केवल लाल रंगो के समूह मे से वह लाल रंग को ठीक प्रकार से बता पाएगा ।

चरण 3
जब अजय से पूछा जाएगा, "लाल रंग दिखाओ", तो लाल और हरे रंग के समूह में से वह लाल रंग को ठीक प्रकार से बता पाएगा, चाहे किसी क्रम में पूछा जाए ।

चरण 4
जब अजय से पूछा जाएगा, "लाल रंग दिखाओ", तब लाल, हरे और नीले रंगो के समूह मे से वह लाल रंग ठीक प्रकार से बता पाएगा, चाहे किसी क्रम मे पूछा जाए ।

चरण 5
जब अजय से पूछा जाएगा, "लाल रंग दिखाओ तो वह लाल, हरे, पीले व नीले रंगो के समूह मे से लाल रंग को ठीक प्रकार से बता पाएगा, चाहे किसी क्रम में पूछा जाए ।

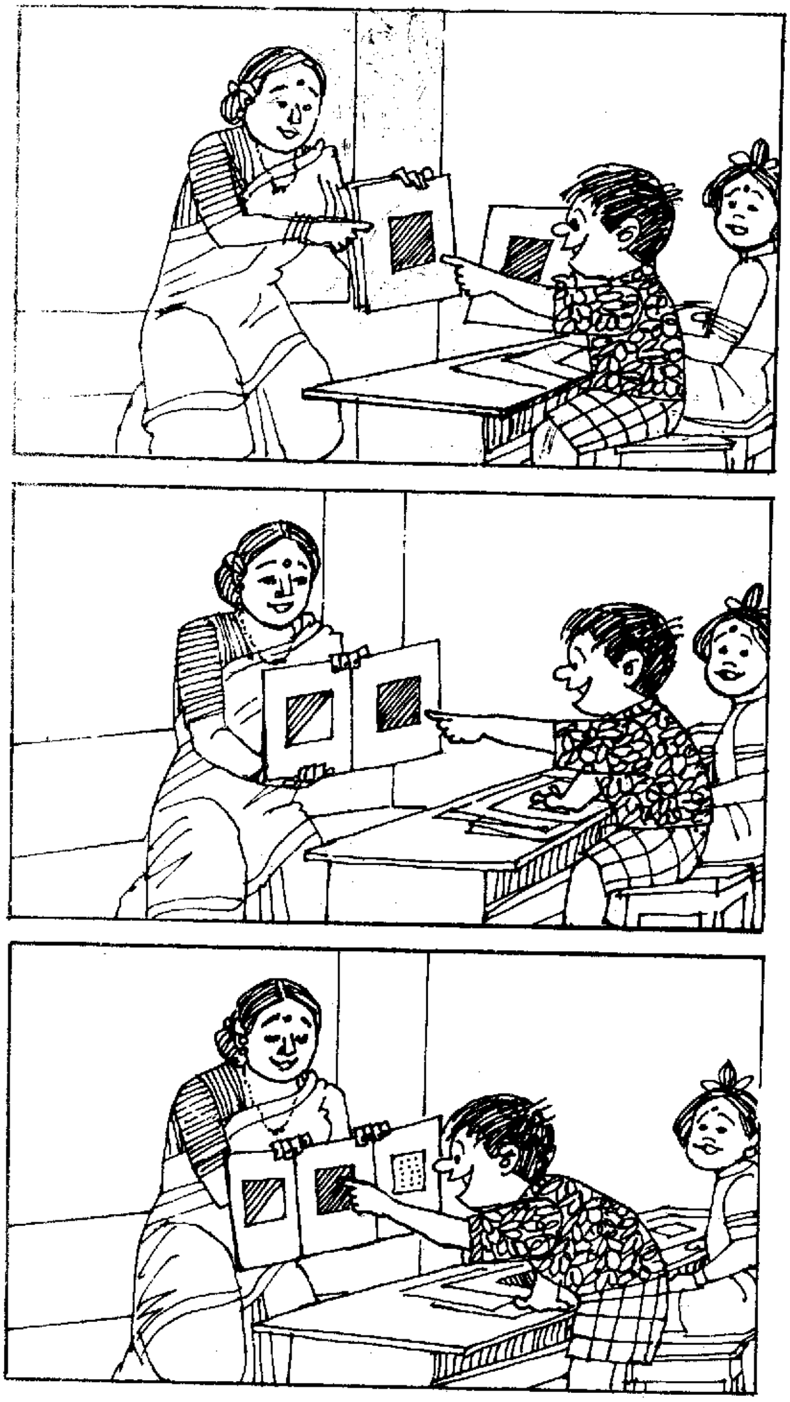

रंगो को दिखाने के लिये कार्य-विश्लेषण

चित्री-कार्ड पर जो ड़िजाइन बना है, वो विभिन्न रंगों को प्रस्तुत करती है। जैसे लाल रंग हरा रंग इसी प्रकार नीला रंग बताती है ।

सारांश

1. सिखाने व पढ़ाने के लिए, कार्य - विश्लेषण एक सरल व प्रभावकारी पद्धति है जिसमे व्यवहार लक्ष्य को छोटे चरणो मे बाँटा जाता है ।

2. किसी व्यवहार उद्देश्य का कार्य-विश्लेषण प्रत्येक बच्चे की आवश्यकता, और उसके मानसिक स्तर पर निर्भर करता है ।

3. कार्य - विश्लेषण के विशेष चरणों को स्वयं करके देखें और पहचानें ।

कार्य अभ्यास–6

I. नीचे एक कथन के पाँच वैकल्पिक उत्तर दिये गए हैं सही उत्तर पर निशान लगाएं :

1. एक बच्चे को छोटे और साधारण चरणो में पढ़ाने की प्रक्रिया को कहते हैं ।

   क) अल्प अवधि लक्ष्य ।
   ख) दीर्घ अवधि लक्ष्य ।
   ग) कार्य विश्लेषण ।
   घ) उपरोक्त सभी ।
   ङ) उपरोक्त में से कोई नहीं ।

2. निम्न लिखित मे से कौन सा उत्तर बच्चे को छोटे और साधारण चरणों मे सिखाने के लिए महत्वपूर्ण नही है ।

   क) बच्चे को सिखाये जाने वाली गतिविधि को पहचानना
   ख) चरणो को सिलसिलेवार प्रस्तुत करना
   ग) विभिन्न चरणो को पूरा करते हुए बच्चे का अवलोकन करना
   घ) बच्चे को सिखां जाने वाली गतिविधि को छोटे और साधारण चरणो मे तोड़ना
   ङ.) उपरोक्त मे से कोई नही ।

3. एक मन्दबुद्धि बच्चे को सिखाने के लिए नीचे लिखे चरणो को सिलसिलेवार प्रस्तुत कीजिये।

   क) विशेष क्रिया–कलाप को जहाँ तक संभव हो छोटे–छोटे गतिविधियों मे बाट कर कम से कम समय में प्राप्त करना ।
   ख) सभी बच्चों को एक गतिविधि को सिखाने के लिएए एक जैसे चरणों को अपनाना ।
   ग) बच्चे को विभिन्न चरणों को पूरा करते हुए देखना ।
   घ) सिखाई जाने वाली विशिष्ट गतिविधि की पहचान ।

कार्य अभ्यास ६

कुंजी

I. 1. ग 2. ख 3. घ क ख ग

अध्याय सात

व्यवहार-कौशल सिखाने की अन्य व्यावहारिक पद्धतियाँ

इस अध्याय के समापन पर, शिक्षक निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम हो सकेंगे ।

1. शेपिंग क्या है ? शेपिंग के प्रयोग हेतु उपयोगी निर्देश कौन-कौन से हैं ?
2. उत्साहित करना (प्राम्पटिंग) क्या है ? इसके प्रयोग हेतु उपयोगी निर्देश कौन-कौन से हैं ?
3. श्र्टंखलाबद्धता (चेनिंग) क्या है ? इसके प्रयोग हेतु उपयोगी निर्देश कौन कौन से हैं ?
4. मॉडलिग क्या है ? इसके प्रयोग हेतु उपयोगी निर्देश कौन-कौन से हैं ?
5. फेडिग क्या है ? इस के प्रयोग हेतु निर्देश कौन-कौन से हैं ?
6. व्यापकीकरण (जनरलाइजेशन) क्या है ? प्रभावकारी व्यापकीकरण के कौन-कौन से निर्देश हैं ?
7. मानसिक विकलांग बच्चो को सिखाने के कौन-कौन से निर्देश हैं ?
8. स्कूल या कक्षा को प्रभावकारी ढंग से रखने या बनाए रखने के कौन-कौन से उपयोगी निर्देश है ?
9. शिक्षण और सीखने मे भूलों को समझने के कौन-कौन से निर्देश हैं ?

शेपिंग –

शिक्षकों को मानसिक मंद बच्चों को ऐसे कुछ व्यवहार सिखाने पड़ सकते है जिन्हें उन्होने कभी न किये हो ।।

यदि शिक्षक लक्ष्य-व्यवहार को अपने आप घटित होने का इंतजार करें तो शायद उन्हें काफी समय तक राह देखनी होगी । अतः उचित होगा कि, उसी लक्ष्य व्यवहार की छोटे छोटे भागो मे बाँट कर सिखाना प्रारम्भ करें, और बच्चे को लक्ष्य व्यवहार की ओर अग्रसर होने में मदद करते रहें । इसमें बच्चे द्वारा दिखाए गए थोड़े परिवर्तन पर भी ध्यान देना होगा, पुरस्कृत करना होगा, जिससे लक्ष्य व्यवहार की ओर बढ़ने में बच्चे को उत्साह मिलता रहे ।

मानसिक मंद बच्चों के प्रशिक्षण के लिए शेपिंग पद्धति के प्रयोग से बच्चे और शिक्षक दोनो की निराशा की भावना कम की जा सकती है । शिक्षण आनन्द दायक हो जाता है क्योंकि, बच्चे अपने थोड़े से प्रगति के लिए भी प्रोत्साहन पाते है ।

उदाहरण के लिए,- यदि एक बच्चा "पानी" नही बोल पाता है, परन्तु उसके निकट कुछ "पा पा" जैसा बोल लेता है तो शेपिग पद्धति का प्रयोग कर कदम पर कदम उसे "पा पा--पाई पाई" कहलाते या बुलाते हुए अन्ततः "पानी" बुलवा सकेंगे ।

शेपिग प्रक्रिया [illegible] कदम
कदम उन सभी छोटे से [illegible]
व्यवहार के इकाईयों [illegible]
पुरस्कृत किया जाता है [illegible]
लक्ष्य व्यवहार की ओर [illegible]
को अग्रसर कराती है, और [illegible]
लक्ष्य व्यवहार से बहुत हद तक
मिलती जुलती है ।

इसी प्रकार बच्चे को गेद को पैर से मार कर निर्धारित दिशा की ओर ढकेलना सिखाने के लिए, उसे पहले गेंद के पास खड़ा होना सिखाएंगे। उसे इस व्यवहार के लिए पुरस्कृत करेंगे । फिर धीरे-धीरे उसके व्यवहार, को कदम दर कदम शेप करते हुए लक्ष्य-व्यवहार की ओर अग्रसर कराएंगे । जैसे गेंद के पास खड़ा होना, पैर से गेद को किसी भी दिशा मे ढकेलना, बाद में निश्चित दिशा में ढकेलना । हर कदम पर उचित पुरस्कार देते रहना, प्रोत्साहित करते रहना ।

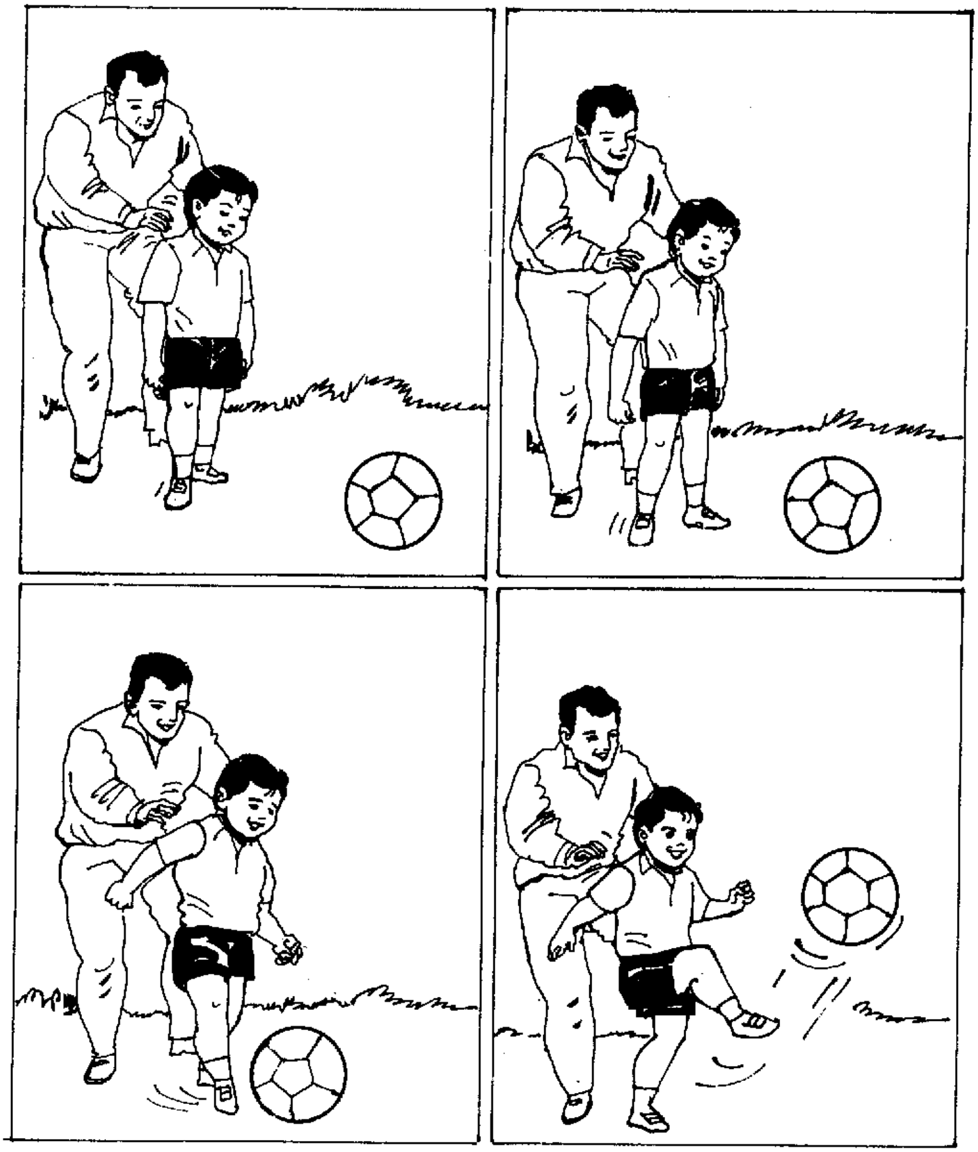

शेपिंग प्रक्रिया के चरण

1. लक्ष्य व्यवहार चुने ।
2. बच्चे के उस प्रारम्भिक व्यवहार को चुनें जो लक्ष्य व्यवहार से किसी रूप में मिलता हो ।
3. प्रभावकारी पुरस्कार का चयन करे ।
4. प्रारम्भिक व्यवहार को पुरस्कृत तब तक करते रहें जब तक वह बार–बार न आने लगे ।
5. लक्ष्य व्यवहार से मिलता जुलता कोई भी प्रयास पुरस्कृत करते रहें ।
6. लक्ष्य व्यवहार जब जब आता है, पुरस्कृत करते रहें ।
7. लक्ष्य व्यवहार को कभी कभी पुरस्कृत करें ।

एक गोलाकार आकृति खीचना सिखाने के पद्धति या प्रक्रिया के प्रत्येक कदम को नीचे के उदाहरण में दर्शाया गया है :

शेपिंग प्रक्रिया का उदाहरण

1. एक ऐसा व्यवहार चुने जिसे बच्चा पहले से कर रहा हो, और जो लक्ष्य व्यवहार से मिलता हो । यदि आप का लक्ष्य है बच्चे को गोलाकार आकृति बनाना सिखाना, और यदि बच्चा पेन्सिल पकड़ लेता है, कागज़ पर कुछ लकीरें बना लेता है, तब आप शेपिंग पद्धति का प्रयोग कर सकते हैं ।

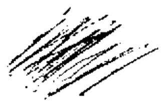

2. बच्चे के साथ, उसके स्तर पर काम करना प्रारम्भ करें, और पुरस्कार दें । इससे बच्चे को मालूम हो जाएगा कि, उसके ऐसा करने से पुरस्कार मिलता है । प्रस्तुत उदाहरण में यदि बच्चा लकीरें घसीटता है तो उसे पुरस्कृत करें ।

3. अब बच्चे को पहले से परिचित व्यवहार से **थोड़ा** आगे बढ़ाते हुए कुछ गोलाकार या अर्ध गोलाकार रेखायें बनाना सिखायें, पुरस्कृत करते रहे ।

यह, तो समुचित गोलाकार तो नही है, फिर भी उसके समीप तो है ही । अब बच्चे को लकीरें घसीटने पर कोई पुरस्कार न दें । पुरस्कृत तभी करें जब बच्चा गोलाकार जैसी आकृति बनाएँ ।

4. जब बच्चा अच्छी तरह से गोलाकार समीप आकृतियाँ बनाना सीखता है और जब यह व्यवहार स्थिर हो जाय तो अगला कदम बढ़ाएँ । स्पाइरल जैसी आकृति के लिए ही पुरस्कार दें ।

5. जब बच्चा स्पाइरल जैसी आकृति बनाना सीख ले और बिना गलती के बनाता रहे, तो अगले स्तर या कदम पर जाये जो लक्ष्य व्यवहार के समीप हो : जैसे करीब करीब गोलाकार बना पाना ।

6. इस स्थिति में बच्चे से अभ्यास कराते रहें, जब तक वह गोलाकार आकृति बनाना अच्छी तरह से सीख जाये ।

शेपिंग पद्धति को प्रभावी ढंग से प्रयोग में लाने के निर्देश

1. व्यवहार प्रशिक्षण के लिए शेपिंग के साथ अन्य पद्धतियो, जैसे प्रोत्साहन, श्रटखलाबद्धता, फेडिंग और मॉडलिंग के साथ करें ।
2. शेपिंग पद्धति में छोटी-छोटी श्रटखलाओं का महत्व होता है, जिन्हें छोटे-छोटे चरणो में प्रोत्साहन की मदद से सिखाते रहते है । इन चरणो के आकार को ध्यान से नियोजित करे । कदम या चरण इतने बड़े न हो कि, बच्चा उसे पूरा ही न कर सकें, और आगे वाले कदम पर न पहुँच पाए । साथ ही इतना छोटा न हो कि, अनावश्यक समय बरबाद हो ।
3. शेपिंग पद्धति के किसी भी समय चरणो के आकार में परिवर्तन के लिए तैयार रहे । यह बच्चे की प्रतिक्रिया पर निर्भर करेगा ।

उत्साहित करना (प्रॉम्प्टिंग)

किसी भी क्रिया या व्यवहार कुशलता को सीखने के लिए प्रायः सभी को निर्देश, सलाह, या मदद की आवश्यकता पड़ती है । मानसिक मंद बच्चे इस प्रकार की मदद अपने उमर के सामान्य लोगो से कही अधिक चाहते है ।

बच्चों को लक्ष्य-व्यवहार विशेष को सीखने के लिए दी जाने वाली सक्रिय मदद को ही "उत्साहित करना" या "प्रॅाम्प्टिंग" कहते है ।

प्रॅाम्प्ट के प्रकार

किसी भी व्यवहार के संदर्भ में प्रत्येक मानसिक मंद बालक की कार्य कुशलता का स्तर अलग अलग होगा । कार्य कुशलता के वर्तमान स्तर के आधार पर हम प्रॅाम्प्ट को तीन प्रमुख भागो मे रख सकते हैं । बच्चे को क्रिया सिखाने के लिए इनमें से उपयुक्त प्रॅाम्प्ट को चुन उसका प्रयोग किया जा सकता है ।

अ) भौतिक प्राम्प्ट

कुछ बच्चे किसी काम को पूरा कर पाने के लिए भौतिक **प्रॉम्पट** चाहते है । ऐसी **स्थिति** में शिक्षक को बालक का हा**थ** पकड़ उसे व्यवहार विशेष को किसी हद तक कर पाने में मदद करनी पड़ती है । जैसे-बटन लगाना, पेन्सिल से लिख पाना या रस्सी से कूदना आदि के लिए बच्चों को हा**थ** का सहारा देना पड़ सकता है ।

किसी नए व्यवहार को सिखाने के प्रारम्भिक अवस**था** में इस प्रकार के भौतिक **प्रॉम्पट** की अक्सर आवश्यकता होती है । इस पद्धति में शिक्षक बालक के बहुत करीब रहता है जिससे उसे भौतिक रूप से सहारा दे सके । भौतिक **प्रॉम्पट** के सा**थ** सा**थ** शाब्दिक प्राम्प्ट भी देना होता है ।

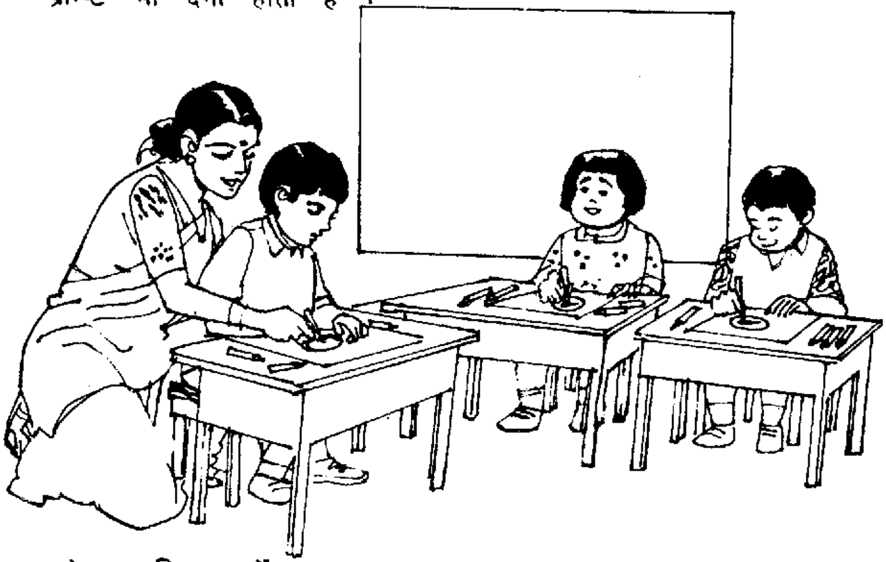

ब) शाब्दिक प्रॉम्प्ट

कुछ बच्चे, अपने व्यवहार को सफलता पूर्वक पूरा करने के लिए, केवल शाब्दिक निर्देश ही चाहते है, जिसकी सहायता से कार्य पूरा कर पाते है ।

उदाहरण के लिए-यदि शिक्षक, बालक को बटन खोलना सिखाना चाहते हैं तो बच्चे से कहेंगें : "बटन को अपनी ऊँगलियों से पकड़ो... दूसरे हा**थ** से कमीज के काज वाले सिरे को पकड़ो...अब बटन को उसके नीचे वाले छेद से बाहर निकालो..." इस उदाहरण में शिक्षक प्राम्प्ट विधि का प्रयोग करते हुए बच्चे को क्रिया के प्रत्येक चरणों में निर्देश देते जा रहें है और यह तब तक होता रहेगा जब तक वह क्रिया लक्ष्य व्यवहार को पूरा न कर ले ।

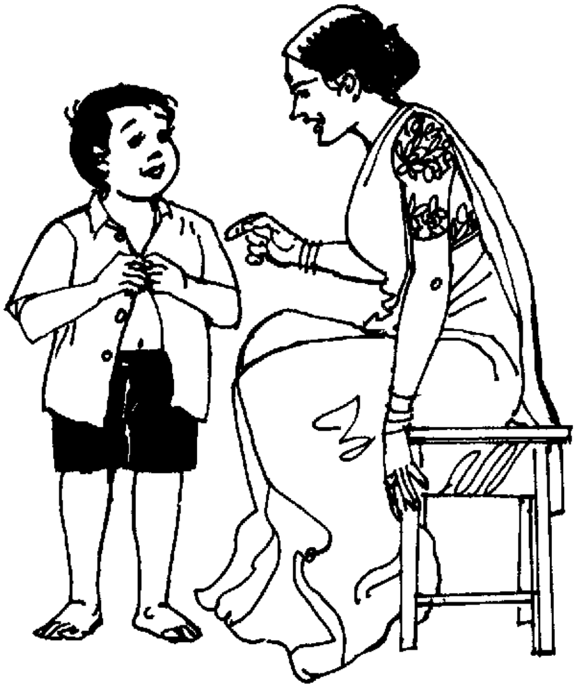

शाब्दिक प्रॉम्प्ट का प्रयोग करते समय शिक्षक शाब्दिक निर्देश देते रहते हैं । सिखाते समय शिक्षक और बच्चे के बीच कोई शारीरिक सम्पर्क नही रखता है । इस विधि में प्रायः भौतिक प्रॉम्प्ट के बाद शाब्दिक प्रॉम्प्ट की ओर अग्रसर हुआ **होते हैं** ।

स) संकेत देना (क्लूइंग)

कुछ बच्चे केवल शाब्दिक संकेतों (जैसे खोलो, बंद करो, ढकेलो आदि) या मात्र संकेतों (जैसे, इशारे से रुकने को कहें या मत करो के लिए ऊँगली से इशारा करे) के सहारे ही व्यवहार कर लेते हैं ।

उदाहरण के लिए-एक बच्चे को पुस्तक में चित्रों के माध्यम से फलों के नाम कहना सिखा सकते हैं । पुस्तक में उपयुक्त चित्र आम को दिखाएँ और बच्चे को आवश्यकता पड़ने पर, उसे अपने मुँह की तरफ देखने के लिए प्रेरित करते हुए "आ... कहें। और बच्चे को पूरा करने के लिए कहें ।

कभी - कभी संकेत प्रश्न बच्चे को याद दिलाने वाले हो सकते हैं । जैसे-यह बच्चा यातायात के साधनों के नाम याद कर बता रहा हो और बीच में उसे किसी एक यातायात माध्यम का नाम न याद आ रहा हो तो उसे इशारा दें और कहें, "याद करो आज तुम किस पर बैठ कर स्कूल आए हो" (यहाँ संकेत होगा कि, वह या तो स्कूटर पर आया है या बस में)

सिखाने की क्रिया के अंतिम चरण मे शिक्षक प्रायः प्रॉम्प्ट को मौखिक या सांकेतिक रूपसे कम कर सकते हैं, और बच्चा क्रिया को स्वतंत्र रूप से कर सकता है ।

प्रॉम्प्ट के चुनाव व प्रयोग के लिए निर्देश

1. बच्चे को व्यवहार सिखाने के लिए प्रॉम्प्ट के प्रयोग के पहले उसका ध्यान अपनी ओर अवश्य ले लें ।

2. लक्ष्य व्यवहार करने के पहले ही प्रॉम्प्ट देना है ।

3. प्रॉम्प्ट उसी हालत मे देना है जब बच्चा लक्ष्य व्यवहार को अपेक्षित प्रॅकार से न कर पा रहा हो ।

4. संक्षेप में करें । प्रॉम्प्ट जितना कम समय का हो उचित व प्रभावकारी होगा ।

5. प्रॉम्प्ट जितना स्वाभाविक हो अच्छा है । प्रॉम्प्ट कोई भी हो वह बच्चे की भाषा में होना चाहिए जिसे वह समझ पाए । जब आप शाब्दिक और सांकेतिक प्राम्प्ट का प्रयोग कर रहे हैं तो इसका अधिक ध्यान रखें ।

6. ऐसे, प्रॉम्प्ट का चयन करे जो शीघ्र ही बच्चे को स्वावलम्बी बना पाए और लक्ष्य व्यवहार अपने आप करने लगे ।

7. सीखने की क्रिया को प्रभावकारी बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रॅाम्प्ट का प्रयोग करें ।

8. जितनी जल्दी हो प्रॉम्प्ट को हटाने की कोशिश करे । धीरे-धीरे भौतिक प्रॉम्प्ट को कम करे, जब बच्चा व्यवहार करने लगे, फिर शाब्दिक और फिर सांकेतिक प्रॉम्प्ट देना इसी क्रम से कम कर दे, जब तक बच्चा पूर्णत: स्वावलबी न हो जाए।

श्रृंखलाबद्धता (चेनिंग)

हमने देखा कि, कई जटिल व्यवहार मानसिक मंद बच्चों को सिखाए जा सकते हैं यदि उन व्यवहारों को सरल और छोटे छोटे टुकड़ो मे बाँट कर सिखाया जाय । इन् टुकड़ो को जब तरतीबवार ढंग से श्रृंखला में रख कर सिखाते हैं तो इस पद्धति को श्रृंखलाबद्धता कहेंगे ।

> किसी लक्ष्य-व्यवहार को क्रिया – विश्लेषण द्वारा छोटे-छोटे चरणों में रखना और उन चरणों को क्रम बद्ध तरीके से पूरा करते हुए व्यवहार विशेष को सीख पाना ही "श्रृंखला बद्धता" है ।

श्रृंखला बद्धता पद्धति का प्रयोग दो प्रकार से किया जा सकता है। अर्थात् व्यवहार उनके तक पहुँचने के लिए जो श्रृंखलाबद्ध चरण है उसे "श्रृंखलाबद्धता" कहते हैं । और श्रृंखला बद्धता मे जो चरण हैं उनके वर्गीकरण के लिये कार्य-विश्लेषण कियाजाता है। फौरवर्ड चेनिंग, बैकवर्ड चेनिंग । जब अतिम चरण पहले में और प्रथम चरण बाद में सिखाया जाता है तो उस सिखाने की पद्धति

को "बैकवर्ड चेनिंग" कहेंगे । इसके अतिरिक्त जब प्रथम चरण पहले और क्रम से अंतिम चरण बाद में सिखाया जाय तो उस पद्धति को "फॉरवर्ड चेनिंग" कहेंगे । निम्नलिखित उदाहरण में फरवर्ड व बैकवर्ड चेनिंग के चरणों को दिखाया गया है । व्यवहार है "इलास्टिक वाली निकर पहनना":

फॉरवर्ड चेनिंग		बैकवर्ड चेनिंग	
कार्य : इलास्टिक वालीनिकर पहनना चरण खंड क्रियाएँ		चरण खंड क्रियाएँ	
1	दोनों हाथों से पैंट पकड़ना ।	6	कुल्हे से पैट ऊपर खीचना।
1+2	दोनो हाथों से पैंट पकड़कर एक पैर डालना ।	6+5	घुटने से पैंट को कुल्हे तक और फिर कमर तक खीचना ।
1+2+3	पैंट पकड़ना अपने दोनो पैरो में डालना ।	6+5+4	पैंट को घुटने तक, फिर कुल्हें तक और फिर कमर तक खीचना|
1+2+3+4	पैंट पकड़कर पैरो में डालना । पैंट को घुटने तक खींचना ।	6+5+4+3	एक पैंट डालना घुटने तक फिर कुल्हे तक और उसके बाद कमर तक खींचना।
1+2+3+4+5	पैंट पकड़ना, पैरो में डालना घुटने तक, बाद में कुल्हे तक खींचना ।	6+5+4+3+2	दोनो पैर डालना घुटने तक, फिर कुल्हे तक और बाद में कमर तक पैंट खीचना है
1+2+3+4+5+6	पैंट को पकड़ उसे दोनो पैरो में डालना, घुटने तक, फिर कुल्हें तक और अंत में कमर तक खींच लेना ।	6+5+3+2+1	दोनों हाथों से पैंट पकड़ना, पैरों को पैंट में डालना घुटने तक, फिर कुल्हे तक और बाद में कमर तक खींचना।

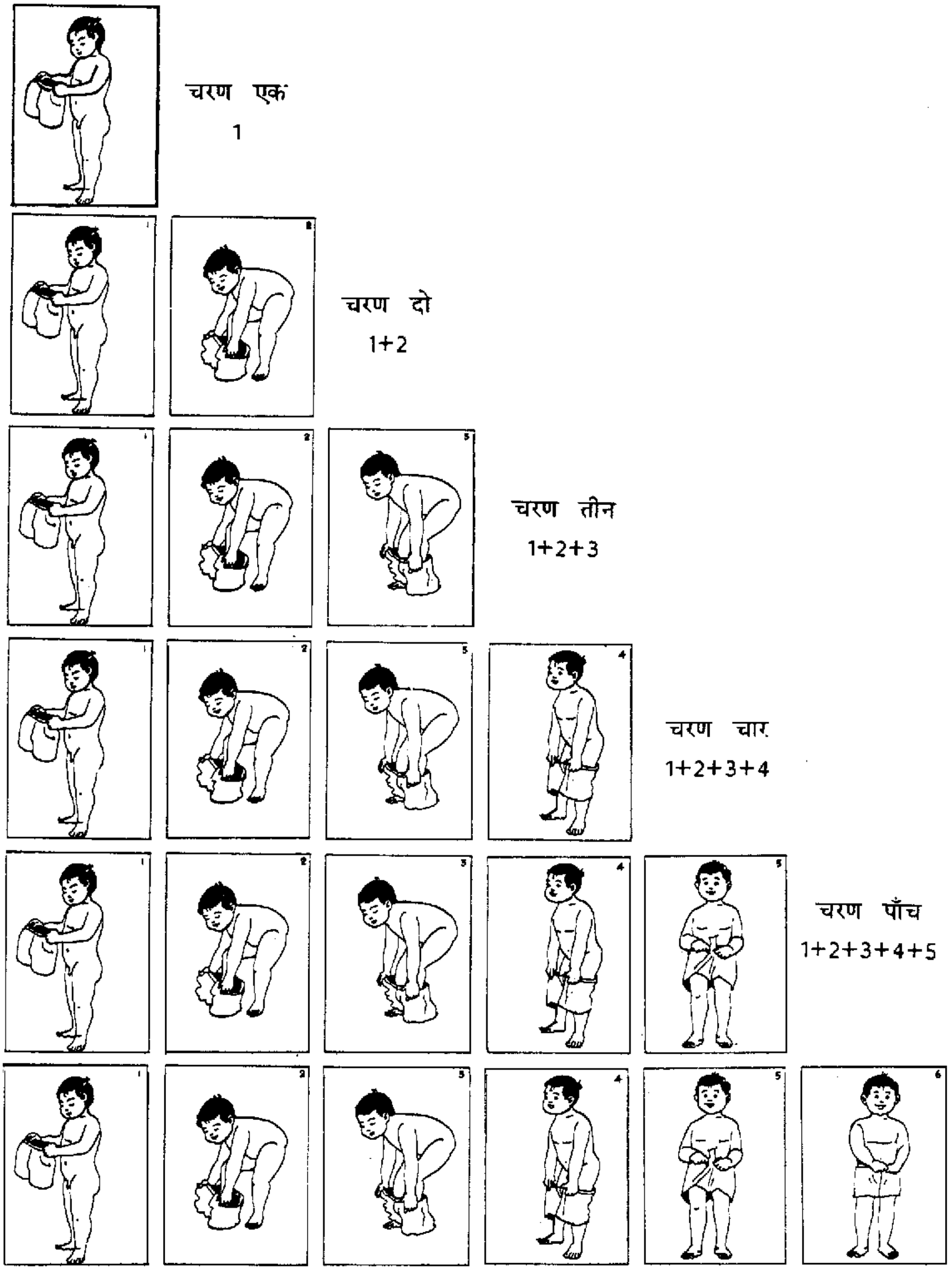

चरण एक
1

चरण दो
1+2

चरण तीन
1+2+3

चरण चार
1+2+3+4

चरण पाँच
1+2+3+4+5

चरण छ:
1+2+3+4+5+6

फॉरवर्ड चेनिंग

BA बैकवर्ड चेनिंग

श्रृंखला बद्धता के प्रयोग के निर्देश

1. लक्ष्य व्यवहार तक पहुँचने के लिए जिन छोटे-छोटे चरणो को सीखते हुए आगे बढ़ना होगा, उनका वर्णन करें ।
2. मान लें कि, एक व्यवहार उद्देश्य पाँच क्रम बद्ध चरणो मे बाँटा गया है । इसके लिए आप पहले चरण को सिखायेगे, फिर दूसरे को और तब दोनो चरणो मे उचित संबन्ध भी दर्शाएंगे । इसी प्रकार जब तीसरा चरण सिखाएंगे तो दूसरे और तीसरे चरण में स्वाभाविक संबन्ध अवश्य दिखाना और बताना होगा । आगे इसी प्रकार प्रत्येक चरण को आपस मे संबंन्धित करते हुए दूसरे की कड़ी को मजबूत करते हुये व्यवहार लक्ष्य पूरा करना होगा, तभी सीखना सार्थक माना जाएगा ।
3. प्रत्येक चरण पर उचित पुरस्कार दें, जिससे व्यवहार ठोस रूप ले ।
4. मानसिक मंद बच्चो को स्वय सेवा क्रियाओं को सिखाने के लिए बैकवर्ड चेनिंग का प्रयोग करें ।
5. श्रृंखला में जिस क्रम मे चरण बनाए गए हो उन्ही चरणों में बच्चो को सिखाएँ ।
6. अगले चरण की ओर तभी बढ़े जब उसने पहले चरण को सीख लिया हो । देखते रहें कि, श्रृंखला की कड़ी मजबूत बनती जाये ।

मॉडलिंग या अनुकरणात्मक सीखना

जाने अनजाने हम सभी, बहुत से अपने व्यवहार अनुकरण द्वारा सीखते या अर्जित करते हैं । बच्चे भी अपने अनेक व्यवहार दूसरो को देख-देख कर सीखते रहते है । बच्चे उन लोगों का अनुकरण अधिक करते है जिन्हें वे अधिक महत्व देते है, जैसे, शिक्षक, माँ-बाप, दोस्त, फिल्म या टी. वी. सितारे, आदि। बच्चों को सिखाते समय यदि मॉडलिंग पद्धति का उचित प्रयोग करें, तो यह एक प्रभावकारी व्यवहार परिवर्तन ला सकता है । इसका कक्षा व स्कूल में बराबर प्रयोग किया जा सकता है ।

बच्चों को नए व्यवहार सिखाने के लिए उन्हें दिखायें कि, वह व्यवहार कैसे होता है ? कैसे किया जाता है ? और यदि बच्चा उसका अनुकरण करे, तो ऐसी विधि को मॉडलिग कहेंगे । इस विधि का प्रयोग नए व्यवहार को सिखाने और सीखे हुए व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए किया जा सकता है । मॉडलिंग का मतलब यह नही है कि, हम दो बच्चों में तुलना करें । बहुत

"मॉडलिंग" दर्शाए जाते हुए व्यवहार को सिखाने की विधि है, जिसमें शिक्षक बताता है कि, व्यवहार विशेष कैसे किया जाता है ।

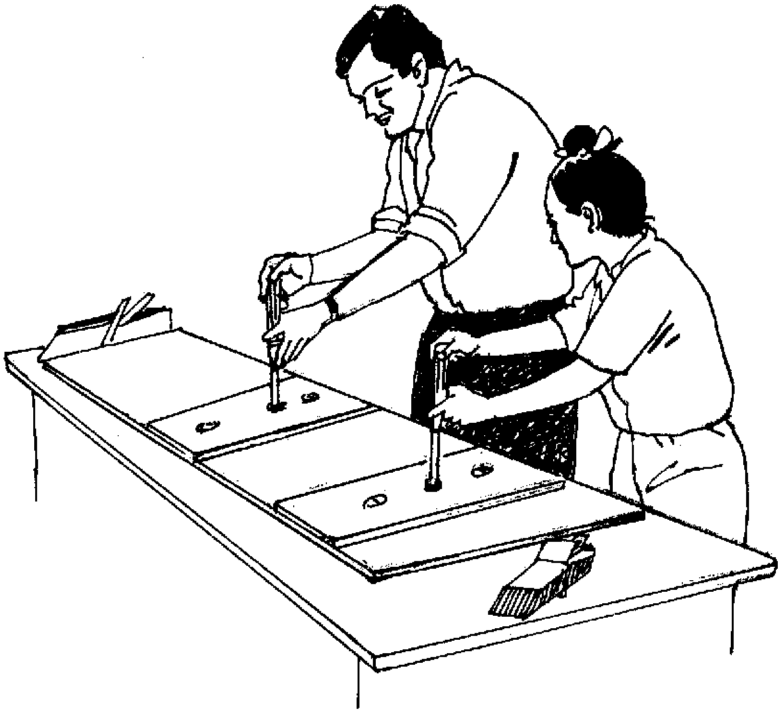

से बच्चे अपनी तुलना नही पसंद करते । इससे तुलना कभी कभी नकारात्मक भावना को जन्म दे सकती है, ईर्ष्या या क्रोध उत्पन्न कर सकती है ।

शिक्षक को ऐसे निर्देशो का प्रयोग नहीं करना चाहिए जिससे ऐसा लगे कि, बच्चो मे तुलना हो रही है ।

> **शिक्षक जिन कथनों का प्रयोग न करें, उनमें से कुछ है :**
>
> *"तुम्हारे दोस्त रोहित की तरह अच्छे बनो"*
>
> *"देखो सरिता चित्रों को कैसे रंग रही है, क्या अनु तुम ऐसा नही कर सकती ?*
>
> *"मोहन, क्या तुम राजू की तरह चुपचाप अंको को उतार सकते हो?"*

मॉडलिग विधि मे शिक्षक या माँ–बाप ऐसी परिस्थिति पैदा करते है-जिसमे बच्चा व्यवहार विशेष को देखता है कि, कोई दूसरा बच्चा या व्यक्ति एक लक्ष्य व्यवहार कर रहा है और उसे उस व्यवहार के लिए पुरस्कार मिल रहा है । ऐसी स्थिति मे वह बच्चा भी वैसा व्यवहार करेगा और पुरस्कार प्राप्त करेगा ।

मॉडलिंग विधि के प्रयोग के निर्देश

1. यह निश्चित कर लें कि, बच्चे का ध्यान उस आदर्श की ओर अच्छी तरह से है, आवश्यक हो तो शाब्दिक प्रोत्साहन के उपयोग से उसका ध्यान आदर्श की ओर केन्द्रित करे । उदाहरण के लिए-शिक्षक, बच्चे को दिखाते हुए बता सकते है कि, कैची को कैसे उँगलियो मे पकड़ना चाहिए, पकड मजबूत हो या किस प्रकार पकड़ थोड़ी ढीली रखी जा सकती है ।
2. मॉडल या आदर्श ऐसे चुने जो बच्चे के आयु, लिंग के अनुकूल हो । क्यो कि, बच्चे हम उम्र के लोगो से जल्दी तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं । मॉडल व्यवहार विशेष मे निपुण होना चाहिए ।
3. पहले बच्चे को मॉडल व्यवहार को अनुकरण करने का पूरा अवसर दें । कुछ बच्चे अनुकरण के लिए अधिक समय या प्रयास कर सकते हैं ।
4. मॉडल अपने व्यवहार को स्पष्ट रूप से बच्चे के सामने करें । व्यवहार के प्रत्येक भाग को धीरे-धीरे स्पष्ट रूप से होने दें जिससे अनुकरण करने वाला बच्चा उसे अच्छी तरह से जान ले ।
5. यदि व्यवहार विशेष को दिखाने के लिए उसे कई सुविधाजनक भागो में बाँटना पड़े तो ऐसा अवश्य करे । जिससे अनुकरण करने वाले बच्चे को असुविधा न हो और तब प्रत्येक भाग को अच्छी तरह से अनुकरण कराया जा सकता है जिससे बच्चा पूरी तरह से समझ कर व्यवहार सीख पाए । प्रत्येक व्यवहार को तब तक बच्चे के सामने होने दे, जब तक वह अच्छी तरह से सीख न जाये ।
6. मॉड़लिंग विधि को प्रारम्भ करने के पहले जान ले कि, बच्चा बौद्धिक और विकासात्मक दृष्टि से उसके अनुकूल है या नहीं । कुछ व्यवहार ऐसे हैं जो कुछ बच्चो द्वारा जल्दी से नही सीखे जा सकते है ।

फेडिंग

सिखाने के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले सहारे धीरे धीरे कम किये जाये । शिक्षा का अंतिम उद्देश्य है बच्चे को, व्यवहार कुशल और स्वावलम्बी बनाया जाय ।

बच्चे को व्यवहार विशेष सिखाने की प्रक्रिया में जब शिक्षक धीरे-धीरे अपने सक्रिय सहयोग को कम करने लगे और वच्चे को व्यवहार विशेष में स्वावलम्वी बनने मे सहयोग दें, तो उस पूरी प्रक्रिया को "फेडिंग" कह सकते हैं ।

शिक्षण के प्रारम्भिक अवस्था मे शिक्षक ज्यादा से ज्यादा क्रिया करता है, जव कि, वालक उसी व्यवहार को कम से कम कर पाता है । परतु जैसे-जैसे वालक लक्ष्य व्यवहार को सीखता जाता है, शिक्षक को क्रिया कम से कम करनी चाहिए और बच्चे को अधिक से अधिक क्रिया अपने आप करने देनी चाहिए ।

दृष्टिगत संकेतों को कम करने की प्रक्रिया का उदाहरण नीचे दिया गया है ।

ऊपर दिए गए उदाहरण से विदित होता है कि, जब बालक को पहली बार "अ" लिखना होगा तो उसे दी गई मोटी लकीरो का सहारा मिलेगा । धीरे-धीरे इन रेखाओ को हल्का और कम कर दिया जाएगा और अततः बच्चे को बिना किसी लकीर के सहारे ही लिख लेना होगा । नए कौशल या व्यवहार के प्रारम्भ मे बच्चे को पुरस्कार हर बार, जब लक्ष्य व्यवहार पूरा करता है, दिया जाना चाहिये । परंतु जब बालक क्रिया या व्यवहार पूरी तरह से कर पाता है, निपुण हो जाता है तो पुरस्कार हर बार न दे कर, कभी कभी दिया जाना चाहिए । उसे धीरे धीरे फेड कर देना चाहिए ।

स्कूल या कक्षा में सीखे गये व्यवहार का व्यापकीकरण

बहुधा ऐसा होता है कि, बच्चे व्यवहार तो एक स्थिति में सीखते है परंतु उसका व्यावहारिक उपयोग किन्हीं अन्य स्थितियो में करते है उदाहरण के लिए-बच्चे स्कूल मे शिक्षक का अभिवादन करना सीखते हैं परंतु उसे घर मे आए मेहमानो का अभिनन्दन करना होता है । इसी प्रकार एक बच्चा अपने शौचादि आवश्यकताओं को घर में बताना सीख जाता है, परंतु उसे स्कूल मे भी उसी प्रकार बताना है ।

स्कूल या कक्षा में, मानसिक मंद बच्चो को व्यवहार कुशल बनाने का मुख्य उद्देश्य तो वास्तव में उन्हें इस लायक बनाना है कि, वे अन्य सभी स्थानों मे उसी तरह से व्यवहार कुशल हो सकें । बच्चे स्कूल में लिखना-पढ़ना सीखते है, जिससे बच्चे आगे चल कर बड़े होकर अपना लिखने-पढ़ने का कुछ काम, (साइन बोर्ड पढ़ना, फार्म भर पाना आदि) अपने आप कर ले । इसी प्रकार बच्चे स्कूल मे अको का ज्ञान प्राप्त करते है, रूपयो पैसो की जानकारी **रखते है** । इससे आगे चलकर खरीद फरोक्त मे स्वावलम्बी बन सकें ।

परिस्थिति विशेष में सीखा गया एक व्यवहार जब दूसरी समान परिस्थितियों मे भी किया जा सके तो इस प्रक्रिया को "व्यापकीकरण कहते हैं ।

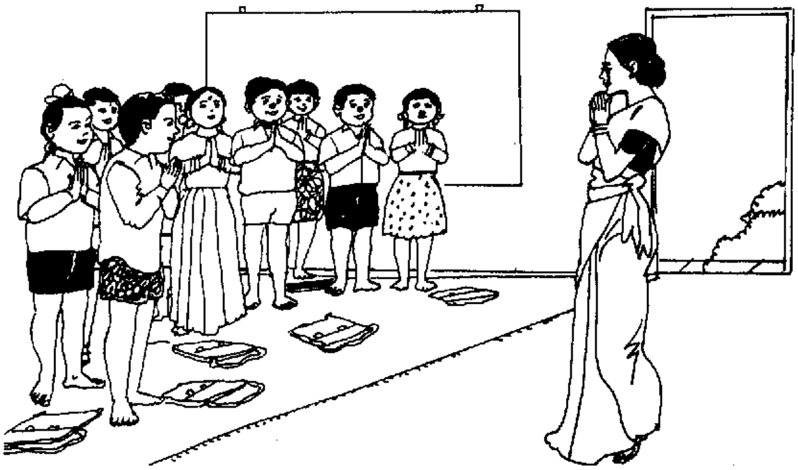

अधिकतर सामान्य बच्चों में व्यापकीकरण की यह प्रक्रिया सहज रूप में, अपने आप और बिना किसी मुश्किल के होती रहती है । जब कि, मानसिक मंद बच्चों में एक परिस्थिति में सीखे गए व्यवहार को अन्य परिस्थिति में कर पाना कठिन लगता है । उदाहरण के लिए-एक बच्चा प्राणी संग्रहालय में जाकर जानवरों का नाम ले पाएगा, पहचान पाएगा परंतु उससे पुस्तक में दिए गए चित्रित उन्ही जानवरों के नाम बताने या पहचानने में कठिनाई हो सकती है ।

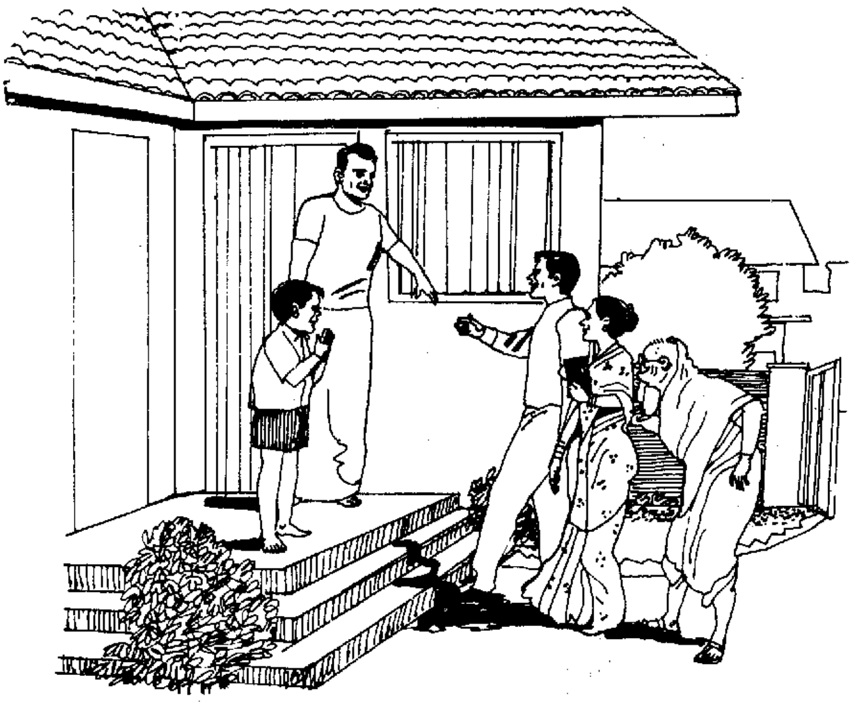

एक मानसिक मंद बच्चा किसी व्यवहार को एक शिक्षक के सामने कर सकेगा परंतु वही व्यवहार किसी अन्य शिक्षक के सामने शायद न कर सकें । अतः शिक्षक को चाहिए कि, बच्चों को सिखाते समय ध्यान दे कि, व्यापकीकरण अनेक दृष्टि से पूरा हो । कई बच्चे ऐसे होते है कि, उन्हें एक ही प्रकार के शौच साधनो का प्रयोग आता है । यदि साधन दूसरे प्रकार के हो तो बच्चे कठिनाई का अनुभव करते हैं । शायद प्रयोग ही न कर पाए।

व्यवहार सिखाते समय शिक्षक को इन सभी बातों और परिस्थितियों का ध्यान रखना होगा, जिनमें बच्चे को रहना है, व्यवहार करना है । इससे बच्चे को स्वावलम्बन में आसानी होगी । इस संदर्भ में आवश्यक है कि, शिक्षक अपनी योजना को अच्छी तरह से बना लें और व्यवहार सिखाने के पहले व्यापकीकरण की प्रक्रिया को भी ध्यान में रखें ।

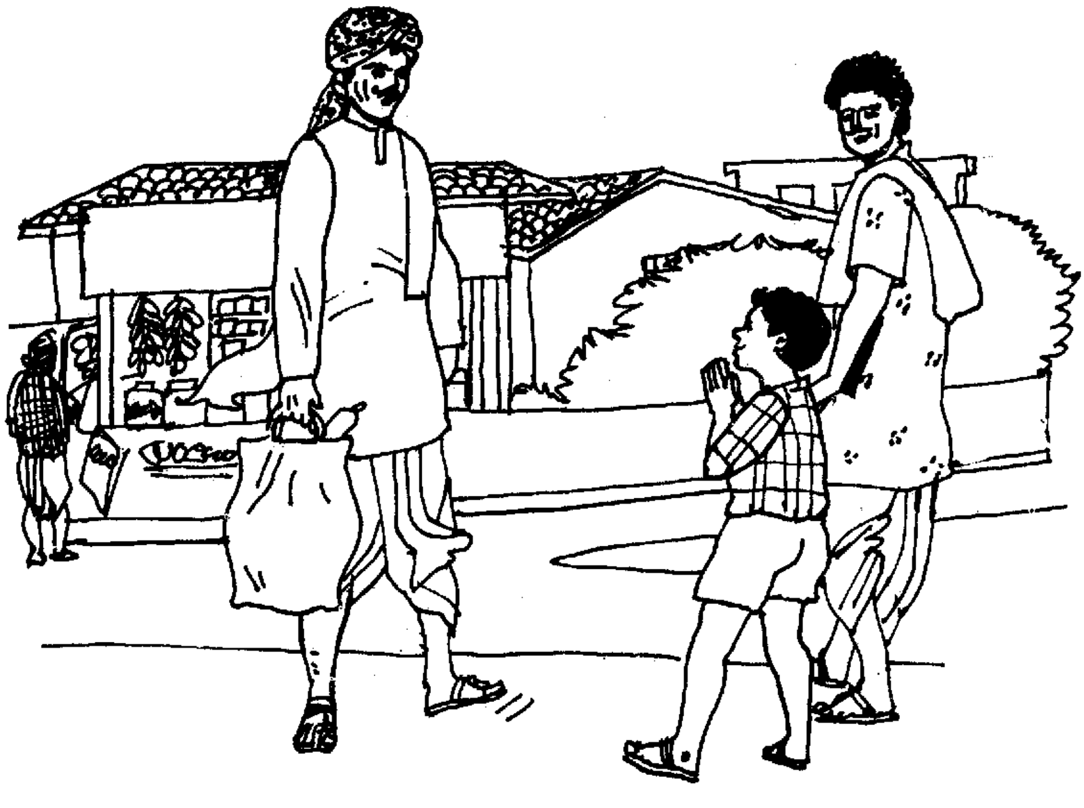

प्रभावी व्यापकीकरण योजना को बनाना और उसे कार्यान्वित करने के निर्देश

1. जहाँ तक सम्भव हो, व्यवहार उद्देश्य को स्वाभाविक वातावरण मे सिखाएँ । दैनिक जीवन के काम आने वाले व्यवहार, जैसे शौच क्रिया, नहाना, दाँत साफकरना, घर के वातावरण में सिखाए जायें । वस्तुओं की कीमत या बाजार क्रय-विक्रय से सबन्धित व्यवहार बाजार में सिखाए जायें तो अधिक प्रभावकारी होगे । निर्देश देते समय उदाहरण बच्चे के वातावरण से दिए जाने चाहिए ।
2. सिखाने की क्रिया स्कूल या कक्षा तक ही सीमित न रखें । बच्चों को उनके स्वाभाविक वातावरण में जैसे दूकान, रेलवे स्टेशन, पोस्ट ऑफिस, बैंक, प्राणी संग्रहालय मे ले जायें ।
3. चाहे व्यवहार विशेष अपने स्कूल/प्राकृतिक वातावरण में न होकर कक्षा/विद्यालय में ही सिखाया जा रहा है फिर भी उसे वास्तविक वातावरण के सदृश करने का प्रयत्न करना चाहिए । उदाहरण के लिए-बच्चो को डाकघर से डाक टिकट, लिफाफे खरीदना सिखाने के लिए यह उचित होगा कि, लेन-देन के व्यवहार में उन्ही शब्दों का प्रयोग हो जो एक वास्तविक डाक घर मे होता है ।

मानसिक मंद बच्चों के प्रशिक्षण हेतु निर्देश

व्यवहार लक्ष्य कितना भी विशिष्ट हो, प्रशिक्षण पद्धति कोई भी प्रयोग में लाई जाय, मानसिक मंद बच्चों के प्रशिक्षण के लिए निम्नलिखित निर्देश सहायक सिद्ध होगें :-

1. **सरल से जटिल**
   मानसिक मंद बच्चों को पढ़ाने की योजना में सर्वदा सरल से जटिल की ओर बढ़ना चाहिए । जब सरल चरणो से प्रारम्भ करेंगे तो बच्चे को अवश्य सफलता मिलेगी । इसी सफलता से और अधिक सफलता उत्पन्न होगी, उससे बच्चा और कठिन कार्य करने के लिए प्रेरित होगा । उदाहरण के लिए-रंगो के नाम बताने से रंगो को जोड़ना आसान होगा । उसी प्रकार से सार्थक रूप से गिनना आसान है और बाद में जोड़ना और घटाना आदि जटिल है ।

2. **परिचित से अपरिचित**
   मानसिक मंद बच्चों को उनके परिचित कार्य सीखाना हमेशा सार्थक होगा । बाद मे और धीरे-धीरे अपरिचित कार्यो को सिखाना उचित होगा । उदाहरण के लिए,- ये दो क्रियायें-कमीज पहनना और बटन लगाने मे यदि बच्चा कमीज पहनना जानता है तो उसे वही क्रिया करवाएँ और बाद मे बटन लगाना सिखाएँ ।

3. **मूर्त से अमूर्त**
अधिकतर मानसिक मंद बच्चे अमूर्त प्रत्ययो को सीखने मे कठिनाई का सामना करते है । उनको मूर्त वस्तुये आसानी से समझ में आ जाती है। उदाहरण के लिए गणित मे योग सिखाने के लिए प्रारम्भ मे मानसिक मंद बच्चों को मूर्त पदार्थो के सहारे ही सिखाना होगा और बाद में 'मानसिक स्तर' पर गणित में कुल मिलाना सिखाया जा सकता है ।

4. **सम्पूर्ण से अंश (सामान्य से विशेष)**
मानसिक मंद बच्चों के सामने कोई भी कार्य उसके सम्पूर्ण रूप में बताये जाने चाहिए और बाद में धीरे-धीरे उनके भागो की अलग-अलग जानकारी देनी चाहि ।
जैसे-बच्चों को शरीर के भागो या अवयवो के बारे में बताने के लिए प्रारम्भ में शरीर के भागो जैसे आंख, कान, नाक आदि का ज्ञान कराये फिर उनको सूक्ष्म भागो की जानकारी दे सकते है । जैसे भौह पलक आदि ।

प्रभावी प्रशिक्षण के लिए कक्षा या स्कूल को व्यवस्थित रखने के निर्देश

अधिकांश मानसिक मंद बच्चों में वांछनीय परिवर्तन आ सकता है, यदि प्रशिक्षक उन्हें उत्साही वातावरण प्रदान करें ।

कई बार तो केवल उचित वातावरण के प्रभाव से ही बच्चे सीख पाने में अक्षम दिखाई पड़ते है । अतः यह शैक्षणिक है कि, उन्हें प्रोत्साही वातावरण दिया जाय । प्रभावी शैक्षणिक वातावरण बनाने के लिए शिक्षक को निम्नलिखित बातो पर विचार करना होगा :

1. उचित **भौतिक** स्थिति-
इसमें बैठने की समुचित जगह, फर्नीचर, प्रकाश, शौचादि की सुविधा, खिलौने, खेल की सामग्री, तथा अन्य शिक्षण की सुविधाएँ आदि आएँगी । इसका यह अर्थ नहीं कि, हमें महँगे खिलौने या आकर्षक वस्तुएँ खरीदनी होंगी । यदि थोड़ा ध्यान दें, तो शिक्षक कम खर्चीले साधन आस-पास की वस्तुओं की मदद से उपलब्ध कर सकते है, जो बच्चे की आवश्यकताओं के भी अनुकूल हो । कक्षा में टेबल, कुर्सी या चटाई या अन्य कोई बैठने के साधन इस प्रकार से लगाए जायें जिससे शिक्षक प्रत्येक बालक के पास आसानी

से पहुंच सकें । ध्यान रहे कि, प्रदर्शन का सभी सामान जैसे-खिलौने, या प्रशिक्षण साधन बच्चों के सामने न रखें जाए । वे कुछ बच्चों के लिए ध्यानाकर्षित करने का सक्रिय स्रोत हो सकते है । कक्षा में भीड न हो इसके लिए ध्यान रखे कि, एक अध्यापक के पास 7-8 बच्चो से अधिक न हो ।

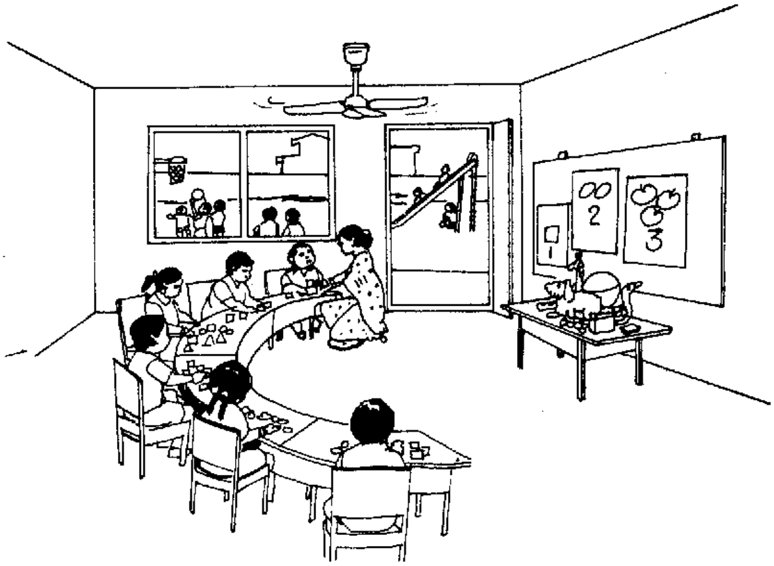

2. कार्यक्रम निर्धारित करना

स्कूल में बच्चे प्रारम्भ से अत तक सक्रिय रूप से कार्य रत रहने चाहिए । इसका यह अर्थ नहीं कि, स्कूल से निकलने के बाद वे एक दम थके मांदें दिखाई दें । शिक्षक को एक ऐसी समय-सारणी गठित करनी चाहिए जिसमें अन्य बातों या कार्यक्रमो के अतिरिक्त बच्चो को उचित मात्रा में खेलने, मनोरंजन और क्रियाओं को बदलते रहने का पूरा समय और अवसर मिलता रहे ।

3. **सीखने के विविध अवसरों की सुविधा**

यदि थोड़ा ध्यान दिया जाय और क्रियायें योजनाबद्ध तरीके से कराई जायें तो बच्चे और अच्छी तरह से सीख सकते है । उदाहरण के लिए – यदि शिक्षक बच्चे को गोलाकार आकृति बनाना सिखा रहे हैं तो केवल कागज़ और पेंसिल का ही प्रयोग न करें । इसे शिक्षक खेल में भी सिखा सकते है, जैसे गोलाकार में बैठकर खेलना, खिलौना जो गोल गोल घूमता हो, या कोई कविता कहे जिसमे गोलाकार का वर्णन हों आदि ।

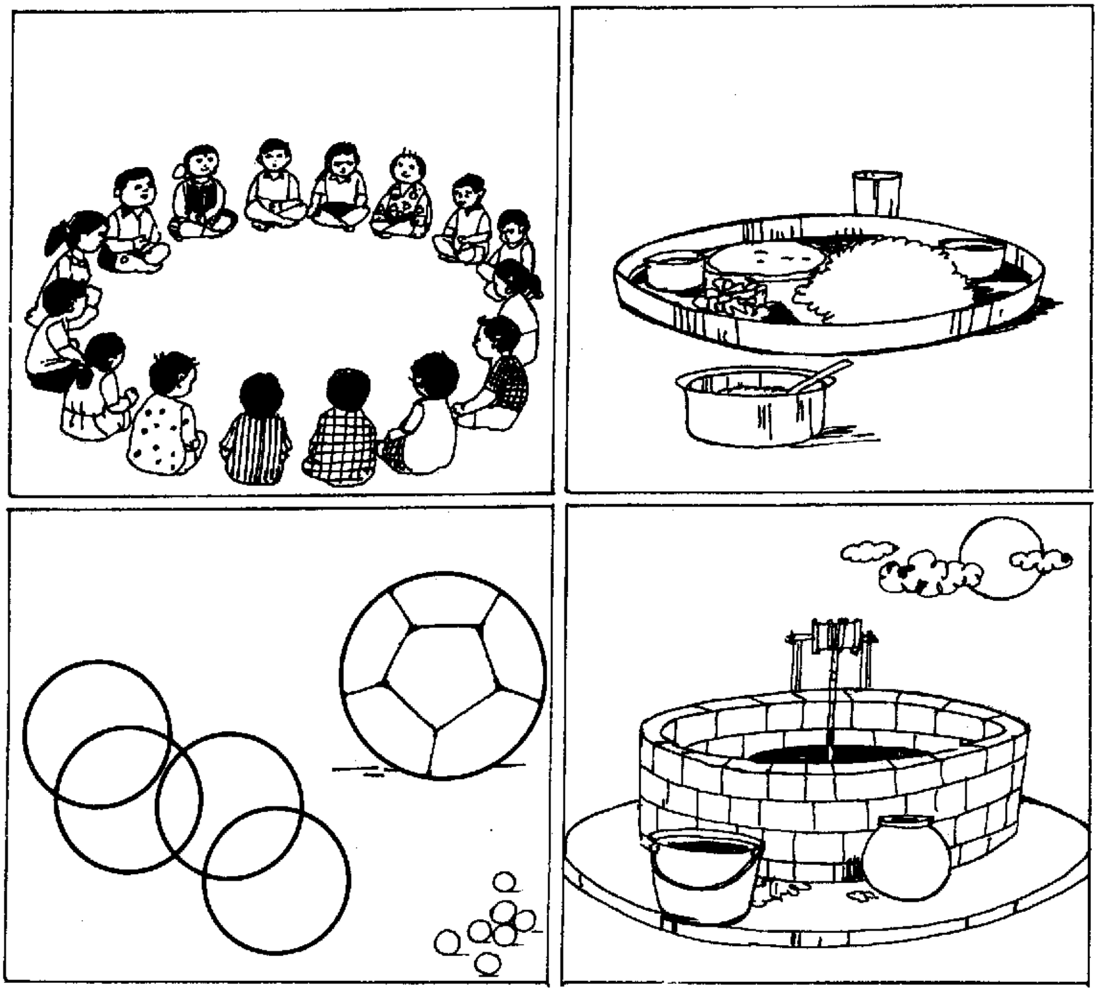

4. **अपेक्षाओं को बताना**

बच्चों को मालूम होना चाहिए कि, उनका शिक्षक उनसे क्या और किस प्रकार की सेवायें रखता है व्यवहार उद्देश्य तय कर लेने के बाद शिक्षक को चाहिए कि, बच्चों को, शाब्दिक या सांकेतिक भाषा में बता दे कि, उन्हें प्रत्येक बच्चे से क्या अपेक्षा है । एक ऐसा नियम बनाले, चाहे बच्चा समझें या न समझें, आप इन बातों को संक्षेप में ही बताएँ परंतु स्पष्ट अवश्य रहें । जैसे शिक्षक कह सकते है : "अब हम रंगों के बारे में सीखने जा रहे हैं । मैं चाहूँगा कि तुम बताओ...." । इस प्रकार बच्चे की तैयारी हो जाती है और वह सीखने, बताने के लिए तत्पर हो जाता है ।

शिक्षण तथा प्रशिक्षण के दौरान भूलों को समझने के निर्देश

जब बच्चो का प्रशिक्षण वैज्ञानिक तथा प्रणालीबद्ध ढंग से किया जाता है तो बच्चों का क्रमिक तथा निश्चित विकास होता है। परन्तु कभी-कभी सीखने के दौरान जो भूलें अथवा त्रुटियाँ हो जाती हैं उनसे सीखने की प्रक्रिया में रुकावट आती है । इस तरह भूलो के कारण सीखने के निर्धारित स्तर तथा उद्देश्य में पर्याप्त तथा सही उपलब्धि नहीं हो पाती है । निम्न निर्देश अध्यापक को यह स्पष्ट करने में मदद करेंगे कि, मानसिक रूप से विकलांग बच्चे शिक्षण के दौरान किस तरह की भूलें करते है :

निश्चित करे कि, भूलें किस प्रकार की है तथा उनके कारण क्या है । जिन कारणो से बच्चो में भूले हो सकती हैं वे हैं : (अ) बताए गए कार्य को करने में आवश्यक पूर्व अपेक्षित कुशलता मे अपर्याप्त सीख या प्रशिक्षण, (ब) शिक्षण और प्रशिक्षण क्रिया के कार्यान्वयन में नियमों और पद्धतियों का गलत प्रयोग, (क) शिक्षण अथवा सीखने की प्रक्रिया का निर्वहन न हो पाना । कभी कभी क्रिया विशेष को पूरी तरह से सीख लेने के बाद भी बच्चे गलतियाँ कर बैठते है । भूल सुधारने के लिए किसी पद्धति को अपनाने के पहले निश्चित कर लें कि, बच्चा किस प्रकार की त्रुटि कर रहा है ।
जब आप देखें कि, बच्चा किसी क्रिया विशेष को करते हुए गलतियाँ

कर रहा है तो निश्चित कर ले कि, बच्चे में पूर्व अपेक्षित कुशलतायें है या नहीं । उदाहरण के लिए-लिखने की पूर्व अपेक्षित कुशलता है, गोंजना, फिर बिन्दियों को जोड़ पाना और बाद में लकीरों पर रेखांकन करना आदि। यदि बच्चे में ये पूर्व अपेक्षित कुशलतायें न हों तो लिखने की क्रिया में त्रृटि अवश्य कर सकता है । इसी प्रकार लिफाफा बनाने का व्यवसाय पूर्व की क्रिया के लिए अपेक्षित कुशलता है कागज काटना, मोड़ना और चिपकाना । यदि बच्चे में यह कमी है तो लिफाफा बनाने की क्रिया में गलती कर सकता है। यह बच्चा गलती करता है तो देखें कि, क्या ऐसी गलत क्रिया को करने में प्रयुक्त नियम या पद्धति के गलत इस्तेमाल से तो नहीं ऐसा हो रहा है । जैसे-बच्चे को एक वचन से बहु वचन करने के लिये शब्द के अन्त में "-" ऐं मात्रा लगाना बताया गया है : किताब - किताबें, बस-बसें, चम्मच-चम्मचें, बहन-बहनें परन्तु इसी नियम" को अन्य जगह इस्तेमाल करने पर गलती हो सकती है जैसेः बर्तन-बर्तनें, फल-फलें, बालक-बालकें, राज-राजें, फूल-फूलें। इसी प्रकार एक बच्चे को सिखाया गया है - कि, रोज सुबह शिक्षक का अभिवादन करें, और वह हर किसी का अभिवादन हर समय करने लगे । यों तो इस प्रकार की त्रृटियाँ नई क्रिया या कुशलता अर्जन में हो सकती हैं । इनका ध्यान देना सर्वदा लाभदायक ही होगा । बच्चे द्वारा इस प्रकार की त्रृटि का पता लगाएँ और दूर करने का प्रयत्न शीघ्र करें। त्रृटि का पता लगाने में देरी हो जाये तो बच्चे को कौशल ग्रहण करने में बाधक हो सकती है ।

त्रृटि न होने की सम्भावना को कम करने के लिए भेदात्मक पुरस्कार पद्धति का प्रयोग करें । यदि बच्चा सीखी हुई क्रिया को करते समय कभी-कभी गलती करता है तो आप उसे भूल सकते है। हाँ, जब गलती न हो तो पुरस्कार देना न भूलें ।

जब बच्चा थक गया हो, ऊब गया हो, तो क्रिया सीखने के लिए बाध्य न करें । क्योंकि, इससे गलतियाँ होने की सम्भावना और बढ़ सकती है ।

यदि बच्चे के लिए कोई क्रिया अधिक सरल लगे तो उसे न सिखायें । बच्चे की इच्छा और योग्यता को ध्यान में रखते हुए

काम सिखाएँ ।
त्रुटि का पता लग जाने पर बच्चे को स्पष्ट शब्दो में बता दें।
त्रुटियों पर रोष न प्रकट करें, न ही बच्चे को डाँटें ।

बच्चे की गलती सुधारने के लिए सही पद्धति का चयन करें और उसका सही प्रयोग करें, शीघ्र सुधार करें, और बच्चे पर व्यक्तिगत रूप से प्रयोग करें ।

सारांश

1. मानसिक मंद बच्चों को कौशल व्यवहार सिखाने की कई विधियाँ हैं । जैसे : शेपिंग, उत्साहित करना, श्रृंखलाबद्धता, फेड़िंग, अनुकरण आदि ।
2. शेपिंग प्रक्रिया में सही व्यवहार के लिए कदम कदम पर पुरस्कार देने का प्रावधान है । व्यवहार यदि वांछनीय लक्ष्य व्यवहार के समीप या उससे थोड़े मिलते हों तो भी पुरस्कार देना होता है ।
3. चेनिंग प्रक्रिया द्वारा सिखाने के लिए लक्ष्य व्यवहार को छोटे-छोटे टुकड़ो में बाँट उसे एक ऐसी श्रृंखला में रखते है जिसमें उनका क्रम जारी रहे, श्रृंखला को बनाने के लिए व्यवहार को कार्य विश्लेषण विधि द्वारा टुकड़ो मे बाँटते है । चेनिग के दो भाग है : फॉरवर्ड चेनिंग और बैकवर्ड चेनिग ।
4. अनुकरणकरना बालक निरीक्षण द्वारा सीखता है । या प्रदर्शन द्वारा सिखाया जाता हैं ।
5. फेडिग में बच्चे को व्यवहार सिखाते समय, शिक्षक अपने सक्रिय सहायता को धीरे-धीरे कम करता है जिससे बालक सक्रिय बने और स्वावलम्बन की ओर अग्रसर हों ।
6. स्कूल या कक्षा मे सीखे गए सभी व्यवहार आवश्यक रूप से अन्य परिस्थितियों में भी किये जाते हैं अतः उन्हे अन्य परिस्थितियों में आसानी से स्थानान्तरित करना सिखाना है । यह व्यापकीकरण विधि से सम्भव हो पाता है ।
7. मद बुद्धि बच्चों को सिखाने के लिए कुछ मार्गदर्शी सिद्धान्त हैं जिनमे उन्हे सरल कार्य से जटिल कार्य सिखाए जाते है, परिचित से अपरिचित कार्य, मूर्त से अमूर्त और संपूर्ण से विभाजित कार्य सिखाए जा सकते हैं ।
8. विद्यालय/कक्षा का वातावरण प्रभावशाली प्रशिक्षण के अनुकूल बनाते समय अध्यापक को कई प्रकार के पहलुओं का ध्यान रखना होता है जैसे— उपयुक्त याँत्रिक-दृश्य योजना, कार्यक्रम की योजना बनाना सीखने के लिए बहुविध सुअवसरों की व्यवस्था करना और उनसे रखी गई अपेक्षाओं को सही प्रकार से बताना ।
9. प्रशिक्षण के दौरान कई प्रकार की त्रुटियाँ हो जाती हैं जिनसे सीखने की प्रक्रिया मे बाधायें उत्पन्न हो जाती हैं । सिखाने या सीखने की प्रक्रिया में बच्चो द्वारा की गई त्रुटियो को समझे और उनमें सुधार लाने के लिए कुछ विशेष मार्गदर्शी सिद्धान्त है जैसे-त्रुटि को पहचानना उसके स्रोत को जानना और उसके सुधार के लिए सही ढ़ग अपनाना आदि शामिल है ।

कार्य अभ्यास - 7

I. निम्नलिखित के सही जोड़े बनाइए :

1. व्यवहार के ऐसे छोटे परिवर्तनों पर पुरस्कार देते हुए सिखाना जो हमारे लक्षित व्यवहार की दिशा में हों	( )	क) शारीरिक प्रोत्साहन
2. मौखिक सहायता देते हुए सिखाना	( )	ख) श्रृंखला बध्दता
3. सिखाते हुए सहायता धीरे-धीरे कम करते जाना	( )	ग) मौखिक प्रोत्साहन
4. एक व्यवहार सम्बन्धी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वांछित चरणों का सिलसिला	( )	घ) अनुकरणात्मक
5. हाथो अथवा शारीरिक सहायता द्वारा सिखाना	( )	ङ.) फेडिंग
6. प्रदर्शन करके सिखाना	( )	च) क्लुईग
7. संकेत देते हुए सिखाना	( )	छ) शेपिंग

II. रिक्त स्थान भरिये :

1. अध्यापक जया को अंतिम चरण से सिखाना शुरू करते हैं और प्रथम चरण तक सिखाते हैं । सिखाने की इस प्रक्रिया को ---------- कहा जाता है ।

2. अध्यापक राधा का हाथ पकड़ कर दरवाजा खोलने के लिए कुंडी या नौब खोलने में उसकी मदद करते हैं । सिखाने की इस प्रक्रिया को ----------- कहा जाता है ।

3. लकड़ी के पटरे पर राजेश को कील ठोकना सिखाने के लिए अध्यापक शुरू मे उसका हाथ पकड़ते है । कुछ कोशिशों के बाद वह केवल उसको कीलें ठोकने के किये निर्देश देते हैं । काफी समय बाद, अध्यापक केवल राजेश को इशारे से यह कार्य करने को कहते हैं । इस तरह से वह शनैः शनैः अपने आप पटरे में कीलें ठोकना सीख जाता है । इस उदाहरण मे अध्यापकने जिस प्रक्रिया को अपनाया है उसे -------------- कहते है ।

4. अखिला और निखिला सहप्राठी हैं । अखिला ने निखिला को अपना रुमाल ठीक तरह से मोड़ना सिखाया । और उससे कहा-तुम भी ठीक वैसे ही करो जैसा मैं ने किया । सिखाने की इस प्रक्रिया ---------- कहते हैं ।

5. एक बच्चे को लाल रंग का नाम बताने में कठिनाई होती है । अध्यापक लाल रंग के शुरु के शब्द को "ला......" बोलकर लाल रंग के नाम का संकेत देते हैं । इससे पता चलता है कि, अध्यापक ने ----------- तकनीक का प्रयोग किया है ।

6. आशा को स्कूल मे अध्यापक का अभिवादन करना आगया है । अध्यापक उसके माँ–बाप के साथ इस बात की चर्चा करते है कि, क्या आशा को अपने घर पर भी अपने अतिथियो, अपने सम्बधियो और बाहर जाने पर बड़ो का भी अभिवादन करना आ गया है इस प्रक्रिया मे अध्यापक का इशारा------------------------जानने का है ।

7. भोजनावकाश के दौरान, सुनील अपने खाने के डिब्बे को साफ करना सीख रहा है । स्कूल की आया उसके पास खड़ी है और डिब्बे को अन्दर से धोओ, साबुन के चूरे से रगड़ो और पानी से खंगालो कह रही है । इस प्रक्रिया मे जिस तकनीक का प्रयोग हुआ है उसे ------------------------ कहा जाता है ।

8. निशा सब्जियाँ काटने में असमर्थ है । अध्यापक उसी समय से उसे पुरस्कृत करना चालू करते है जब वह चाकू हाथ में पकड़ती है । धीरे–धीरे वह उस समय पुरस्कृत करते हैं जब वह तेज धार को सब्जी (लौकी, गाजर आदि) की ओर ले जाती है बाद मे पुरस्कार तब दिया जाता है जब वह चाकू पर दबाव डालकर सब्जी काटना शुरू करती है । धीरे–धीरे पुरस्कार तब दिया जाता है जब वह सही ढंग से सब्जी काटना शुरू करती है । प्रत्येक चरण मे अध्यापक सिलसिलेवार चरण के लिए प्रोत्साहित करता है । निशा को सिखाने मे अध्यापक ------------- प्रक्रिया का प्रयोग कर रहें है ।

कार्य अभ्यास - 7

कुंजी

I. 1) छ 2) ग 3) ङ 4) ख

5) क 6) घ 7) च

II. 1) बैकवर्ड चेनिंग
2) शारीरिक प्रोत्साहन
3) फेड़िंग
4) अनुकरण करना
5) क्लुईंग
6) व्यापकीकरण
7) मैाखिक प्रोत्साहन
8) शेपिंग

भाग ४

समस्या-व्यवहार व्यवस्था की व्यावहारिक पद्धतियाँ

ऐसा माना जाता है कि, मानसिक मंद व्यक्तियों में समस्या व्यवहार सामान्य व्यक्तियों से 4-5 गुना अधिक पाए जाते है । व्यवहारिक दृष्टिकोण से इस प्रकार की समस्याएँ या तो परिज्ञानशील और सम्प्रेषण कौशल की कमी, समस्या समाधान की अक्षमता या फिर वातावरण में लोगों द्वारा गलत बर्ताव के कारण उत्पन्न होती हैं और बनी भी रह जाती हैं । इसके पहले कि, ऐसी समस्याएँ बच्चों या व्यक्तियों के शैक्षिक क्रिया में बाधा डालें, उन्हें या अन्य को नुकसान पहुँचाएँ और इनकी सामाजिक कार्य क्षमता और सामाजिकिकरण में रोड़े अटकाएँ इन्हें जितना जल्दी हो सके व्यवस्थित करना चाहिए । यह भाग शिक्षकों की मदद के लिए है जिसमें समस्या व्यवहार को एक एक करके वैज्ञानिक ढंग से व्यवस्थित करना बताया गया है । एक बनी बनाई पद्धति शैली को जान बूझ कर नहीं अपनाया गया है । अपितु प्रयत्न यह किया गया है कि, शिक्षक समस्या व्यवहार को उसके वातावरण के संबन्ध में परखें, विश्लेषण करें, कारणों को जाने जिनसे व्यवहार स्थिर है और तब बच्चे की आवश्यकता अनुसार व्यवहार सुधार योजना बनायें ।

आठवा अध्याय, शिक्षक को व्यवहार सुधार विधि के विभिन्न चरणों से अवगत कराता है इसमें आँकड़े जुटाने के लिए, निरीक्षण द्वारा और अलग अलग नोट करने के सुझाव बताए गए हैं । साथ ही व्यवहार विश्लेषण के भी तरीके दर्शायें गए हैं और फिर व्यवहार योजना की विधियों के उल्लेख के साथ पुनः मूल्यांकन विधि भी बताई गई है ।

नौवे अध्याय में मानसिक मंद बच्चों के समस्या-व्यवहार को, कक्षा तथा व्यक्तिगत रूप से कैसे व्यवस्थित किया जाय, बताया गया है ।

शिक्षक से निवेदन है कि, आगे के अध्याय में जाने से पहले, इस अध्याय के अंत में दिये गये अभ्यासों को पूरा कर लें ।

अध्याय आठ

समस्या व्यवहार की पहचान एवं विश्लेषण

इस अध्याय के समापन पर, शिक्षक नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम हो सकेंगें ।

1. किन किन आधारो पर किसी व्यवहार को समस्या व्यवहार कहा जा सकता है ?

2. समस्या - व्यवहार को कैसे पहचाना जाये और किस प्रकार उसे दर्शाया जाये ?

3. उन्हें कैसे क्रमिक रूप मे रखा जाये जिससे व्यवहार व्यवस्था के लिए उपयुक्त प्राथमिकता से चुनाव हो सके ?

4. समस्या - व्यवहार को रेकॉर्ड करने के कौन कौन से तरीके है ?

5. व्यवहार - समस्या का विश्लेषण कैसे किया जाये ?

6. व्यवहार - व्यवस्था कार्यक्रम कैसे बनाया जाये और उसे कार्यान्वित कैसे किया जाये ?

7. व्यवहार - व्यवस्था कार्यक्रम का मूल्याकन कैसे किया जाये ?

समस्या–व्यवहार और उनके व्यवस्था की आवश्यकता

कई बार शिक्षक को ऐसे बच्चो के साथ काम करना पड़ता है जो कई प्रकार की व्यवहार जनित समस्यायें पैदा कर देते है। शिक्षक को इस सबन्ध मे आवश्यक निर्णय लेना होता है, बच्चे के व्यवहार व्यवस्था की तुरंत आवश्यकता है या नही । ऐसा देखा गया है कि, जो व्यवहारिक समस्या लोगो को अटपटी लगती है, वो बच्चे के विकासात्मक दृष्टिकोण से सामान्य हो सकती है । जैसे जानवरो से भय, अंधकार से भय, माँ–बाप से अलग होने पर घबराहट आदि 2–3 साल के बच्चे के लिए आयु अनुकूल है । उसी प्रकार काल्पनिक लोगो (भूत) और अकेले रहने से भय 6 से 10 साल के बच्चो में सामान्य है ।

कोई एक व्यवहार, समस्या–व्यवहार है या नही, इस पर एक मत हो पाना मुश्किल है । बहुत कुछ व्यक्ति और स्थिति पर निर्भर करता है या इस पर भी कि, व्यवहार कब और कहाँ घटित हुआ है ।

सामान्य रूप से ये व्यवहार समस्या उस परिस्थिति मे मानी जा सकती है, जब निम्नलिखित मे से कम से कम किसी एक चिन्ह से मिलती हो :

1. जब व्यवहार आत्मघाती हो या दूसरो को नुकसान पहुँचा रहा हो, जैसे : मारना अपना हाथ काटना आदि ।

2. जब व्यवहार आयु या विकासात्मक अवस्था के अनुकूल न हो, जैसे पन्द्रह साल की बच्ची अंगूठा चूसती है आदि ।

3. जब व्यवहार सिखने की प्रक्रिया मे बाधक हो, जैसे : बच्चे को पढ़ाया जाता हो, रोने लगे इत्यादि ।

4. जब व्यवहार अन्य पर अनावश्यक दबाव ड़ालने लगे, जैसेः चिल्लाना, चीखना, दूसरो के बाल खीचना, इत्यादि ।

5. जब व्यवहार सामाजिक रूप से असंगत हो, जैसेः चोरी करना झूठ बोलना इत्यादि ।

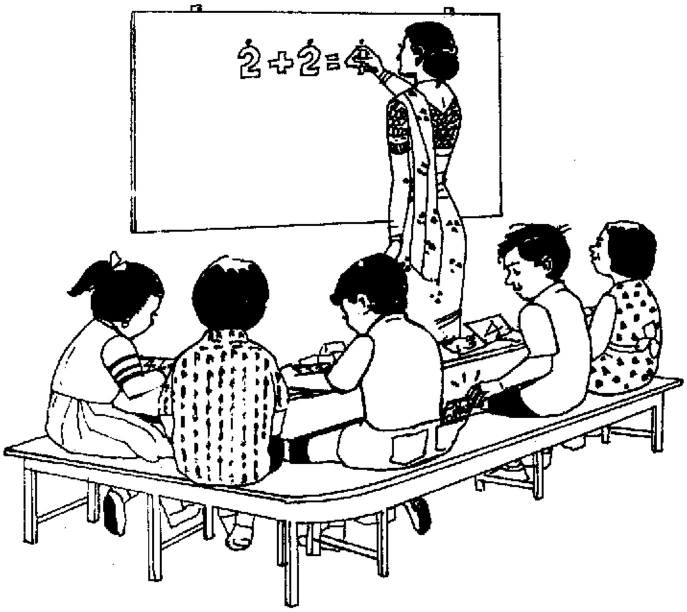

6. यदि व्यवहार बहुधा होता हो, अधिक देर तक होता रहे, या अधिक गहन हो, उनकी व्यवस्था भी आवश्यक हो जाती है ।

शिक्षकों को व्यवहार-व्यवस्था क्यों करनी चाहिए ?

बच्चो के व्यवहार-समस्या की व्यवस्था शिक्षकों को करनी चाहिए, अन्यथा :

1. समस्या- व्यवहार बच्चे की सामाजिक मान्यता कम कर देगा।
2. वह बच्चे को नुकसान पहुँचा सकता है ।
3. वह आस पास के अन्य व्यक्तियो को नुकसान पहुँचा सकता है ।
4. कक्षा व घर दोनो मे वह बच्चों की सिखने की प्रक्रिया मे बाधक हो सकता है ।
5. स्कूल या घर में वह अन्य बच्चों की शिक्षण प्रक्रिया मे बाधक हो सकता है ।
6. व्यवहार असामाजिक हो सकता है या बच्चे की आयु के अनुकूल न हो सकता है ।
7. बच्चे द्वारा सीखे गए अन्य व्यवहारो के कार्यान्वय मे बाधक हो सकता है ।

बच्चों मे व्यवहार विशेष की व्यवस्था एक नियोजित प्रक्रिया है और उसे कई चरणो मे देखा जा सकता है । (इस पुस्तिका के अत के परिशिष्ट 5 में दिए गए **व्यवहार** व्यवहार कार्यक्रम रेकॉर्ड़ फार्म का प्रयोग किया जा सकता है)

व्यवहार-व्यवस्था कार्यक्रम मे निहित चरण

1. समस्या-व्यवहार की पहचान
2. समस्या-व्यवहार की अभिव्यक्ति
3. समस्या-व्यवहार का चयन
4. पुरस्कारो की पहचान
5. समस्या–व्यवहार के आधारभूत आँकडो को रेकॉर्ड़ करना ।
6. समस्या-व्यवहार का व्यवहार विश्लेषण करना ।
7. व्यवहार-व्यवस्था कार्यक्रम का विकास और उसका कार्यान्वयन
8. व्यवहार-व्यवस्था कार्यक्रम का मूल्यांकन ।

1. समस्या - व्यवहार की पहचान

बच्चों के लिए किसी भी व्यवहार व्यवस्था के कार्यक्रम का प्रारम्भ उसके समस्या-व्यवहार की पहचान से प्रारम्भ होना चाहिए। बच्चों में समस्या - व्यवहार की पहचान के कई तरीके हैं। उदाहरण के तौर पर, बच्चे के व्यवहार का सीधा निरीक्षण करना, माँ–बाप या अभिभावक का, व्यवहार जाँच सूची के आधार पर साक्षात्कार करना, आदि। उदाहरण के लिए–हमने अध्याय तीन में देखा कि, किस प्रकार से बेसिक एम आर भाग ब (परिशिष्ट 2) के प्रयोग से मानसिक मंद बच्चों के समस्या - व्यवहार की पहचान की जा सकती है। कभी बच्चा एक ही समस्या - व्यवहार खड़ा कर सकता है या कभी अनेक। व्यवहार व्यवस्था कार्यक्रम में समस्या व्यवहार की पहचान पहला चरण है।

2. समस्या - व्यवहार की अभिव्यक्ति

समस्या -व्यवहार की पहचान के बाद दूसरा चरण है, उन व्यवहारो को ठीक ढ़ंग से अभिव्यक्त करना, स्पष्ट रूप से लिखना या दर्शाना। जैसे यह कहना कि, "बच्चा नटखट है" उचित या व्यवस्थित नहीं है। "नटखट" शब्द का मतलब अलग अलग हो सकता है। इसका एक अर्थ हो सकता है, कि, "बच्चा एक स्थान पर 15 सेकन्ड से अधिक देर तक नही बैठ सकता है" या यह भी हो सकता है "बच्चा बाल खीचता है" या वह "दूसरो के सामान छीन लेता है" आदि। यदि शिक्षक बेसिक एम आर भाग–2 का प्रयोग करें, तो उसमें व्यवहारो के निरीक्षण योग्य और मापन योग्य भाषा में लिखा गया है। प्रत्येक व्यवहार को निरीक्षण योग्य और मापन योग्य शब्दों में स्पष्ट रूप से लिखना आवश्यक है।

उदाहरण–

समस्या - व्यवहारों को व्यावहारिक शब्दों मे व्यक्त करने के कुछ उदाहरण

अनु दूसरों को मारती है,
राहुल दूसरों को चिकोटी काटता है,
पूजा दूसरो पर थूँकती है,
मोहन अंगूठा चूसता है,
ममता अपना शरीर आगे–पीछे हिलाती है,
सरिता दूसरो की पेंसिल छीन लेती है।

3. समस्या- व्यवहार का चयन

समस्या-व्यवहारों की पहचान और फिर उसे व्यवहारिक शब्दो में व्यक्त कर लेने के बाद, जिस विशेष समस्यां-व्यवहार को बदलना चाह रहें हैं उसका चयन करें । इस चरण कों विशेष समस्या-व्यवहार की प्राथमिकता क्रम में रखना कहते हैं । इस संदर्भ में यह उचित है कि, एक बार के लिए एक या दो समस्या-व्यवहार का चयन करें, एक ही समय में सभी व्यवहारों को व्यवस्थित करने का प्रयत्न न करें ।

समस्या-व्यवहार के चयन और
उन्हें प्राथमिकता के क्रम में रखने के निर्देश

1. व्यवस्था के लिए केवल एक या दो ही समस्या-व्यवहार का चयन करें ।
2. प्रारम्भ में उसी व्यवहार को चुने जो आसान हो और जिसकी व्यवस्था आसानी से हो सकें । इससे आप को अन्य व्यवहारो की व्यवस्था मे आत्म विश्वास बढ़ जाएगा ।
3. ऐसे समस्या-व्यवहार का चयन करें जो या तो बच्चे के लिए या उसके परिवेश के अन्य लोगों के लिये घातक है ।
4. ऐसे समस्या-व्यवहार का चयन करे जो कक्षा में उसके या अन्य बच्चो के शिक्षण व प्रशिक्षण के कार्यक्रम में बाधक हो ।
5. विशेष समस्या-व्यवहार का चयन करते समय बारम्बारता, अवधि पर विशेष ध्यान देना चाहिये । अर्थात् व्यवहार कितनी बार घटित होता है, कितनी देर तक रहता है या कितना गहन है ।
6. व्यवस्था के लिए ऐसे समस्या-व्यवहार का चयन करें जिसके कम हो जाने पर बच्चा कक्षा में और अधिक लगन से सीख सके ।
7. समस्या-व्यवहार का चयन मां-बाप की राय से करें, विशेषकर जब उसे घर पर भी व्यवस्थित करना हो ।

4. पुरस्कारो की पहचान

पुरस्कारो की पहचान व्यवहार व्यवस्था कार्यक्रम का एक मुख्य चरण है । व्यक्तिगत और सामूहिक पुरस्कारो की पहचान के लिये शिक्षक अध्याय 5 मे दिये गये निर्देशों व सिध्दांतो का पालन करें । बच्चो के उचित पुरस्कारों को चुनने की कई पध्दतियाँ हैं । जैसे-बच्चे के व्यवहार को देखकर, या सीधे पूछकर, बच्चे के माँ-बाप से पूछकर, बच्चे के पुरस्कारों के इतिहास को जानकर, नमूने तकनिको या, पुरस्कार प्राथमिकता की जांच-सूची का(परिशिष्ट IV)प्रयोग कर सकते है आदि ।

व्यक्तिगत या सामुहिक विशेष पुरस्कारों को पहचानने के बाद उसे श्रेणीबद्ध अधिकतम प्रारंभिकता से न्यूनतम प्राथमिकता के क्रम में रखना चाहिये । तभी शिक्षक चुने गये पुरस्कारों को मंदबुध्दि बच्चों के कुशल समस्या-व्यवहारो को बढ़ाने और समस्यात्मक व्यवहार को घटाने के लिये उचित रूप से उसका प्रयोग कर सकते है।

5. समस्या- व्यवहार के आधारभूत आँकडो को रेकॉर्ड करना

समस्या- व्यवहार की व्यवस्था प्रारंभ करने के पहले यह आवश्यक है कि, उसका सही अभिलेख या माप (ब्योरा) लिया जाय, बच्चे में व्यवहार की वर्तमान स्थिति क्या है ? इसे "आधार भूत आँकड़ा रखना" कहते हैं । इस प्रकार समस्या- व्यवहार का लेखा-जोखा रखना तो हस्तक्षेप कार्यक्रम के लागू रहने के समय भी करना पड़ता है ।

समस्या-व्यवहार के आँकड़े रखने के कारण

मानसिक मंद बच्चो को समस्या व्यवहार के आँकड़े रखने को आवश्यकता के कई कारण हैं । :

1. समस्या-व्यवहार विशेष के आँकड़े रखने से यह मालूम हो जाता है वह व्यवहार क्या वास्तव मे इतना गम्भीर है कि, उसकी व्यवस्था आवश्यक है ।

2. आँकडो की मदद से यह मालूम हो सकता है कि, व्यवहार व्यवस्था कार्यक्रम के लागू करने के बाद क्या वास्तव मे कोई वाँछनीय परिवर्त्तन आए है ।

3. आँकड़ा नोट करना एक ऐसा वस्तुनिष्ट रास्ता है जिससे हम व्यवहार व्यवस्था कार्यक्रम के लाभ को दिखा सकते हैं । अन्य शिक्षक, आगन्तुक और माँ-बाप आँकडो को देख यह जान सकते हैं कि, समस्या-व्यवहार व्यवस्था कार्यक्रम प्रारम्भ होने के पहले कैसी थी और हस्तक्षेप के बाद उसकी स्थिति कैसी है । शिक्षक को इसी प्रकार के अन्य कार्यक्रम को कार्यान्वित करने से उत्साह मिलता है ।

4. आँकड़ों से यह भी पता चलता है कि, व्यवहार व्यवस्था मे कोई परिवर्तन आवश्यक है या नही, हस्तक्षेप कार्यक्रम से कोई प्रभावकारी परिवर्तन है या नहीं है ।

5. व्यवहार व्यवस्था कार्यक्रम प्रारम्भ करने के पहले, रेकॉर्डिंग के लिए प्रारम्भ के कम से कम तीन अवसरो को अवश्य देखना चाहिए, यह तब तक देखें, जब तक कि, एक निश्चित धारा न स्पष्ट हो जाय । अर्थात् जबतक आप को बच्चे के समस्या-व्यवहार का उचित अंदाजा न लग जाय ।

आँकड़े एकत्र करने के रेकॉर्डिंग के कई तरीके है । अतः आवश्यक है कि, आप व्यवहार विशेष के लिए उचित तरीके का चयन करें ।

घटना रेकॉर्डिंग तकनीक

एक बच्चे ने किसी व्यवहार विशेष को कितनी बार किया है, इसकी रेकॉर्डिंग की जाती है । उसे "घटना रेकॉर्डिंग तकनीक" कहते हैं । इसका एक उदाहरण नीचे दिया जा रहा है ।

नाम	:	जोसेफ	आयु : 10 वर्ष
क्या रेकॉर्ड करना है	:	जबभी जोसेफ दूसरो को मारता है ।	
रेकॉर्डिंग कहाँ करना है	:	एक खडी पाई (1) का निशान, जब भी जोसेफ दूसरो को मारता है ।	
रेकॉर्डिंग कब करना है	:	20-5-91 से 25-5-91 तक रोज सुबह 9 से 12 तक ।	

दिनांक	समय	व्यवहार घटित होना	कुल
20-05-91	सुबह 9 बजे से मध्याह्न 12 बजे तक	~~IIII~~	4
21-05-91	सुबह 9 बजे से मध्याह्न 12 बजे तक	~~IIII~~ I	6
22-05-91	सुबह 9 बजे से मध्याह्न 12 बजे तक	~~IIII~~ III	8
23-05-91	सुबह 9 बजे से मध्याह्न 12 बजे तक	~~IIII~~ II	7
24-05-91	सुबह 9 बजे से मध्याह्न 12 बजे तक	~~IIII~~ III	8
25-05-91	सुबह 9 बजे से मध्याह्न 12 बजे तक	~~IIII~~ IIII	9

औसतन जोसेफ दिन मे 7 बार दूसरे बच्चे को मारता है ।

अवधि रेकॉर्ड़िग तकनीक

कुछ ऐसे समस्या- व्यवहार हैं जो बहुत कम वार आते हैं परतु जब आते या घटित होते हैं, तो काफी समय तक होते हैं । ऐसी स्थिति मे अवधि रेकॉर्डिंग उचित रहती है । ।

अवधि रेकॉर्डिंग का नमूना नीचे दिया जा रहा है – किसी बच्चे की विशेष समस्या के लिए अवधि अभिलेखन का प्रारूप अगले पृष्ठ पर दिया गया है :

नाम	:	श्रीकांत आयु : 8 वर्ष
क्या रेकॉर्डिंग करना है	:	जबभी श्रीकांत अपना शरीर झुलाता है ।
रेकॉर्डिंग कहाँ की जाय	:	कक्षा में ।
रेकॉर्ड़िंग कैसे की जाय	:	कितनी देर तक वह अपना शरीर झुलाता है, यह नोट करें ।
रेकॉर्ड़िंग कब करना है	:	22-04-91 से 27-04-91 तक रोज सुबह 10 से 11 बजे तक, एक घंटा ।

दिनांक	समय	कुल समय	कितनी देर तक शरीर हिलाता है
22-04-91	सुबह 10 बजे से 11 बजे तक	60 मिनट	45 मिनट
23-04-91	सुबह 10 बजे से 11 बजे तक	60 मिनट	37 मिनट
24-04-91	सुबह 10 बजे से 11 बजे तक	60 मिनट	50 मिनट
25-04-91	सुबह 10 बजे से 11 बजे तक	60 मिनट	56 मिनट
26-04-91	सुबह 10 बजे से 11 बजे तक	60 मिनट	20 मिनट
27-04-91	सुबह 10 बजे से 11 बजे तक	60 मिनट	40 मिनट

औसतन श्रीकान्त 60 मिनट की कक्षा में 43 मिनट तक अपना शरीर हिलाता है ।

अन्तराल रेकॉर्डिंग तकनीक

जब समस्या-व्यवहार निश्चित समय तक आती हो तो अवधि रेकॉर्ड़िंग की जाती है, जब व्यवहार निश्चित बार आता है तो घटना रेकॉर्ड़िंग तकनीक का प्रयोग किया जाता है ।

परंतु कक्षा मे निरंतर निरीक्षण करना और उसको नोट करना कभी कभी मुश्किल हो जाता है । ऐसी अवस्था में शिक्षक के लिए उचित यह होगा कि, कुछ निश्चित समय निकालकर रेकॉर्डिंग के लिए रखें और देखे कि, व्यवहार घटित होता है या नहीं, इस बीच यदि व्यवहार एक बार भी घटित होता है तो उसे रेकॉर्ड करें ।

अन्तराल रेकॉर्डिंग का उदाहरण अगले पृष्ठ पर दिया जा रहा है :

नाम	:	सिद्धू आयु : 12 वर्ष
क्या रेकॉर्ड़ करना है	:	जबभी सिद्धू दूसरो के ऊपर थूँकता है ।
रेकॉर्डिंग कहाँ करना है	:	खेल के मैदान मे ।
कैसे रेकॉर्ड़िंग करना है	:	यदि थूँकता है तो (✓) का निशान और नही थूँकता है तो (×) का निशान लगाना
कब रेकॉर्डिंग करना है	:	निम्न लिखित अंतराल पर और दिनाक 4-03-91 और 9-03-91 के बीच ।

दिनाक	समय	घटित / नही घटित	व्यवहार का कुल घटित होना/ अन्तराल मे व्यवहार का घटित होना
4-03-91	9.00 - 9.05	/	
	9.05 - 9.10	/	
	9.10 - 9.15	/	
	9.15 - 9.20	×	
	9.20 - 9.25	/	
	9.25 - 9.30	×	4/6 अन्तराल
5:03-91	10.30 - 10.35	/	
	10.35 - 10.40	×	
	10.40 - 10.45	×	
	10.45 - 10.50	/	
	10.50 - 10.55	/	
	10.55 - 11.00	×	3/6 अन्तराल
6-03-91	....	...	6/6 अन्तराल
7-03-91	....	...	3/6 अन्तराल
8-03-91	....	...	4/6 अन्तराल
9-03-91	....	...	4/6 अन्तराल

औसतन सिद्धू 6 अंतराल में 4 अन्तराल दूसरों पर थूँकता है ।

समयबध्द तकनीक

विशेष समस्या-व्यवहार से सम्बन्धित आँकडे इकट्ठा करने का दूसरा उपाय है, निश्चित समय में बच्चे का निरीक्षण करना, देखना कि, विशेष व्यवहार उस समय में घटित हुआ है या नहीं । यह पद्धति बहु प्रचलित है, सुविधा जनक है, और कक्षा में शिक्षक द्वारा असानी से अपनायी जा सकती है ।

बच्चे के विशेष समस्या-व्यवहार को रेकॉर्ड़ करने का उदाहरण अगले पृष्ठ पर दिया है :

एक बार जो भी रिकॉर्डिंग पद्धति प्रयोग में लाई जाये उसी पद्धति का उपयोग आगे चल कर व्यवहार मूल्यांकन कार्यक्रम में भी करना उचित होगा । मानसिक मंद बच्चों के समस्या व्यवहार का रेकॉर्डिंग रखना वांछनीय है । यों समय की कमी या किसी विशेष मुश्किल के आ जाने से रेकॉर्डिंग में कठिनाई आ सकती है । ऐसी अवस्था में शिक्षक को उन विशेष बातों को अवश्य नोट कर लेना चाहिए जो आवश्यक जान पड़े और जो आगे चल कर समस्या-व्यवहार को समझने में मदद कर सकें ।

नाम	:	रफिया आयु : 11 वर्ष
क्या रेकॉर्ड़ करना है	:	जब भी टेपरेकॉर्डर चल रहा हो और तब रफिया उसे बन्द करती है।
रेकॉर्डिंग कहाँ करना है	:	संगीत की कक्षा में ।
कैसे रेकॉर्ड़िंग करना है	:	जब टेपरेकॉर्ड़र बंद करें तब (✓) का निशान और जब न करें तो (×) का निशान लगाएँ ।
रेकॉर्डिंग कब करना है	:	निम्न लिखित समय पर 11-2-91 से 16-2-91 तक ।

दिनांक	समय	घटित हुआ / नहीं हुआ	कुल कितनी बार व्यवहार घटित हुआ
11-02-91	11.05	/	
	11.10	/	
	11.15	×	
	11.20	/	
	11.25	×	
	11.30	/	4/6 बार
12-02-91	11.05	×	
	11.10	/	
	11.15	/	
	11.20	/	
	11.25	/	
	11.30	/	5/6 बार
13-02-91	....	...	5/6 अन्तराल
14-02-91	....	...	4/6 अन्तराल
15-02-91	....	...	5/6 अन्तराल
16-02-91	....	...	6/6 अन्तराल

संगीत कक्षा में रफिया औसतन 6 में से 5 बार टेपरिकार्ड़र बंद करती है ।

5. समस्या-व्यवहार का व्यावहारिक विश्लेषण

समस्या-व्यवहार बिना कारण नही घटित हो जाते हैं । चाहे कौशल व्यवहार हो या समस्या-व्यवहार, दोनो ही व्यक्ति के लिये किसी न किसी उद्येश्य से होते हैं ये हर मानव के लिए सत्य है । दो बच्चो मे घटित होने वाले एक ही प्रकार के समस्या-व्यवहार के कारक या तत्व अलग अलग हो सकते हैं । अतः समस्या व्यवहार व्यवस्था कार्यक्रम दोनो बच्चो के लिए अलग अलग होने चाहिये । व्यवहार व्यवस्था कार्यक्रम उन तत्वो के सदर्भ मे की जाएगी जो व्यवहार विशेष कार्यक्रम को प्रभवित कर रहे हों । यदि कार्यक्रम इन तत्वो के बिना समझे किया जायेगा,, तो हो सकता है कि, व्यवहार की गहनता और बढ़ जायें या नए समस्या व्यवहार भी उत्पन्न हो जाये ।

समस्या विश्लेषण के कई तरीके उपलब्ध हैं, उनमे से एक सरल तरीका है ए.बी.सी.मॉडल, जिसे नीचे स्पष्ट किया जा रहा है अध्यापकों को समस्या-व्यवहारों के तीन मुख्य अवयवो को सामने और विश्लेषण करने के लिए इस मॉडल का प्रयोग करने की आवश्यकता होती है ।

अ. व्यवहार के तुरंत पहले क्या हुआ ?
इसे कारक (एन्टिसिडेन्ट) कहते हैं ।

ब. व्यवहार घटित होते समय क्या होता है ?
इसे व्यवहार (बिहेविअर) कहते हैं ।

स. व्यवहार घटित होने के तुरंत बाद क्या हुआ, ?
इसे परिणाम (कान्सीक्वेन्स) कहते हैं ।

कारक (एन्टिसिडेन्ट) को जानना

विभिन्न तत्वो या कारक जो समस्या-व्यवहार को नियंत्रित करते है उनके विश्लेषण के लिए निम्नलिखित प्रश्नो का उत्तर ढूंढना है ।

1. समस्या-व्यवहार सामान्य रूप से कब होता हैं ।

2. दिन मे कोई ऐसा विशेष समय होता है जब समस्या-व्यवहार घटित होता है, जैसे सुबह, भोजन के समय या पढ़ने के समय आदि ।

3. किसके साथ समस्या-व्यवहार घटित होता है ? (विशेष किसी व्यक्ति या शिक्षक के साथ होता है आदि) ।

4. समस्या-व्यवहार कहाँ होता है ? कोई विशेष परिस्थिति या जगह है, जहाँ समस्या-व्यवहार घटित होता है ? जैसे: स्कूल में, खेल के मैदान मे, या बच्चा जब अकेला बैठा रहता हो आदि ।

5. समस्या-व्यवहार घटित क्यों हुआ ? इसमे यह पता लगाना है कि, समस्या व्यवहार के तुरत पहले कौन सी बात हुई जिसने व्यवहार घटित होने मे मदद दी ? उदाहरण के लिए-क्या बच्चे से कुछ करने को कहा गया? या बच्चे को कोई चीज नही मिल पाई? या नही दी गई? आदि ।

समस्या - व्यवहार, कर सकने वाले बच्चे को क्या सिखाया जा रहा है? इसका शिक्षक को पुर्नःमूल्यांकन करना होगा । क्यों कि, कभी-कभी बच्चा शिक्षा या शिक्षण विषय के संदर्भ मे भी समस्य व्यवहार दिखा सकता है । कभी कभी जब शिक्षण विषय बच्चे के लिए कठिन है । या बच्चा सीख नहीं पा रहा है । तब भी समस्या आ सकती है। व्यवहार का मूल्यांकन करना, उसे क्रम बद्ध रखना, शिक्षण स्थान को देखना कि, वो उचित है या नही । अत मे विषय वस्तु और वातावरण को बदलना उचित होगा । कभी कभी शिक्षण सामग्री भी देखनी होगी, कि क्या वह रूचिकर है? शिक्षा के संदर्भ मे सभी अवस्थायें समस्या व्यवहार को उत्पन्न कर सकती है। यदि इनमें से किसी एक तत्व में भी त्रुटि रह जाती है तो समस्या-व्यवहार के पुनः होने की सभावना बढ़ जाती है अतः मानसिक मंद बच्चों की समस्या-व्यवहारों का प्रबध करने के लिए अध्यापक मे त्रुटियों का विश्लेषण करना एक महत्व पूर्ण कार्य है ।

व्यवहार घटित होते रहने के समय के तत्वों को समझना

व्यवहार घटित होते रहने के समय के तत्वों को समझने के लिये निम्न लिखित रेकॉर्डिग तकनिकों का प्रयोग करना आवश्यक है।

1. समस्या-व्यवहार कितनी बार घटित हुआ ?

या

2. समस्या-व्यवहार कितनी देर तक रहा ।

समस्या-व्यवहार के बाद के तत्वों को जानना (परिणामों की जानकारी)

व्यवहार के बाद के तत्वों को जानना निम्न प्रश्नों के उत्तर में निहित है :

1. वातावरण या आस-पास के लोग बच्चे के समस्या-व्यवहार को रोकने के लिए क्या करते हैं ?

2. समस्या-व्यवहार का परिणाम बच्चे पर क्या पड़ रहा है या अन्य बच्चों पर उसका क्या प्रभाव हो रहा है ?

3. इस समस्या-व्यवहार से बच्चे को क्या लाभ मिल रहा है ?

व्यवहार विश्लेषण से यह पता चल रहा है कि, बच्चे का प्रत्येक व्यवहार किसी लाभ से जुड़ा होता है । यदि व्यवहार से लाभ नही मिलता तो वह घटित होना समाप्त हो जाता है । अब देखें कि, कौन कौन से ऐसे लाभ इन बच्चो को मिलते हैं जिनके नाते उनके व्यवहार बने रहते हैं । इनका विश्लेषण हमें उनकी व्यवस्था में सहयोग दे सकेगा ।

1. **ध्यान आकर्षित करने वाले तत्व**

   बच्चे दूसरो का ध्यान आकर्षित करने के इच्छुक होते हैं। हम लोग भी इसे बहुत चाहते हैं । उदाहरण के लिए-एक बालक दूसरे बच्चे को देखकर मुँह बनाता है, केवल उसका ध्यान अपनी आकर्षित करने के लिए। वच्चे से किसी मौखिक या शाब्दिक रूप से तादात्म्य स्थापित करना भी एक प्रकार से ध्यान आकर्षित करने का तत्व या रूप हो सकता है। कभी कभी तो शिक्षक का बालक को डाँटना भी एक प्रकार का ध्यान दिया जाना हो सकता है । अन्य प्रकार के ध्यान देने वाले व्यवहारों में पीठ थपथपाना, आलिंगन करना, मुस्कुरा देना या कभी कभी केवल बच्चे की तरफ देखना । शिक्षक को यह जान लेना आवश्यक है कि, कहीं समस्या- व्यवहार ध्यान आकर्षित करनेके लिये तो नही हो रहा है । आप देखें कि, जब ध्यान नही दिया जाता है तो क्या व्यवहार अधिक होता है, और जब आप वच्चे

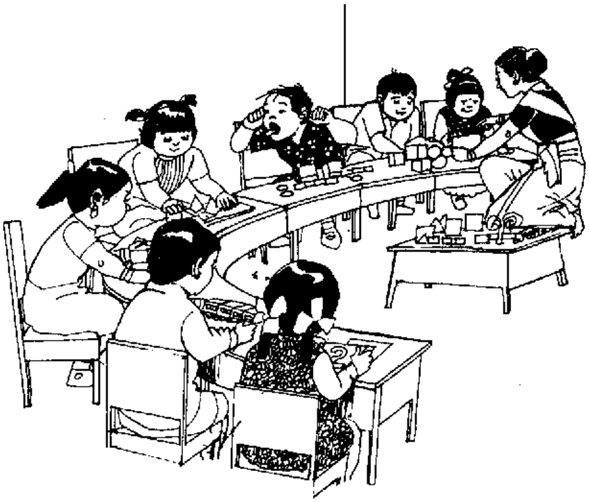

के प्रति ध्यान देते है तो उसका अवांछनीय व्यवहार क्या कम होता है ? यदि हाँ तो वह व्यवहार ध्यान आकर्षित करने वाला ही माना जाएगा ।

2. **स्वयं प्रोत्साहित तत्व**

कभी-कभी बच्चे एक ही प्रकार की क्रिया करते देखे जाते है, जैसे शरीर को हिलाना, उंगलियो को हिलाना आदि । ऐसा हम **अत्यधिक** मंद बच्चों मे अधिक देखते हैं । जब

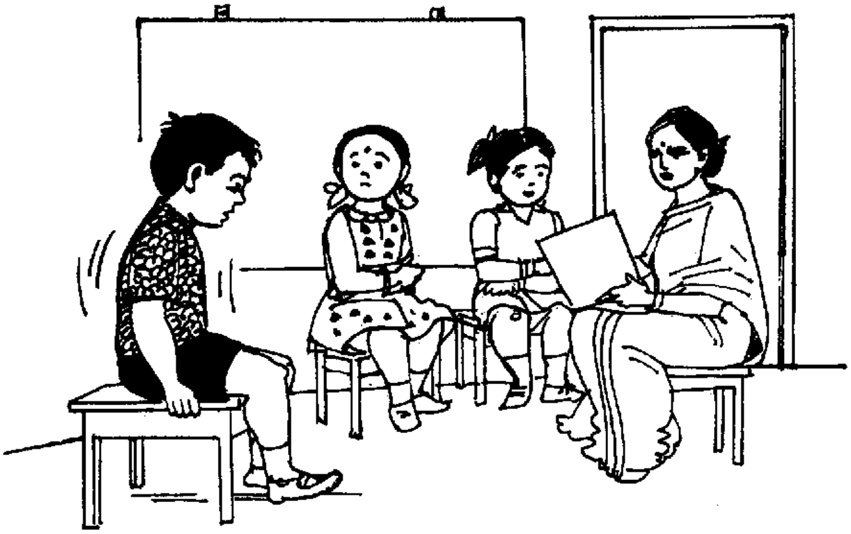

ऐसे बच्चे अकेले छोड़ दिए जाते हैं या उन्हे प्रोत्साहित नही करते हैं या ज्यादा प्रोत्साहित करते हैं तो ऐसे व्यवहार उनमे अधिक देखे जाते हैं । उसके विपरीत जब इन्हे किसी लाभदायक काम मे लगा दिया जाता है तो उनके स्वयं को उत्तेजित करने वाले व्यवहार कम हो जाते हैं ।

3. **कौशल व्यवहार में कमी**

बच्चों मे कुछ समस्या-व्यवहार उनके कौशल व्यवहार मे अभाव के कारण होसकते हैं । जब ऐसे बच्चे किसी कौशल व्यवहार को नही जानते हैं, तो उनके समस्या-व्यवहार कुछ अटपटे या अनुचित लगते हैं । उदाहरण के लिए-एक बच्चा जिसमे भाषा की कमी हैं, नही कह पाता कि, उसे गेंद चाहिए, दूसरे बच्चे से गेंद माँगने की, अपेक्षा छीन लेता है । इसी प्रकार यदि एक बच्चा कक्षा मे शिक्षक द्वारा बताये गए काम को नही कर पाता है फिर भी उससे करने को कहा जाता है, तो वह शिक्षण सामग्री फेंक देता है । ऐसी स्थिति मे कौशल व्यवहार सिखाना प्रमुख कार्य हो जाता

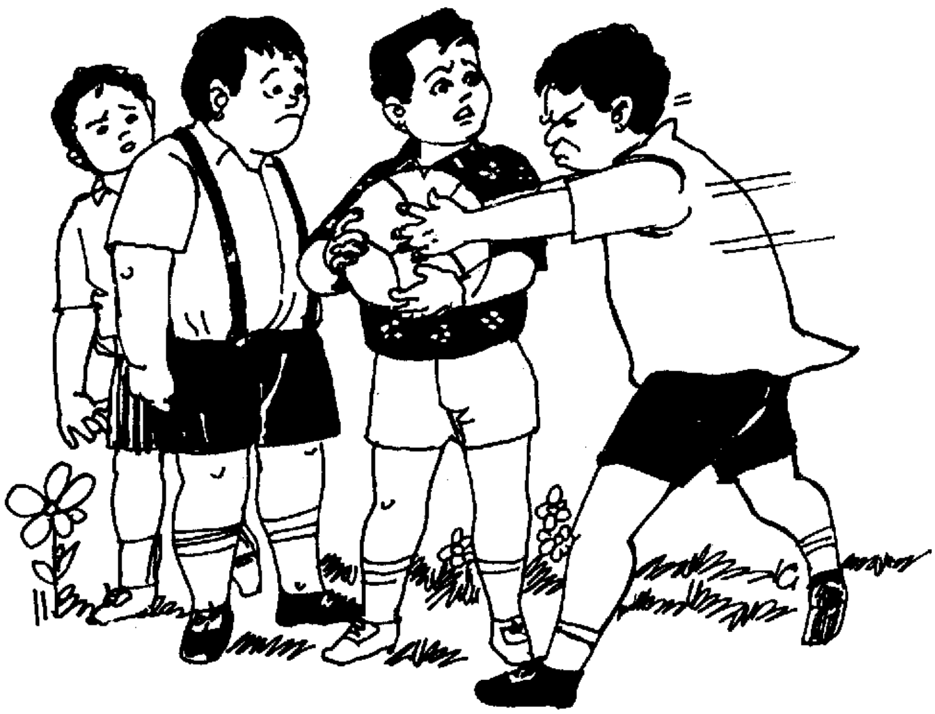

है । ऐसा करने से बच्चे का समस्या व्यवहार कम और बाद में समाप्त भी हो जाता है । अतः शिक्षक का कर्तव्य और दायित्व बन जाता है कि, बच्चे के वांछनीय व्यवहार को बढ़ायें जिससे अवाछनीय व्यवहारों की जगह वांछनीय व्यवहार होने लगे ।

4. **बचाव**

ऐसा पाया गया है कि, कभी कभी बच्चे मुश्किल परिस्थिति से बचने के लिए अवांछनीय व्यवहार करते हैं । जैसे-एक बच्चा है जिसे जब भी शिक्षक कोई काम करने के लिए कहते हैं तो वह रोने लगता है । ऐसा करने पर शिक्षक उससे काम ले लेते हैं, या कहते हैं कोई बात नही रहने दो । इस प्रकार अब बच्चा काम से बचने के लिए रोना सीख गया है । इस प्रकार यदि किसी बच्चे का समस्या व्यवहार कोई काम करने के लिए कहे जाने पर बढ़े और जब उसे काम न करने को कहे जाने पर कम हो जाय तो यह जान लेना चाहिए कि, बच्चा काम से बचने की कोशिश कर रहा है ।

5. **सामग्री तत्व**

बच्चों के कुछ व्यवहार पुरस्कार के रूप में इच्छित वस्तुओ की प्राप्ति के लिए पाए जाते हैं । उदाहरण के लिए-बच्चे को चुप कराने के लिए शिक्षक उसे खिलौना देते हैं तो उस क्षण के लिए बच्चा चुप हो जाता है । वास्तव मे उनको रोने की आदत डालना होता हैं । यदि समस्या-व्यवहार इच्छित खिलौना या वस्तु मिल जाने पर समाप्त हो जाय, तो मान लेना है कि, बच्चे का व्यवहार वस्तु पाने के लिए ही है ।

कई बार बच्चा काम न करने के लिए या कुछ पसन्द की चीजें पाने के लिए रोता है । वास्तव मे एक समस्या-व्यवहार के लिए एक ही कारण या परिणाम हो सकता है लेकिन अगर गुढ़ मे जाये तो पता लगता है कि, एक से ज्यादा भी कारक या परिणाम हो सकते है । साथ ही यह भी जानना होगा कि, इस प्रकार के कारक या प्रतिफल समय-समय पर बदल भी सकते है । अतः व्यवहार विश्लेषण का क्रम चलता रहेगा और वह तभी समाप्त माना जाएगा या होना चाहिए जब व्यवहार समस्या समाप्त हो जाये।

यह समझना आवश्यक है कि, समस्या व्यवहार मानसिक मद बच्चों मे तरह तरह के कारक अथवा प्रतिफल की वजह से होते हैं । इन सब तत्वो का विश्लेषण होना चाहिये।

ऊपर बताए गए तत्वो को नीचे के उदाहरण से स्पष्ट किया जा रहा है जिसमें व्यवहार से संबन्धित कारको और परिणामों को दर्शाया जा रहा है ।

कारक	व्यवहार	प्रतिफल	लाभ
दोपहर के भोजन के समय, जब मेरी अकेली बैठी है	मेरी अपना शरीर हिलाती है	कोई कुछ नही कहते, मेरी लगातार शरीर हिलाती है ।	स्वयं प्रोत्साहन
शिक्षक ने शशि को खिलौना नही दिया	शशि अपना सिर पटकती है	आया खिलौना देती है और शशि सिर पटकना बन्द कर देती है ।	सामग्री
शिक्षक ने विजय से रंग भरने को कहा, जो वह नही चाहता	विजय कागज फेकता है	शिक्षक विजय को काम देना बंद कर देते है और विजय का कागज फेंकना भी बंद हो जाता है ।	बचाव
रशीद ने गेंद माँगी, शिक्षक ने नही दिया	रशीद रोने लगता है	शिक्षक गेद दे देते है और रशीद रोना बंद कर देता है	सामग्री
मनी तिपहिया साइकिल माँगता है, लेकिन उसे साइकिल नही दी जाती।	मनी गाली देता है ।	शिक्षक मनी को साइकिल चलाने देते है, और मनी गाली देना बंद करता है ।	सामग्री
पढ़ाई चल रही है	किरन पूछती रहती है वह घर कैसे जाएगी।	शिक्षिका कहती रहती है कि, उसकी माँ आएगी, लेजाएगी ।	ध्यान आकर्षण

7. व्यवहार व्यवस्था कार्यक्रम का विकास और उसका कार्यान्वयन

समस्या-व्यवहार के संदर्भ में कारक और परिणाम का अध्ययन कर लेने के बाद शिक्षक को उपलब्ध व्यवहार सुधार विधियों के प्रयोग पर विचार करना होगा ।

यदि आप को यह आभास हो कि, समस्या-व्यवहार के लिए उपस्थित कारक अधिक जिम्मेदार है तो आप ऐसी विधियों के उपयोग के बारे में सोंचे जो उन कारकों को रोक सकें, जो समस्या-व्यवहार को प्रेरित कर रहे है ।

और यदि आप को लगे कि, समस्या-व्यवहार के लिए परिणाम तत्व जिम्मेदार है तो उन्हीं के लिए व्यवहार व्यवस्था में बताई गई विधियों का प्रयोग करें । इस पुस्तिका के नौवे अध्याय में उन सभी विधियो की चर्चा की गई है जो मानसिक मंद बच्चों के समस्या-व्यवहार सुधार में उपयोगी सिद्ध होंगीं ।

व्यवहार व्यवस्था कार्यक्रम बनाने के निर्देश

1. समस्या-व्यवहार के तुरंत बाद होने वाले परिणाम को हटा दे ।
2. अच्छे और वांछनीय व्यवहार के बाद सुखद परिणाम दे ।
3. जिन लाभो को बच्चा समस्या-व्यवहार के बाद लेता या पाता है उन्हें अच्छे व्यवहार के बाद दे या उपलब्ध करायें ।
4. ऐसे वांछनीय व्यवहार सिखाएँ जो अवांछनीय व्यवहारों की प्राप्ति कराते हों, जैसे: अब यदि बच्चा दूसरे बच्चे को मार कर गेंद ले लेता था, उसे सिखायें "गेंद मुझे दो", ऐसा चाहे वह बोलकर कहे या इशारे से बता पाए ।
5. व्यवहारो के परिणामो को व्यवस्थित करे । जैसे-जब बच्चा कहे "मुझे गेंद दो" तब उसे पुरस्कृत करें । जब वह अन्य बच्चे को मार कर गेंद लेना चाहे तो दंड दें ।
6. दूरगामी प्रभाव के लिए समस्या-व्यवहार से सम्बन्धित कारक और परिणाम को हटाने और बदलने का प्रयत्न करें ।
7. दण्ड विधि का प्रयोग एक अंतिम रूपमे ही करे। परंतु यदि बच्चे का व्यवहार उसे अथवा अन्य को घातक हों,उसके शिक्षण में बाधक हों तो शिक्षक को उचित निर्णय लेना होगा।
8. यदि आप ने मामुली दण्ड विधि का भी प्रयोग करने का निर्णय लिया है तो ध्यान रखें कि, आपकी योजना मे पुरस्कार विधि का भी प्रयोग अवश्य हो ।

8. व्यवहार व्यवस्था कार्यक्रम का मूल्यांकन

व्यवहार व्यवस्था कार्यक्रम के प्रभावी ढग के उपयोग से शिक्षक बच्चे के समस्या-व्यवहार मे वांछनीय सुधार ला सकते हैं । व्यवहार मे किस हद तक, किस अनुपात में सुधार हुआ है, हो रहा है, इसे जानने के लिए आँकड़ो का रखना उचित है । इसके साथ ही बच्चे का समय समय पर मूल्यांकन भी आवश्यक है ।

समस्या-व्यवहार के स्तर का समय समय पर मूल्यांकन करने के लिए शिक्षक बेसिक - एम. आर. भाग दो की सहायता, कम से कम प्रत्येक 3 माह पर, ले सकते हैं । व्यवहार व्यवस्था कार्यक्रम का पहला मूल्यांकन शिक्षण के पहले ही किया जाता है जिसे आधार भूत आँकड़ा इकट्ठा करना कहते हैं बाद के तीन मूल्यांकन प्रत्येक तीसरे माह पर करे । इनके तुलनात्मक अध्ययन से पता चलेगा कि, बच्चे की व्यवस्था में समस्या व्यवहार परिवर्तन हो रहा है या नहीं ।

(नोटः व्यवहार बहुत जटिल होते हैं । कभी-कभी उन्हें समझने के लिये विस्तृत विश्लेषण की आवश्यकता है । उसके बाद ही व्यवहारों की व्यवस्था कर सकते हैं या परिवर्तित कर सकते हैं । इसीलिये शिक्षकों को सूचित किया जा रहा है कि, वे चिकित्सिय मनोवैज्ञानिक विशेष शिक्षक से परामर्श करे जो मानसिक मद बच्चो के प्रशिक्षण के व्यावहारिक तकनिको में प्रशिक्षित हैं । एक मानसिक मंद बच्चों का ए. बी सी. मॉडल व्यवहार व्यवस्था कार्यक्रम का उदाहरण सहित परिशिष्ट 5 में दिया गया है ।)

सारांश

1. व्यवहारों की समस्या उस **अवस्था** मे मानी जाएगी जब वे या तो स्वयं या अन्य के लिए घातक हों, बच्चे की आयु के अनुकूल न हो, सीखने की क्रिया में बाधक हो, या असामाजिक हो ।

2. समस्या-व्यवहार **कार्यक्रम** के निश्चित चरण हैं : व्यवहारों की पहचान, समस्या व्यवहार की अभिव्यक्ति, समस्या व्यवहार का चयन, पुरस्कारो की पहचान, समस्या व्यवहार के आधारभूत **आँकडो को रेकॉर्ड करना, समस्या-व्यवहार का व्यवहार** विश्लेषण **करना, समस्या-व्यवहार कार्यक्रम का विकास और उसका कार्यान्वयन, समस्या व्यवहार कार्यक्रम का मूल्यांकन करना आवश्यक है ।**

3. व्यवहार सम्बन्धी आँकड़ों को इकट्ठा करने के तरीको मे, घटना **रेकॉर्ड़** करना, अवधि रेकॉर्ड़ करना, अतराल रेकॉर्ड करना, और समय बद्ध **तकनीक** शामिल है ।

4. **समस्या**–व्यवहार का विश्लेषण उसके कारकों, परिणामों या प्रतिफलों की आवश्यक जानकारी लेने से है । इसके सा**थ** ही उन कारकों और परिणामो के व्यवहारिक उपयोगिताओं की भी जानकारी लेना है ।

5. **समस्या-व्यवहार कार्यक्रम** को साकार करने के लिए कुछ निर्देश दिए गए हैं, जिनकी सहायता से मानसिक मंद बच्चों के व्यवहार में वांछनीय सुधार लाया जा सकता है । जैसे किसी समस्या-व्यवहार के बाद के सुखद परिणामों को **हटा** देना और किसी ऐच्छिक व्यवहार के होने पर सुखद परिणामो की व्यव**स्था** करना, पूर्वापेक्षित कौशल सिखाना, विभिन्न भेदात्मक पुरस्कार विधियों का प्रयोग करना इत्यादि ।

6. **समस्या–व्यवहार** कार्यक्रम का समय समय पर मूल्यांकन आवश्यक है । जिससे यह पता लग सके कि, किस प्रकार और किस हद तक व्यवहार मे परिवर्तन आया है । यदि परिवर्तन बहुत कम या बिल्कुल नही है तो इसका क्या कारण हो सकता है ।

अभ्यास कार्य–8

I. ***नीचे कुछ इस प्रकार के समस्यामूलक व्यवहार दिये जा रहे हैं जो मानसिक नही करना बच्चों में आमतौर से पाये जाते हैं । इनमें कुछ प्रत्यक्ष रूप से देखे और मापे जा सकते हैं जब कि, कुछ नहीं देखे और मापे जा सकते । प्रत्यक्ष रूप से देखे और मापे जा सकने वाले समस्या मूलक व्यवहारों के लिए (✓) और प्रत्यक्ष रूप से देखे और मापे न जा सकने वालों के लिए (×) निशान लगाइये ।***

__________ (1) नटखट

__________ (2) चीजें फेंकना

__________ (3) दूसरो को चोट पहुंचाना

__________ (4) ध्यान हटाना

__________ (5) तोड़ता

__________ (6) चिढ़ना

__________ (7) किताबें खींचना

__________ (8) थूंकना

__________ (9) शरारती

__________ (10) परेशान करना

__________ (11) सनकी

__________ (12) झूठ बोलना

__________ (13) स्वयं के बाल खींचना

__________ (14) कुत्ते से भय

II. ***बच्चों के व्यवहार का अभिलेख तैयार करने में कम से कम दो प्रकार की रेकॉर्ड़ तकनीक बताइये***

1. ______________

2. ______________

III. ***नीचें दी गई समस्या मूलक व्यवहारों की मिसालों का कारक, व्यवहार व प्रतिफल तत्वों में वर्गीकरण कीजिए ।***

(क) लंच के दौरान रजनी को कुछ नही करना होता है वह एक कमरे के कोने में अकेली बैठती है और अपने शरीर को झुलाती है । पास से गुजरने वाले एक अध्यापक उसे देखते हैं और खेलने के लिए उसे खिलौने दे देते हैं ।

कारक	व्यवहार	प्रतिफल
__________	__________	__________
__________	__________	__________

(ख) शुभा ड्राइवर के कहने से गाड़ी से उतरने से इन्कार कर देती हैं । ड्राइवर कक्षा मे

जाने से पहले उसको गाड़ी मे एक चक्कर लगवा देता है ।

कारक	व्यवहार	प्रतिफल
----------	----------	----------
----------	----------	----------

(ग) चित्रकला की कक्षा के दौरान अध्यापक अली से एक चित्र में रंग भरने को कहते हैं। अली चित्रों की पुस्तक फाड़ देता है । अध्यापक उसे कक्षा से बाहर कर देते हैं ।

कारक	व्यवहार	प्रतिफल
----------	----------	----------
----------	----------	----------

(घ) रजिया को दायी तरफ का पक्षाघात है, जब अध्यापक उसको प्रयोग करने के लिए कैंची देते हैं तो वह मना कर देती है । अध्यापक बार-बार उसको ऐसा करने को कहते हैं और उसके हाथ को कैंची चलाने के लिए पकड़ते हैं ।

कारक	व्यवहार	प्रतिफल
----------	----------	----------
----------	----------	----------

IV. ***नीचे कुछ अनुकरण की स्थितियाँ दी जा रही हैं । इनमें वह कारक खोजिए जिन्हें आप सोचते है कि, दिये गये बच्चे मे समस्या मूलक व्यवहार को संभव तथा बनाए रखते हैं।***

(क) राजू गेंद का बहुत शौकीन है । जब सीता गेद से खेलती है, राजू उसके पास जाता है और उसके सिर पर चोट पहुँचाता है । तो सीता राजू को गेंद देती है और राजू तब सीता को चोट पहुँचाना बंद कर देता है । आपके अनुसार राजू के इस व्यवहार का कौनसा कारक, उस के व्यवहार को बनाये रख रहा है ।

____

____

(ख) छात्र कक्षा में कोई दिया हुआ काम कर रहे है । रवि मेज पर अपनी पेंसिल खटखटाता है। अध्यापक ऊपर देखते हैं और कहते हैं "रवि । यह खटखटाना बंद करो, तुम कक्षा के काम में रुकावट डाल रहे हो । कुछ समय के बाद रवि फिर से अपने डैक्स पर खटखटाना शुरू कर देता है । अध्यापक रवि के पास पहुँचते हैं और रवि के पास बैठ जाते हैं । इसके बाद रवि पेंसिल खटखटाना बंद कर देता है । आपके अनुसार रवि के व्यवहार का कौनसा कारक, इसके व्यवहार को बनाये रख रहा है ।

(ग) मीना दूसरों के साथ खेलने मे रुचि नही रखती । जब अध्यापक बच्चों को खेलने मे व्यस्त रखते हैं काम देते हैं तो मीना कोने में बैठकर शरीर झुलाती है । अध्यापक यह समझ लेते हैं कि, मीना आमतौर से अपने शरीर को तभी झुलाती है जब वह अकेली होती है और उसे कोई काम करना नही होता । आपके अनुसार मीना के शरीर को झुलाने वाले समस्यामूलक व्यवहार का कौनसा कारक उसके व्यवहार को बनाये रख रहा है ।

(घ) एक कक्षा में सत्येंद्र ने अध्यापक द्वारा काम पूरा करने को कहने पर अध्यापक को गाली देना शुरू कर दिया । काम के लिए अध्यापक ने उसे कहना बंद कर दिया । सत्येन्द्र ने गाली देना बंद कर दिया । आपके अनुसार उसके इस व्यवहार का कौनसा कारक उसके व्यवहार को बनाये रख रहा है ।

कार्य अभ्यास - 8
कुंजी

1. 1. गलत 2. सहीं 3. सहीं 4. गलत 5. सही
   6. गलत 7. सहीं 8. सही 9. गलत 10. गलत
   11. गलत 12. गलत 13. सहीं 14. सही

2. घटना रेकॉर्डिंग /अवधी रेकॉर्डिंग/समयबध्दता/अंतराल रेकॉर्डिंग

3. अ) कारक – लंच के समय रजनी के पास कोई काम नहीं हैं ।
   व्यवहार – सीता कोनेमें बैठती है और शरीर हिलाती है ।
   प्रतिफल – अध्यापक पास में जाते हुये उसे खेलने के लिये एक खिलौना देते हैं ।

   आ) कारक – जब ड्राईवर वॅन से उतरने को कहता है ।
   व्यवहार – शुभा वॅन से उतरने के लिये इन्कार करती है ।
   प्रतिफल – ड्राईवर शुभा को एक बार और घुमाने ले जाता है ।

   इ) कारक – चित्रकारी की कक्षा में अली को चित्र मे रंग भरने को कहा पाता है ।
   व्यवहार – अली चित्र की पुस्तक फाड देता हैं ।
   प्रतिफल – शिक्षक उसे कक्षा से बाहर भेज देते हैं ।

   ई) कारक – शिक्षक रजिया को कैंची का प्रयोग करते हुये काटने को कहते हैं ।
   व्यवहार – रजिया कैंची का प्रयोग करके काटने से इंकार करदेती है .
   प्रतिफल – उसका हाथ पकडकर उसे कैंची का प्रयोग सीखाते हैं ।

4. 1. सामग्री 2. ध्यान आकर्षण 3. स्वय प्रोत्साहन 4. बचना

अध्याय नौ

समस्या-व्यवहार व्यवस्था की व्यवहारिक पध्दतियाँ

इस अध्याय के समापन पर शिक्षक समस्या-व्यवहार व्यवस्था की निम्नलिखित विधियों के प्रयोग के तरीके ओर निर्देशो को समझ पाने में सक्षम हो सकेंगें ।

1. कारको को बदलना
2. विलोपन/ध्यान न देना
3. टाइम आउट
4. शारीरिक प्रतिबंध
5. प्रतिक्रिया मूल्य
6. अतिसुधार
7. नाराजगी प्रगट करना
8. भय को क्रमश निकालना
9. भेदात्मक पुरस्कार **तकनीक**
10. स्वयं व्यवस**्था** **तकनीक**

समस्या - व्यवहार कार्यक्रम की व्यवहारिक पंध्दतियाँ

कक्षा या स्कूल मे, व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से बच्चों के समस्या **कार्यक्रम** के लिए शिक्षकों ने उनका व्यवहारिक पध्दतियो का प्रभावी व सफलता पूर्वक प्रयोग किया हैं । इस अध्याय में इन्ही विधियो के प्रभावी उपयोग के निर्देश दिए हैं ।

समस्या-व्यवहार कार्यक्रम के लिए प्रयुक्त व्यावहारिक पध्दतियों सम्बन्धी ध्यान देने योग्य बातें

समस्या-व्यवहार कार्यक्रम में प्रयुक्त पद्धतियों का उपयोग करने से पहले निम्न बातों को ध्यान मे रखना है :

1. एक बच्चा कई प्रकार के समस्या व्यवहार दिखा सकता है । शिक्षक को उचित पध्दति का चयन करना चाहिये जिनसे समस्या-व्यवहार को व्यवस्थित किया जा सके । यह मानना, कि, एक ही प्रकार की पध्दति बच्चे के सभी समस्या व्यवहार को व्यवस्थित कर पाएगी, सही नही है ।

2. दो या दो से अधिक बच्चे एक ही प्रकार के समस्या-व्यवहार दिखा सकते है । फिर भी उनके लिए भिन्न-भिन्न व्यवहार कार्यक्रम पध्दतियाँ लागू होंगीं । क्यों कि, संम्भव है उनके व्यवहारो के कारक और परिणाम अलग हो । शिक्षक को प्रत्येक बच्चे के व्यक्तिगत व्यवहारो को पहचान कर ही पद्धतियों के प्रयोग का निर्णय लेना होगा ।

3. बच्चो के समस्या-व्यवहार सुधार के बने बनाए तरीके नही हैं । इन पध्दतियो का चयन बच्चे के व्यवहार के तुरंत पहले और तुरंत बाद मे होने वाले कारको का अध्ययन आवश्यक है । उन्ही के माध्यम से विधियों का चयन हो पाएगा । शिक्षक को प्रत्येक व्यवहार के लिए, अलग अलग विधियों का चयन करना चाहिये जो व्यवहार विशेष के लिए अनुकूल होगा ।

4. व्यवहार व्यवस्था कार्यकम एक लम्बी अवधि का काम है । एक ओर तो इससे अवांछनीय व्यवहार कम किए जाते हैं तो दूसरी ओर बच्चों मे वाछनीय व्यवहारो को बढ़ावा देने की आवश्यकता होती है ।

बच्चो के समस्या-व्यवहार के लिए उचित व प्रभावी ढ़ंग से उपयोग मे लाई जाने वाली पद्धतियो का वर्णन नीचे दिया जा रहा है ।

1. कारकों को बदलना

आठवें अध्याय मे हमने देखा कि, कई प्रकार और रूप के ऐसे तत्व है जिनकी उपस्थिति मे समस्या व्यवहार अधिक घटित होते रहते हैं । इन तत्वो मे स्थान, परिस्थिति, व्यक्ति, समय, आवश्यकताएँ बच्चो पर थोपे गए काम, शिक्षक द्वारा दिए गए निर्देश या नियमावली में परिवर्तन आदि शामिल होते हैं । यदि शिक्षक इनमे से किसी एक या अन्य तत्वों और समस्या-व्यवहार में सम्बन्ध समझ लें,

तो या तो उनमें सामान्य परिवर्तन या स्थानान्तरण ही व्यवहार मे अपेक्षित बदलाव ला सकता है । इन्हीं तत्वों को उदाहरण के साथ देखेंगे ।

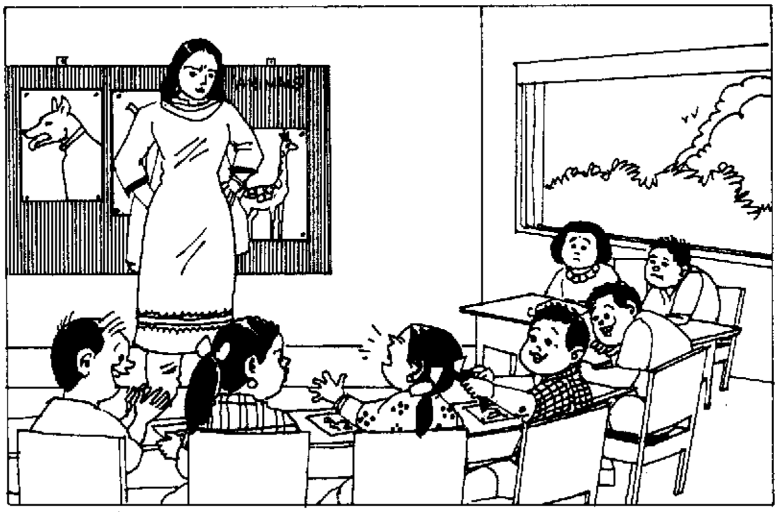

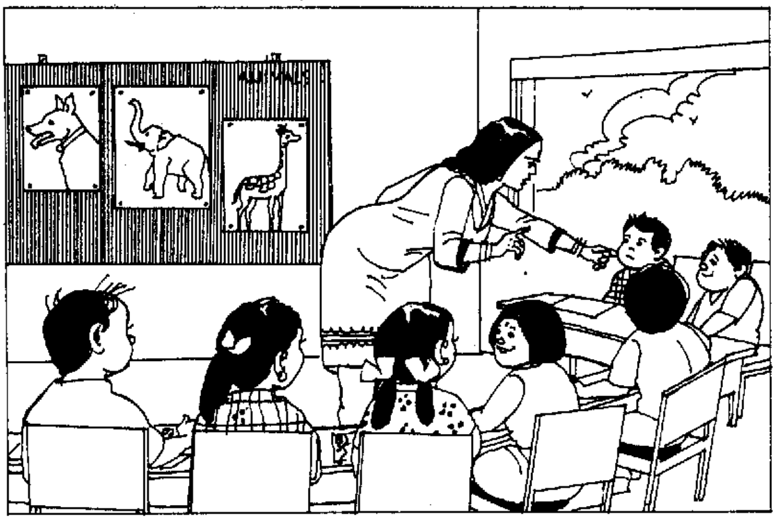

समस्या-व्यवहार को उससे सम्बन्धित कारकों मे अपेक्षित बदला जा सकता है । उदाहरण के लिए-जब बच्चा किसी कार्य मे नही लगा रहता है तो अपने शरीर को हिलाता है । इसी प्रकार बार बार खाने के लिए कहने पर बच्चा भोजन फेंकता है, खिड़की के पास बैठने से बच्चा बाहर झाँकने लगता है, पढ़ने पर ध्यान नही दे पाता है, तो वातावरण मे अपेक्षित परिवर्तन से समस्या को कम किया जा सकता है । यदि बच्चे का ध्यान विषय पर इस लिए नही है क्योंकि, विषय कठिन है या बहुत ही सरल है, तो बच्चे को उसके स्तर का विषय देना होगा । यदि बच्चा शिक्षक के निर्देश इस लिए नही समझ पाता क्यो कि, निर्देश उसके लिए कठिन है, तो उसे सरल भाषा में समझाना पड़ेगा ।

कभी कभी बच्चों में कुछ समस्या-व्यवहार शिक्षण कार्य के अचानक बदल जाने से भी प्रकट हो सकते हैं । अतः बच्चो को पहले से ही परिवर्तन के लिए तैयार कर दे, जिससे समस्या व्यवहार को आने से रोका जा सके । सीधे और सहज ढंग से कहें "अब संगीत की कक्षा या पढाई पूरी, अब 11 बजे हैं अब आगे हम चित्र काम करेंगे" बच्चे को यह बताना ही शायद उसे आने वाले परिवर्तन के लिए तैयार कर देगा । शिक्षक कभी कभी संकेत से ही टाइम-टेबल की ओर इशारा कर बताएँ कि, अब कक्षा या पढाई समाप्त हुयी, दूसरी शुरू होने वाली है ।

बहुत से समस्या-व्यवहार थोड़ी व्याख्या देने या थोड़ा समझा देने से ही दूर हो सकते हैं । यदि केवल "ना" या "हाँ" ही कहा जाएगा तो बात अधूरी और अस्पष्ट रह जाएगी, और बच्चे समझ न पाने के कारण चंचल हो सकते हैं या जानने के लिए उतावलापन दिखा सकते हैं । उदाहरण के लिए-यदि एक बच्चा बाहर खेलने जाने के लिए आज्ञा माँग रहा है, आप केवल उसे "नही, बैठ जाओ, कहेंगे तो उसे शायद आप की बात स्पष्ट नहीं, हो पाएगी । परंतु यदि आप कहेंगे कि, जब घंटी बज जाएगी तब जा सकते हो तो बच्चा शायद कोई शरारत न करें । साथ ही बच्चे और शिक्षक में अच्छा संबंध स्थापित हों सकेंगा । यदि ऐसा करने पर भी समस्या-व्यवहार नही जाता तो आप को समस्या व्यवहार कार्यक्रम के बारे मे सोचना पड़ेगा । ऐसा करने के लिए सभी चरणों से गुजरना है ।

कभी कभी ऐसा सम्भव नही हो सकता कि, कारक तत्वों को हर समय नियंत्रण में रखा जाय विशेषकर स्वाभाविक वातावरण मे जैसे- यदि एक बच्चे की आदत सी बन गई है कि, वह बच्चों को मारता रहता है। क्यो कि, बच्चा सब को मार रहा है तो ऐसी अवस्था में सभी बच्चो को कक्षा के बाहर निकाला नहीं जा सकता है। साथ ही एक शिक्षक अपने शिक्षण कार्य को छोड़ बच्चे की निगरानी नही कर सकता । अतः हमें अन्य पध्दतियो के बारे में भी जानना आवश्यक है जिसकी सहायता से समस्या को कम किया जा सके। यहाँ परिणामों पर ध्यान देना होगा, इससे टिकने वाले फल मिल सकते हैं ।

2. विलोपन / ध्यान न देना

स्थायी रूप से ध्यान पुरस्कार को समस्या-व्यवहार के बाद हटा लेने को ही "विलोपन" या "ध्यान न देना" कहते है। इसमे बच्चे

की ओर न देखना, बच्चे से बात न करना, समस्या व्यवहार के बाद बच्चेसे कोई भौतिक सम्पर्क न रखना शामिल होता है ।

उदाहरण : राजेश (निरंतर ध्यान पूर्वक) अपने चित्र का काम कर रहा **था**। अचानक अंगड़ाई लेते हुए जोर की आवाज निकाली। अब तक शिक्षक ने राजेश की ओर ध्यान नहीं दिया **था** । जब शिक्षक ने राजेश की अंगड़ाई के साथ आवाज सुनी तो उसकी ओर ध्यान देते हुए कहा, "राजेश शोर मत मचाओ" वास्तव में शिक्षक ने राजेश को अंगड़ाई लेने और आवाज करने के व्यवहार को ध्यान देकर प्रोत्साहित किया है ।

अनेक बार अनजाने में ही शिक्षक ध्यान देते हुए बच्चे के समस्या व्यवहार को प्रोत्साहित करते रहते हैं । सामान्यतः जब बच्चा अन्य को देख मुँह बनाता है तो शिक्षक हँस कर कहते हैं कि, बच्चा कितना चंचल है । शिक्षक का ऐसा संकेत, बच्चों को ऐसा व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित करेगा ।

उदाहरण :

> ममता का ही उदाहरण लें । वह कक्षा के काम में बाधा डालते हुए बार बार खड़े होकर कुछ न कुछ प्रश्न पूछती है, जैसे घंटी कब बजेगी ? शिक्षक को स्पष्ट हो जाता है कि, ममता का वह व्यवहार ध्यान आकर्षित करने वाला है। अतः ममता के बार बार पूछने पर भी शिक्षक उस पर ध्यान नहीं देते है। इसके विपरीत जब ममता चुपचाप बैठ अपना काम करती है तो शिक्षक उसे पुरस्कृत करते है । शीघ्र ही ममता शांति पूर्वक बैठना सीख जाती है, और कक्षा में बार बार प्रश्न पूछना छोड़ देती है ।
>
> समस्या व्यवहार को कम करने के तमाम कोशिशों के बावजूद शिक्षक अंततः बच्चे को डाँटना, फटकारना या उससे बहस करना प्रारम्भ कर देते है, जो बच्चे के लिए पुरस्कार का काम करने लगता है ।

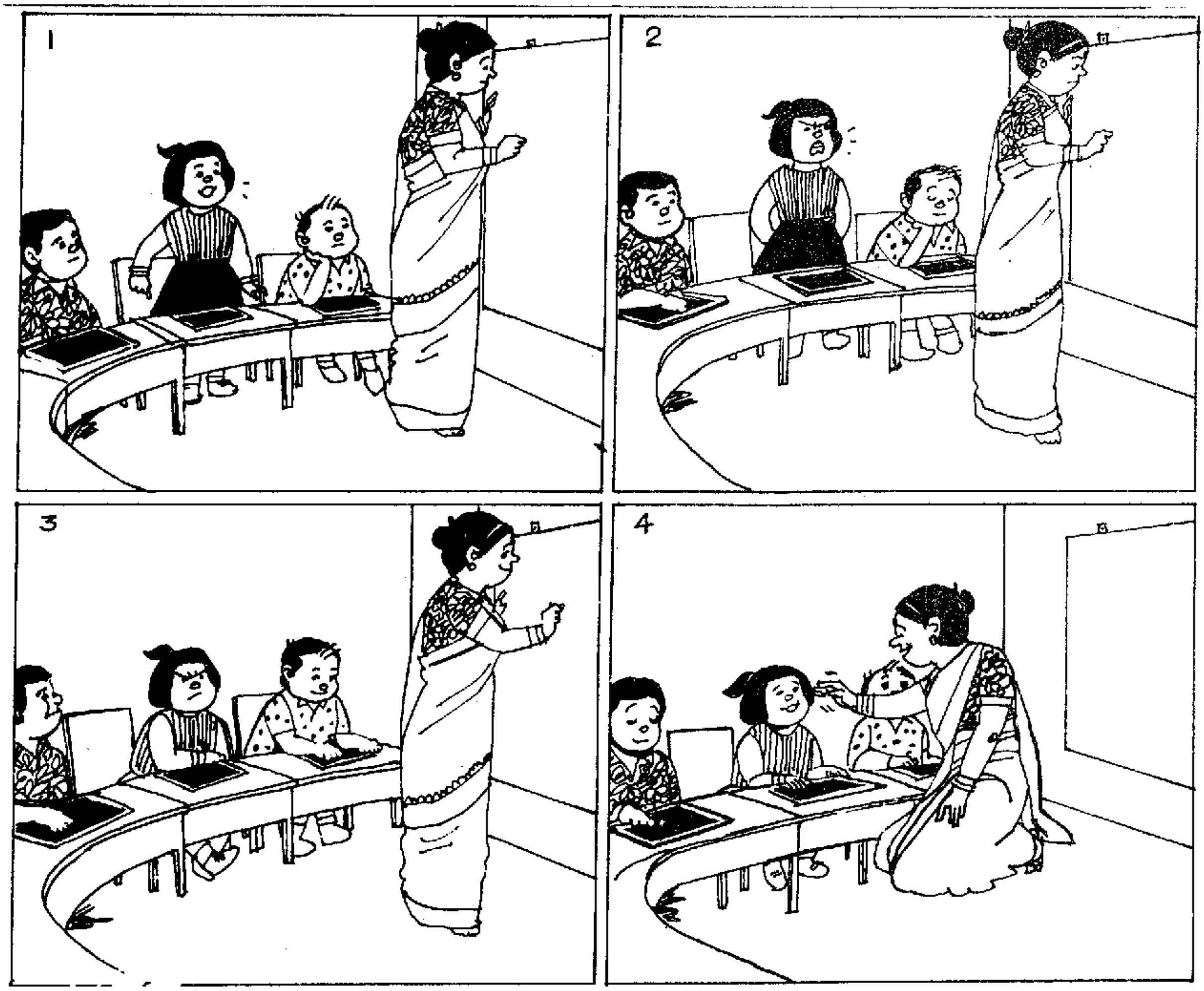

ध्यान आकर्षित करने वाले व्यवहार :- रोना, चिल्लाना, सहपाठी के साथ बातें करते रहना, दूसरों के काम मे विघ्न डालना, एक ही प्रश्न बार बार पूछते रहना, हाथ मिलाते रहना, बार बार या जब भी किसी को देखें "नमस्ते" करते रहना, बार बार पेशाब जाने की आज्ञा मांगना, दूसरे बच्चे की शिकायत करते रहना, अपने नए वस्त्र को दिखाना, गालियाँ देना आदि हो सकते है।

ऐसे ध्यान आकर्षित करने वाले समस्या-व्यवहारों को पहचानिये, जो
बच्चे या अन्य के लिये हानिकारक न हो ।
शिक्षक उनकी ओर ध्यान न देते हुये आसानी से
प्रबंध कर सकते हैं।
अच्छे व्यवहार के प्रति ध्यान अवश्य दें ।

जो समस्या-व्यवहार बचने के लिए बच्चे करते है उनके लिए भी विलोपन लाभदायक पध्दति है। उदाहरण के लिए-जब भी कुछ काम देने से बच्चा रोता है तो उसके रोने को ध्यान न देकर बच्चे से वो कार्य करवाना चाहिए ।

विलोपन/ध्यान न देने की पध्दति को प्रभावी ढ़ंग से प्रयोग के निर्देश

1. ध्यान आकर्षित करनेवाले व्यवहार को कम करने के लिए ध्यान न देने की पध्दति उत्तम है ।

2. दुर्व्यवहार को ध्यान न देने के साथ साथ बच्चे के अच्छे व्यवहार पर अवश्य ध्यान दें ।

3. जब ध्यान न देने की पध्दति का प्रयोग प्रारम्भ किया जाएगा तो प्रारम्भ मे, हो सकता है कि, समस्या-व्यवहार मे कुछ बढ़ावा दिखाई दें । परंतु आगे चलकर वह धीरे-धीरे कम होगा ।

4. इस पध्दति के प्रयोग मे ढील न दें, निरतर इसका उपयोग करे । न केवल एक समय से दूसरे समय के बीच, एक स्थान से दूसरे स्थान के बीच बल्कि, एक शिक्षक और दूसरे शिक्षक के बीच भी, विशेष रूप से जो उस समस्या-व्यवहार सुधार को कर रहें हैं ।

5. विलोपन पद्धति के प्रयोग के समय आप तटस्थ रहे, चाहे समस्या-व्यवहार एकदम आप के सामने ही क्यो न हो रहा हो । बच्चे को किसी प्रकार का सकेत न दें, जिससे उसे ज्ञात हो कि, आप जरा भी ध्यान दे रहे है । आप जो भी काम कर रहे हैं करते रहें, बच्चे की ओर न देखे ।

6. कैसे अच्छा व्यवहार करना है, या कैसे अच्छे बच्चे की तरह रहना है इस पर भाषण या उपदेश न दें । कुछ लोगों की आदत है कि, बच्चो को अनायास अच्छे व्यवहार के बारे मे सिखाना चाहते है । ऐसी बाते बच्चे को किसी न किसी प्रकार से पुरस्कृत ही करती है । ध्यान देना ही हो तो बच्चा जब अच्छा व्यवहार करता हो तब उसकी तरफ ध्यान दे ।

7. विलोपन पध्दति उस अवस्था मे कभी न करें जहाँ व्यवहार या तो बच्चे के लिये अथवा अन्य के लिए घातक हो ।

3. टाइम आउट

बच्चों में कुछ ऐसे व्यवहार होते हैं जिन्हें आप टाल नही सकते। उदाहरण के लिए-बच्चा बाल खींचता है, दूसरों को धक्का देता है, वस्तुएँ तोड़ता है, छीनता है या वस्तुएँ फेंकता है।

आक्रामक या घातक व्यवहारो के लिए टाइम आउट विधि का प्रयोग प्रभावित ढंग से किया जा सकता है । जैसे-वस्तुएँ तोड़ना फेंकना या दूसरो को मारना इत्यादि ।

टाइम आउट क्या है ?

किसी भी समस्या व्यवहार के बाद या उसके घटित होने के बाद, बच्चे को कुछ समय के लिए पुरस्कृत स्थान से या पुरस्कार को ही वहाँ से हटा लेना ही "टाइम आउट" कहा जाता है । ध्यान रहे, पुरस्कार या उसकी जगह से हटाना, व्यवहार के तुरंत बाद होना चाहिए । यदि बच्चे को ऐसे स्थान से हटाया जाय जिसे वह पसद नही करता तो ऐसी स्थिति मे बच्चे को प्रोत्साहन मिलेगा और वह उस प्रकार के व्यवहार को पुनःपुनः करना चाहेगा अर्थात् समस्या-व्यवहार और बढ़ सकता है । उदाहरण के लिये-रेखा कक्षा में बैठकर व्यावहारिक शिक्षण का पाठ नही करना चाहती है । कक्षा में वह अन्य बच्चों को मारती है । उसके अन्य बच्चों के मारने के समस्या व्यवहार के लिए यदि शिक्षक रेखा को कक्षा के बाहर भेज दे, तो परिणामतः ऐसा निर्णय रेखा के लिए पुरस्कार का काम करेगा क्यो कि, वह कक्षा मे बैठ कर काम नही करना चाहती परिणाम यह होगा कि, उसका समस्या-व्यवहार और बढ़ेगा ।

टाइम आउट के प्रकार :

स्कूल या कक्षा मे व्यवहार घटित होने के बाद टाइम आउट पध्दति के प्रयोग कई प्रकार से किए जा सकते हैं ।

1. कक्षा मे ही बच्चे को शिक्षा के दायरे से अलग रख दें। बच्चा ऐसी जगह हो जहाँ से वह शैक्षणिक क्रियाओ को तो देख पाए परंतु भाग न ले सके ।

2. कुछ विशेष समय तक के लिए बच्चे को उसका सिर डेस्क पर झुकाकर रखने को कहें । (बाध्य करें)

3. पुरस्कृत करने वाली वस्तुओं को बच्चे के सामने से हटा दें ।

4. कक्षा में ही, कुछ समय के लिए बच्चे को अलग रखे जहाँ से न ही वह शैक्षिक क्रिया को देख पाए और न किसी प्रकार से भाग ही ले पाए । जैसे--कक्षा के कोने में दीवार की ओर मुँह कर ।

5. बच्चे को, कुछ समय तक एकांत कमरे में (टाइम आउट रूम) छोड दें, जहाँ से वह न कुछ देख सके, न सुन सके और न ही भाग ले सकें । इसे "एकांत टाइम आउट" कहेंगे।

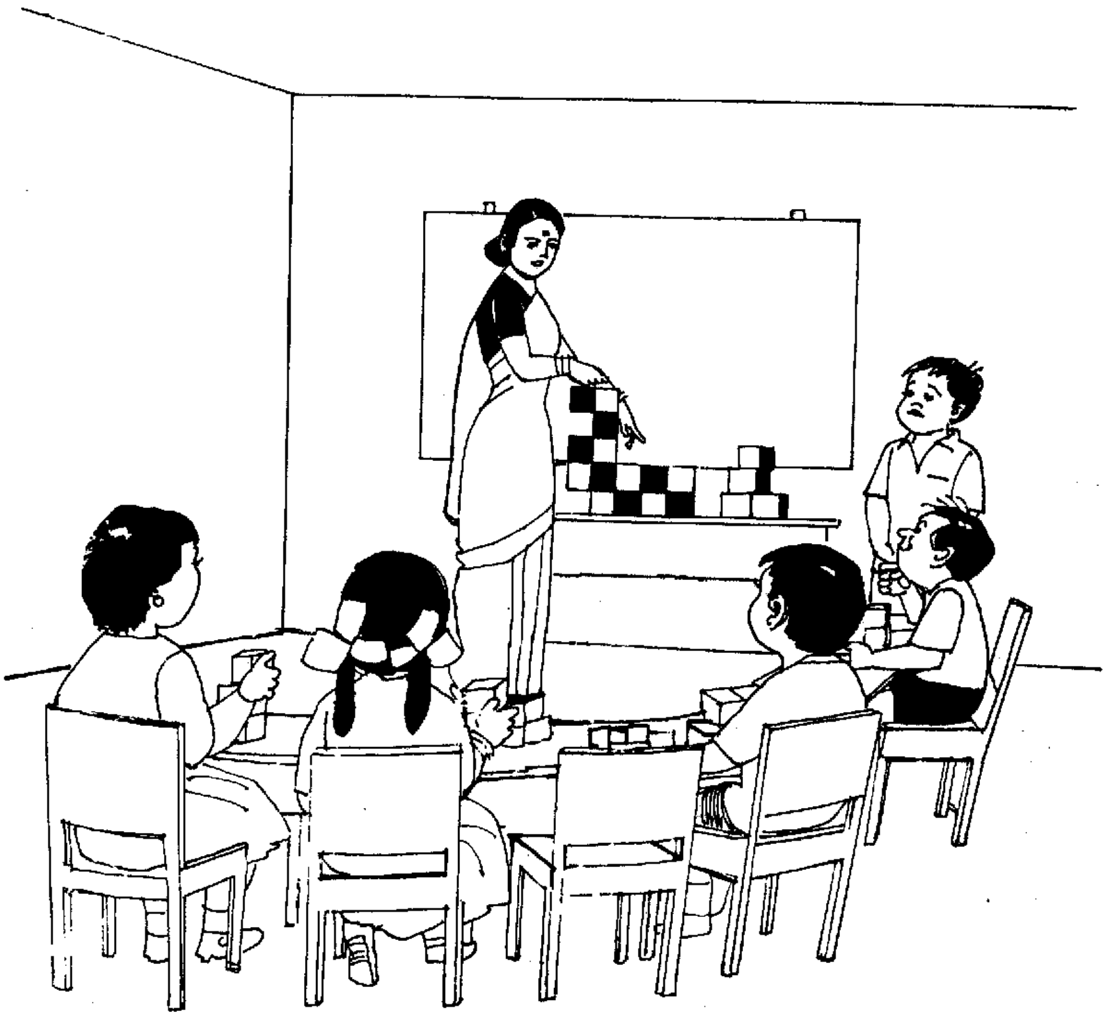

एकांत टाइम आउट के चरण

1. जब बच्चा किसी समस्या-व्यवहार को करता है तो उसे सीधे साधे शब्दों में कहें, कि, उसने क्या गलती की है और उसे टाईम आउट लेनी है । "तुम यहाँ नहीं रह सकते क्यों कि, तुमने राजू को चिकोटी काटी है "।

2. बच्चे से कम से कम बाते करें । लम्बे चौड़े व्याख्यान की आवश्यकता नही है, गुस्सा नही होना है, या भाषण नही देना है । टाइम आउट पध्दति के प्रयोग के दौरान बच्चे से किसी प्रकार की बात नही करनी है. ।

3. प्रत्येक समस्या–व्यवहार के घटित होने के तुरंत बाद टाइम आउट का प्रयोग 2–5 मिनट से अधिक न करें । टाइम आउट के समय कुछ बच्चे चिल्लाएंगे, पछाड़ेगे यदि बच्चा ऐसा करता रहे तो टाइम आउट का समय थोड़ा बढ़ा दें, जब तक वह शांत न हो जाय । बच्चे को टाइम आउट से तब तक न निकालें जब तक वह शांत न हो जाय।

4. टाइम आउट रूम का उपयोग तभी करे जब अन्य टाइम आउट स्तर जैसे-सिर नीचा कर खड़ा रहना, दीवार की ओर मुँह कर खड़ा रहना आदि जैसी तकनीक काम न करें ।

5. कभी कभी कुछ बच्चे टाइम आउट रूम से निकलते ही फिर समस्या-व्यवहार दिखाने लग जाते हैं । तुरंत टाइम आउट पध्दति का प्रयोग करें ।

6. एक बार बच्चा जब टाइम आउट रूम से बाहर आ जाय तो उसे किसी प्रकार के विशेष व्यवहार न दिखाए जाये, जैसें उससे पूछा जाय कि, क्या उसे पानी चाहिए या उसे कहा जाय कि, अब वह ऐसे व्यवहार नही करें आदि । बच्चे को बाहर लाएँ और आप अपने काम मे लग जाये ।

7. यदि बच्चा टाइम आउट रूम से आकर अच्छा व्यवहार करता है तो वह पुरस्कार का हकदार बनता है ।

टाइम आउट पध्दति को प्रभावी ढ़ग से प्रयोग के निर्देश

1. जो बच्चे बहिर्गामी होते हैं, समूह मे रहना चाहते हैं, या अन्य द्वारा देख रेख करवाना चाहते हैं, उनके लिए टाइम आउट एक प्रभावी पध्दति है । जो बच्चे अकेले रहना पसद करते हो, उनके लिये टाइम आउट उतना उपयोगी नही हो सकता है ।

2. टाइम आउट पध्दति का प्रयोग निर्बाध रूप से (लगातार) करे ।

3. टाइम आउट पध्दति के नियमो को समझने मे बच्चे की मदद करें । अपनी इच्छा और स्वेच्छा के आधार पर इस विधि का प्रयोग कभी न करें । बच्चे के लिए स्पष्ट करे, कि कहाँ, किस लिए, कब, और किस समस्या-व्यवहार के लिए टाइम आउट पद्धति का प्रयोग किया जा रहा है । सामान्य रूप से बच्चे को कहने मे इसके सारे नियम बता पाना सम्भव नही हो पाएगा । ऐसी स्थिति मे इसके उपयोग द्वारा ही सभी बाते स्पष्ट की जा सकती है । फिर भी बच्चे को यह जान लेना होगा कि, उसे इस पध्दति के अन्तर्गत क्यो रखा जा रहा है ।

4. टाइम आउट क्षेत्र को अच्छी तरह से चुनना होगा । उस जगह मे ऐसी कोई भी वस्तु न हो जिसे बच्चा चाहता हो, और साथ ही कोई ऐसी वस्तु न हो जो बच्चे को किसी प्रकार का नुकसान पहुँचा सके । स्थान सुरक्षित और हवादार होना चाहिए । साथ ही वह स्थान बच्चे को उबा देने वाला होना चाहिए । वहाँ अधिक लोग आने जाने वाले नही होने चाहिए । यदि किसी एकान्त कमरे का चयन किया गया है तो ध्यान रखें कि, बच्चा अपने आप को अदर से बंद न कर लें ।

5. यदि आप टाइम आउट रूम का उपयोग कर रहे हैं तो, यदि हो सकें तो उसमे एकतरफ दर्पण या "मैजिक आँख हो, जिससे आप बच्चे को देखते रहें पर वह आप को न देख पायें ।

6. टाइम आउट बच्चे को क्या नही करना चाहिए, सिखाता है । इससे बच्चे को यह नही मालूम हो पाता है कि, उसे क्या करना चाहिए । बच्चे को क्या करना चाहिए, इसे सिखाने के लिए उसके अच्छे व्यवहारो पर उचित पुरस्कार भी देते रहें ।

IV. शारीरिक प्रतिबंध

शारीरिक प्रतिबंध मे बच्चे की उन शारीरिक गतिविधियों पर थोड़ी देर के लिए रोक लगाना है जो समस्या व्यवहार के तुरत बाद होती है ।

कभी कभी बच्चो मे कुछ एक समस्या-व्यवहार दिखाई देते हैं जिनके नाते बच्चे अपने आप मे नियंत्रण खो बैठते हैं । ऐसी अवस्था मे बच्चे अपने आप को नुकसान पहुँचाने लगते हैं, जैसे

सिर पछाड़ना, खुद को काटना आदि । या कभी कभी दूसरों को नुकसान पहुँचाते हैं, जैसे मारना, काटना आदि । ऐसे समय में उन्हें शारीरिक रूप से इन घातक व्यवहारों से रोकना पड़ता है। बच्चे के हाथों को उनके बगल में ले जाकर, थोड़े समय के लिए पकड़ रखना होता है, या किसी मुलायम कपड़े से उनके हाथों को पीछे कर थोड़े समय के लिए बाँधना पड़ता है, या बच्चे को अपने घुटनों के बीच रखना पड़ सकता है । उदाहरण के लिए–यदि कोई बच्चा अपना सिर हिलाता हों तो उसके सिर को हथेली के सहारे पकड़ें और कुछ देर के लिए हिलाने से रोकें ।

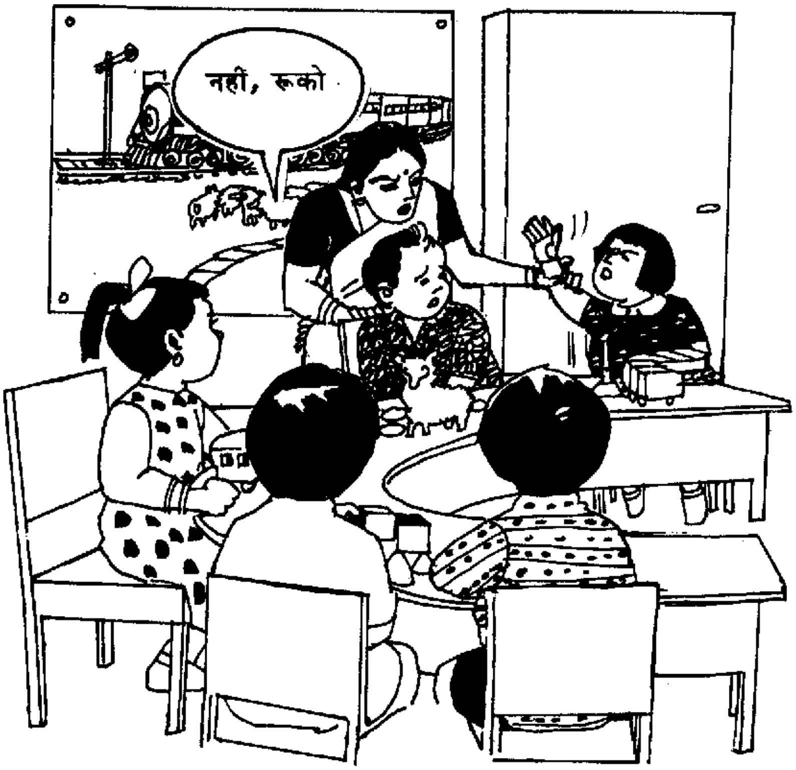

सिर हिलाने के समस्या–व्यवहार को रोकने का एक और उपाय है, बच्चे की दृष्टि में अवरोध पैदा करना । उसकी आँखो पर अपने हाथ रख देना । इन सभी प्रकार के भौतिक अवरोधों में बच्चे के शारीरिक प्रतिबंध पर रोक लगाना है जिसे वह पसंद नहीं करता । इस शारीरिक प्रतिबंध के साथ बार बार शाब्दिक "ना" को भी मिलायें । इस प्रकार की अनेक कोशिशों के बाद बच्चा केवल "ना" कहने से ही रूक जाता है ।

मध्यम शारीरिक प्रतिबंध के प्रयोग के निर्देश

1. समस्या-व्यवहार के तुरत बाद शारीरिक प्रतिबंध केवल थोड़े समय के लिए ही प्रयोग मे लाएँ (30 सेकन्ड से अधिक उचित नही है।)
2. शारीरिक प्रतिबंध मे रस्सी या जंजीर का प्रयोग न करें, इससे बच्चे को शारीरिक चोट लग सकती है । शिक्षक इससे विशेष रूप से सावधान रहें ।
3. शारीरिक प्रतिबंध के बीच के समस्या व्यवहार पर बराबर नजर रखे । कभी कभी बच्चे इसका आनन्द लेने लगते हैं । ऐसी स्थिति में समस्या व्यवहार के बढ़ने के आसार दिखाई देगें और तब किसी दूसरी विधि के प्रयोग के बारे मे सोचना पड़ेगा ।
4. शारीरिक प्रतिबंध पध्दति के प्रयोग के समय बच्चे के साथ किसी भी प्रकार की बात-चीत नही करनी है, न ही कोई शारीरिक सम्पर्क रखना है ।
5. जब बच्चा उचित व्यवहार कर रहा है तो पुरस्कृत करें ।

5. प्रतिक्रिया मूल्य

अच्छे व्यवहार प्रदर्शित करने से जो पुरस्कार बच्चे को मिला है, यदि उसके गलत व्यवहार करने पर उसे वापस ले लिया जाय तो बच्चे के समस्या व्यवहार को कम करने में सहायता मिलती है । दूसरे शब्दो मे, प्रतिक्रिया मूल्य पध्दति में बच्चे से जुर्माने के रूप में, उसके द्वारा अर्जित किए गए पुरस्कारो में से कुछ दण्ड के रूप मे, गलत व्यवहार के बदले में वापस देना पड़ता है ।

कक्षा या स्कूल मे प्रातिक्रिया विधि का कई प्रकार से प्रयोग किया जा सकता है ।

यदि एक बच्चा बताए गए काम को करने से इन्कार करता है तो उसे अवकाश के समय से वंचित कर दिया जाएगा । एक बच्चा, जिसने अपने अच्छे व्यवहार के लिए टोकन हासिल किया है, समस्या-व्यवहार के लिए खो देगा या उसे टोकन वापस देना होगा । इस प्रकार उसे अपने अवाँछनीय व्यवहार की कीमत चुकानी होगी।

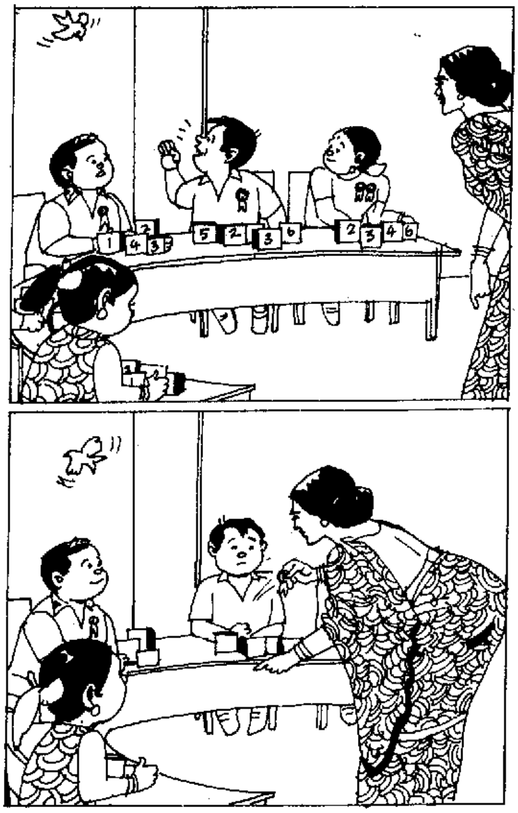

जिस कक्षा या स्कूल मे टोकन बचाव की पध्दति का प्रयोग (अच्छे व्यवहार के लिए) किया जा रहा हो, अच्छे व्यवहार के लिए बच्चे टोकन प्राप्त करते या कमाते हैं, वहाँ अवांछनीय व्यवहार के लिए बच्चों को टोकन वापस करना है ।

व्यवहार जिससे टोकन अर्जित होते हैं ।	टोकन	व्यवहार जो टोकन वापस दिलाते हैं	टोकन
अक्षर देखकर लिखना	5	दूसरे बच्चो को मारना	5
कागज मोडकर· लिफाफे मे डालना	4	गंदे शब्दो का प्रयोग करना	4
तीन रंगो के नाम बताना/पहचानना	3	वस्तुएँ छीनना	3
1 से 10 तक गिनती बोल लेना	2	अपनी जगह से उठ जाना	2

प्रतिक्रिया मूल्य पध्दति के प्रभावी उपयोग के निर्देश

1. नियम स्पष्ट और निर्धारित करले - किस व्यवहार के लिए कौन से पुरस्कार वापस करने होगे ।
2. निश्चित कर ले कि, बच्चे ने टोकन मूल्य और समस्या व्यवहार मे सबन्ध समझ लिया है।
3. प्रतिक्रिया मूल्य या जुर्माने तथा अवाछनीय व्यवहार के बीच उचित अनुपात होना चाहिए।
4. इस विधि के प्रयोग के समय या बाद मे बच्चे को डांटना फटकारना या चेतावनी देना (कि उसे टोकन गवाने पड़ेगे) नही है ।
5. बच्चा अर्जित किया हुआ टोकन गवाँ देगा, इस प्रकार की ग्लानि नही होनी चाहिए ।
6. प्रतिक्रिया मूल्य पध्दति के प्रयोग निरंतर करे ।
7. प्रतिक्रिया मूल्य का प्रयोग अन्य पध्दतियो के संदर्भ मे करे जिनसे अच्छे व्यवहार बढ़ाए जा सकते हो ।

6. अति सुधार

इस विधि के प्रयोग से न केवल अवांछनीय या गलत व्यवहार में सुधार या कमी आएगी, अपितु बच्चे को सही व्यवहार करने के लिए तरीके भी मालूम होंगे । समस्या, व्यवहार के घटित होने के बाद इस विधि के प्रयोग मे बच्चे को स्थान या अवस्था विशेष को सुधारते हुए ऐसी स्थिति मे लाना होगा जो पहले से भी अच्छी हो सकती है कि, बच्चे को सही या उचित ढ़ंग से अभ्यास करना भी सिखाया जाय ।

उदाहरण के लिए,-यदि बच्चा कक्षा मे पेशाब कर दें, तो उसे न केवल गंदे स्थान को ही अपितु पूरी कक्षा को साफ करना होगा । इसी प्रकार यदि कोई बच्चा अपने खिलौने कक्षा मे नीचे फेंक दे तो उसे अपने फेंके खिलौने उठाने के साथ साथ नीचे पड़े अन्य खिलौनो या सामान को उठा कर उचित स्थानों पर रखना होगा ।

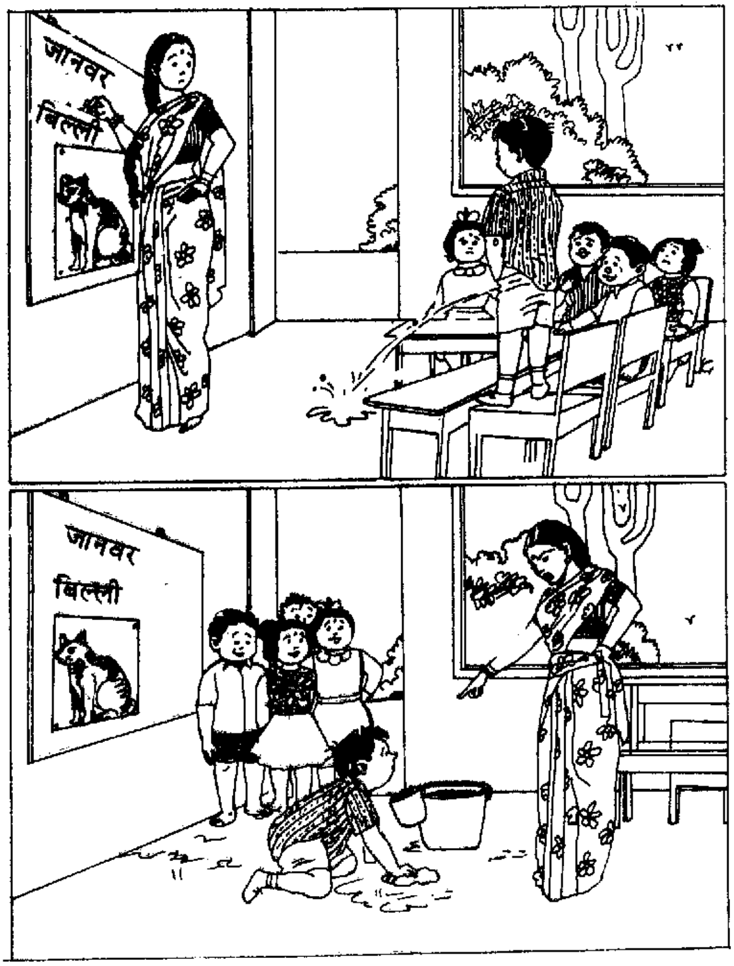

अति सुधार पध्दति के प्रभावी प्रयोग के निर्देश

1. अति सुधार पध्दति का उपयोग उन्हीं के साथ हो सकता है जो सामान्य निर्देशो की समझ पाने की क्षमता रखते हों ।
2. यदि बच्चा सुधार क्रिया करने से इन्कार कर रहा हो तो उसे भौतिक रूप से करने के लिए बाध्य किया जाय और जब तक अति सुधार कार्य सम्पन्न न हो जाय कराते रहें ।
3. जिस समय बच्चा अति सुधार कर रहा हो, निर्देशो का पालन कर रहा हो, उससे बातें न करे, न डॅांटे, न ही भाषण या सुधार नीति की व्याख्या आदि करे ।
4. जब बच्चा स्थिति मे सुधार कर लें तो उसे पुरस्कार न दें ।
5. यदि बच्चा अतिसुधार प्रक्रिया मे आनन्द ले रहा हो तो समझे कि, वह केवल ध्यान आकर्षण के लिए ही समस्या व्यवहार दिखा रहा था। ऐसी स्थिति मे व्यवहार सुधार की अन्य पध्दति का प्रयोग करे ।

7. नाराजगी प्रकट करना

इस पध्दति के प्रयोग मे शिक्षक को, स्पष्ट शब्दों मे बच्चे को बता देना है कि, वह उसके समस्या व्यवहार से असंतुष्ट है । इसे "ताड़ना" भी कहते हैं । जब मंजु कक्षा में गड़बड़ी पैदा करती है तो शिक्षक कहते हैं कि, "मंजु मुझे तुम्हारा कक्षा में गड़बड़ी पैदा करना अच्छा नही लग रहा है " तुम एक स्थान पर बैठकर अपना काम पूरा करो ।

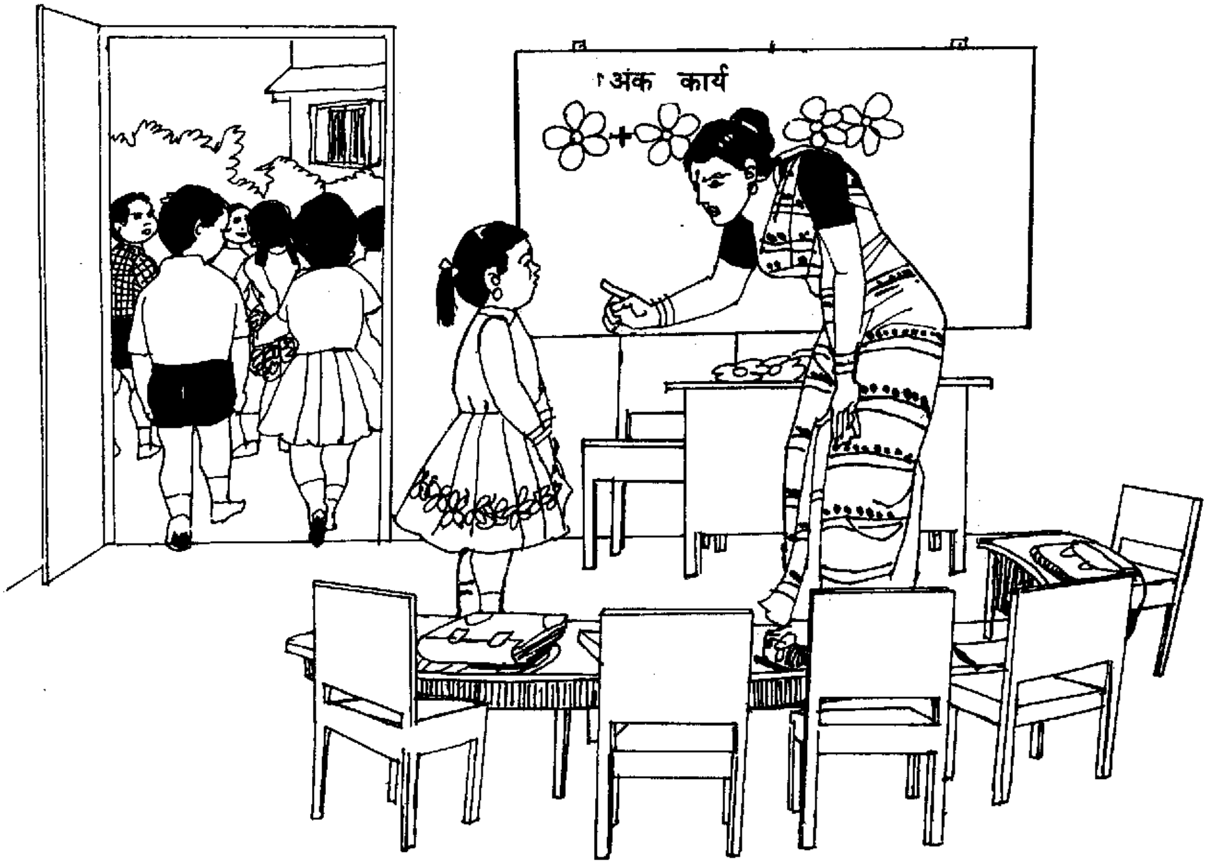

नाराजगी प्रकट करने के प्रभावी निर्देश

1. अपनी नाराजगी प्रकट करते समय बच्चे को यह बता दे कि, उसका कौन सा व्यवहार अनुचित या अवांछनीय है ।
2. समस्या–व्यवहार विशेष के तुरंत बाद, क्षणो मे, ही अपनी नाराजगी बताएँ ।
3. अपनी नाराजगी बताते समय आप अड़िग रहे ।
4. बच्चे के गलत व्यवहार के विषय मे जब आप अपनी नाराजगी बता रहे हों तो एक कथन उससे अच्छे व्यवहार की अपेक्षा के बारे मे भी कह दें ।
5. शांत और स्थिर स्वभाव से अपनी नाराजगी दर्शाये ।
6. जब सब पूरा हो जाय तो बच्चे को याद न दिलाएँ कि, पहले क्या हुआ था ।
7. जहाँ तक हो सके अन्य लोगो के सामने अपनी नाराजगी न जताएँ, विशेषकर दोस्तो या सहपाठियो के सामने ।
8. बच्चे की बेइज्जती या अपमान न करे ।
9. जब बच्चा अच्छा व्यवहार करे तो अपनी प्रसन्नता दिखाना न भूलें ।

VIII. भय को क्रमशः निकालना

स्कूल या घर मे बच्चो के भय की धीरे–धीरे कम करने की पद्धति ; को ही भय को क्रमशः निकालने की पद्धति कहा जाता है । इस विधि मे बच्चे को क्रमशः उस व्यक्ति या परिस्थिति के समक्ष करते हैं । कई बच्चे व्यक्तिविशेष, जानवर, या परिस्थिति से भयभीत रहते हैं । कुछ बच्चे शौचादि करने के स्थान पर बैठने सें ड़रते हैं, कुछ झूले से और कुछ जोर की आवाज से ।

उदाहरण के लिए– यदि बच्चा कुत्ते से ड़रता हो तो उसे लम्बी दूरी रखते हुए कुत्ते के सामने से गुजरने दें । सामने से गुजरते समय बच्चे को उसकी पसंद की चीज (चॉकलेट आदि) खाते

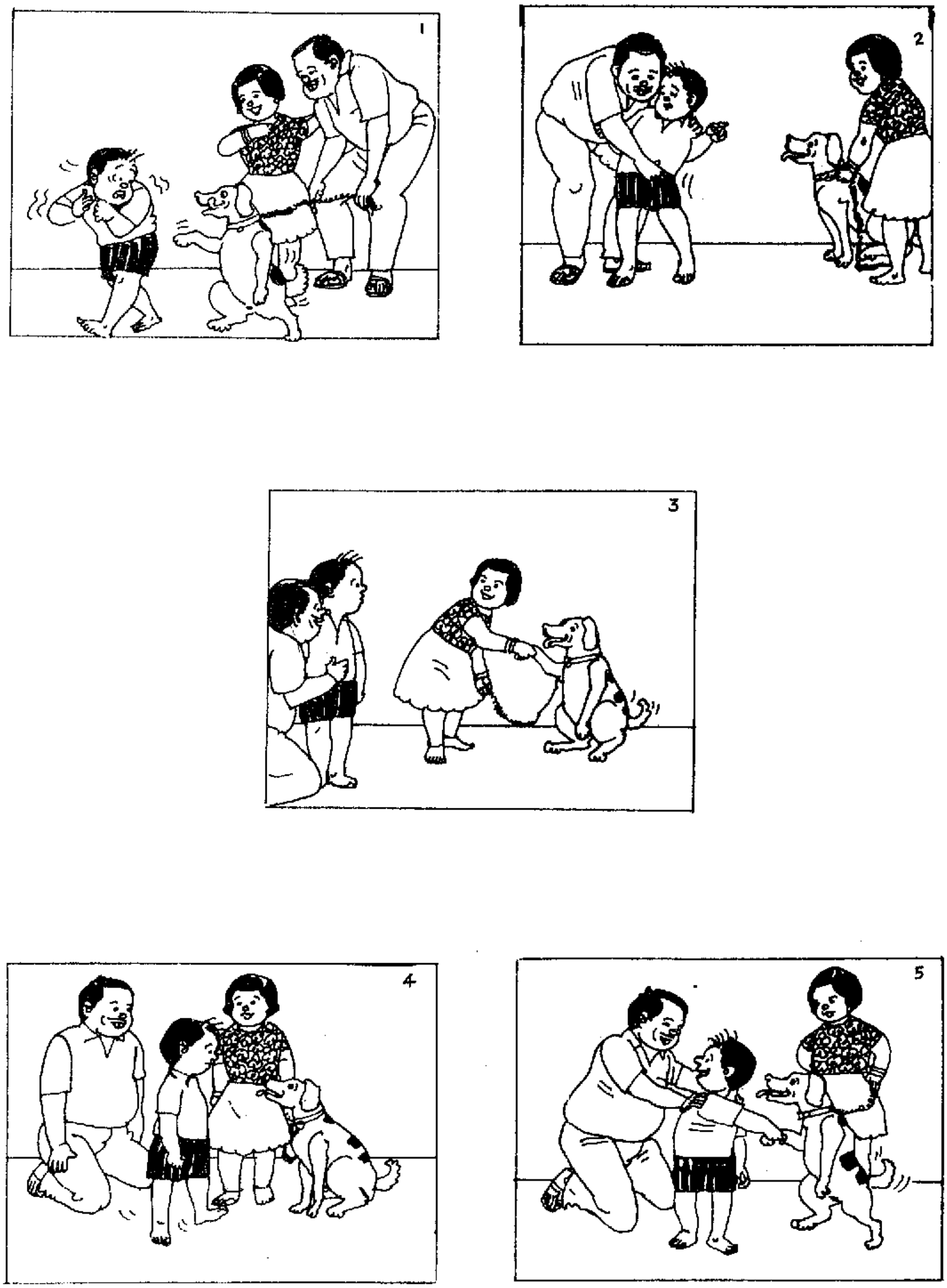

रहने दे। अब बच्चे को **थोड़ा** नजदीक लाएँ । उस समय बच्चा किसी ऐसे आदर्श को भी देख रहा हो जिसे कुत्ते से डर नही लगता हो और जो कुत्ते के पास खड़ा हो । अन्त में बच्चे को कुत्ते के पास ले जाये और छूने दे, प्यार करने दे ।

भय को क्रमशः निकालने की विधि के प्रयोग के स्तर

1. बच्चे मे भय की पहचान उसके व्यवहारिक शब्दो मे स्पष्ट करे ।
2. व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति विशेष से भय को क्रमिक रूप मे स्तरो को बनाये ।
3. उसी क्रमिक रूप में बच्चे को, क्रमशः निचले स्तर से, शात स्थिति मे गुजरने या अनुभव का अवसर दे ।
4. उस स्थिति से बच्चे को पहले गुजारे जिसमे वह थोड़ा ही डरता हो, और धीरे-धीरे आगे बढ़ते जाये जब तक बच्चा पूरी तरह से भय मुक्त न हो जाय ।

IX. भेदात्मक पुरस्कार तकनीक

इस **तकनिक** मे शिक्षक एक योजनावद्ध तरीके से वांछित व्यवहारो को पुरस्कृत करते हैं जिसकी सहायता से अवांछनीय व्यवहार के घटित होने की सम्भावना कम हो जाती है । भेदात्मक पुरस्कार **तकनीक का कई प्रकार से प्रयोग कर सकते है :**

1. **विपरीत व्यवहारो के लिए भेदात्मक पुरस्कार**

   इस **तकनीक** के प्रयोग मे शिक्षक उस व्यवहार को पुरस्कृत करते हे जो, उस समस्या व्यवहार का उलटा हो और वांछनीय हो जिसे शिक्षक कम करना चाहते हैं ।उदाहरण के लिए यदि बच्चा अपनी जगह पर नही, बैठता" तो शिक्षक ऐसी स्थिति को लें जब "बच्चा जगह पर बैठा है" और उसे पुरस्कृत करें । शिक्षक को यह निश्चित कर लेना चाहिए कि, बच्चे के वांछनीय व्यवहार के लिए ही पुरस्कार मिल रहा है और इस पुरस्कार को पाने से बच्चा अपने अवांछनीय व्यवहार को न करने के उपाय करता रहेगा । दूसरे प्रकार **के** व्यवहार इस **तकनीक** में आ सकते हैं, जिनमें बच्चे **में** "दूसरो के सामान छीन लेने की आदत" हो, उसके लिए उसे दूसरो स बाँटने की आदत को पुरस्कृत किया जाय । या "वस्तुओं के फेंकने" के व्यवहार से, "वस्तुओं को ठीक जगह रखने" के व्यवहार को पुरस्कृत किया जाये ।

2. **अन्य व्यवहारो के लिए भेदात्मक पुरस्कार**

   निश्चित समय तक लक्ष्य व्यवहार न घटित होने पर निश्चित **समय के तुरंत बाद उसे पुरस्कार देना है ।** जैसे बच्चे के "जगह पर न बैठने" के व्यवहार को कम करने के लिए, शिक्षक

ने निर्णय लिया कि, बच्चे को हर 5 मिनट पर पुरस्कृत किया जाएगा, अगर वह अवांछनीय व्यवहार उस समय न कर रहा हो, अर्थात् बच्चा अपनी जगह पर बैठा हो । इस विधि के अनुसार बच्चे को, उसके उस समय अवांछनीय व्यवहार न दिखाने या करने के लिए पुरस्कृत किया जाता है । इस पद्धति मे एक विशेष बात यह है कि, बच्चे को पाँच मिनट बाद पुरस्कार मिलेगा, चाहे वह किसी अन्य समस्या व्यवहार का प्रदर्शन करे या नहो, परंतु लक्ष्य समस्या व्यवहार न दिखाए तब ।

3. **कम स्तर या कम बारम्बारता के व्यवहारों के लिये भेदात्मक पुरस्कार**

अगर शिक्षक का लक्ष्य अवांछनीय व्यवहार की गहनता को कम करना है, जिसे अंतत: समाप्त नही करना है। तब ये तकनीक उपयुक्त सिध्द होती है । उदाहरण के लिए- यदि कोई बच्चा "जोर से बोलता है " तो जब भी वह धीरे से बोले तब पुरस्कृत करे। इसी प्रकार यदि बच्चे की आदत है "बार बार पेशाब करने जाने के लिये पूछने की" तब यदि बच्चा दो तीन घंटे में एक बार ही पूछता है, पुरस्कृत करें ।

4. **बारी बारी से घटने वाले व्यवहारों के लिये भेदात्मक पुरस्कार**

इस पध्दति में शिक्षक अन्य अवांछनीय व्यवहारो को पहचानते हैं । और उसे तुरंत पुरस्कार देते है। इस तकनीक को ऐसे अन्य तकनिकों के साथ प्रयुक्त करना है जो अवांछनीय व्यवहारो को कम करता है ।

X. स्वयं व्यवस्था तकनीक

अल्प मानसिक मंद बच्चे, जो आयु में बड़े हैं, शिक्षक उनके लिए ऐसी तकनिकों का प्रयोग कर सकते हैं जिसमें ऐसे बच्चे स्वावलम्बी होकर अपने समस्या व्यवहारों की व्यवस्था स्वय कर सकेगें । इनसे बच्चों में स्वय पर नियंत्रण आ सकता है जिसके फलस्वरूप अपने व्यवहारों के देख रेख की स्वयं जिम्मेदारी ले पायेगें । स्कूल या कक्षा में प्रयोग हेतु कई ऐसी विधियाँ है जिन्हें परखा जा सकता है ।

1. आत्म निरीक्षण

स्वयं व्यवहार विधि का पहला चरण है बच्चे को अपने समस्या व्यवहार का निरीक्षण करें और विशेष परिस्थिति जिसमें वो व्यवहार घट रहा है उसे देखें व परखे ।

2. स्वयं रेकॉर्ड करने की तकनीक

प्रतिदिन की डायरी की सहायता से इन बच्चों को अपने अच्छे व अनुचित व्यवहार के रेकॉर्ड रखने का प्रशिक्षण दिया जा सकता है ।

उदाहरण :

विनय कक्षा मे चुपचाप बैठा रहता है और सभी बच्चों के सामने शिक्षक से अपनी शंकाओं का समाधान पूछने से डरता है। शिक्षक चाहते **थे** कि, विनय कक्षा में सक्रिय रूप से भाग ले। उसने विनय को निर्देश दिया कि, वह प्रत्येक प्रश्न पूछने पर अपनी पॉकेट डायरी में हर बार एक निशान लगाएँ। प्रत्येक दस ऐसे निशान के लिए उसे एक टोकन उचित पुरस्कार दिया जाएगा इस प्रकार अपने व्यवहार की स्वयं व्यवस्था करते हुए विनय अपने व्यवहार में वांछनीय सुधार ला सका ।

3. **स्वयं संकेत तकनीक**

बच्चे को स्वयं रेकॉर्ड का ही प्रशिक्षण नहीं देना होगा अपितु ऐसे संकेत भी देने होंगे जिससे वह अपने वांछनीय और अवांछनीय व्यवहारों को बढ़ा या घटा सके, या भेद कर सके ।

उदाहरण :

> पहले बताए गए विनय के संदर्भ में शिक्षक ने बताया **था** कि, विनय को पुरस्कार के लिए दस नम्बर, एक सप्ताह में जुटाने होंगे, जो प्रतिदिन दो नम्बर के हिसाब से पूरे हो सकते हैं । इस संदर्भ में विनय ने जब देखा कि, दो दिनों में उसने केवल एक नम्बर ही अर्जित किया है तो इस संकेत ने उसे मेहनत करने के लिये प्रेरित किया और सप्ताह के अंत तक कमी पूरी कर ली ।

4. **स्वयं पुरस्कार तकनीक**

कई मानसिक मंद बच्चे अपने व्यवहार को बनाए रखने के लिए बाहरी पुरस्कार पर निर्भर करते रहते हैं । शिक्षक को चाहिए कि, इन बच्चों को इस प्रकार का प्रशिक्षण दें जिससे वे अपने आप ही पुरस्कार पाने के बारे में उपाय करें, जैसे-स्वयं संतुष्टि सफलता का अनुभव या सफल और वांछनीय व्यवहार के लिए स्वयं को पुरस्कार देना । जैसे बच्चे को सिखाया जाये कि, वह जब दिए गए कामों को कर लेगा तब बाहर खेलने जाएगा, जो उसे अच्छा लगता है । काम पूरा नहीं करेगा तो नही जायेगा ।

5. **संदर्भ प्रशिक्षण (करेस्पॉन्डेन्स) ट्रेनिंग)**

अच्छे और जरा होशियार मानसिक मंद बच्चो को शिक्षक ऐसा तैयार कर सकते है कि, वे अपने व्यवहार के बारे में निर्णय ले सकें । उन्हें एक विशेष परिस्थिति में कैसे व्यवहार करना है, इसे अपने लिए स्पष्ट कर सकें । इससे वह बच्चा संदर्भ विशेष में अपने को याद दिलाते हुए अपेक्षित व्यवहार कर पाने में सक्षम हो पाएगा ।

उदाहरण, यदि शिक्षक ने देखा कि, एक बच्चा खेल के मैदान में अन्य बच्चो को छेड़ता है, वस्तुएँ छीन लेता है, मारता है, तो उससे कहा जाएगा कि, वह बोले या लिखें कि, उस समय उसे वांछनीय रूप से क्या करना चाहिए **था** । बच्चा कहेगा, "हम

किसी को नही मारेंगे,", हम अपनी बैट दूसरे को भी देगें, दूसरो से अच्छी तरह से वात करेंगे "प्रारम्भ मे तो बच्चे को लिखने या बोलने के लिए प्रेरित किया जाएगा। खेल समाप्त हो जाने के तुरंत बाद बच्चे से कहा जाएगा कि, वह बोले या लिखे, उसने कैसा व्यवहार किया। जो बच्चे बोल नही सकते या ठीक प्रकार से लिख नही सकते उनके लिए अध्यापक चित्रों का या हाव-भाव का भी प्रयोग कर सकते हैं। यदि उसका कथन पहले निश्चित किए गए कथनो से मेल खाता हो, तो शिक्षक या बालक स्वय को पुरस्कृत करेंगे इससे बच्चे को स्वयं मूल्यांकन का अवसर मिलता है और वे अपने व्यवहार पर स्वयं नियंत्रण कर पाते है।

6. क्रोध नियत्रण तकनीक

कुछ अच्छे स्तर के मानसिक मद बच्चो को उनके क्रोध नियंत्रण के तरीके सिखाए जा सकते हैं। निम्नलिखित चरणों को ध्यान मे रखते हुए, शिक्षक उन्हे ऐसा सिखा सकते हैं :

1. प्रारंभ मे बच्चे को यह पहचानना सीखाया जाये कि, वह किस स्थिति अथवा समय मे क्रोधित है।

2. बच्चे को अपने क्रोध के बारे मे अभिव्यक्त करना सीखाये। "मै क्रोधित हूँ, मुझे गुस्सा आ रहा है"।

3. उसे अपने गुस्से के वर्तमान कारण ढूंढने मे मदद करे वह विस्तार से बता पाए कि, ऐसा कैसे हुआ। किसने या किस परिस्थिति ने उसे गुस्सा दिलाया।

4. गुस्से के साथ-साथ और कौन से विचार उसके मन मे आ रहे हैं, बच्चे को जानने मे मदद करें।

5. बच्चे को, उसके गुस्से वाले विचारो को जगह अच्छे विचारो को लाने के लिए प्रेरित करें।

6. जैसा कि, मालूम है, क्रोध कई शारीरिक क्रियाओं मे निश्चित परिवर्तन लाता है, जैसे, दिल की धड़कन का बढ़ जाना, सॉस जोरसे लेने लगना, मांसपेशिओ मे तनाव आ जाना आदि। ऐसी स्थिति मे बच्चे को आराम करने की तकनीक सीखाना या उसे कुछ समय के लिए बिस्तर पर लेट कर दीर्घ सॉस लेने का व्यायाम सीखाना चाहिये।

उदाहरण, जब प्रिया गाली देने लगती है, दूसरो को मारती है, गुस्सा करती है, तब शिक्षिका कहती है, "क्या तुम इस समय गुस्से में हो" शिक्षिका प्रिया को यह समझने का अवसर देती है "मैं इस समय गुस्से में हूँ" फिर शिक्षिका पूछती है, "तुम्हें किस बात पर गुस्सा आया है" ? प्रिया को प्रेरित किया जाता है कि, वह कारण बता पाए जैसे "अमित ने मेरा बैग ले लिया। शिक्षिका फिर उससे पूछती है कि, वह क्या करना चाहती है, प्रिया को अपनी भावनाओ को व्यक्त करने का अवसर दिया जाता है । "मैं अमित को मारना चाहती हूँ ।" फिर शिक्षिका प्रिया को ऐसी भावनाओं को **बदलने** मै सहायता करती है । "क्या तुम्हें अपनी शिक्षिका को नहीं बताना चाहिए **था** कि, अमित ने आपका बैग ले लिया है या अमित से बैग मांगना **था** ।" क्रोध को नियंत्रित करने की इस बैठक के दौरान बच्चो को यह कहकर आराम करने मे मदद करो कि, तुम अभी गुस्से मे हो तुम्हे आराम की आवश्यकता है ।" बच्चे का मार्गदर्शन कीजिए कि, उसे एक शांत जगह पर बैठ कर 20 मिनट तक दीर्घ सांस लेते हुए आराम करने का व्यायाम करना है । इस प्रकार की कुछ बैठको के बाद बच्चा अपने क्रोध पर अनुकूली ढग से काबू पा लेना सीख जाता है ।

सारांश

1. मानसिक मंद बच्चों के समस्या व्यवहार की व्यवस्था के कई उपाय है, जैसे: कारकों को बदलना, विलोपन/ध्यान देना, टाइम आउट, भौतिक अवरोध, प्रतिक्रिया मूल्य, अतिसुधार, नाराजगी जाहिर करना, भय को क्रमशः निकालना, भेदात्मक पुरस्कार देना, स्वयं व्यवस्था तकनीक आदि ।
2. जब समस्या व्यवहार किसी परिस्थिति, व्यक्ति, या स्थान से प्रेरित हो, तब कारक परिवर्तन पध्दति का प्रयोग होता है ।
3. विलोपन पध्दति में समस्या व्यवहार पर ध्यान नहीं देना होता है ।
4. टाइम आउट मे बच्चे को या तो पुरस्कार से अलग कर देते है या पुरस्कार को बच्चे से दूर कर देते हैं । शिक्षक के लिए कक्षा या स्कूल में टाइम आउट के कई तरीके बताए गए है ।
5. भौतिक अवरोध मे बच्चे के भौतिक गतिविधियोपर रोक लगाया जाता है
6. प्रतिक्रिया मूल्य में समस्या व्यवहार के लिए जुर्माना देना होता है । इसमे बच्चे द्वारा अच्छे व्यवहार से अर्जित वस्तु को वापस देना होता है ।
7. समस्या व्यवहार के बाद बच्चे को बिगड़ी स्थिति को पुनः अच्छी स्थिति मे लाने को अति सुधार कहते हैं। इसमें परिस्थिति को पहले से भी बेहतर बनाना होता है ।
8. नाराज़गी व्यवहार के बाद बच्चे को स्पष्ट शब्दो मे नाराजगी बताना है ।
9. क्रमश : भय निकालने मे बच्चे का क्रम से भय जनक परिस्थिति से अवगत कराते हुए ऐसा प्रशिक्षण देना होता है कि, वह फिर उन परिस्थितियों से भयभीत न हो ।
10. भेदात्मक पुरस्कार कई प्रकार के होते हैं जैसे विपरीत व्यवहारों के लिये भेदात्मक पुरस्कार, अन्य व्यवहारो के लिये भेदात्मक पुरस्कार, कम स्तर या कम बारंबारता के व्यवहारो के लिये भेदात्मक पुरस्कार, बारी बारी से घटने वाले व्यवहारो के लिये भेदात्मक पुरस्कार इन सभी विधियों में एक गुण विद्यमान है और वह है उपयुक्त व्यवहार को पुरस्कृत करना या समस्या व्यवहार के न होने पर, पुरस्कृत करना ।
11. स्वय व्यवस्था तकनिकों का प्रारंभ व प्रयोग मानसिक मंद बच्चे स्वयं कर सकते है । ऐसे आत्म निरीक्षण, स्वय रेकॉर्ड करने की तकनीक, स्वयं संकेत तकनीक, स्वय पुरस्कार तकनीक, संदर्भ प्रशिक्षण क्रोध नियंत्रण तकनीक आदि ।
12. मानसिक मद बच्चो के समस्या व्यवहारो के व्यवस्था के निर्देशो का भी उल्लेख किया गया है।

अभ्यास कार्य - 9

I. नीचे के कथनों को पढ़िये और पहचानिए कि वह सही है या गलत

1. मानसिक विकलांग बच्चो मे समस्या व्यवहार के लिए एक ही तकनीक को प्रभावी ढंग से अपनाया जा सकता है ।

   सही / गलत

2. ध्यान आकृष्ट करने वाले व्यवहारो को नियत्रित करने के लिए विलोपन ही सर्वोत्तम तकनीक है ।

   सही / गलत

3. किसी बच्चे मे सभी समस्या व्यवहारो के नियंत्रण के लिए एक अकेली तकनीक ही पर्याप्त हो सकती है ।

   सही / गलत

4. कक्षा में आज्ञा पालन न करने वाले बच्चो पर नियंत्रण करने के लिए शारीरिक दुर्व्यवहार (छडी, या बेल्ट आदि से पीटना) ही आमतौर से प्रभावी तकनीक है ।

   सही / गलत

5. बच्चों मे से कुछ गलत व्यवहारों को रोकने या घटाने की सर्वोत्तम पध्दति है अन्य लोगो के सामने नाराजगी प्रकट करना ।

   सही / गलत

6. स्वयं व्यवस्था तकनिको को उग्र मंदबुद्धि बच्चो के लिए प्रभावी रूप से प्रयोग मे लाया जा सकता है

   सही / गलत

II. निम्नलिखित के सही जोडे बनाइये

1. स्थान या अवस्था को सुधारना	( )	क) विलोपन
2. किसी बच्चे द्वारा अर्जित पुरस्कारो को वापस लेना	( )	ख) टाइम आउट
3 ध्यान दिये जाने वाले पुरस्कार को हमेशा के लिए समाप्त करना	( )	ग) अति सुधार
4. बच्चे की शारीरिक गतिविधियों को प्रतिबधित करना	( )	घ) अनुक्रिया लागत
5. बच्चे को पुरस्कार से अथवा पुरस्कार को बच्चे से अलग करना	( )	ङ) शारीरिक प्रतिबन्ध

कार्य अभ्यास - 9
कुंजी

1. 1. गलत 2. सही 3. गलत 4. गलत
   5. गलत 6. गलत.

2. 1. ग 2. घ 3. क 4. ङ 5. ख

भाग 5
अन्य सम्बन्धित समस्यायें

इस भाग में कुछ सम्बन्धित समस्याओं को शामिल किया गया है ।

अध्याय दस शिक्षकों की विस्तृत भूमिका पर प्रकाश डालता है । स्कूलों या कक्षा में सीधे काम करने के अतिरिक्त अध्यापकों को अभिभावकों के साथ और समीप से काम करना होगा जिससे बच्चों के सीखने की प्रक्रिया घर के वातावरण में और सुविधाजनक हो सके और अभिभावकों को प्रशिक्षण में शामिल कर सकें। ऐसा करने से व्यापकीकरण में और सहजता आ जाएगी। अभिप्राय यह है कि, स्कूल में सीखी गई क्रिया या व्यवहार घर के वातावरण में भी क्रियान्वित हो पाएगा । इस अध्याय की मदद से शिक्षक मानसिक मंद बच्चों के अभिभावकों की सामान्य आवश्यकताओं और शक्तियों से परिचित हो सकेंगें । साथ ही उन्हें अभिभावकों के साथ काम करने की आधारभूत कुशलताएँ भी ज्ञात हो जायेंगी ।

मानसिक मंद बच्चों के मूल्यांकन, प्रशिक्षण कार्यक्रम और उनके कार्यान्वयन आदि में शिक्षकों को टीम के अन्य सदस्यों के साथ काम करने की आवश्यकता पर प्रकाश, अगले अध्याय ग्यारह में डाला गया है । मानसिक मंद बच्चों के लिए बनाये गये कार्यक्रम को चलाने के लिये समान पद्धति को अपनाने पर जोर दिया गया है, जिससे एकरूपता बनी रहें ।

बारहवाँ अध्याय शिक्षक को, मानसिक मंद बच्चों के प्रशिक्षण सम्बन्धी "ना" और "हाँ" के बारे में बताता है । साथ ही व्यवहार सुधार में व्यावहारिक विधियों संबंधी औचित्यों पर विचार किया गया है ।

शिक्षक से निवेदन है कि, इस भाग के अन्त में दिये गये अभ्यास को पूरा करें ।

अध्याय दस

अभिभावकों को प्रशिक्षण में सम्मिलित करना

इस अध्याय के समापन पर शिक्षक निम्नलिखित प्रश्नों के
उत्तर देने में सक्षय हो सकेंगें ।

1. मानसिक मंद बच्चो के अभिभावकों के साथ काम करने के क्या क्या लाभ है ?

2. मानसिक मंद बच्चो के अभिभावकों के साथ काम करने के क्या क्या निर्देश है ?

3. मानसिक मंद बच्चो के परिवार के साथ काम करने के लिए शिक्षक मे कौन कौन से गुण होने चाहिए जिससे कि, माता – पिता को सम्मिलित करना सरल हो जाए ।

अभिभावकों को प्रशिक्षण में सम्मिलित करना

स्कूल में जिस प्रकार मानसिक मंद बच्चों के व्यवहार परिवर्तन या शिक्षण में शिक्षकों का महत्वपूर्ण भाग होता है उसी प्रकार घर में इन बच्चों के विकास और व्यवहार सुधार में परिवार का एक महत्वपूर्ण भाग होता है । परिवार के संदर्भ में केवल माता पिता ही नहीं बल्कि, दादा दादी, भाई बहन और अन्य परिवार जन भी आते है । जो बच्चे की देख भाल करते है । स्कूल में किए जा रहे शिक्षण व प्रशिक्षण कार्यक्रम के कार्यान्वियन में इनमें से एक या सभी का सक्रिय सहयोग आवश्यक है। शिक्षक की भूमिका धीरे-धीरे बढ़ रही है और अधिक से अधिक शिक्षक यह एहसास करने लगे हैं कि, मानसिक मंद बच्चों के लिए हो रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम में माता पिता को और परिवार के अन्य सदस्यों को साम्मिलित करना बहुत लाभदायक है ।

अभिभावकों के साथ काम करने के लाभ

1. यदि परिवार / माँ बाप भी बच्चे के व्यवहार व्यवस्था कार्यक्रम में शामिल रहेंगे तो प्रारम्भ किया गया समस्या व्यवहार कार्यक्रम और व्यवस्थित रूप से चलेगा, और अभ्यास हो सकेगा। इससे बच्चे के व्यवहार को बल मिलेगा और उचित प्रशिक्षण और सीखने की क्रिया को बल मिलेगा ।

2. मानसिक मंद बच्चे के शिक्षण व प्रशिक्षण में परिवार के शामिल हो जाने से परिवार वालो को व्यक्तिगत बल और भागीदारी का आभास मिलता है । अभिभावक अपने बच्चे की इच्छाओं व आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए अपनी जिम्मेदारी का आभास और करने लगते हैं ।

3. अपने बच्चे को अभिभावक और अच्छी तरह से समझते है । मानसिक मंद बच्चो के शिक्षण के लिए चुने जाने वाले व्यवहार उद्देश्यो को अच्छी तरह समझने मे इस प्रकार की जानकारी और लाभकारी हो सकेगी ।

4. घर की शिक्षा और अधिक स्वाभाविक वातावरण में हो सकेगी । स्कूल में सिखाने के बाद जिन व्यवहारो को घर के वातावरण में ढालना होता है, उसे सीधे घर में ही सिखाया जा सकता है । कुछ व्यवहार कुशलताएँ, (जैसे नहाना) घर में स्वाभाविक रूप से सिखाई जा सकती है । ऐसा करने से अभिभावकों का सहयोग लाभकारी सिद्ध होगा ।

उपरोक्त लाभो के संदर्भ में शिक्षको को मानसिक मद बच्चो के परिवार के साथ काम करने की आधारभूत विधियो से अवगत हो जाना चाहिए ।

अभिभावकों के साथ काम करने में शिक्षकों की भूमिका

शिक्षकों को अभिभावको या परिवार जनो के साथ काम करना है । चूँकि,

1. बच्चे के बारे मे या उसकी दशा या अवस्था की जानकारी देने के लिए;
2. मानसिक मंद बच्चे के स्वाभाव, दशा या अवस्था के कारणों और व्यवस्था कार्यक्रम को समझाने के लिए;
3. उनके मानसिक मद बच्चे के प्रति सही दृष्टिकोण विकसित करने मे मदद के लिए;
4. इन बच्चों के प्रशिक्षण और पुनर्वास में अभिभावक की भूमिका समझाने के लिए; और
5. घर मे बच्चे को उचित व्यवहार सिखाने के लिए कार्यक्रम बनाने के लिए अभिभावको के साथ काम करने मे शिक्षको की भूमिका महत्वपूर्ण है ।

मानसिक मंद बच्चों के परिवार के साथ काम करने में लिए शिक्षक के आवश्यक गुण

अ) मानसिक मंद बच्चे के अभिभावक/परिवार की मदद निष्कपट भावना से करे ।

ब) बच्चे की दशा के बारे मे सही जानकारी अभिभावक को दें ।

स) मानसिक मंद बच्चे के अभिभावक के विचार और अनुभूतियाँ ध्यान से धीरज के साथ सुनें ।

द) अपने बिचार, अनुभव या निर्णय अभिभावक पर थोपने की अपेक्षा उनके विचारों को सुनें और उनके दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करें ।

ई) अभिभावक को उनके मानसिक मंद बच्चे की समस्या सुलझाने मे सहायक बने और वैसे विचार सर्वदा रखने का प्रयास करें ।

अभिभावकों के साथ काम करने के निर्देश

मानसिक मंद बच्चों के परिवारों अभिभावकों के साथ काम करने के लिए निम्नलिखित निर्देश शिक्षक के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते है :

1. शिक्षको को, पहले तो यह मानना होगा कि, अभिभावकों का समूह एक समान व्यक्तियों का नहीं होता है । कुछ अपने बच्चे को संभालने में अति निपुण होंगे, अतः उन्हें थोड़ी सी ही सलाह या निर्देश की आवश्यकता पड़ सकती है । कुछ ऐसे होंगे जिनमें उतनी निपुणता, उत्साह नही हो सकता जिससे अपने मानसिक मंद बच्चो के प्रशिक्षण में सक्रिय मदद दे पाएँ । कुछ अभिभावक ऐसा भी सोचते होंगे कि, वे अपने बच्चे की मदद नही कर पाएंगे । ऐसा इस लिए भी हो सकता है कि, उन्हें किसी विशेष प्रकार का अनुभव न मिल पाया हो । जिसके फलस्वरूप उन्हें अपने मानसिक मंद बच्चे के प्रशिक्षण में असफलता ही मिली हो और वे अपने आप को अकर्मण्य पाते हो । शिक्षक अभिभावकों मे विश्वास पैदा कर सकते है, उनके महत्व और योगदान को समझते हुए भरपूर सहयोग दे सकते हैं ।

2. अभिभावको या परिवार के साथ काम करते हुए उन्हें आप सच्चे भाव से बच्चे की दशा, उसके कारणों और व्यवस्था पध्दति को समझा सकते है । किसी क्षेत्र में यदि शिक्षक को कोई संदेह हो तो अन्य व्यावसायिक सदस्य की मदद ले सकते है । गलत या अधूरी बात बताने के बदले अभिभावकों के साथ ईमानदार होना अधिक वांछनीय है ।

3. सभी अभिभावक एक सामान्य और स्वस्थ्य बालक की कामना करते है । जब उन्हें आभास होता है कि, उनका बच्चा मानसिक मंद है तो उनकी आशाओं पर पानी फिर जाता है । जब मानसिक मंद बच्चे को अपनाने की बात आती है । ऐसी स्थिति में पहले तो अभिभावको के लिये समायोजन का अवसर और समय चाहिए जब मानसिक मंद बच्चे को अपनाने की बात आती है। शिक्षक अभिभावकों को उनके बच्चे की दशा के बारे में समझने और उन्हें स्वीकार करने में मदद दे सकते है ।

   मानसिक मंद बच्चे के पैदा हो जाने से उत्पन्न परिस्थिति से समायोजित होने में कुछ अभिभावक अधिक समय लेते है । उनकी और भी सम्बन्धित समस्याएँ हो सकती हैं, जैसे वैवाहिक जीवन मे असंतुलन, व्यक्तिगत सवेगिक असंतुलन, परिवार में असंतुलन, आदि । ऐसी स्थिति में शिक्षक के लिए यह उचित होगा कि, अभिभावक को चिकित्सा मनोवैज्ञानिक या सामाजिक कार्यकर्ता के सुपुर्द कर दें ।

4. अभिभावक से अपेक्षित राय के बाद, घर में प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ करें । बच्चे के वर्तमान स्तर को समझते हुए बच्चे के लिए उचित व्यावहारिक उद्देश्य का चयन करें, जिसे कम परंतु निश्चित अवधि में पूरा किया जा सके । घर के लिए चुना गया उद्देश्य स्कूल के उद्देश्य से मेल खाता हो, यह आवश्यक नही है । अभिभावक और परिवार-जनो को बच्चे के कौशल व्यवहार तथा समस्या व्यवहार दोनो को लक्ष्य करने की सलाह दे ।

5. अभिभावक और परिवार-जन को दिखाकर बताएँ कि बच्चे को कैसे प्रशिक्षित किया जाएगा, किस हद तक पढ़ाया जाएगा। केवल चर्चा के बल पर ही उन्हें सभी बाते नहीं बताई जा सकती । उन्हें करके बताएँ कि, उनके मानसिक मद बच्चे को किस पध्दति से पढ़ाया या सिखाया जा सकता है, कौन कौन सी पध्दतियो का उपयोग किस प्रकार से हो सकेगा । जब एक प्रकार की पध्दति बता दी गई हो

तो अभिभावक को अवसर दें, कि, वह उसी क्रिया को आप के सामने करके दिखाएँ । इससे यह निश्चित हो जाएंगा कि, पद्धति बराबर समझ में आ गई है, और उन्हें मालूम हो गया है कि, क्या और कैसे करना है। उन्हें पुरस्कृत करें और पता लगने दें कि, वे सही दिशा की ओर बढ रहे हैं ।

6. कोशिश रहे कि, अभिभावक प्रत्येक स्तर पर आप और बच्चे दोनो के साथ लगे रहें ।

7. घर प्रशिक्षण के लिए एक व्यवहार लक्ष्य ही पहले लें उसके पूरा हो जाने पर ही, दूसरा । अनेक लक्ष्य एक बार में चुन कर अभिभावक को दुविधा में न डालें । फिर भी बच्चे के स्तर, अभिभावक का विश्वास, समय, आदि को ध्यान में रखते हुए लक्ष्य संख्या का भी निर्धारण किया जा सकता है ।

8. स्कूल में अभिभावक – शिक्षक बैठक निरंतर बुलाते रहें। इससे अभिभावक-शिक्षक सहयोग बढ़ेगा । यह उनके बच्चे के मूल्यांकन में भी उन्हें मदद करता है । साथ ही अभिभावक अपने विचार एक दूसरे से बाँट सकते है ।

सारांश

1. मानसिक मंद बच्चों के अभिभावको तथा परिवार जनो के साथ शिक्षकों को सम्मिलित रूप से काम करना चाहिए और उन्हें बच्चे के शिक्षण व प्रशिक्षण में शामिल किए रहना चाहिए ।

2. अभिभावकों का समूह एक समान नहीं होता । कुछ अभिभावक अधिक सहायता चाहेंगे, तो कुछ कम।

3. मानसिक मंद बच्चों के अभिभावको के साथ काम करने के लाभ : स्कूल में प्रारंभ किया गया कार्य घर के वातावरण में अधिक अभ्यास का अवसर पा सकेगा, इससे व्यक्तिगत महत्व बढ़ेगा, और अभिभावकों का योगदान बच्चे की जानकारी बढ़ाएगा, अभिभावक लक्ष्य उद्देश्य का पता लगाने में मदद कर सकेंगे, और स्वाभाविक वातावरण में सीखने का और अवसर मिल पाएगा।

4. मानसिक मंद बच्चों के अभिभावकों के साथ काम करने में शिक्षक की भूमिका : बच्चे की दशा या अवस्था के बारे में समुचित जानकारी देना, अभिभावको में सही विचार पैदा कराना, बच्चे के प्रशिक्षण में अभिभावकों की भूमिका बताना, तथा अभिभावको को बच्चे के प्रशिक्षण का समुचित शिक्षण देना है, जिससे वे घर के वातावरण मे कार्यान्वित कर सकें ।

5. मानसिक मंद बच्चों के अभिभावकों के साथ काम करने के लिए शिक्षकों की प्रमुख विशेषताएँ सच्चाई. धीरज, शाति पूर्वक सुनने की कुशलता, सहानुभूति रखना, मददगार विचार और सही दृष्टिकोण हैं ।

अध्याय ग्यारह

टीम के साथ काम करना

इस अध्याय के समापन पर शिक्षक निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देपाने में सक्षम हो सकेगें :

1. *टीम के साथ काम करने का अभिप्राय क्या हैं ?*
2. *टीम के साथ काम करने के लाभ क्या-क्या हैं ?*
3. *टीम के बनाने मे किन-किन बातों का ध्यान रखना है ?*
4. *टीम के सदस्यो के कौन कौन से गुण है जो अच्छी टीम बनाने मे सहयोग देते हैं?*

टीम के साथ काम करने का अभिप्राय क्या है ?

मानसिक मंद बच्चो मे अनेक प्रकार की आवश्यकताएँ होती हैं जिन्हें जानने और समझने के लिए कई व्यावसायिकों (विभिन्न क्षेत्रों से) जैसे मनोवैज्ञानिक, विशेष शिक्षक, बाल चिकित्सक, वाणी विशेषज्ञ, भौतिक चिकित्सक, सामाजिक कार्यकर्ता, मनोचिकित्सक आदि की आवश्यकता पड़ती है । किसी एक व्यक्ति के लिए इन सभी क्षेत्रों में निपुणता हासिल करना मुश्किल ही नही, असंभव है । ऐसी स्थिति में टीम के साथ काम करना उपयुक्त है, जहाँ विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ आपस मे मिलकर काम करते हुए मानसिक मद बच्चों और उनके परिवार को उचित निर्देश, प्रशिक्षण और पुनर्वास के उपायो को बनाने और उनके कार्यन्वयन में मदद करते है।

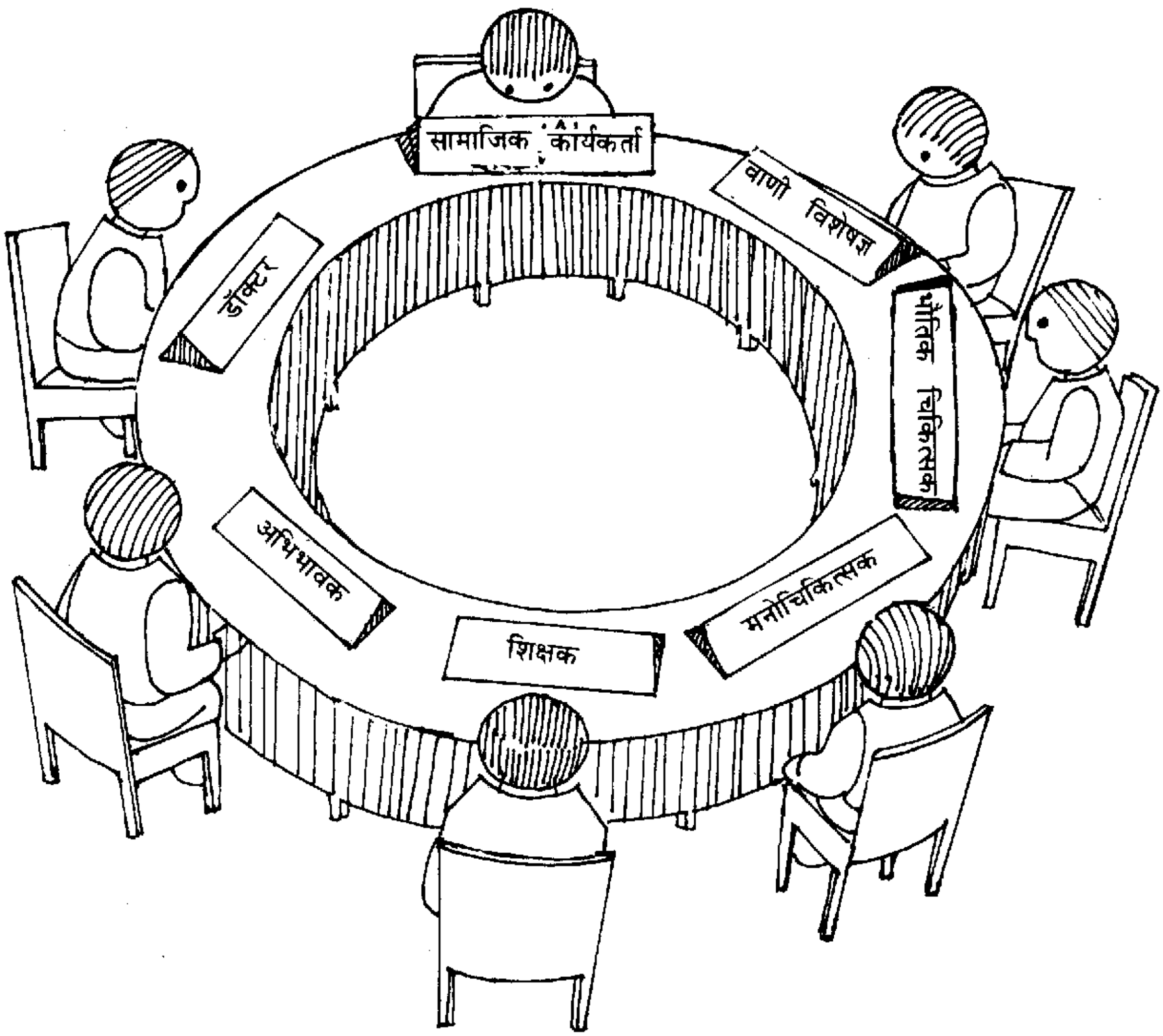

मानसिक मंद बच्चे की विभिन्न प्रकार की समस्यायो को पहचानने, समझने, और उसके व्यवस्था हेतु अभिभावक को भी टीम मे भागीदार बनाना सर्वथा उचित होगा ।

इस टीम में कितने व्यवसायिकों को सम्मिलित करना है, इसका निर्णय, बच्चे की आवश्यकता, स्थानीय परिस्थिति और अन्य जरूरतों पर निर्भर करेगा । फिर भी स्कूल में एक आदर्श टीम में नियमित शिक्षक के अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक, चिकित्सक, (बाल चिकित्सक हो तो उचित होगा) वाणी विशेषज्ञ, भौतिक चिकित्सक और सामाजिक कार्यकर्ता होना सुविधाजनक होगा । जैसा पहले संकेत दिया गया है, अभिभावक और हो सके तो मानसिक मंद बच्चे को भी टीम मे सम्मिलित करना चाहिए । स्कूल सुविधा के अनुसार और बच्चे की आवश्यकता को ध्यान मे रखते हुए व्यावसायिक लोगो की नियुक्ति पूरे समय या अशकालिक की जा सकती है ।

टीम में काम करना, मानसिक मंद बच्चो के दिन प्रतिदिन के व्यवहार समस्या कार्यक्रम में आने वाली असुविधाओं को समूह में सुलझाना भी है ।

इसमें शिक्षक को, स्कूल के अन्य सदस्यों-जैसे आया, खाना बनाने वाले, ड्राइवर, संगीत अध्यापक आदि के साथ सहकर्मी के रूप में करना होगा जिससे व्यवहार-समस्याओं को समझने, कार्यक्रम बनाने और उनके उचित कार्यान्वयन के लिए एक समान प्रथा को बनाया जा सके ।

टीम के साथ काम करने के लाभ

1. मानसिक मंद बच्चों की आवश्यकताओं और समस्याओं को सुलझाने के लिए एक व्यावसायिक की अपेक्षा, विधि विभागों के सदस्यों की टीम आपस में सहयोग देते हुए अपेक्षाकृत अधिक सुनियोजित कार्यक्रम को साकार बना सकती हैं ।

2. टीम मे काम करते हुए हम मानसिक मंद बच्चे के समस्या-व्यवहार, कार्यक्रम में कम से कम त्रुटियाँ कर सकेंगे, साथ ही उन्हें सुधारने की सम्भावनाएँ बढ़ जाएँगा।

3. मानसिक मंद बच्चे के देख भाल मे विभिन्न व्यावसायिको के योगदान का ज्ञान (आपस में पूरक) टीम के सदस्यो को, इसी से सम्भव हो सकता है ।

4. व्यावहारिक विधियों के प्रयोग की प्रमुख विशेषता निरंतरता है । स्कूल या कक्षा में मानसिक मंद बच्चे की व्यवहार व्यवस्था के प्रयोग मे इस निरंतरता को कायम रखना इसी टीम के रहते ही सम्भव हो पाता है और –

5. स्कूल के सभी सदस्यों के सहयोग और भागीदारी से बच्चो द्वारा अर्जित किए गए व्यवहारों का व्यापकीकरण सरल और सम्भव हो पाता है ।

टीम बनाने के निर्देश

1. टीम के सदस्यो की सख्या और रूप निर्धारित करे । उन्ही सदस्यो को शामिल करने की कोशिश करे जिनका बच्चे के साथ सीधा सम्पर्क हो । मानसिक मंदता के क्षेत्र मे कार्यरत सभी व्यावसायिकों को अवश्य शामिल करे ।

2. टीम का एक संचालक चुने, जो टीम का केवल प्रमुख बनने के बजाय संयोजक रूप मे काम कर सके ।

3. टीम के सदस्यो की समय समय पर नियमित बैठक कार्यक्रम बनाएँ ।

4. बैठक मे चर्चा का विषय मानसिक मंद बच्चो के सभी पहलुओं के बारे मे शिक्षण प्रशिक्षण के कार्यक्रम को कार्यरूप देना होना चाहिए ।

5. समय समय पर कार्यक्रमो का मूल्यांकन भी करते रहे ।

6. मानसिक मंद बच्चों के समस्या-व्यवहार कार्यक्रम संबन्धी कार्यक्रम के कार्यान्वयन पर भी आवश्यक चर्चा होनी चाहिए ।

विशेषताएँ जो टीम कार्य को बेहतर बनाती है :

टीम के साथ काम करना आसान नही होता है । जब विविध प्रकार के व्यावसायिक एक जगह इकट्ठे होकर मानसिक मंद बच्चे की देख भाल या प्रशिक्षण के काम की जिम्मेदारी लेते हैं, तो कुछ क्षेत्र में विचारों का मतभेद स्वाभाविक है अतः टीम के व्यक्तिगत सदस्यों को एक दूसरे के विचारों का सम्मान, एक दूसरे को समझने की इच्छा, विचारों के आदानप्रदान की इच्छा, और आपस की विभिन्नताओ को सहने की चाहत आवश्यक है । ऐसी सभी विशेषताएँ अन्ततः हमे मानसिक मंद बच्चो के प्रशिक्षण में आगे चलकर सहयोग देगी ।

सारांश

1. मानसिक मंद बच्चों के विभिन्न और विविध समस्याओं को परखने, और उनकी व्यवस्था के लिए अलग अलग विभागों के व्यावसायिकों के साथ ही साथ अभिभावकों को शामिल होना ही टीम के साथ इनके लिए काम करना है ।

2. टीम के साथ काम करने के लाभ है, आपस में सहयोग और उससे मानसिक मंद बच्चों की समस्याओं को पहचानना, और उसके बारे में विचार विमर्श करना । इससे गलतियाँ कम होती हैं ।

3. व्यावसायिकों की टीम बनाने के बाद उसमें से एक संयोजक को चुनना, कार्यक्रम की रूप रेखा तैयार करना, चर्चा करना और समय-समय पर उसके कार्यो का मूल्यांकन करते रहना शामिल है । ।

4. अच्छे टीम कार्य के लिए सदस्यो को एक दूसरे को समझना, आदर करना, विचारों को बाँटने की इच्छा रखना, विचारो में मतभेदो को स्वीकार करना, आदि आवश्यक है ।

अध्याय बारह

नैतिक समस्यायें

इस अध्याय के समापन पर शिक्षक निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दे पाने में सक्षम हो सकेगें :

1. *व्यावहारिक तकनीक के प्रयोग से सम्बन्धित नैतिक विचार कौन कौन से हैं ?*

2. *मानसिक मंद बच्चों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों संम्बन्धी नैतिक समस्यायें कौन कौन सी हैं ?*

3. *प्रशिक्षण कार्यक्रम के कार्यन्वयन सम्बन्धि नैतिक विचार कौन कौन सें हैं, और उसके मूल्यांकन मे इनका क्या महत्व हैं ?*

व्यावहारिक तकनीके के प्रयोग सम्बन्धी नैतिक विचार

अ) व्यावहारिक दृष्टिकोण क्या अमानुंषिक है ?

इस पुस्तिका में जो शिक्षण व प्रशिक्षण की विधियॅा समझाई हैं वे सभी सीखने के व्यावहारिक दृष्टिकोण पर आधारित है। कभी कभी, इन विधियो के सीमित ज्ञान के नाते इन्हें यांत्रिक या अमानुषिक कहा जाता है। वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति को एक अलग और व्यक्तिगत रूप में समझने के इसके प्रयास को अधिक मानुषिक कहना उत्तम होगा। व्यावहारिक दृष्टिकोण रखने वाला शिक्षक प्रत्येक बच्चे का अलग अलग मुल्यांकन करते हुए उनके कौशल विकास और समस्या व्यवहार कार्यक्रमों को सुसंगठित करता है। बच्चों के स्वस्थ विकास के लिए, यह विधि अधिक वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ पहल अपनाती है, जिससे उनके सीखने का अनुभव और प्रगाढ़ हो सकें। मानसिक मंद बच्चो के शिक्षण की सफलता की अत्यधिक गारंटी यही व्यावहारिक विधि ही ले पाती है।

ब. क्या व्यावहारिक पध्दतियाँ अधिक समय लेती है ?

अक्सर ऐसा कहा जाता है कि व्यावहारिक पध्दतियो का उपयोग अधिक समय लेता है । ऐसी धारणा है कि, एक शिक्षक एक कक्षा में 6 से 7 मंद बुध्दि बच्चो को व्यवहार पध्दतियों का प्रयोग करते हुए उन पर अपेक्षित ध्यान देना और साथ ही उनकी रेकॅार्डिंग करते रहना, असंभव है । वास्तव में अपने यहॉं विशेष स्कूलों की दशा दयनीय है । अनेक शिक्षको को बड़ी संख्या में बच्चो को देखना पड़ता है । परंतु इसका यह मतलब नहीं कि, हम बच्चो और शिक्षको के कार्यो का मूल्यांकन न करें, या उनकी रेकॅार्डिंग न कर सके। अनुभव और क्षमता के साथ साथ रेकार्डिंग आसान लगने लगती है और दैनिक-चर्या का अंग बन जाती है ।

व्यावहारिक पध्दतियों के प्रयोग से शिक्षक को व्यवहार उद्देश्य प्राप्ति में सहायता मिलती है । यह तो सर्वमान्य है कि, हमें, प्रत्येक बच्चे को व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना है । बच्चे यदि समूह में भी रहते या सीखते है तब भी उनका व्यक्तिगत रूपसे ध्यान रखना पडता है ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम को बनाने और उसके कार्यान्वयन सम्बन्धी नैतिक पहलू

मानसिक मंद बच्चों को क्या और कैसे प्रशिक्षित किया जाय, इसका निर्णय एक बहुत ही महत्वरूर्ण मुद्दा है । व्यवहार सुधार की पध्दतियो के प्रयोग हेतु टीम की सहायता से चलना लाभदायक माना गया है । इस टीम में स्कूल के कार्यकर्ता, विशेषज्ञ, और अभिभावक शामिल होने चाहिए । आवश्यकता पड़ने पर बच्चे को भी टीम मे शामिल करना होगा . इस टीम का सबसे उपयोगी पहलू यह है कि, बच्चे की आवश्यकताओं की सुरक्षा भी की जा सकती है । इससे व्यवहार पध्दति का मनमाना प्रयोग नही हो पाएगा ।

व्यवहार पध्दतियो का शिक्षण में प्रयोग और तत्सम्बन्धि नैतिक पहलु

क. *पुरस्कारों का प्रयोग :*

व्यवहार पध्दतियो मे बच्चो को पुरस्कार देने को कभी कभी रिश्वत,घूस देना मान लिया जाता है । पुरस्कार तो ऐसी वस्तु है जो व्यवहार को पुनः आने की सम्भावना बढ़ा देती है । व्यवहार उसी अवस्था में दिया जाता है जब लक्ष्य व्यवहार घटित हो, और जिसके फल स्वरूप वांछनीय व्यवहार बच्चे द्वारा सीखा जा सके तथा परिणाम स्वरूप बच्चे की कुशलता बढ़े । इसके विपरीत रिश्वत, घूस तो लोग अपने स्वार्थ के लिए देते हैं, जो अनैतिक है । घूस तो काम पूरा होना के पहले ही दे दिया जाता है, और इसमे एक प्रकार की शर्त होती है कि, हम घूस दे रहें है, काम पूरा होना चाहिए ।

कुछ लोगो द्वारा यह भी माना जाता है कि, मानसिक मंद बच्चों को अपनी आंतरिक प्रेरणा और क्षमता के आधार पर कौशल सीखना या करना चाहिए न कि, इस लिए कि, उन्हे पुरस्कार मिलता है । यह वास्तव में आन्तरिक और बाहय पुरस्कार का विषय है । बहुत से मानसिक मंद बच्चे कौशल इस लिए नही सीख पाते क्यों कि, उन्हे उस प्रकार के व्यवहारों को सीखने या करने की आवश्यकता का ज्ञान

ही नहीं हो पाता है । उनको प्रेरित करने और सीखने को आनन्ददायी बनाने के लिए बाहरी पुरस्कार का प्रयोग किया जा सकता है । यह सोचकर कि, बाहरी पुरस्कारों का प्रयोग अनुचित है, यदि बच्चे को अप्रेरित या सीखने के लिए रूचि न पैदा की जाये तो आधिक अनैतिक निर्णय होगा । बाहरी पुरस्कार का प्रयोग सीखने की क्रिया प्रारंभ करने में किया जा सकता है । फिर भी एक कुशल व्यवहार शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया का कार्यक्रम इस प्रकार बनाएगा जिसमें पुरस्कार का प्रयोग अस्थायी रूप में हो, और जिसे धीरे धीरे आन्तरिक पुरस्कार की जगह देते हुए हटाया जा सकें ।

ख. *अनिच्छा या घृणा उत्पन्न करने वाली पद्धतियों का प्रयोगः*

अनिच्छा या घृणा पैदा करने वाली पध्दतियाँ, जैसेःबच्चे को छड़ी या पट्टे से ऊँगलियो के जोड़ों पर मारना, आदि का प्रयोग स्कूलो में बहुत दिनों से चला आ रहा है । कई देशो में इस पद्धति पर एक दम रोक लगा दी गई है। मानसिक मंद बच्चों के सीखने की प्रक्रिया स्कूल में आनन्ददायी होनी चाहिए। जब बड़े लोग इस प्रकार के गलत तरीके, बच्चो के लिए, अपनाते हैं, तो उनके व्यवहार के लिए एक गलत आदर्श रखते हैं। कुछ अध्यापक अपनी आदत के मुताबिक एक छडी साथ में रखते हैं भले ही उसका प्रयोग कदाचित ही करे। सामान्य दशा में इसे दूर रखना चाहिए । मार या डाँट के भय से कुछ करने की अपेक्षा बच्चो के सीखने की क्रिया सुखदायी होनी चाहिए ।

इस पुस्तिका मे बताए गए कुछ तरीके, जैसे टाइम आउट, शारीरिक प्रतिवंध, प्रतिक्रिया मूल्य आदि, दण्ड पध्दतियों में आते हैं। यदि शिक्षक पुरस्कार पध्दतियों से बच्चे में वांछनीय व्यवहार परिवर्तन न ला पाएँ, तो इन पध्दतियों का प्रयोग करना चाहिए। इस प्रकार की पध्दतियाँ व्यवहार परिणाम को इस प्रकार से रखने में मदद में करती है कि, बच्चे, जो चाहते हैं उससे कुछ समय के लिए वंचित हो जाते है । इन पध्दतियो के प्रयोग के साथ साथ वाँछनीय व्यवहारों के लिए पुरस्कार का प्रयोग अवश्य करते रहें ।

नैतिक प्रश्न यहाँ उठता है कि, यदि बच्चा ऐसे व्यवहार करता है जो उसके या अन्य के लिए घातक है, जिससे उसकी सामाजिक मान्यता कम होती है, या जिसके कारण वह नए व वाछनीय व्यवहार नही, सीख पाता है, तो ऐसी

स्थिति मे बच्चे के लिए उचित परिणाम पाने के लिए थोड़े समय के लिए मध्यम दण्ड पध्दति का प्रयोग किया जाता जिसमे ऐच्छिक व्यवहारो के लिए पुरस्कृत करना भी सम्मिलित हो या उन्ही विधियों का प्रयोग करते रहे जिनसे कोई सकारात्मक परिणाम नहीं निकल रहा है । ऐसा माना गया है कि, शिक्षक को निश्चय कर लेना है कि, बच्चा नई कुशलताएँ सीखें, स्वावलंबी बने, समाज मे प्रतिष्ठा पाएं और उत्तरोत्तर उन्नति करें । मानसिक रूप से मद बच्चो की देख भाल और पुनर्वास मे आने वाली सभी बाधाओ को दूर करना शिक्षक का दायित्व बन जाता है, जिसे निभाना चाहिये ।

सारांश

1. मानसिक मंद बच्चों की व्यवस्था के लिए व्यावहारिक तरीकें मानवीय हैं और शिक्षक के समय और शक्ति को बचाने में सहायक हैं ।

2. मानसिक मंद बच्चो के समस्या व्यवहार कार्यक्रम की विभिन्न पध्दतियों के प्रयोग मे टीम के साथ काम करना उचित बताया गया है ।

3. पुरस्कार प्रयोग को गलत नहीं समझना चाहिए । ऐसा नहीं कि, वह बच्चो को रिश्वत, घूस देना है ।

4. मानसिक मंद बच्चों के लिए दण्ड पध्दति का प्रयोग सावधानी से करना चाहिये वांछनीय व्यवहारों के लिए पुरस्कार का प्रयोग करना चाहिये ।

अभ्यास कार्य - 10

I. नीचे के कथनों को पढ़िये और बताइए कि, क्या वे सही है या गलत

1. माँ-बाप के साथ कार्य करने से अध्यापक पर अनावश्यक दबाव पड़ता है ।

   सही / गलत

2. अध्यापक को विज्ञान की अनेक शाखाओं के टीम के साथ काम करने से दूर रहना चाहिये।

   सही / गलत

3. मानसिक मंद बच्चे को केवल विशेष स्कूलों में ही प्रशिक्षित किया जा सकता है।

   सही / गलत

4. मानसिक मंद बच्चो के ऊपर अपनाई जाने वाली व्यवहार सम्बन्धी तकनीकें असल मे अमानवीय हैं ।

   सही / गलत

5. स्कूल में अध्यापक की भूमिका को केवल मानसिक मंद बच्चों के साथ काम करने तक ही सीमित करना उपयुक्त होगा ।

   सही / गलत

6. स्कूल मे एक बच्चे का प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करते समय माँ-बाप को शामिल करना उपयुक्त होगा ।

   सही / गलत

7. कक्षा/स्कूल के वातावरण में व्यवहार सम्बन्धी तकनीको के प्रयोगों मे बहुत अधिक समय लगता है ।

   सही / गलत

8. बच्चों को पुरस्कार देना रिश्वत देने का एक दूसरा रूप है ।

   सही / गलत

9. एक विशेष लक्ष्य को सिखाने के लिए स्कूल और घर पर एक जैसी तकनीक को अध्यापकों और माँ-बाप द्वारा प्रयोग करना महत्वपूर्ण है ।

   सही / गलत

10. जब बच्चे चरम सीमा का समस्या-व्यवहार प्रदर्शित करें तो अध्यापकों को हाथों से पीटने, बेल्ट से मारने जैसी प्रतिकूल तकनीकों का उपयोग करना चाहिये ।

    सही / गलत

कार्य अभ्यास - 10
कुंजी

1.	गलत	2.	गलत	3.	गलत	4.	गलत	5.	गलत
6.	सही	7.	गलत	8.	गलत	9.	सही	10.	गलत.

परिशिष्ट*

परिशिष्टों की प्रतियाँ बनाने के लिये लेखकों की पूर्व अनुमति आवश्यक नही है ।

बेसिक - एम आर, भाग 'अ', के लिये व्यवहार समायोजन का नमूना

विद्यार्थी का नाम वी.एस. रवि स्तर/कक्षा द्वितीय

आयु 12 वर्ष

लिंग पुल्लिंग.

तिथि	मूल्यांकन कर्ता		तिथि	मूल्यांकन कर्ता
आधारभूत मूल्यांकन		द्वितीय त्रैमासिक मूल्यांकन		
प्रथम त्रैमासिक मूल्यांकन		तृतीय त्रैमासिक मूल्यांकन	2.3.93.	कु. स्मिता

कथन संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
गामक	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	3	3	3	2	5	1	1	1
दै.जी.क्रि.क	5	3	5	1	5	5	5	3	5	5	5	5	5	5	3	5	5	5	5	5
भाषा कौशल	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	3	3	5	3	5	1	1	1
पाठन	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	1	1	3	2	3	1	1	1	1
अंक	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	5	1	1	1	1	1	-	-	-
घरेलू	3	3	3	5	1	1	1	1	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
पूर्व-व्यवसाय	5	5	3	2	2	1	1	1	3	2	2	1	2	1	1	1	1	1	-	-

कथन संख्या	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
गामक	3	3	3	3	3	3	5	4	3	4	5	2	3	3	3	3	5	5	1	1
दै.जी.क्रि.क	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	5	1	3	1	1	2	1	0
भाषा कौशल	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	3	3	5
लेखन	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	1	3	1	1	1	1	1
समय	5	5	5	5	5	3	3	5	1	1	1	3	3	1	1	1	1	1	-	-
सामाजिक	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	1	5	5	5	1	1	1	1
रूपये-पैसे	5	5	5	5	5	5	3	3	1	1	1	1	1	-	-	-	-	-	-	-

अंक देने की कुंजी स्वावलम्बी 5, संकेत देने पर 4, शाब्दिक प्रॉम्प्ट 3, भौतिक प्रॉम्प्ट 2, पूर्णत आश्रित 1, लागू नही 0

रेखांकित परिणाम

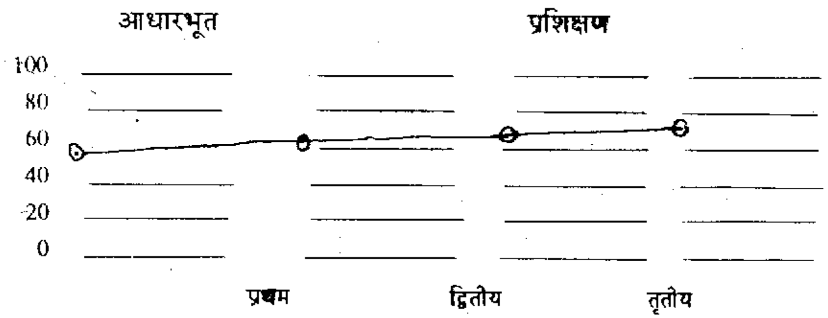

संयुक्त आँकड़े

क्षेत्र भाग	आधारभूत		प्रथम त्रैमासिक		द्वितीय त्रैमासिक		तृतीय त्रैमासिक	
	अंक	%	अंक	%	अंक	%	अंक	%
गामक	139	69.5	140	70	140	70	144	72
दै.जी.क्रि.क	159	79.5	160	80	162	81	163	81.5
भाषा कौशल	170	85	172	86	175	87.5	178	89
पाठन-लेखन	130	65	132	66	137	68.5	143	71.5
अंक-समय	98	49	105	52.5	109	54.5	114	57
घरेलू-सामाजिक	79	39.5	90	45	92	46	99	49.5
पूर्व-व्यवसाय	54	27	62	31	65	32.5	77	38.5
योग	829	59.2	861	61.5	880	62.86	918	65.6

विहेवियरल असेसमेन्ट स्केल फॉर चिलड्रन विथ मेन्टल रिटार्डेशन

परिशिष्ट I

बेसिक - एम आर, भाग 'अ', के लिये व्यवहार समायोजन का नमूना

विद्यार्थी का नाम : ________ स्तर/कक्षा ________ तिथि मूल्यांकन कर्ता तिथि मूल्यांकन कर्ता

आयु : ________ आधारभूत मूल्यांकन ________ ________ द्वितीय त्रैमासिक मूल्यांकन ________ ________

लिंग : ________ प्रथम त्रैमासिक मूल्यांकन ________ ________ तृतीय त्रैमासिक मूल्यांकन ________ ________

कथन संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
गामक																				
दै.जी.क्रि.क																				
भाषा कौशल																				
पाठन																				
अक																				
घरेलू																				
पूर्व-व्यवसाय																				

कथन संख्या	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
गामक																				
दै.जी.क्रि.क																				
भाषा कौशल																				
लेखन																				
समय																				
सामाजिक																				
रूपये-पैसे																				

अक देने की कुंजी : स्वावलम्बी : 5 ; संकेत देने पर : 4, शाब्दिक प्रॉम्प्ट : 3, भौतिक प्रॉम्प्ट : 2, पूर्णत आश्रित : 1, लागू नही : 0

रेखांकित परिणाम

आधारभूत प्रशिक्षण

100 ________ ________ ________ ________

80 ________ ________ ________ ________

60 ________ ________ ________ ________

40 ________ ________ ________ ________

20 ________ ________ ________ ________

0 ________ ________ ________ ________

प्रथम द्वितीय तृतीय

संयुक्त आँकड़े

क्षेत्र भाग	आधारभूत		प्रथम त्रैमासिक		द्वितीय त्रैमासिक		तृतीय त्रैमासिक	
	अंक	%	अंक	%	अंक	%	अंक	%
गामक								
दै.जी.क्रि.क								
भाषा कौशल								
पाठन-लेखन								
अक-समय								
घरेलू-सामाजिक								
पूर्व-व्यवसाय								
योग								

* बिहेवियरल असेसमेन्ट स्केल फॉर चिलड्रन विथ मेन्टल रिटार्डेशन

परिशिष्ट II

बेसिक - एम आर, भाग 'ब', के लिये व्यवहार समायोजन का नमूना

विद्यार्थी का नाम : वी. एस. रवि.   स्तर/कक्षा ______   तिथि   मूल्याकन कर्ता   तिथि   मूल्याकन कर्ता

आयु : 12 वर्ष   आधारभूत मूल्यांकन ______ ______   द्वितीय त्रैमासिक मूल्याकन ______ ______

लिंग : पुल्लिंग.   प्रथम त्रैमासिक मूल्याकन ______ ______   तृतीय त्रैमासिक मूल्याकन 2.3.93.   कु. स्मिता

उग्र व विनाशक व्यवहार												
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चिड़चिड़ापन					
14	15	16	17	18	19
0	0	0	0	0	0

अन्य के साथ दुर्व्यवहार							
20	21	22	23	24	25	26	27
0	0	0	0	0	0	0	0

स्वय घातक व्यवहार									
28	29	30	31	32	33	34	35	36	37
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0

पुनरावृत्ति व्यवहार							
38	39	40	41	42	43	44	45
0	0	0	0	0	1	0	0

अनोखा व्यवहार							
46	47	48	49	50	51	52	53
1	0	0	0	0	0	0	0

अति चंचलता विद्रोही व्यवहार								
54	55	56	57	58	59	60	61	62
0	0	1	0	0	1	0	0	0

असामाजिक व्यवहार									
63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
0	0	0	0	0	0	0	0	0	1

भय			
73	74	75	76
0	0	0	0

अंक देने की कुंजी · कभी नही : 0; कभी-कभी : 1; बहुधा : 2

रेखांकित परिणाम

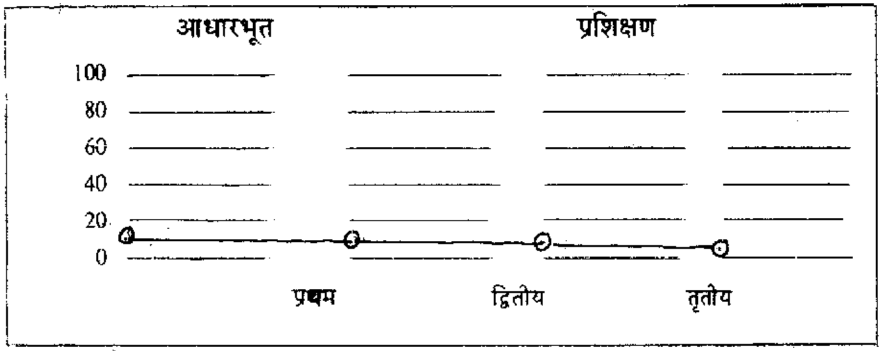

संयुक्त आँकड़े

मूल्यांकन	शुद्ध आँकड़े	संयुक्त प्रतिशत
आधारभूत	16	10.67
प्रथम त्रैमासिक	14	9.33
द्वितीय त्रैमासिक	9	6.00
तृतीय त्रैमासिक	5	3.30

परिशिष्ट II

बेसिक - एम आर, भाग 'ब', के लिये व्यवहार समायोजन का नमूना

विद्यार्थी का नाम : ______ स्तर/कक्षा ______ तिथि मूल्यांकन कर्ता तिथि मूल्यांकन कर्ता

आयु : ______ आधारभूत मूल्यांकन ______ ______ द्वितीय त्रैमासिक मूल्यांकन ______ ______

लिंग : ______ प्रथम त्रैमासिक मूल्यांकन ______ ______ तृतीय त्रैमासिक मूल्यांकन ______ ______

उग्र व विनाशक व्यवहार													चिड़चिड़ापन						अन्य के साथ दुर्व्यवहार								स्वय घातक व्यवहार										पुनरावृत्ति व्यवहार							
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45

अनोखा व्यवहार								अति चंचलता विद्रोही व्यवहार									असामाजिक व्यवहार										भय			
46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76

अंक देने की कुंजी : कभी नही : 0; कभी-कभी : 1; बहुधा : 2

रेखांकित परिणाम

आधारभूत प्रशिक्षण

100 ______ ______ ______ ______
80 ______ ______ ______ ______
60 ______ ______ ______ ______
40 ______ ______ ______ ______
20 ______ ______ ______ ______
0 ______ ______ ______ ______

प्रथम द्वितीय तृतीय

संयुक्त आँकड़े

मूल्यांकन	शुद्ध आँकड़े	संयुक्त प्रतिशत
आधारभूत		
प्रथम त्रैमासिक		
द्वितीय त्रैमासिक		
तृतीय त्रैमासिक		

समस्या – व्यवहार (बेसिक-एम आर भाग ब)

समस्या - व्यवहार खण्ड	पूर्णांक	आधारभूत ( )	I त्रैमासिक ( )	II त्रैमासिक ( )	वार्षिक मूल्यांकन
उग्र. विनाशक व्यवहार	32				
चिड़चिड़ापन/झल्लाहट	6				
अन्य के साथ दुर्व्यवहार	16				
स्वय घातक व्यवहार	20				
पुनरावृत्ति व्यवहार	16				
अनोखा व्यवहार	16				
अति चंचल व्यवहार	6				
विद्रोही व्यवहार	12				
असामाजिक व्यवहार	18				
भय	6				
योग	150				

अधिक अंक शिक्षार्थी के अच्छे कार्य कुशलता का द्योतक है ।

कम अंक शिक्षार्थी में कम समस्या व्यवहार का द्योतक है ।

रे

कौशल व्यवहार

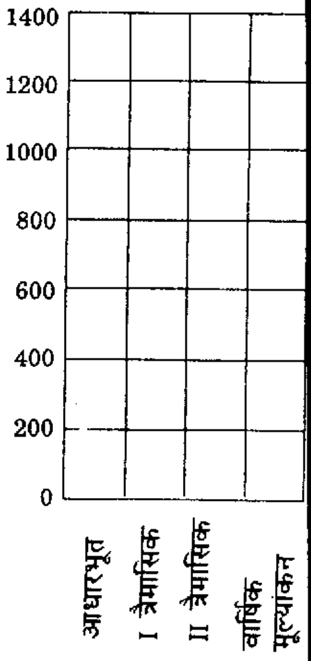

	कौ व्यव
	प्राप्तांक(पूर्ण
आधारभूत	
I त्रैमासिक	
II त्रैमासिक	
वार्षिक मूल्यांकन	

चित्र प्रोफाइल

समस्या - व्यवहार

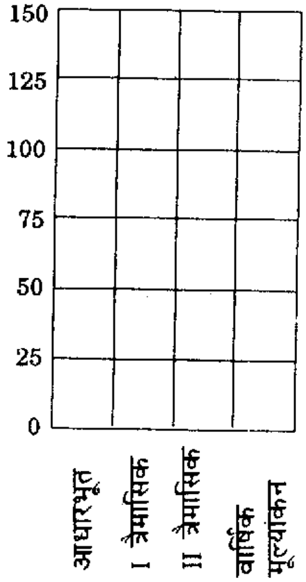

	समस्या - व्यवहार
:1400)	प्राप्ताक(पूर्णांक :150)

कौशल - व्यवहार (बेसिक-एम आर भाग अ)

कौशल - व्यवहार खण्ड		पूर्णांक	आधारभूत ( )	I त्रैमासिक ( )	II त्रैमासिक ( )	III वार्षिक मूल्यांकन
गामक		200				
दैनिक जीवन की क्रियाएँ		200				
भाषा		200				
पाठन-लेखन		200				
अक-समय		200				
घरेलू-सामाजिक		200				
पूर्व-व्यवसाय रूपये पैसे		200				
कुल अंक		1400				
उपस्थिति कार्य दिन						
ह स्ता क्ष र	शिक्षक					
	स्कूल संयोजक प्रधानाचार्य					
	मनोवैज्ञानिक सलाहकार					
	निदेशक					
	अभिभावक					

निर्देश

अपने बच्चे के प्रगति पत्र को ध्यान से समझें, अपने हस्ताक्षर कर, अभिभावक शीघ्रातिशीघ्र शिक्षक को वापस दे ।

प्रगति पत्र एक मूल्यवान वस्तु है, जो आप के बच्चे की चरण दर चरण प्रगति का वर्णन करता है । इसे सावधानी से संभाले ।

अभिभावक को प्रगति पत्र या तो बच्चे के स्कूल छोड़ते के समय अथवा प्रत्येक वर्ष के सत्र समाप्ति पर उपलब्ध हो सकेगा ।

प्रत्येक प्रगति पत्र की लागत रुपए 10/- है । इसके खो जाने अथवा क्षति होने पर नकल रुपये 15/- अदा करने पर प्राप्त हो सकेगा ।

हस्ताक्षर नमूना

किशनचंद	पिता	कि. चं.
रमादेवी	माता	र.देवी
	अभिभावक	

सूचना

इस प्रगति पत्र मे अंक राष्ट्रीय मानसिक विकलाग सस्थान, सिकन्दराबाद द्वा
विकसित "भारतीय मानसिक मंद बच्चो के लिए व्यवहार मूल्याकन मापदण्ड
(बेसिक-एमआर) नामक मानक एव वैज्ञानिक साधन द्वारा मूल्यांकन के आध
पर दिये गए है ।

बेसिक एमआर के क्रमशः अ और ब दो भाग है ।

बेसिक एम.आर. भाग अ मे 280 कथन है जिन्हे कौशल व्यवहार के स
खण्डो मे रखा गया है जो क्रमशः गामक (स्थूल व सूक्ष्म क्रिआएँ); दैनि
जीवन की क्रिआएँ (भोजन करना, शौचादि क्रिया, दाँत साफ करना, स
करना, कपड़े पहनना, साज-श्रृंगार); पठन और लेखन; अंक-स
घरेलू-सामाजिक, और पूर्व व्यवसाय पैसा रूपया है । प्रत्येक कथन के व्यक्ति
स्तर पर सफलता के आधार पर एक बच्चे का प्राप्तांक0 (लागू नही),
1 (पूर्णरूप से श्वावलबी), 2 (भौतिक मदद से कर पाता है), 3 (शाब्दि
मदद से कर लेता है), 4 (सकेत/इसारे पर करता है), 5 (स्वतंत्र
से करता है) तक मिल सकता है । एक खण्ड का अधिकतम अक
तथा सभी सात खण्डो का पूर्णांक 1400 है ।

बेसिक एम.आर.भाग ब मे 75 कथन है जो समस्या व्यवहार के 10 ख
मे बँटे है, जैसे : उग्र एव विनाशक व्यवहार, चिड़चिड़ापन/झल्लाहट
से दुर्व्यवहार, स्वय घातक व्यवहार, पुनरावृति व्यवहार अनोखा व्यवहार, अतिच
व्यवहार, विद्रोही व्यवहार, असामाजिक व्यवहार, भय । प्रत्येक बच्चे के व्य
को वस्तु निष्ट ढग से अक दिए जाते है । व्यवहार नही (अक 0),
होता हो (अक 1), अक्सर घटित हो (अक 2), 1 सभी खण्डो पर अधि
अक 150 मिल सकते है । प्रत्येक बच्चे का आकलन बेसिक एम
के भाग अ तथा ब पर चार बार होता है। स्कूल में भर्ती होने प
वर्ष के प्रारम्भ मे (आधार भूत मूल्याकन), तीसरे और छठे माह की स
पर (त्रैमासिक मूल्याकन) और वर्ष के अत मे (वार्षिक मूल्याकन)

निर्देश

अपने बच्चे के प्रगति पत्र को ध्यान से समझे, अपने हस्ताक्षर कर, अभिभावक शीघ्रातिशीघ्र शिक्षक को वापस दें ।

प्रगति पत्र एक मूल्यवान वस्तु है, जो आप के बच्चे की चरण दर चरण प्रगति का वर्णन करता है । इसे सावधानी से सभाले ।

अभिभावक को प्रगति पत्र या तो बच्चे के स्कूल छोड़ते के समय अथवा प्रत्येक वर्ष के सत्र समाप्ति पर उपलब्ध हो सकेगा ।

प्रत्येक प्रगति पत्र की लागत रुपए 10/- है । इसके खो जाने अथवा क्षति होने पर नकल रुपये 15/- अदा करने पर प्राप्त हो सकेगा ।

स्ताक्षर नमूना

...प्रसाद	पिता	...किशन	
...नादेवी	माता	...देवी	
	अभिभावक		

सूचना

इस प्रगति पत्र मे अंक राष्ट्रीय मानसिक विकलाग संस्थान, सिकन्दराबाद द्वारा विकसित "भारतीय मानसिक मंद बच्चो के लिए व्यवहार मूल्यांकन मापदण्ड" (बेसिक-एमआर) नामक मानक एवं वैज्ञानिक साधन द्वारा मूल्यांकन के आधार पर दिये गए है ।

बेसिक एमआर के क्रमशः अ और ब दो भाग है ।

बेसिक एम.आर. भाग अ मे 280 कथन है जिन्हें कौशल व्यवहार के सात खण्डो मे रखा गया है जो क्रमशः गामक (स्थूल व सूक्ष्म क्रिआएँ); दैनिक जीवन की क्रिआएँ (भोजन करना, शौचादि क्रिया, दाँत साफ करना, स्नान करना, कपड़े पहनना, साज-श्रृंगार); पठन और लेखन; अंक-समय; घरेलू-सामाजिक, और पूर्व व्यवसाय पैसा रूपया है । प्रत्येक कथन के व्यक्तिगत स्तर पर सफलता के आधार पर एक बच्चे का प्राप्तांक0 (लागू नही), से 1 (पूर्णरूप से श्वावलबी), 2 (भौतिक मदद से कर पाता है), 3 (शाब्दिक मदद से कर लेता है), 4 (सकेत/इसारे पर करता है), 5 (स्वतंत्र रूप से करता है) तक मिल सकता है । एक खण्ड का अधिकतम अंक 200 तथा सभी सात खण्डो का पूर्णांक 1400 है ।

बेसिक एम.आर.भाग ब मे 75 कथन है जो समस्या व्यवहार के 10 खण्डो मे बँटे है; जैसे : उग्र एव विनाशक व्यवहार, चिड़चिड़ापन/झल्लाहट अन्य से दुर्व्यवहार, स्वय घातक व्यवहार, पुनरावृति व्यवहार अनोखा व्यवहार, अतिचंचल व्यवहार, विद्रोही व्यवहार, असामाजिक व्यवहार, भय । प्रत्येक बच्चे के व्यवहार को वस्तु निष्ट ढग से अक दिए जाते है । व्यवहार नही (अक 0), कमी होता हो (अक 1), अक्सर घटित हो (अंक 2), 1 सभी खण्डो पर अधिकतम अक 150 मिल सकते है । प्रत्येक बच्चे का आकलन बेसिक एम.आर. के भाग अ तथा ब पर चार बार होता है। स्कूल में भर्ती होने पर या वर्ष के प्रारम्भ मे (आधार भूत मूल्यांकन), तीसरे और छठे माह की समाप्ति पर (त्रैमासिक मूल्याकन) और वर्ष के अत मे (वार्षिक मूल्याकन) ।

परिशिष्ट III प्र...

प्रगति...

1992

शिक्षार्थी का नाम वी. एस. ...

आयु : 12 वर्ष. जन्म ...

गम्भीरता अल्प मा...

कक्षा/स्तर द्वितीय.

अभिभावक का नाम डी. किश...
10-2-26...

पता सिताफलमडी...
सिकंद्राबाद...

फोन 616177...

समस्या – व्यवहार (बेसिक-एम आर भाग ब)

	समस्या - व्यवहार खण्ड	पूर्णांक	आधारभूत जून 92.	I त्रैमासिक सित. 92.	II त्रैमासिक दिसं. 92.	वार्षिक मूल्यांकन
1.	उग्र. विनाशक व्यवहार	32	0	0	0	0
2.	चिड़चिड़ापन/झल्लाहट	6	0	0	0	0
3.	अन्य के साथ दुर्व्यवहार	16	0	0	0	0
4.	स्वय घातक व्यवहार	20	0	0	0	0
	पुनरावृत्ति व्यवहार	16	4	2	1	1
	अनोखा व्यवहार	16	2	2	2	1
	अति चचल व्यवहार	6	1	1	1	1
	विद्रोही व्यवहार	12	7	7	3	1
	असामाजिक व्यवहार	18	0	0	0	0
	भय	6	2	2	2	1
	योग	150	16	14	9	5

अधिक अंक शिक्षार्थी के अच्छे कार्य कुशलता का द्योतक है ।

कम अंक शिक्षार्थी मे कम समस्या-व्यवहार का द्योतक है ।

रे

कौशल व्यवहार

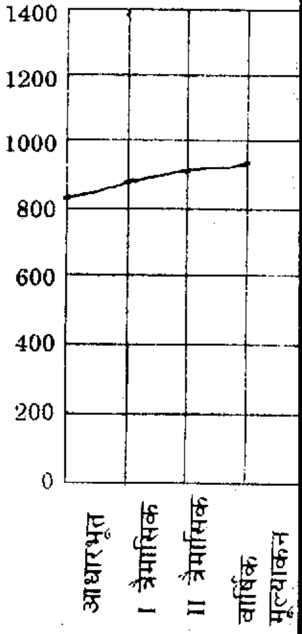

	कौ... व्य...
	प्राप्तांक(पूण...
आधारभूत	8...
I त्रैमासिक	8 6...
II त्रैमासिक	8 8...
वार्षिक मूल्यांकन	9...

चित्र प्रोफाइल

समस्या -
व्यवहार

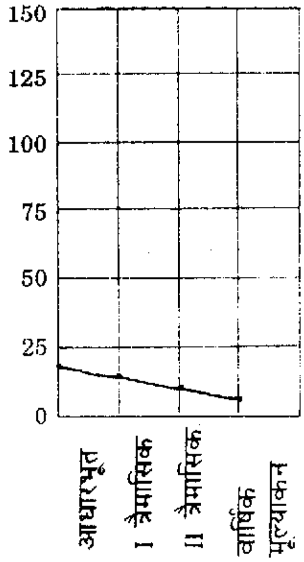

न र	समस्या - व्यवहार
:1400)	प्राप्तांक(पूर्णांक :150)
	16
	14
	9
	5

कौशल - व्यवहार (बेसिक-एम आर भाग अ)

कौशल - व्यवहार खण्ड		पूर्णांक	आधारभूत जून 92	I त्रैमासिक सितं. 92	II त्रैमासिक दिसं. 92	III वार्षिक मूल्यांकन
गामक		200	139	140	140	144
दैनिक जीवन की क्रियाएँ		200	159	160	162	163
भाषा		200	170	172	175	178
पाठन–लेखन		200	130	132	137	143
अक–समय		200	98	105	109	114
घरेलू–सामाजिक		200	79	90	92	98
पूर्व–व्यवसाय रूपये पैसे		200	54	62	65	77
कुल अंक		1400	829	861	880	918
उपस्थिति कार्य दिन			8/10	47/50	46/52	62/67
हस्ताक्षर	शिक्षक		Sm	Sm	Sm	Sm
	स्कूल संयोजक प्रधानाचार्य		ch	ch	ch	ch
	मनोवैज्ञानिक सलाहकार		M	M	M	M
	निदेशक		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	अभिभावक		कि. प.	कि. प.	[illegible]	[illegible]

निर्देश

अपने बच्चे के प्रगति पत्र को ध्यान से समझें, अपने हस्ताक्षर कर, अभिभावक शीघ्रातिशीघ्र शिक्षक को वापस दे ।

प्रगति पत्र एक मूल्यवान वस्तु है, जो आप के बच्चे की चरण दर चरण प्रगति का वर्णन करता है । इसे सावधानी से संभाले ।

अभिभावक को प्रगति पत्र या तो बच्चे के स्कूल छोड़ते के समय अथवा प्रत्येक वर्ष के सत्र समाप्ति पर उपलब्ध हो सकेगा ।

प्रत्येक प्रगति पत्र की लागत रुपए 10/- है । इसके खो जाने अथवा क्षति होने पर नकल रुपये 15/- अदा करने पर प्राप्त हो सकेगा ।

हस्ताक्षर नमूना

पिता ____________

माता ____________

अभिभावक ____________

सूचना

इस प्रगति पत्र में अंक राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान, सिकन्दराबाद द्वारा विकसित "भारतीय मानसिक मंद बच्चों के लिए व्यवहार मूल्यांकन मापदण्ड" (बेसिक-एमआर) नामक मानक एवं वैज्ञानिक साधन द्वारा मूल्यांकन के आधार पर दिये गए है ।

बेसिक एमआर के क्रमशः अ और ब दो भाग है ।

बेसिक एम.आर. भाग अ में 280 कथन है जिन्हें कौशल व्यवहार के सात खण्डो में रखा गया है जो क्रमशः गामक (स्थूल व सूक्ष्म क्रिआएँ); दैनिक जीवन की क्रिआएँ (भोजन करना, शौचादि क्रिया, दाँत साफ करना, स्नान करना, कपड़े पहनना, साज-श्रृंगार); पठन और लेखन; अंक-समय; घरेलू-सामाजिक, और पूर्व व्यवसाय पैसा रूपया है । प्रत्येक कथन के व्यक्तिगत स्तर पर सफलता के आधार पर एक बच्चे का प्राप्तांक0 (लागू नही), से 1 (पूर्णरूप से स्वावलंबी), 2 (भौतिक मदद से कर पाता है), 3 (शाब्दिक मदद से कर लेता है), 4 (सकेत/इसारे पर करता है), 5 (स्वतंत्र रूप से करता है) तक मिल सकता है । एक खण्ड का अधिकतम अंक 200 तथा सभी सात खण्डो का पूर्णांक 1400 है ।

बेसिक एम.आर.भाग ब में 75 कथन है जो समस्या व्यवहार के 10 खण्डो मे बँटे है; जैसे : उग्र एव विनाशक व्यवहार, चिड़चिड़ापन/झल्लाहट अन्य से दुर्व्यवहार, स्वयं घातक व्यवहार, पुनरावृति व्यवहार अनोखा व्यवहार, अतिचंचल व्यवहार, विद्रोही व्यवहार, असामाजिक व्यवहार, भय । प्रत्येक बच्चे के व्यवहार को वस्तु निष्ट ढग से अंक दिए जाते है । व्यवहार नही (अंक 0), कमी होता हो (अंक 1), अक्सर घटित हो (अंक 2), 1 सभी खण्डो पर अधिकतम अंक 150 मिल सकते है । प्रत्येक बच्चे का आकलन बेसिक एम.आर. के भाग अ तथा ब पर चार बार होता है। स्कूल में भर्ती होने पर या वर्ष के प्रारम्भ मे (आधार भूत मूल्यांकन), तीसरे और छठे माह की समाप्ति पर (त्रैमासिक मूल्यांकन) और वर्ष के अंत मे (वार्षिक मूल्यांकन) ।

परिशिष्ट

प्र

19

शिक्षार्थी का नाम ____________

आयु : ____________

गम्भीरता ____________

कक्षा/स्तर ____________

अभिभावक का नाम ____________

पता ____________

फोन ____________

पुरस्कार पसंद जाँच सूची

(बच्चो को शिक्षा देते समय उचित पुरस्कार चयन के लिए)

विद्यार्थी का नाम-- श्रुति -------------------- आयु ---- 8 वर्ष --------------

स्तर/कक्षा --- द्वितीय ---------------- लिग -- स्त्रीलिंग. ------------

सूचनाएँ :

मानसिक मंद बच्चो द्वारा बहुधा पसंद किए जाने वाली वस्तुओ, पदार्थो, क्रियाओं आदि की सूची नीचे दी जा रही है । यह सूची राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान द्वारा किये गए शोध आँकड़ो पर आधारित हैजो 266 मानसिक मद बच्चो पर किया गया था । उन बच्चो द्वारा केवल दस बहुत पसद किए जाने वाली वस्तुओं के ही नाम यहाँ दिए जा रहें हैं । यहाँ एक बात ध्यान देने योग्य है कि, सभी बच्चो की पसद एक जैसी नही होती है, और सम्भव है कि, दी गई सूची के अनुसार आप के बच्चे की पसंद न हो । अतः शिक्षक को अपने बच्चे की पसद बराबर जान लेनी होगी । इसके लिए अपना निरीक्षण और माँ–बाप की जानकारी की मदद लेनी होगी ।

प्राथमिक पुरस्कार		वस्तु पुरस्कार	
1. ○	केला	1. ☑	नए वस्त्र
2. ○	बिस्कुट	2. ☑	गेद
3. ○	दूध	3. ○	रगीन खिलौने
4. ☑	मिठाई	4. ○	बिन्दी
5. ○	रोटी/चपाती	5. ○	हेअर क्लिप
6. ○	मांस	6. ○	हैन्ड बैग
7. ○	अण्डे	7. ○	कान की बाली
8. ○	चाय	8. ○	चूड़ियाँ
9. ☑	सेव	9. ○	पेन
10. ○	चावल/दाल	10. ○	किताब

कोई और प्राथमिक पुरस्कार जो बच्चे के लिए पहचाना गया है

- ○ ______________________
- ○ ______________________
- ○ ______________________
- ○ ______________________

कोई और वस्तु पुरस्कार जो बच्चे के लिए चुना गया हो

- ○ ______________________
- ○ ______________________
- ○ ______________________
- ○ ______________________

सामाजिक पुरस्कार

1. ○ "अच्छा" कहना
2. ✓ "शाबास" कहना
3. ○ "करते रहो" कहना
4. ○ पीठ थपथपाना
5. ○ मुस्कुराना
6. ○ बहुत अच्छा कहना
7. ○ अच्छा किया कहना
8. ○ गले लगाना
9. ○ चूम लेना
10. ○ "उत्तम" कहना

अन्य कोई सामाजिक पुरस्कार बच्चे के लिए चुना गया हो

- ○ ______________________
- ○ ______________________
- ○ ______________________
- ○ ______________________

क्रिया पुरस्कार

1. ○ रेडियो से गाने सुनने देना
2. ○ टी.वी. देखने देना
3. ○ बाहर घूमने ले जाना
4. ○ बस या ट्रेन का सफर
5. ✓ गेंद से खेलने देना
6. ✓ खिलौने से खेलने देना
7. ○ सिनेमा देखना
8. ○ साइकिल चलाना
9. ○ बच्चो के साथ खेलना
10. ○ स्कूटर पर ले जाना

अन्य कोई क्रिया पुरस्कार बच्चे के लिए चुनी गयी हो

- ○ ______________________
- ○ ______________________
- ○ ______________________
- ○ ______________________

विशेष अधिकार

1. ◯ बच्चे को कक्षा का मॉनिटर बना देना ।
2. ◯ बच्चे को स्कूल का कॅप्टन बना देना ।
3. ◯ बच्चे को समूह का नेता बना देना ।

टोकन पुरस्कार

1. ◯ पुस्तक में सही का निशान बनाना ।
2. ◯ विशेष चिह्नक देना ।
3. ◯ स्टार देना ।

अन्य कोई विशेष अधिकार बच्चे के लिए चुना गया हो ।

◯ ____________________

◯ ____________________

◯ ____________________

◯ ____________________

अन्य कोई टोकन पुरस्कार बच्चे के लिए चुनी गयी हो ।

◯ ____________________

◯ ____________________

◯ ____________________

◯ ____________________

दिनांक 10.3.93.

रजनी
अध्यापक के हस्ताक्षर

पुरस्कार पसंद जाँच सूची

(बच्चो को शिक्षा देते समय उचित पुरस्कार चयन के लिए)

विद्यार्थी का नाम---------------------------- आयु -------------------

स्तर/कक्षा ----------------------------- लिंग -------------------

सूचनाएँ :

मानसिक मंद बच्चों द्वारा बहुधा पसंद किए जाने वाली वस्तुओं, पदार्थों, क्रियाओं आदि की सूची नीचे दी जा रही है । यह सूची राष्ट्रीय मानसिक विकलाग संस्थान द्वारा किये गए शोध आँकड़ो पर आधारित हैजो 266 मानसिक मंद बच्चो पर किया गया था । उन बच्चों द्वारा केवल दस बहुत पसंद किए जाने वाली वस्तुओं के ही नाम यहाँ दिए जा रहें है । यहाँ एक बात ध्यान देने योग्य है कि, सभी बच्चो की पसंद एक जैसी नही होती है, और सम्भव है कि, दी गई सूची के अनुसार आप के बच्चे की पसंद न हो । अतः शिक्षक को अपने बच्चे की पसंद बराबर जान लेनी होगी । इसके लिए अपना निरीक्षण और माँ-बाप की जानकारी की मदद लेनी होगी ।

प्राथमिक पुरस्कार

1. ○ केला
2. ○ बिस्कुट
3. ○ दूध
4. ○ मिठाई
5. ○ रोटी/चपाती
6. ○ मांस
7. ○ अण्डे
8. ○ चाय
9. ○ सेव
10. ○ चावल/दाल

वस्तु पुरस्कार

1. ○ नए वस्त्र
2. ○ गेंद
3. ○ रंगीन खिलौने
4. ○ बिन्दी
5. ○ हेअर क्लिप
6. ○ हैन्ड बैग
7. ○ कान की बाली
8. ○ चूड़ियाँ
9. ○ पेन
10. ○ किताब

कोई और प्राथमिक पुरस्कार जो बच्चे के लिए पहचाना गया है

- ◯ ______________________
- ◯ ______________________
- ◯ ______________________
- ◯ ______________________

कोई और वस्तु पुरस्कार जो बच्चे के लिए चुना गया हो

- ◯ ______________________
- ◯ ______________________
- ◯ ______________________
- ◯ ______________________

सामाजिक पुरस्कार

1. ◯ "अच्छा" कहना
2. ◯ "शाबास" कहना
3. ◯ "करते रहो" कहना
4. ◯ पीठ थपथपाना
5. ◯ मुस्कुराना
6. ◯ बहुत अच्छा कहना
7. ◯ अच्छा किया कहना
8. ◯ गले लगाना
9. ◯ चूम लेना
10. ◯ "उत्तम" कहना

अन्य कोई सामाजिक पुरस्कार बच्चे के लिए चुना गया हो

- ◯ ______________________
- ◯ ______________________
- ◯ ______________________
- ◯ ______________________

क्रिया पुरस्कार

1. ◯ रेडियो से गाने सुनने देना
2. ◯ टी.वी. देखने देना
3. ◯ बाहर घूमने ले जाना
4. ◯ बस या ट्रेन का सफर
5. ◯ गेंद से खेलने देना
6. ◯ खिलौने से खेलने देना
7. ◯ सिनेमा देखना
8. ◯ साइकिल चलाना
9. ◯ बच्चों के साथ खेलना
10. ◯ स्कूटर पर ले जाना

अन्य कोई क्रिया पुरस्कार बच्चे के लिए चुनी गयी हो

- ◯ ______________________
- ◯ ______________________
- ◯ ______________________
- ◯ ______________________

विशेष अधिकार

1. ◯ बच्चे को कक्षा का मॉनिटर बना देना ।
2. ◯ बच्चे को स्कूल का कॅाप्टन बना देना ।
3. ◯ बच्चे को समूह का नेता बना देना ।

टोकन पुरस्कार

1. ◯ पुस्तक में सही का निशान बनाना ।
2. ◯ विशेष चिह्नक देना ।
3. ◯ स्टार देना ।

अन्य कोई विशेष अधिकार बच्चे के लिए चुना गया हो ।

◯ ____________________

◯ ____________________

◯ ____________________

◯ ____________________

अन्य कोई टोकन पुरस्कार बच्चे के लिए चुनी गयी हो ।

◯ ____________________

◯ ____________________

◯ ____________________

◯ ____________________

दिनांक

अध्यापक के हस्ताक्षर

परिशिष्ट V

व्यवहार - व्यवस्था कार्यक्रम

कार्य पत्र

विद्यार्थी का नाम---- संजय ---------------- आयु ---- 12 वर्ष ----------

स्तर/कक्षा ---- द्वितीय ---------------- लिंग ---- पुल्लिंग. ----------

अभिलेखन कर्ता का नाम ---- कु. आर. संध्या. ----

चरण I *समस्या - व्यवहारो को निर्धारित करें ।*

1. उसका व्यवहार अति उग्र है।

2. वह बार-बार हाथ मिलाना चाहता है।

3. वह दूसरो को वस्तुयें चुराता है।

4. वह स्कूल-बस में जाने से इन्कार करता है।

5. ______________________

चरण II *(समस्या - व्यवहारो का विवरण)*

समस्या - व्यवहारो का व्यावहारिक शैली में विवरण दीजिए ।

1. दूसरो को मारता है।

2. दूसरों को ढकेलता है।

3. वह दूसरों से बार-बार हाथ मिलाता है।

4. दूसरों की वस्तुयें (पेन, पेंसिल, रबर) अपने स्कूल-बैग में रख लेता है।

5 स्कूल-बस में जाने से इन्कार करता है।

चरण III उन समस्या-व्यवहारो का चयन कीजिए जिन्हें आप बदलना चाहते है । (एक या दो)

1. दूसरों को मारता है।

2. वह दूसरों से बार-बार हाथ मिलाता है।

चरण IV बच्चे के लिए पुरस्कार निर्धारित कीजिए ।

1. "शाबास" कहने पर पसंद करता है।
2. रंग भरना
3. फुटबॉल खेलना
4. दूसरों से बातें करना.
5. टी वी. देखना
6. गाने सुनना
7. अभिनेता/अभिनेत्री के चित्रों को इकट्ठा करना।
8.
9.
10.

चरण V व्यवहारिक व्यवस्था के लिए चुने हुए समस्या-व्यवहार आधारभूत सूचित करें ।

	अभिलेखन की विधि	प्रति बैठक/कक्षा/सप्ताह
समस्या-व्यवहार 1	बारबारता रेकॉर्डिंग तकनीक	स्कूल में एक सप्ताह के लिये 7-8 बार के औसत पर।
समस्या-व्यवहार 2	बारंबारता रेकॉर्डिंग तकनीक.	स्कूल में एक सप्ताह के लिये 20 बार के औसत पर।

चरण VI *समस्या - व्यवहारो का क्रियात्मक विश्लेषण*

बच्चे के समस्या - व्यवहार का वास्तविक शब्दो मे वर्णन कीजिए ।

समस्या - व्यवहार होने के तुरन्त पहले क्या होता है ।

किन स्थानो/स्थितियो में समस्या - व्यवहार होता है ?

समस्या – व्यवहार 1 : घर और स्कूल दोनों में पाया जाता है, विशेषत: उस समय जब दूसरे बच्चे स्कूल में उसे पेंसिल, रबर या शॉपनर नहीं देते।

समस्या – व्यवहार 2 : स्कूल में अधिक पाया जाता है, कर्मचारियों तथा मेहमानों को स्कूल में देखकर.

क्या दिन मे कोई विशेष समय है जब समस्या- व्यवहार होने की संभावना अधिक रहती है ?

समस्या - व्यवहार 1 : नहीं।

समस्या – व्यवहार 2 हाँ, जब वह कक्षा से बाहर होता है, लेकिन जब मेहमान कक्षा में आते हैं तब भी पाया जाता है।

क्या समस्या व्यवहार किसी विशेष व्यक्ति की उपस्थिति मे अधिक होता है ?

समस्या – व्यवहार 1 : हाँ, स्कूल में साथियों के साथ और घर में भाई - बहन के साथ।

समस्या - व्यवहार 2 :

क्या समस्या-व्यवहार के तुरन्त पहले बच्चे ने कुछ मागा था या आपने किसी चीज के लिए उसे मना किया था ?

समस्या-व्यवहार 1 : हाँ। रबर, पेंसिल, शॉपनर आदि साथियों ने मना किया था।

समस्या-व्यवहार 2 : नहीं।

समस्या-व्यवहार के होने के समय क्या होता है

दिन/सप्ताह में समस्या-व्यवहार कितनी बार होता है ?

समस्या-व्यवहार 1 : स्कूल में एक सप्ताह के लिये 7-8 बार के औसत पर।

समस्या-व्यवहार 2 : स्कूल में एक सप्ताह के लिये 20 बार के औसत पर।

समस्या-व्यवहार के होने के पश्चात क्या होता है

समस्या-व्यवहार के तुरंत बाद आप या अन्य सामान्यतः क्या करते है ?

समस्या-व्यवहार 1 : कुछ बच्चे अपनी वस्तुओं को देने से इन्कार करते हैं, जब वह उसे बुरी तरह से मारता है, तब कुछ बच्चे अपनी वस्तुयें दे देते हैं।

समस्या-व्यवहार 2 : कुछ लोग हाथ मिलाते हैं, और कुछ लोग देर तक बातचीत में लगे रहते हैं।

समस्या-व्यवहार से स्कूल में या स्कूल से बाहर कौन लोग प्रभावित होते है? (यदि व्यवहार घर पर पाया गया है तो स्कूल के स्थान पर घर पढ़िये) ?

समस्या-व्यवहार 1 : कक्षा के साथी और भाई-बहन. कभी-कभी सीधे बच्चों के आँख पर मारता है। दूसरे अभिभावकों ने इसकी शिकायत की और स्कूल से निकाल देने की मांग की।

समस्या-व्यवहार 2 :

स्कूल के सामान्य क्रिया-कलापो मे समस्या-व्यवहार का क्या प्रभाव पड़ता है ?

समस्या-व्यवहार 1 : सीखाने और सीखने की प्रक्रिया पर प्रभाव पड़ता है। काफी समय उसमें निकल जाता है।

समस्या व्यवहार 2 उसे कक्षा से निकलकर भागते हुये दूसरों से हाथ मिलाने के व्यवहार से सभी उलझन में पड़ जाते है।

समस्या-व्यवहार करने से बच्चे को क्या लाभ है या कौन सी क्रिया बच्चे मे समस्या-व्यवहार बनाए रखती है ?

समस्या-व्यवहार 1 : सामग्री। अन्य बच्चों की वस्तुयें उसे प्राप्त होती है।

समस्या-व्यवहार 2 : सामाजिक अवधान

चरण VII *व्यवहार – व्यवस्था*

समस्या – व्यवहार को व्यवस्थित करने के लिए व्यावहारिक तकनिको का उल्लेख कीजिए ।

समस्या – व्यवहार 1 : 1) मौखिक असंतुष्टि प्रकट करना 2) क्षतिपूर्ति; वस्तुयें वापस करने को संजय से कहना 3) अन्य व्यवहारों के लिये भेदात्मक पुरस्कार; जब वह दूसरों को न मारे व वस्तुयें न खींचे, तब प्रत्येक घंटे में सामाजिक पुरस्कार (शाबास) देना। 4) फेडिंग; धीरे-धीरे पुरस्कार देने की अवधि को बढ़ाना जैसे - 1 से 2 घंटे, 2 से 3, 3 से 4 घंटे आदि.

समस्या – व्यवहार 2 : 1) ध्यान न देना, जब भी संजय बार-बार हाथ मिलाने का प्रयास करता है। 2) अन्य व्यवहारों के लिये भेदात्मक पुरस्कार जब भी संजय उचित समय पर दूसरों से हाथ मिलाता है, तब केवल उसी की ओर ध्यान दें और सामाजिक पुरस्कार (शाबास) दें। 3) सामाजिक कुशलता प्रशिक्षण; कब, कहाँ और किस समय किसे "नमस्ते" कहना, ऐसे विषयों में प्रशिक्षण देना।

चरण VIII *समस्या – व्यवहार कार्यक्रम का मूल्यांकन*

व्यवहार – व्यवस्था कार्यक्रम की प्रगति का, जिन कठिनाईयो का सामना करना पड़ा उनका, और यदि कोई नए व्यवहार या कठिनाइयाँ सामने आई हो तो उनका भी अभिलेखन करें ।

तिथि : 19.3.93

हस्ताक्षर

नोट : इस नमूने के कार्यपत्र मे एक ही समय मे केवल दो समस्या – व्यवहारो की अभिलेखन की व्यवस्था है । बच्चे की आवश्यकताओ के अनुसार अध्यापक अतिरिक्त प्रतियाँ बना सकते है ।

परिशिष्ट V

व्यवहार - व्यवस्था कार्यक्रम

कार्य पत्र

विद्यार्थी का नाम---------------------------- आयु ------------------------

स्तर/कक्षा ---------------------------- लिंग ------------------------

अभिलेखन कर्ता का नाम --------------------

चरण I *समस्या व्यवहारों को निर्धारित करें ।*

1. ____

____

2. ____

____

3. ____

____

4. ____

____

5. ____

____

____

चरण II *(समस्या - व्यवहारो का विवरण)*

समस्या - व्यवहारो का व्यावहारिक शैली में विवरण दीजिए ।

1. ____

____

2. ____

____

3. ______________________________

____

4. ______________________________

____

5 ______________________________

____

चरण III उन समस्या-व्यवहारो का चयन कीजिए जिन्हें आप बदलना चाहते है । (एक या दो)

1. ______________________________

____

2. ______________________________

____

चरण IV बच्चे के लिए पुरस्कार निर्धारित कीजिए ।

1. ______________ 6. ______________

2. ______________ 7. ______________

3. ______________ 8. ______________

4. ______________ 9. ______________

5. ______________ 10. ______________

चरण V व्यवहारिक व्यवस्था के लिए चुने हुए समस्या-व्यवहार आधारभूत सूचित करें ।

	अभिलेखन की विधि	प्रति बैठक/कक्षा/सप्ताह
समस्या-व्यवहार 1 :	______________	______________
	______________	______________
समस्या-व्यवहार 2 :	______________	______________
	______________	______________

चरण VI *समस्या-व्यवहारों का क्रियात्मक विश्लेषण*

बच्चे के समस्या-व्यवहार का वास्तविक शब्दों में वर्णन कीजिए ।

समस्या-व्यवहार होने के तुरन्त पहले क्या होता है ।

किन स्थानों/स्थितियों में समस्या-व्यवहार होता है ?

समस्या–व्यवहार 1 ________________

____

____

____

समस्या–व्यवहार 2 : ________________

____

____

____

क्या दिन में कोई विशेष समय है जब समस्या–व्यवहार होने की संभावना अधिक रहती है ?

समस्या-व्यवहार 1 : ________________

____

____

____

समस्या–व्यवहार 2 : ________________

____

____

____

क्या समस्या–व्यवहार किसी विशेष व्यक्ति की उपस्थिति में अधिक होता है ?

समस्या–व्यवहार 1 : ________________

____

____

____

समस्या-व्यवहार 2 : ________________

____

____

____

क्या समस्या-व्यवहार के तुरन्त पहले बच्चे ने कुछ मागाथा या आपने किसी चीज़ के लिए उसे मना किया **था** ?

समस्या - व्यवहार 1 : ______________________

____

समस्या -व्यवहार 2 : ______________________

____

समस्या-व्यवहार के होने के समय । क्या होता है

दिन/सप्ताह में समस्या-व्यवहार कितनी बार होता है ?

समस्या - व्यवहार 1 : ______________________

____

____

समस्या - व्यवहार 2 : ______________________

____

समस्या-व्यवहार के होने के पश्चात् क्या होता है

समस्या - व्यवहार के तुरंत बाद आप या अन्य सामान्यतः क्या करते है ?

समस्या - व्यवहार 1 : ______________________

____

____

____

समस्या - व्यवहार 2 : ______________________

____

____

____

समस्या - व्यवहार से स्कूल में या स्कूल से बाहर कौन लोग प्रभावित होते हैं? (यदि व्यवहार घर पर पाया गया है तो स्कूल के स्थान पर घर पढ़िये) ?

समस्या - व्यवहार 1 : ______________________________

____

____

____

समस्या - व्यवहार 2 : ______________________________

____

____

____

स्कूल के सामान्य क्रिया-कलापों में समस्या व्यवहार का क्या प्रभाव पड़ता है ?

समस्या व्यवहार 1 : ______________________________

____

____

____

समस्या व्यवहार 2 : ______________________________

____

____

____

समस्या व्यवहार करने से बच्चे को क्या लाभ है या कौन सी क्रिया बच्चे में समस्या -व्यवहार बनाए रखती है ?

समस्या -व्यवहार 1 ______________________________

____

____

____

समस्या - व्यवहार 2 : ______________________________

____

____

____

चरण VII *व्यवहार - व्यवस्था*

समस्या - व्यवहार को व्यवस्थित करने के लिए व्यावहारिक तकनीक का उल्लेख कीजिए ।

समस्या - व्यवहार 1 : ____________

____

____

____

____

____

____

____

समस्या - व्यवहार 2 : ____________

____

____

____

____

____

____

____

चरण VIII *समस्या - व्यवहार कार्यक्रम का मूल्यांकन*

व्यवहार - व्यवस्था कार्यक्रम की प्रगति का, जिन कठिनाईयो का सामना करना पड़ा उनका, और यदि कोई नए व्यवहार या कठिनाइयाँ सामने आई हो तो उनका भी अभिलेखन करे ।

____

____

____

____

____

____

तिथि :

हस्ताक्षर

नोट : इस नमूने के कार्यपत्र मे एक ही समय मे केवल दो समस्या व्यवहारो की अभिलेखन की व्यवस्था है । बच्चे की आवश्यकताओं के अनुसार अध्यापक अतिरिक्त प्रतियाँ बना सकते है ।

परिशिष्ट VI

प्रस्तावित पाठ्य सामग्री

बेकर बी.एल., ब्राइटमैन ए.जे., हाईफिटस एल.जे. और मर्फी डी.एम. (1976). स्टैप्स टू इन्डिपेन्डेंस : ए स्किल ट्रेनिंग सीरीज़ फॉर चिल्ड्रन विद स्पेशल नीड्स.: इल्लिनाइस, रिसर्च प्रैस.

चीजमैन पी. एल. और वॉट्स पी.ई. (1985). "पॉजिटिव बिहेवियर मैनेजमैंट" ए मैन्यूअल फॉर टीचस न्यू यॉर्क क्रूर हेलिल.

गार्डनर डब्ल्यू. आइ. (1971). "बिहेवियर मॉडिफिकेशन इन मेन्टल रिटार्डेशन". चिकागो. एलडाइन पब्लिशिग कम्पनी.

हरबर्ट एम. (1981) बिहेवियरल ट्रीटमैंट आफ प्राब्लम चिल्ड्रन : ए प्रैक्टिकल मैन्यूअल लंडन अक्याडमिक प्रैस,

कीयरनैन सी.सी. और वुडफर्ड एफ. पी. 1976 (ऐड्स) "बिहेवियर मॉडिफिकेशन विद सीवियरली रिटार्ईर्ड" आक्सफोर्ड एसोसिएटेड साइंटिफिक पब्लिशर्स.

लेसलेट आर. और स्मिथ सी. (1984) इफैक्टिव क्लासरूम मैनेजमेंट. लंडन. क्रूम हेलिन,

मारगैन डी.पी. और जेन्सन डब्ल्यू.आर. (1985). "टीचिंग.बिहेवियरली डिस्टर्ब्ड स्टूडेन्ट्स". प्रैफर्ड प्रैक्टिसिज़ : कोलम्बस. मेरिल

ओलियरी के. और ओ. लियरी एस. (ऐड्स) (1977) : क्लासरूम मैनेजमेंट : द सक्सेसफुल यूज़ ऑफ बिहेवियर मॉडिफिकेशन न्यूयॉर्क, पेरगेमॉन.

परीकंस ई.ए., टेलर पी.डी., और केपी ए.सी.एम. (1976). हैल्पिंग द रिटार्डेड : ए सिस्टमेटिक बिहेवियरल एपरोच. किड्डर मिनिस्टर, इंस्टीट्यूट ऑफ मेन्टल सबनारमैलिटी.

पर्किस ई.ए., टेलर पी.डी. और केपी ए.सी. एम (1983). हेल्पिंग द रिटार्डेड : ए सिस्टमैटिक बिहेवियरल एपरोच. वॉरसेस्टर शायार बी. आई. एम. एच.

पेरट ई. (1982). इफेक्टिव टीचिंग : ए प्रेक्टिकल गाईड टू इम्प्रूव यूअर टीचिंग. लंडन लॉगमैन.

पेशावरिया आर. (1990) "मैनेजिंग बिहेवियर प्राब्लम्स इन चिल्ड्रन : ए गाइड फॉर पेरेन्ट्स". नई दिल्ली. विकास पब्लिशिंग हाउस.

पोटीट (1974) बिहेवियर मॉडिफिकेशन. प्रैक्टिकल गाईड फॉर टीचर्स. लंडन. बरगैस्स.

थॉम्पसन टी. और ग्रेबाउस्की जे. (1972). बिहेवियर मॉडिफिकेशन ऑफ द मेन्टली रिटार्डेड़ न्यूयॉर्क आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस.

यूले डब्ल्यू. औकार जे. (1980) (ऐड्स) : "बिहेवियर मॉडिफिकेशन फॉर द मेन्टली हैन्डीकेप्ट" लंडन क्रूम हैलिन.

जारकाउस्का ई.और क्लीमेट्स जे (1988) "प्रॉब्लम बिहेवियर्स इन पीपल विद सीवियर लर्निंग डिसएबिलिटीज़ : ए प्रैक्टिकल गाइड टू ए कन्सट्रक्शनल एप्रोच" लडन क्रूम हेलिनु.

परिशिष्ट VII

रा. मा. वि. सं. के अन्य प्रकाशन

	शीर्षक	मूल्य (रु. में)
1.	भारत मे मानसिक विकलांग व्यक्तियो के लिए संस्थानो की विस्तृत सूची	उपलब्ध नहीं है?
2.	भारत मे मानसिक विकलांग व्यक्तियो के लिए संस्थानो की विस्तृत सूची	उपलब्ध नहीं है?
3.	मंदबुद्धिता : ग्रामीण पुर्नवास कार्यकर्ताओं के लिए एक पुस्तिका	10.00
4.	मंदबुद्धिता : बहु पुर्नवास कार्यकर्ताओं के लिए एक पुस्तिका	10.00
5.	मंदबुद्धिता : निर्देशक परामर्शदाता के लिए एक पुस्तिका	10.00
6.	मंदबुद्धिता : मनोवैज्ञानिको के लिए एक पुस्तिका	10.00
7.	मंदबुद्धि पर वार्षिक संगोष्ठी 1989	10.00
8.	मंदबुद्धि व्यक्तियो के लिए व्यवसायिक प्रशिक्षण एवं रोजगार	10.00
9.	मंदबुद्धि बच्चो के प्रशिक्षको के लिए हैन्ड बुक : पूर्व प्राथमिक स्तर	30.00
10.	मंदबुद्धि व्यक्तियो के लिए विशेष विद्यालयो का संगठन	8.00
11.	नियमित विद्यालय मे विशेष कक्षा का संगठन	8.00
12.	स्वालम्बन की ओर : सीरीज़ : स्थूल गामक क्रियाओं को बढ़ावा देना	10.00
13.	स्वालम्बन की ओर सीरीज़ : सूक्ष्म गामक क्रियाये	10.00
14.	स्वावलम्बन की ओर सीरीज़ : स्वयं से भोजन करना	10.00
15.	स्वावलम्बन की ओर सीरीज़ : शौचइत्यादि प्रशिक्षण	0.00
16.	स्वावलम्बन की ओर सीरीज़ : दाँत साफ करने की कुशलता सीखाना	10.00
17.	स्वावलम्बन की ओर सीरीज़ : हम स्वयं कपड़े पहन सकते है	10.00
18.	स्वावलम्बन की ओर सीरीज़ : अपने बच्चे को स्नान करने में प्रशिक्षित करना	10.00
19.	स्वावलम्बन की ओर सीरीज़ : स्वयं से भोजन करना	10.00
20.	स्वावलम्बन की ओर सीरीज़ : आवश्यक सामाजिक क्रियाओं मे प्रशिक्षण देना	10.00
21.	पुस्तिका "स्वावलम्बन की ओर सीरीज़"	10.00
22.	मंदबुद्धि व्यक्तियो के लिए कौशल प्रशिक्षण : स्नान करना	10.00
23.	मंदबुद्धि व्यक्तियो के लिए कौशल प्रशिक्षण : स्थूल गामक कौशल	10.00
24.	मदबुद्धि व्यक्तियो के लिए कौशल प्रशिक्षण : सूक्ष्म गामक कौशल	10.00
25.	मदबुद्धि व्यक्तियो के लिए कौशल प्रशिक्षण : भोजन करने मे कुशलता	10.00
26.	मदबुद्धि व्यक्तियो के लिए कौशल प्रशिक्षण : शौचइत्यादि में कुशलता/प्रशिक्षण	10.00
27.	मदबुद्धि व्यक्तियो के लिए कौशल प्रशिक्षण : दाँतो मे ब्रश करना	10.00
28.	मदबुद्धि व्यक्तियों के लिए कौशल प्रशिक्षण : कपड़े पहनना	10.00
29.	मदबुद्धि व्यक्तियो के लिए कौशल प्रशिक्षण . अपने को सँवारना	10.00
30.	मदबुद्धि व्यक्तियो के लिए कौशल प्रशिक्षण : सामाजिक कौशल	10.00
31.	विशेष नन्हे बच्चो के लिए खेल क्रियाये (अग्रेजी)	10.00
32.	विशेष नन्हे बच्चो के लिए खेल कियाये (हिन्दी)	10.00
33.	मलमूत्र प्रशिक्षण	

मिमियोग्राफस्

33. ओपन एम्प्लॉयमेट ऑपरच्युनिटिस इन द डिपार्टमेटस ऑफ पोस्ट एंड टेलिकम्युनिकेशनस फॉर पर्सन्सवीद मेटल रिटार्डेशन". – 10

34. ओपन एम्प्लॉयमेट ऑपरच्युनिटिस इन द इंडियन रेल्वेस फॉर पर्सन्स वीद मेटल रिटार्डेशन. –10

35. जॉब अॅनालसिस एड़ ऑन द जॉब ट्रेनिंग फॉर पर्सन्स वीद मेटल रिटार्डेशन सीरिज–1, मॅन्युफॅक्चर आॉफ वायर कट ब्रिक्स अॅड टाइल्स. – 10

वीडियो फिल्म्स

1. स्टेप बाई स्टेप वुई लर्न (इंग्लीश) – 150
2. स्टेप बाई स्टेप वुई लर्न (तेलुगु) – 150
3. गीव देम अ चा्स (इग्लीश) – 150
4. गीव देय अ चास (तेलुगु) – 150
5. सहानुभूति नही सहयोग (हिदी) – 150

एजुकेशनल फोल्डर्स अण्ड पोस्टर्स (फॉर फ्री डिस्ट्रिब्युशन)

1. माय टूल बॉक्स
2. टिचिंग टाईम
3. चेक एंड नो
4. प्रिवेट मेटल रिटार्डेशन
5. सेईग सिपल वर्डस

6. टेल द डे, डेट, अँड मंत : अ स्पेशल एजुकेशन क्यालेंडर

7. मेंटली रिटार्डेड चिल्ड्रन अंड कम्युनिकेशन (स्पीच लैंग्वेज हियरिग डेवलपमेट)

8. डिक्लरेशन ऑफ जनरल अंड स्पेशल राईटस् ऑफ द मेटली रिटार्डेड

9. ग्रीटिंग स्कील्स

10 टेन डिफरेंट पोस्टर्स (इन इंग्लीश, हिन्दी अंड तेलुगु) ऑन प्रिवेंशन अंड मैंनेजमेट ऑफ मेटली रिटार्डेड चिल्ड्रन.

नोट : ***आपका निवेदन पत्र :*** निदेशक, एन.आई.एम.एच. सिकंद्राबाद के नाम पर डि. डि. भेजकर "सूचना एव लेख्यबद्ध अधिकारी, एन.आई.एम.एच. मनोविकास नगर, सिकंद्राबाद - 500 011. (आंध्र प्रदेश - भारत)" से आप प्राप्त कर सकते हैं ।

परिशिष्ट VIII

फीडबैक प्रश्नावली

(पुस्तिका में लिखित सामग्री पढ़ने के बाद शिक्षकों के प्रयोग के लिए)

नाम	लिंग
संस्था का पता	आयु
शैक्षिक योग्यता	पद
अंतिम सर्वोच्च योग्यता प्राप्त	अंतिम सर्वोच्च योग्यता प्राप्त करने का वर्ष
काम करने का कुल अनुभव	मानसिक मंदता के क्षेत्र में अनुभव
कक्षा में मानसिक मंद बच्चों का आयु विस्तार	कक्षा में मानसिक मंद बच्चों के स्तर और दशा की गहनता

कथनों की सूची नीचे दी जा रही है, जिनके बाद उनके मूल्यांकन (रेटिंग) की श्रेणियाँ भी दर्शाई हुई हैं । प्रस्तुत पुस्तिका को पढ़ लेने के बाद दिए गए कथनों के संदर्भ में आप कृपया इस पाठ पर अपनी राय लिखें । यदि किसी विशेष भाग या खण्ड के बारे में आप और कुछ कहना चाहते हैं तो उसे अलग से लिखें, जिसके लिए कुछ स्थान खाली रखा गया है ।

1. पुस्तिका में भाषा का प्रयोग

अ. समझना बहुत कठिन है
ब. समझना कठिन है
स. सामान्य है
द. समझना सरल है
ई. समझना बहुत सरल है

यदि किसी भाग/पन्ने में भाषा समझने में कठिन लगी हो तो स्पष्ट रूप में बताएँ

____

____

18

2. **पुस्तिका में जो विषय सम्मिलित किए गए है**

अ. बिल्कुल अप्रासगिक है ।

ब. कुछ कुछ अप्रासगिक है ।

स. उचित है ।

द. बिल्कुल उचित है ।

ई. अत्याधिक उचित है ।

यदि अ. या ब. पर निशान लगाए हो तो कृपया बताएँ क्यो ?

3. **पुस्तिका में विचारों की स्पष्टता**

अ. कुछ भी स्पष्ट नही है ।

ब. और स्पष्ट होना चाहिए ।

स. स्पष्ट है ।

द. बिल्कुल स्पष्ट है ।

ई. अच्छी तरह से स्पष्ट है ।

यदि अ. या ब. पर निशान लगाया है तो बताएँ क्यो ?

4. **पुस्तिका में निहित विषयों का शिक्षक के लिए महत्व**

अ. कुछ भी उपयोगी नही ।

ब. कुछ कुछ उपयोगी है ।

स. उपयोगी है ।

द. अधिक उपयोगी है ।

ई. बहुत ही उपयोगी है ।

यदि कोई भाग उपयोगी न हो तो उसका उल्लेख करे ।

5. **पुस्तिका से सम्बन्धित उद्धरणों की उपयोगिता**

अ. जरा भी उपयोगी नही है ।

ब. कुछ स्थानो पर ही उपयोगी है ।

स. उपयोगी है ।

द. अधिकतर उपयोगी है ।

ई. सभी स्थानो पर उपयोगी है ।

यदि कोई भाग और या उससे सम्बन्धित उद्धरण उपयोगी नही है तो स्पष्ट करे ।

6. पुस्तिका के सम्बन्ध में अन्य कोई उल्लेख

____

____

____

____

फीडबैक फार्म भेजने का पता

श्रीमती रीटा पेशावरिया

लेक्चरर् इन क्लिनिकल साईकॉलॉजी
डिपार्टमेंट ऑफ क्लिनिकल साईकॉलॉजी
नेशनल इन्स्टिट्यूट फॉर द मेंटल्ली हॅन्डिकैप.
मनोविकास नगर, बोएनपल्ली पी.ओ.
सिकन्दराबाद – 500 011.
आंध्रप्रदेश (भारत)

टिप्पणियाँ

टिप्पणियाँ

परिशिष्ट V

व्यवहार - व्यवस्था कार्यक्रम

कार्य पत्र

विद्यार्थी का नाम------------------------- आयु ------------------

स्तर/कक्षा ------------------------- लिंग ------------------

अभिलेखन कर्ता का नाम ------------------

चरण I *समस्या व्यवहारों को निर्धारित करें ।*

1. ____________________

2. ____________________

3. ____________________

4. ____________________

5. ____________________

चरण II *(समस्या - व्यवहारों का विवरण)*

समस्या - व्यवहारों का व्यावहारिक शैली में विवरण दीजिए ।

1. ____________________

2. ____________________

3. ______________________________

4. ______________________________

5 ______________________________

चरण III उन समस्या-व्यवहारो का चयन कीजिए जिन्हे आप बदलना चाहते है । (एक या दो)

1. ______________________________

2. ______________________________

चरण IV बच्चे के लिए पुरस्कार निर्धारित कीजिए ।

1. ______________	6. ______________
2. ______________	7. ______________
3. ______________	8. ______________
4. ______________	9. ______________
5. ______________	10. ______________

चरण V व्यवहारिक व्यवस्था के लिए चुने हुए समस्या-व्यवहार आधारभूत सूचित करें ।

	अभिलेखन की विधि	प्रति बैठक/कक्षा/सप्ताह
समस्या-व्यवहार 1 :	______________	______________
	______________	______________
समस्या-व्यवहार 2 :	______________	______________
	______________	______________

चरण VI *समस्या-व्यवहारों का क्रियात्मक विश्लेषण*

बच्चे के समस्या-व्यवहार का वास्तविक शब्दों में वर्णन कीजिए ।

समस्या-व्यवहार होने के तुरन्त पहले क्या होता है ।

किन स्थानों/स्थितियों में समस्या-व्यवहार होता है ?

समस्या–व्यवहार 1 ______________________________

____

____

____

समस्या–व्यवहार 2 : ______________________________

____

____

____

क्या दिन में कोई विशेष समय है जब समस्या-व्यवहार होने की संभावना अधिक रहती है ?

समस्या-व्यवहार 1 : ______________________________

____

____

____

समस्या–व्यवहार 2 : ______________________________

____

____

____

क्या समस्या–व्यवहार किसी विशेष व्यक्ति की उपस्थिति में अधिक होता है ?

समस्या–व्यवहार 1 : ______________________________

____

____

____

समस्या-व्यवहार 2 : ______________________________

____

____

____

क्या समस्या-व्यवहार के तुरन्त पहले बच्चे ने कुछ मागाथा या आपने किसी चीज़ के लिए उसे मना किया था ?

समस्या - व्यवहार 1 : ____________________

____

समस्या -व्यवहार 2 : ____________________

____

समस्या –व्यवहार के होने के समय । क्या होता है

दिन/सप्ताह में समस्या–व्यवहार कितनी बार होता है ?

समस्या - व्यवहार 1 : ____________________

____

____

समस्या - व्यवहार 2 : ____________________

____

समस्या - व्यवहार के होने के पश्चात् क्या होता है

समस्या - व्यवहार के तुरंत बाद आप या अन्य सामान्यतः क्या करते हैं ?

समस्या - व्यवहार 1 : ____________________

____

____

____

समस्या - व्यवहार 2 : ____________________

____

____

____

समस्या-व्यवहार से स्कूल में या स्कूल से बाहर कौन लोग प्रभावित होते है? (यदि व्यवहार घर पर पाया गया है तो स्कूल के स्थान पर घर पढ़िये) ?

समस्या-व्यवहार 1 :

समस्या-व्यवहार 2 :

स्कूल के सामान्य क्रिया-कलापों में समस्या व्यवहार का क्या प्रभाव पड़ता है ?

समस्या व्यवहार 1 :

समस्या व्यवहार 2 :

समस्या व्यवहार करने से बच्चे को क्या लाभ है या कौन सी क्रिया बच्चे में समस्या-व्यवहार बनाए रखती है ?

समस्या-व्यवहार 1

समस्या-व्यवहार 2 :

चरण VII *व्यवहार - व्यवस्था*

समस्या - व्यवहार को व्यवस्थित करने के लिए व्यावहारिक तकनीक का उल्लेख कीजिए ।

समस्या - व्यवहार 1 : ____________________

____

____

____

____

____

____

____

समस्या - व्यवहार 2 : ____________________

____

____

____

____

____

____

____

चरण VIII *समस्या - व्यवहार कार्यक्रम का मूल्यांकन*

व्यवहार - व्यवस्था कार्यक्रम की प्रगति का, जिन कठिनाईयो का सामना करना पड़ा उनका, और यदि कोई नए व्यवहार या कठिनाइयाँ सामने आई हो तो उनका भी अभिलेखन करे ।

____

____

____

____

____

____

तिथि :

हस्ताक्षर

नोट : इस नमूने के कार्यपत्र में एक ही समय मे केवल दो समस्या व्यवहारो की अभिलेखन की व्यवस्था है । बच्चे की आवश्यकताओ के अनुसार अध्यापक अतिरिक्त प्रतियाँ बना सकते है ।

परिशिष्ट VI

प्रस्तावित पाठ्य सामग्री

बेकर बी.एल., ब्राइटमैन ए.जे., हाईफिटस एल.जे. और मर्फी डी.एम. (1976). स्टैप्स टू इन्डिपेन्डेस : ए स्किल ट्रेनिंग सीरीज़ फॉर चिल्ड्रन विद स्पेशल नीड्स: इल्लिनाइस, रिसर्च प्रैस.

चीजमैन पी. एल. और वॉट्स पी.ई. (1985). "पॉजिटिव बिहेवियर मैनेजमैंट" ए मैन्यूअल फॉर टीचस न्यू यॉर्क क्रूर हेलिल.

गार्डनर डब्ल्यू. आइ. (1971). "बिहेवियर मॉडिफिकेशन इन मेन्टल रिटार्डेशन". चिकागो. एलडाइन पब्लिशिग कम्पनी.

हरबर्ट एम. (1981) बिहेवियरल ट्रीटमैंट आफ प्राब्लम चिल्ड्रन : ए प्रैक्टिकल मैन्यूअल लंडन अक्याडमिक प्रैस,

कीयरनैन सी.सी. और वुडफर्ड एफ. पी. 1976 (ऐड्स) "बिहेवियर मॉडिफिकेशन विद सीवियरली रिटार्डर्ड" आक्सफोर्ड एसोसिएटेड साइंटिफिक पब्लिशर्स.

लेसलेट आर. और स्मिथ सी. (1984) इफैक्टिव क्लासरूम मैनेजमेंट. लंडन. क्रूम हेलिन,

मारगैन डी.पी. और जेन्सन डब्ल्यू.आर. (1985). "टीचिंग बिहेवियरली डिस्टर्ब्ड स्टूडेन्ट्स". प्रैफर्ड प्रैक्टिसिज़ : कोलम्बस. मेरिल

ओलियरी के. और ओ. लियरी एस. (ऐड्स) (1977) : क्लासरूम मैनेजमेंट : द सक्सेसफुल यूज़ ऑफ बिहेवियर मॉडिफिकेशन न्यूयॉर्क, पेरगेमॉन.

परीकंस ई.ए., टेलर पी.डी., और केपी ए.सी.एम. (1976). हैल्पिग द रिटार्डेड : ए सिस्टमेटिक बिहेवियरल एपरोच. किड्डर मिनिस्टर, इंस्टीट्यूट ऑफ मेन्टल सबनारमैलिटी.

पर्किंस ई.ए., टेलर पी.डी. और केपी ए.सी. एम (1983). हेल्पिंग द रिटार्डेड : ए सिस्टमैटिक बिहेवियरल एपरोच. वॉरसेस्टर शायार बी. आई. एम. एच.

पेरट ई. (1982). इफेक्टिव टीचिंग : ए प्रेक्टिकल गाईड टू इम्प्रूव यूअर टीचिंग. लंडन लौंगमैन.

पेशावरिया आर. (1990) "मैनेजिंग बिहेवियर प्राब्लम्स इन चिल्ड्रन : ए गाइड फॉर पेरेन्ट्स". नई दिल्ली. विकास पब्लिशिग हाउस.

पोटीट (1974) बिहेवियर मॉडिफिकेशन. प्रैक्टिकल गाईड फॉर टीचर्स. लंडन. बरगैस्स.

थॉम्पसन टी. और ग्रेबाउस्की जे. (1972). बिहेवियर मॉडिफिकेशन ऑफ द मेन्टली रिटार्डेड़ न्यूयॉर्क आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

यूले डब्ल्यू. औकार जे. (1980) (ऐड्स) : "बिहेवियर मॉडिफिकेशन फॉर द मेन्टली हैन्डीकेप्ट" लंडन क्रूम हैलिन.

जारकाउस्का ई.और क्लीमेट्स जे (1988) "प्रॉब्लम बिहेवियर्स इन पीपल विद सीवियर लर्निंग डिसएबिलिटीज़ : ए प्रैक्टिकल गाइड टू ए कन्सट्रक्शनल ऍप्रोच" लडन क्रूम हेलिनु.

परिशिष्ट VII

रा. मा. वि. सं. के अन्य प्रकाशन

	शीर्षक	मूल्य (रु. में)
1.	भारत मे मानसिक विकलांग व्यक्तियो के लिए संस्थानों की विस्तृत सूची	उपलब्ध नहीं है?
2.	भारत में मानसिक विकलांग व्यक्तियो के लिए संस्थानो की विस्तृत सूची	उपलब्ध नहीं है?
3.	मंदबुद्धिता : ग्रामीण पुर्नवास कार्यकर्ताओं के लिए एक पुस्तिका	10.00
4.	मंदबुद्धिता : बहु पुर्नवास कार्यकर्ताओं के लिए एक पुस्तिका	10.00
5.	मंदबुद्धिता : निर्देशक परामर्शदाता के लिए एक पुस्तिका	10.00
6.	मंदबुद्धिता : मनोवैज्ञानिको के लिए एक पुस्तिका	10.00
7.	मंदबुद्धि पर वार्षिक संगोष्ठी 1989	10.00
8.	मंदबुद्धि व्यक्तियो के लिए व्यवसायिक प्रशिक्षण एवं रोजगार	10.00
9.	मंदबुद्धि बच्चों के प्रशिक्षको के लिए हैन्ड बुक : पूर्व प्राथमिक स्तर	30.00
10.	मंदबुद्धि व्यक्तियो के लिए विशेष विद्यालयों का संगठन	8.00
11.	नियमित विद्यालय मे विशेष कक्षा का संगठन	8.00
12.	स्वालम्बन की ओर : सीरीज़ : स्थूल गामक क्रियाओं को बढ़ावा देना	10.00
13.	स्वालम्बन की ओर सीरीज़ : सूक्ष्म गामक क्रियाये	10.00
14.	स्वावलम्बन की ओर सीरीज़ : स्वयं से भोजन करना	10.00
15.	स्वावलम्बन की ओर सीरीज़ : शौचइत्यादि प्रशिक्षण	0.00
16.	स्वावलम्बन की ओर सीरीज़ : दाँत साफ करने की कुशलता सीखाना	10.00
17.	स्वावलम्बन की ओर सीरीज़ : हम स्वयं कपड़े पहन सकते है	10.00
18.	स्वावलम्बन की ओर सीरीज़ : अपने बच्चे को स्नान करने में प्रशिक्षित करना	10.00
19.	स्वावलम्बन की ओर सीरीज़ : स्वयं से भोजन करना	10.00
20.	स्वावलम्बन की ओर सीरीज़ : आवश्यक सामाजिक क्रियाओं मे प्रशिक्षण देना	10.00
21.	पुस्तिका "स्वावलम्बन की ओर सीरीज़"	10.00
22.	मंदबुद्धि व्यक्तियो के लिए कौशल प्रशिक्षण : स्नान करना	10.00
23.	मंदबुद्धि व्यक्तियो के लिए कौशल प्रशिक्षण : स्थूल गामक कौशल	10.00
24.	मदबुद्धि व्यक्तियो के लिए कौशल प्रशिक्षण : सूक्ष्म गामक कौशल	10.00
25.	मदबुद्धि व्यक्तियो के लिए कौशल प्रशिक्षण : भोजन करने मे कुशलता	10.00
26.	मदबुद्धि व्यक्तियो के लिए कौशल प्रशिक्षण : शौचइत्यादि में कुशलता/प्रशिक्षण	10.00
27.	मंदबुद्धि व्यक्तियो के लिए कौशल प्रशिक्षण : दाँतो मे ब्रश करना	10.00
28.	मदबुद्धि व्यक्तियो के लिए कौशल प्रशिक्षण : कपड़े पहनना	10.00
29.	मदबुद्धि व्यक्तियो के लिए कौशल प्रशिक्षण : अपने को सँवारना	10.00
30.	मंदबुद्धि व्यक्तियो के लिए कौशल प्रशिक्षण : सामाजिक कौशल	10.00
31.	विशेष नन्हे बच्चो के लिए खेल क्रियाये (अंग्रेजी)	10.00
32.	विशेष नन्हे बच्चो के लिए खेल कियाये (हिन्दी)	10.00
33.	मलमूत्र प्रशिक्षण	

मिमियोग्राफस्

33. ओपन एम्प्लॉयमेट ऑपरच्युनिटिस इन द डिपार्टमेटस ऑफ पोस्ट एंड टेलिकम्युनिकेशनस फॉर पर्सन्सवीद मेंटल रिटार्डेशन". – 10

34. ओपन एम्प्लॉयमेट ऑपरच्युनिटिस इन द इंडियन रेल्वेस फॉर पर्सन्स वीद मेंटल रिटार्डेशन. –10

35. जॉब ॲनालसिस एड़ ऑन द जॉब ट्रेनिंग फॉर पर्सन्स वीद मेंटल रिटार्डेशन सीरिज–1, मॅन्युफॅक्चर ऑफ वायर कट ब्रिक्स ॲड टाइल्स. – 10

वीडियो फिल्म्स

1. स्टेप बाई स्टेप वुई लर्न (इंग्लीश) – 150
2. स्टेप बाई स्टेप वुई लर्न (तेलुगु) – 150
3. गीव देम अ चा्स (इग्लीश) – 150
4. गीव देय अ चास (तेलुगु) – 150
5. सहानुभूति नही सहयोग (हिंदी) – 150

एजुकेशनल फोल्डर्स अण्ड पोस्टर्स (फॉर फ्री डिस्ट्रिब्युशन)

1. माय टूल बॉक्स
2. टिचिंग टाईम
3. चेक एंड नो
4. प्रिवेट मेटल रिटार्डेशन
5. सेईंग सिपल वर्डस

6. टेल द डे, डेट, अँड मंत : अ स्पेशल एजुकेशन क्यालेंडर

7. मेंटली रिटार्डेड चिल्ड्रन अंड कम्युनिकेशन (स्पीच लैंग्वेज हियरिंग डेवलपमेंट)

8. डिक्लरेशन ऑफ जनरल अंड स्पेशल राईटस् ऑफ द मेंटली रिटार्डेड

9. ग्रीटिंग स्कील्स

10 टेन डिफरेंट पोस्टर्स (इन इंग्लीश, हिन्दी अंड तेलुगु) ऑन प्रिवेंशन अंड मैनेजमेंट ऑफ मेंटली रिटार्डेड चिल्ड्रन.

नोट : ***आपका निवेदन पत्र*** : निदेशक, एन.आई.एम.एच. सिकंद्राबाद के नाम पर डि. डि. भेजकर "सूचना एव लेख्यबद्ध अधिकारी, एन.आई.एम.एच. मनोविकास नगर, सिकंद्राबाद - 500 011. (आंध्र प्रदेश - भारत)" से आप प्राप्त कर सकते है ।

परिशिष्ट VIII

फीडबैक प्रश्नावली

(पुस्तिका मे लिखित सामग्री पढ़ने के बाद शिक्षको के प्रयोग के लिए)

नाम	लिंग
संस्था का पता	आयु
शैक्षिक योग्यता	पद
अंतिम सर्वोच्च योग्यता प्राप्त	अंतिम सर्वोच्च योग्यता प्राप्त करने का वर्ष
काम करने का कुल अनुभव	मानसिक मंदता के क्षेत्र मे अनुभव
कक्षा मे मानसिक मंद बच्चो का आयु विस्तार	कक्षा मे मानसिक मंद बच्चो के स्तर और दशा की गहनता

कथनो की सूची नीचे दी जा रही है, जिनके बाद उनके मूल्यांकन (रेटिंग) की श्रेणियाँ भी दर्शाई हुई है । प्रस्तुत पुस्तिका को पढ़ लेने के बाद दिए गए कथनो के संदर्भ मे आप कृपया इस पाठ पर अपनी राय लिखे । यदि किसी विशेष भाग या खण्ड के बारे मे आप और कुछ कहना चाहते है तो उसे अलग से लिखे, जिसके लिए कुछ स्थान खाली रखा गया है ।

1. पुस्तिका मे भाषा का प्रयोग

अ. समझना बहुत कठिन है
ब. समझना कठिन है
स. सामान्य है
द. समझना सरल है
ई. समझना बहुत सरल है

यदि किसी भाग/पन्ने मे भाषा समझने मे कठिन लगी हो तो स्पष्ट रूप से बताएँ

____

____

____

2. **पुस्तिका में जो विषय सम्मिलित किए गए है**

अ. बिल्कुल अप्रासगिक है ।

ब. कुछ कुछ अप्रासगिक है ।

स. उचित है ।

द. बिल्कुल उचित है ।

ई. अत्याधिक उचित है ।

यदि अ. या ब. पर निशान लगाए हो तो कृपया बताएँ क्यो ?

---

3. **पुस्तिका में विचारों की स्पष्टता**

अ. कुछ भी स्पष्ट नही है ।

ब. और स्पष्ट होना चाहिए ।

स. स्पष्ट है ।

द. बिल्कुल स्पष्ट है ।

ई. अच्छी तरह से स्पष्ट है ।

यदि अ. या ब. पर निशान लगाया है तो बताएँ क्यो ?

---

4. **पुस्तिका में निहित विषयों का शिक्षक के लिए महत्व**

अ. कुछ भी उपयोगी नही ।

ब. कुछ कुछ उपयोगी है ।

स. उपयोगी है ।

द. अधिक उपयोगी है ।

ई. बहुत ही उपयोगी है ।

यदि कोई भाग उपयोगी न हो तो उसका उल्लेख करे ।

---

5. **पुस्तिका से सम्बन्धित उद्धरणों को उपयोगिता**

अ. जरा भी उपयोगी नही है ।

ब. कुछ स्थानो पर ही उपयोगी है ।

स. उपयोगी है ।

द. अधिकतर उपयोगी है ।

ई. सभी स्थानो पर उपयोगी है ।

यदि कोई भाग और या उससे सम्बन्धित उद्धरण उपयोगी नही है तो स्पष्ट करे ।

---

6. पुस्तिका के सम्बन्ध में अन्य कोई उल्लेख

फीडबैक फार्म भेजने का पता

श्रीमती रीटा पेशावरिया

लेक्चरर् इन क्लिनिकल साईकॉलॉजी
डिपार्टमेंट ऑफ क्लिनिकल साईकॉलॉजी
नेशनल इन्स्टिट्यूट फॉर द मेंटल्ली हॅन्डिकैप.
मनोविकास नगर, बोएनपल्ली पी.ओ.
सिकन्दराबाद - 500 011.
आंध्रप्रदेश (भारत)

टिप्पणियाँ

टिप्पणियाँ

लेखक संबंधी

रीता पेशावरिया संप्रति चिकित्सा मनोविज्ञान, की प्राध्यापिका के रूप में, राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान, पो.बॉ. बोएनपल्ली, सिकंद्राबाद-500 009. में कार्यरत हैं । 1972 • में पंजाब मे मनोविज्ञान मे स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् चिकित्सा मनोविज्ञान में 2 वर्षीय सेंट्रल इन्स्टिटयूट आफ साईकियाट्री, (रांची), में प्रकर्षशीर प्रशिक्षण (इनटेंन्सिव ट्रेनिंग) की, जहाँ आपने 1975 मे डी.एम.एड.एस.पी. श्रेष्ठता उपाधि पाई तब से आप प्रज्ञात्मक सामान्य तथा मानसिक विकलांग बच्चो की भावुक तथा व्यावहारिक समस्याओं में सक्रिय सहयोग दे रही हैं । राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान में कार्यभार ग्रहण करने से पूर्व आप बच्चों के मार्गदर्शन चिकित्सालय, मेंटल अस्पताल, शाहदरा, दिल्ली, मे प्रभारी अधिकारी रहीं । आगे आपने मानसिक विकलांग बच्चों में व्यावहारिक तकनीक लागू करने का प्रशिक्षण, मॉडस्ले अस्पताल, लंदन यू. के. से प्राप्त किया ।

15 वर्षो से अधिक अवधि से अपने कार्य के अनुभव मे, देश के विभिन्न भागो मे अभिभावको तथा व्यावसायिकों के लिए व्यवहार पर आधारित लागू करने की पद्धतियाँ, सीखने की अत्यधिक समस्याओ वाले बच्चों को सीखाने व प्रशिक्षण देने के लिये कई कार्यशालायें आयोजित की ।

आपके रिसर्च पेपर्स भारतीय तथा विदेशी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए, इसके अतिरिक्त "मैनेजिंग बिहैवियर प्रॉब्लम्स् इन चिल्ड्रन - "अ गाईडस फॉर पेरेंटस्" शीर्षक की एक पुस्तक 1970 में, विकास पब्लिशिंग हाउज, प्रा.लि. नई दिल्ली से प्रकाशित हुई । आपके मैन्युअल तैयार करने मे सहलेखिका नही । जो इस प्रकार है । मेंटल हैंडिकैप, अ मैन्युअल फॉर साईकॉलॉजिस्ट (1988), मेंटल हैंडिकैप, अ मैन्युअल फॉर गाइडेंस् एँड कौसलर्स (1989) तथा विशेष नन्हे बच्चों के लिये खेल क्रियायें (1991), एन. आई.एम. एच. सिकंद्राबाद द्वारा प्रकाशित की गई ।

वेंकटेसन. एस - संप्रति राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान, बोएनपल्ली, सिकंद्राबाद-500 009 मे चिकित्सा मनोविज्ञान विभाग, मे अनुसंधान अधिकारी वीद स्पेशल के रूप मे कार्यरत है। 1985, में मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् चिकित्सा मनोविज्ञान में 2 वर्षीय प्रशिक्षण, नेशनल इन्स्टिटयूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरो सायंसेस, बैंगलूर मे किया । जहाँ आपने एम.एम. अँड एस.पी. 1987 मे उत्तीर्ण किया ।

आपने 1989 मे नई दिल्ली में सोसायटी फॉर अडवांस स्टडीस इन मेडिकल सायंसेस्, मनोचिकित्सक मुख्य विषय के रूप में उत्तीर्ण किया । पिछले 5 वर्षो से मनोवैज्ञानिक समस्याओं वाले, अयोग्य तथा दोष वाले व्यक्तियों के मूल्याकन, रोगनिदान तथा उपचार प्रशिक्षण मे सक्रिय भाग ले रहे हैं। आपने मेंटल हेल्थ एंड डिसएबिलिटीस और इपेयरमेंटस के क्षेत्र मे प्रतिष्ठित पत्रिकाओ मे विभिन्न रिसर्च पेपर्स प्रकाशित किये । आपने विभिन्न लक्ष्य समूह से संबधित कुछ कार्यशालाये भी आयोजित की जैसे अभिभावक, शिक्षक आदि । इसके अतिरिक्त असमर्थ तथा विकृत के क्षेत्र में विशेषता प्राप्त करने वाले पूर्वस्नातक तथा स्नातक विद्यार्थियों को पढ़ाने में सक्रिय भाग ले रहे हैं ।